कथाकार

कथाकार राहुल सांकृत्यायन

डॉ० रवेलचन्द आनन्द
एम०ए पी०एच० डी०



शारदा प्रकाशन
महरौली नई दिल्ली ११००३०

प्रथम सस्करण १९७३
मूल्य १८ रुपये
प्रकाशक शारदा प्रकाशन
महरौली नई दिल्ली-३०
मुद्रक अशोक प्रि ग प्रस दिल्ली ६

Kathakar ahul Sankrityayan

(A Critical Study)

by

Dr Ravel Chand Anand

Price Rs 18 00

दो शब्द

राहुल सांकृत्यायन वर्तमान आज तथा भविष्य काल के कलाकृती एवं संस्कृति सारथी हैं। अपने महामहिम व्यक्तित्व एवं विराट कृतित्व की दृष्टि से वे हिन्दी साहित्य में अद्वितीय स्थान के अधिकारी हैं। उनका जीवन क्रान्तिमय था। निरन्तर सत्यान्वेषण गतिशीलता अनुसंधानप्रियता एवं रूढ़िवादिता पर प्रहार उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएं हैं। राहुल जी सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न प्रगतिशील साहित्यकार थे। बहु भाषाविद भाषाशास्त्री दार्शनिक इतिहासकार पुरातत्त्ववेत्ता यायावर राजनीतिज्ञ बौद्ध-दार्शनिक, साम्यवादी हिन्दी भाषा के अनन्य उपासक एवं प्रातिभ साहित्यकार महापण्डित राहुल जी का साहित्य—उपयोगी एवं सर्जनात्मक—विपुल एवं विराट है। इस एक व्यक्ति ने जितना वृहत कृतित्व प्रस्तुत किया वह किसी एक संस्था-द्वारा भी सहज सम्भव नहीं है।

राहुल जी की सर्जनात्मक साहित्य को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन उनकी कथा कृतियाँ हैं। महापण्डित राहुल शास्त्रीय उपन्यासकार न होकर दार्शनिक उपन्यासकार मार्क्सवादी एवं बौद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार एवं विश्वयात्री उपन्यासकार हैं। 'सिंह सेनापति' 'मधुर स्वप्न' 'जय यौधेय' आदि ऐतिहासिक उपन्यासों में राहुल जी ने ऐतिहासिक यथार्थ को अपनी विचारधारा के अनुरूप रूपायित किया है। इन उपन्यासों में कल्पना की अपेक्षा तथ्यों एवं व्याख्याओं की प्रधानता है। बौद्ध दर्शन एवं द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के समन्वय का नवोन्मेष राहुल जी की मौलिक कल्पना है। 'बाईसवीं सदी' के रूप में उन्होंने कल्पनात्मक उपन्यास प्रदान किया है। 'जीने के लिए' आदि उनके राजनीतिक सामाजिक उपन्यासों का विशिष्ट विचारगत महत्त्व है। जनसाथिन राहुल ने हिन्दी कहानी को नवीन दिशाएं प्रदान की है। 'वोल्गा से गंगा' तथा 'कनैला की कथा' द्वारा राहुल जी ने ऐतिहासिक कहानी को नई दृष्टि प्रदान की है। इतिहास पुरातत्त्व समाजशास्त्र, संस्कृति सभ्यता दर्शन—सभी को वर्ण्य विषय बनाती मानव समाज के विकास के आठ सहस्र वर्षों के इतिहास का निरीक्षण एवं विश्लेषण करने वाली राहुल की कथासृष्टि हिन्दी के लिए वरदान है।

इस रचना में राहुल जी के व्यक्तित्व एवं सर्जनात्मक साहित्य के संक्षिप्त परिचय के अनन्तर कथाकार राहुल की हिन्दी उपन्यास और हिन्दी कहानी के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों का विवेचन किया गया है।

इस प्रयास में मुझे कहाँ तक सफलता मिली है इसका निर्णय पाठक ही कर पायेंगे।

—रवेलचन्द आनन्द

अनुक्रम

पहला परिवर्त

महापण्डित राहुल साकृत्यायन का व्यक्तित्व एव कृतित्व

(क) महापण्डित राहुल का व्यक्तित्व

'पद्मभूषण अन्तर्राष्ट्रीय युगपण्डित राहुल साकृत्यायन ने हिन्दी भाषा और साहित्य का जितना कुछ दिया है उतना शायद ही किसी अकेले व्यक्ति ने दिया हो। हिन्दी-साहित्य का कोई भी ऐसा अग नही जिसको उन्होने अपनी कृतियो द्वारा सम्पन्न न बनाया हो। उनका साहित्य विपुल है, उनका व्यक्तित्व विराट और विचित्र। उन जैसा अद्भुत एव विलक्षण व्यक्तित्व रखने वाले साहित्यकार विरले ही होते हैं। पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी के शब्दो मे, महापण्डित राहुल जी अपनी शैली के अद्वितीय पुरुष हैं। उनका साहस अनुपम था उनकी धर्म भावना विचित्र थी उनका व्यवहार अनूठा था। उनका सामाजिक विचार अनोखा था और आर्य-सस्कृति के प्रति उनकी दृष्टि अपूर्व थी। वैदिक साहित्य हिन्दू आचार विचार हिन्दू सभ्यता भारतीय-इतिहास नागरी लिपि हिन्दी भाषा आदि के सम्बन्ध मे उनका मनन विलक्षण और विचक्षण था। मतलब यह कि राहुल जी वैलक्षण्य के आकर थे।'[1] वस्तुत राहुल जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था उनकी अभिव्यक्तियाँ विविध थी। वह महामानव थे जिनका देश प्रेम हिन्दी निष्ठा मे जीवित प्रवाह पा गया था, जिनका स्नेह मृत्यु तक आप्या-यित और अतृप्त बना रहा, जिनके पाण्डित्य की हिमानी के नीचे लोक हृदय की निर्झरिणी निरन्तर भरती रही जिनको ज्ञान की पूर्णता से अधिक ज्ञान की निरन्तरता की चिन्ता थी, जिनकी विस्मृति भी निश्छल ममता की धारा बन गई।[2] राहुल जी का व्यक्तित्व किसी विशेषण विशेष की परिधि मे नही बाधा जा सकता। बौद्ध कम्युनिस्ट आर्यसमाजी, यायावर, इतिहासज्ञ दार्शनिक—ये सब विशेषण राहुल जी के व्यक्तित्व को आयत्त करने मे असमर्थ हैं। राहुल जी का व्यक्तित्व गत्यात्मक है सत्य का अनुसन्धित्सु है। डॉ० शिवप्रसाद सिंह के शब्दो मे 'राहुल ने किसी भी मत को मन के लिए स्वीकार नहीं किया। उन्हे बुद्ध का यह कथन सदा याद रहा, मैने तुम्हे नदी पार करने के लिए नाव दी थी। पार हो जाने पर उसे सर पर उठा कर ढोने के लिए नहीं। राहुल ने इस कथन की वास्तविकता को समझा ही नहीं अपने कार्यों मे भली भाँति उतार भी लिया था। उनकी नावें स्पष्ट था, किन्तु जहाँ

उन नावो न वाहन नही, वाहक बनना चाहा राहुल ने उन्हे झटक कर एक तरफ फेंक दिया।[3] प्रस्तुत परिवेश म राहुल जी क शारीरिक, मानसिक एव बौद्धिक विशिष्टताग्रो म युक्त विचक्षण विविधोमुखी एव गत्यात्मक व्यक्तित्व की झलक प्रस्तुत है।

भव्य व्यक्तित्व

राहुल जी का बाह्य (शारीरिक) व्यक्तित्व अत्यत भव्य एव आकर्षक था। उन्हे शारीरिक सपदा—स्वस्थ तन और गौर वर्ण—निसर्ग प्राप्य था। राहुल क शारीरिक गठन 'कामायनी' के मनु की स्मृति ला देता है—

उसी तपस्वी स लम्बे थ
देवदारु दो चार खडे।

अवयव की दृढ मास पेशिया,
ऊर्जस्वित था वीर्य अपार।
स्फीत शिराए स्वस्थ रक्त का
होता था जिनम सचार। (कामायनी पृ० ३४)

राहुल जी क मित्रो एव आलोचको न राहुल जी की शारीरिक सम्पदा के भव्य चित्र दिये हैं। गौर वर्ण, उन्नत ललाट विशाल भूधराकार शरीर राहुल जी अनायास ही प्राचीन आर्यों का हम स्मरण दिलात हैं।[4] 'लम्बा-कद भरा गठा शरीर, गौर वर्ण ऊँचा ललाट और प्रसन्न शात मुख मुद्रा। उनके चेहरे म सबस प्रभावपूर्ण उनकी दूर तक देखती आख थी और सबमे आकर्षक उनके रहस्यो को अपने म छिपाये स उनके होठ थे जिन पर मुस्कान निखरी ही रहती थी।[5] एसा था राहुल का शारीरिक व्यक्तित्व। रत्नाकर पाण्डेय के शब्दो म देवदार के वृक्ष-सा लम्बा चौडा शरीर कृशान क रग का गौर वर्ण चन्दन के लट्ठ सा विशाल मान सघर्ष की चिनगारियाँ झरती आखें चाणक्य का हृदय किन्नर का मन, कल्पना को यथार्थ म परिणत करन की प्रवृत्ति और धृति उनके व्यक्तित्व निर्माण क मूल स्तम्भ थे।[6] श्री अमृतराय उनकी देह प्राचीन आर्यों जसी मानत हैं छ फुट म निकलता हुआ ऊचा-पूरा शरीर उन्नत ललाट प्रशस्त वक्ष पुष्ट स्कन्ध—प्राचीन आर्यों जसी वह देह—जिस देखकर विख्यात प्राच्य विद्या विशारद सल्व लेवी की आखो के आग भगवान बुद्ध का चित्र खिच जाता था।[7] भगवतशरण उपाध्याय की दृष्टि म उनका व्यक्तित्व स्तम्भ स उपमित किया जा सकता है।[8] डा० सत्यगुप्त न उन्ह बौना का सस्कृति म विशाल मानव कहा है।[9] ठाकुर प्रसाद सिंह उन्हें बरगद का विशाल झूमता हुआ वृक्ष मानत हैं और उनका भुवनमोहिनी मुस्कान और पीठ पर हथेलियो का दबाव आज भी स्मरण करत है[10]। अवनीन्द्र कुमार विद्यालकार के लिए उनका रूप का दर्शन पारसमणि था[11]। राहुल ना की गौर वर्ण काया पर कभी भिक्षुग्रो-सी वेशभूषा सजी

और कभी यूरोप और रूस मे रहते हुए देशकालानुकूल उन्होंने परिधान धारण किया—परन्तु श्वेत धोती कुर्ता और चादर के विनीत वेष म व बहुत ही मोहक लगते थ। राहुल जी की विमोहिनी काया की इस प्रकार अनेक उपमाएँ हैं और अनेक विशेषण हैं और सभी सत्य एव यथार्थ हैं। उनकी बलिष्ठ एव मनोहारिणी देह की सम्पत्ति भव्य एव अपार है। व आने वाले लोगो के लिए किसी कल्पित कहानी के नायक प्रतीत होग—यह असदिग्ध है। कुमारिल पन्त उन्हे दीप्तिमान स्वान तथा बाधिवृक्ष-सा पवित्र कहते है[12]।

यायावर राहुल

राहुल लेखक पर्यटक अथवा पर्यटक लेखक थ।[13] उनके व्यक्तित्व की सबस उभरती हुई विशिष्टता उनकी यायावरी प्रवृत्ति थी। घुमक्कडी राहुल के लिए जीवन का धर्म था और 'जयतु-जयतु घुमक्कड पन्था' उनका उदघोष था। घुमक्कडी धर्म को व विश्व की सवश्रेष्ठ वस्तु मानते थे— मेरी समझ म दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कडी। घुमक्कडी स बढकर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नही हो सकता[14]।' इस घुमक्कडी धर्म के प्रति प्रेम राहुल के मन म बचपन म सुनी नाना रामशरण पाठक की दक्षिण भारत की यात्रा-सम्बन्धी कथाओ स जागृत हुआ[15]। बचपन म यज्ञोपवीत के समय चाचा के साथ विन्ध्याचल जाते हुए केदार बनारस म ठहरा और चोरी ही बाजार भाग कर बनारस शहर घूमकर पाँच-सात किताबें खरीद लाया—यही केदार (राहुल) की पहली यात्रा थी[16]। केदारनाथ के मन म यात्रा प्रेम का जागरण करने वाला दूसरा कारण था—नवाजिदा बाजिन्दा की कहानी 'खुदाई का नतीजा' का प्रस्तुत शेर—

> सर कर दुनिया की गाफिल जिन्दगानी फिर कहा ?
> जिदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ ?

राहुल जी स्वय स्वीकारते हैं, 'इस शेर न मेरे मन और भविष्य के जीवन पर बहुत गहरा असर डाला[17]।' इस शेर स केदार प्रोत्साहित हुआ और घुमक्कड राज राहुल के रूप म विख्यात हुआ और इस शेर को वे देश के सभी युवाओ को पढाना चाहते हैं[18]। घुमक्कडी राहुल के लिए किसी बडे योग से कम सिद्धिदायिनी नही है[19]। इस योग की प्राप्ति के लिए भारी से भारी त्याग की आवश्यकता है—यह मैं अवश्य कहूँगा कि यह दीक्षा वही ले सकता है जिसम बहुत भारी मात्रा म हर तरह का साहस है—तो उस किसी की बात नहीं सुननी चाहिए, न माता के आँसू बहने की परवाह करनी चाहिए, न पिता के भय और उदास होने की न भूल से विवाह लाई अपनी पत्नी के रोने धोने की फिक्र करनी चाहिए[20]। राहुल स्वय इस योग म दीक्षित हुए और उसके लिए वाछित त्याग किया तथा आजीवन इसी योग के साधक बने रहे।

यायावर राहुल ने 'निस्त्रैगुण्ये पथि विचरता को विधि निषेध' शकराचार्य

के इन शब्दों को गुरुवाक्य मानकर आजीवन घुमक्कडी धर्म को निभाया[२१]। घुमक्कडी उनके लिए काव्यरस अथवा ब्रह्मानन्द से किसी भी प्रकार कम नहीं थी[२२]। इस रस को प्राप्त करने के लिए राहुल आजीवन पिपासु रहे। दस वर्ष की आयु में (१९०३ ई०) बनारस में चोरी ही शहर घूम आना, १९०६ में निजामाबाद में अपनी खाद्य सामग्री बेचकर पुनः बनारस की सैर और १९०७ और १९०९ में कलकत्ते घूम आना केदार की बचपन की यात्राएँ थी। इनसे उनके यायावरी-जीवन में प्रवेश का संकेत मिलता है[२३]। पर उनका नियमित यात्राओं का आरम्भ सन १९१०की हिमालय यात्रा से होता है[२४]। उत्तराखण्ड की इस यात्रा के उपरान्त सन १९१० से १९२१ ई० तक उन्होंने भारत के विभिन्न नगरों की यात्रा की। काशी, परसा, तिरुमिशी तिरुपति काचीपुर, बंगलौर विजयनगर, त्र्यम्बक उज्जैन, अहमदाबाद, अयोध्या आगरा लाहौर कुर्ग आदि स्थानों का भ्रमण किया[२५]। सन १९२६ में पुन हिमालय घूम आए[२६]। हिमालय की इस यात्रा में राहुल ने तिब्बत, बुशहर रियासत, सुन्नम कनम्, स्पिति आदि पर्वतीय स्थानों में विचरण किया।

सन १९२३ ई० से राहुल जी की विदेश यात्राओं का आरम्भ होता है। वे प्रथम बार सन् १९२३ में नेपाल गये। बौद्धधर्म के आकर्षण ने उन्हें सन १९२७ में लंका यात्रा के लिए प्रेरित किया और उन्नीस मास वहीं रहे।[२७] सन १९३० की दूसरी लंका यात्रा में रामउदार राहुल सांकृत्यायन के नाम से बौद्धधर्म में प्रव्रजित हुए।[२८] बौद्धधर्म के ग्रन्थों की खोज एवं एतद्विषयक जानकारी राहुल को तिब्बत ले गई। राहुल ने तिब्बत की चार बार यात्रा की।[२९] अपनी यात्राओं में वे तिब्बत की यात्राओं को सर्वाधिक दुर्गम, रुचिकर और साथ ही लाभदायक मानते थे। पाश्चात्य सभ्यता से अवगत होने के लिए राहुल जी ने सन १९३२ ई० में यूरोप यात्रा की। इस यात्रा में उन्होंने फ्रांस जर्मनी तथा इंग्लैण्ड के जीवन को देखा।[३०] बौद्ध धर्म एवं संस्कृत भाषा के पाश्चात्य विद्वानों से परिचय उनकी यूरोप यात्रा की मुख्य विशेषता थी। ऐसा प्रतीत होता है कि राहुल को यूरोप यात्रा में कोई आकर्षण प्रतीत नहीं हुआ। वे न तो फिर कभी यूरोप ही गये और न ही बौद्ध धर्म प्रचार के लिए अमरिका जाना ही स्वीकार किया। तिब्बत के बाद उन्हें सोवियत भूमि से विशेष प्रेम था। सन १९३५ ई० में वह पहली बार रूस गये[३१] और फिर तीन बार (१९३७, १९४५, १९६२) इस भूमि में विचरण किया।[३२] इस प्रकार लंका तिब्बत रूस इंग्लैण्ड जर्मन तथा नेपाल के अतिरिक्त लद्दाख जापान कोरिया मंचूरिया ईरान और चीन की भूमि में विहार कर राहुल जी ने घुमक्कडी धर्म का परिचय दिया।[३३] राहुल जी सन १९०७ से १९६३ ई० तक निरन्तर घूमते रहे। अपने वैवाहिक दिनों में कुछ वर्ष ही वे मसूरी में एक स्थान पर बंध कर रहे थे। उनकी इन यात्राओं को देखकर फाह्यान और ह्यूनत्सांग की स्मृति हो आती है। वे असाधारण घुमक्कड थे— इस पथ के अद्वितीय पथिक थे किसी के अनन्तर वे नहीं थे। प्रथम श्रेणी के घुमक्कडों के लक्षण जो उन्होंने घुमक्कड शास्त्र में बतलाये हैं, वे उन पर पूर्णरूपेण घटित होते

है।[34] समग्र भारतीय इतिहास म उन जैसा कृतविद्य और कमठ घुमक्कड आज तक नही हुआ। उनके पाँव का हीरे को जजीर कही भी स्थिर नही कर सकी। फैनी मुकर्जी के शब्दा म, 'वे भारत के महान यात्री और घुमक्कड थे। वे इतने दिना के इस जीवन की अविश्रान्त घुमक्कडी के बाद दूसरे लोक की यात्रा पर चले गय। वहा भी वे अपनी घुमक्कडी न छोडेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।"[35] वतासपछी घुमक्कड[36] राहुल के विषय म श्री शिवचन्द्र शर्मा क ये शब्द सवथा साथक है यायावर अनेक बन सकते हैं, किन्तु उनके लिए यह आवश्यक नही है कि वे यायावरी-यावत्ति को अपनाने म तादात्म्य स्थापित कर सकें। राहुल जी जहा होते हैं, बिल्कुल घरया होकर होते हैं, फिर भारी तक की बात उनसे छिपी नही रहता। गहस्थ छिद्र तक से अनभिज्ञ नही रहते। अपरिचिता के परिवार म भी पारिवारिक सदस्यता हासिल करने वाल ऐसे यायावर सोलहवी स अठारहवी शताब्दी तक चीन, जमन, अमरिका और इग्लड मे ही देखे जा सकते थ। बीसवी शताब्दी मे विश्व म ऐसे विरले यायावर राहुल ही हो सकते हैं, द्वितीयो नास्ति। उनका पथ पथिक होना, तान्त्रिको की कृच्छ्र साधना है जो दूसरा के लिए अमिता को लाधना है अनुल्लघय लघ्य सहज ही नही बन पाता।"[37]

राहुल की यायावरी उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को निर्मित करने वाला सव प्रमुख तत्व है। उनका यह व्यक्तित्व उनके यात्रा साहित्य म तो सवत्र प्रदीप्त हो ही रहा है, उनके उपन्यासों एव कहानियो म भी यह व्यक्तित्व मुखरित है। उनके कथा नायक प्राय घुमक्कड हैं। उनकी कथाओ के सूत्र यात्रा विवरणो स विकसित हैं। ऐसा लगता है कि जिन स्थानो का अपने उपन्यासो म राहुल जी ने वणन किया है वे उनके देखे-परखे हैं इनके पाँव उस भूमि पर विचरण कर चुके हैं। यदि यह कहा जाय कि यात्राओ ने ही राहुल जी को लेखक बनाया है तो अतिशयोक्ति न होगी।

राहुल एक राजनीतिक कायकर्ता

राहुल जी के यायावरी व्यक्तित्व के साथ उनके राजनीतिक कायकर्त्ता का व्यक्तित्व विरोधाभास भले ही लगता हो पर उनम विरोध नही है। यदि यह कहा जाए कि उनकी यात्राएँ सोद्देश्य हुआ करती थी तो अनुचित न होगा। अपने घुमक्कड जीवन म समाचार-पत्र पढना उनका नियमित काय था, जिसके माध्यम स वे देश विदेश की राजनीति से सुपरिचित रहते थे। गाधी जी के नेतृत्व मे सचालित असहयोग के आन्दोलन के समाचार ने राहुल जी म नवप्रेरणा जागत की। असहयोग आन्दोलन के नारे की ध्वनि ने घुमक्कड एव धम प्रचारक राहुल के हृदय मे तूफान उठा दिया और यह देशभक्त सनानी असहयोग आन्दोलन मे कूद पडा। इस समय राहुल दक्षिण भारत म कुर्ग प्रदेश म थे। वहाँ स लौटते हुए वे खण्डवा मे एक गौशाला मे ठहरे। यहीं उन्होंने प्रथम राजनीतिक व्याख्यान दिया। दक्षिण स राहुल छपरा पहुचे—साधु वेश म। अपने राजनीति प्रवेश की सूचना उन्होंने जिला काग्रेस कमेटी को दी जिसे लोगो ने साधु की गुस्ताखी समझा पर रामउदार को तो काय करना था।[38]

कांग्रेस में प्रवेश पाकर राहुल ने अपना कार्य अपने चिरपरिचित गाँव परसा से शुरू किया। एकमा में 'चर्खा खद्दर प्रचार' एवं 'मादक द्रव्य निषेध' के आन्दोलनों में भाग लिया। छपरा के बाढ़-पीड़ितों की सहायता की, स्वयं सेवक संगठित किये और शिक्षा का प्रचार किया। परिणामतः अंग्रेज सरकार ने उन्हें छः मास बक्सर जेल में काटे। राहुल जी ने राजनीतिक क्षेत्र में अत्यधिक रुचि एवं अध्यवसाय से काम किया कि सन् १९२३ के चुनाव में वे छपरा जिला कांग्रेस के मंत्री बन गये। इसी वर्ष कांग्रेस में मतभेद उत्पन्न हो गया और उसके दो दल बन गये— अपरिवर्तनवादी और परिवर्तनवादी। परिवर्तनवादी दल कांग्रेस के कार्यक्रम में परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तन चाहता था। राहुल जी परिवर्तनवादी थे। कांग्रेस में मतभेद के कारण एक वर्ष बाद ही उन्होंने त्याग पत्र दे दिया और बिहार चले गये। सन १९२३ ई० में बिहार प्रांतीय कांग्रेस की एक सार्वजनिक सभा में भाषण दिया और चौरी चौरा काण्ड में शहीद होने वाले देशभक्तों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके इस भाषण के कारण उन्हें दो वर्ष का कारावास मिला। ये दो वर्ष हजारीबाग जेल में व्यतीत हुए। जेल से बाहर आने पर उन्होंने छपरा जिले का दौरा किया और मीरगंज के साम्प्रदायिक दंगे में मुसलमानों की जीवन रक्षा की। कांग्रेस के कार्यक्रम में शिथिलता के कारण सन् १९२७-३० तक वे राजनीतिक कार्यक्रमों में भाग न ले सके।

सन् १९३० में भारतीय रंगमंच पर महात्मा गांधी के सत्याग्रह की विशेष चर्चा थी। राहुल जी इन दिनों लंका में थे। यंग इण्डिया में सत्याग्रह के समाचारों को पढ़ कर वे भारत लौट आए। इस समय बिहार के देशभक्तों को गांधीवाद से निराशा हो चुकी थी। वे समाजवाद के आधार पर जन-जागृति चाहते थे। सन १९३२ में 'बिहार सोशलिस्ट पार्टी' की स्थापना हुई और राहुल जी को दूसरा मंत्री चुना गया। गान्धी इर्विन समझौते के बाद सत्याग्रह आन्दोलन साधारण रूप धारण करने लगा और राहुल तीसरी लंका-यात्रा पर चले गये और वहाँ से यूरोप।

यूरोप यात्रा में राहुल जी ने इंगलैण्ड और दूसरे यूरोपीय देशों के जीवन का सूक्ष्मता से अध्ययन किया। इस समय तक राहुल कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित हो चुके थे। लन्दन में उनका अधिकतर समय मार्क्स लेनिन और स्तालिन के ग्रन्थों के अध्ययन में व्यतीत हुआ। तदनन्तर सन १९३८ तक राहुल जी ने तिब्बत लद्दाख, जापान कोरिया मंचूरिया ईरान तथा सोवियत भूमि की यात्रा की। इस प्रकार सन् १९२७ से १९३८ तक राहुल भारत की सक्रिय राजनीति से दूर रहे। परन्तु इस समय की उनकी यात्राओं एवं साम्यवादी विचारधारा ने उनकी भविष्य की राजनीतिक दृष्टि को आमूल परिवर्तित कर दिया था। वे सोवियत भूमि के साम्यवादी जीवन से अत्यधिक प्रभावित हो चुके थे। यह भूमि उन्हें साम्यवाद का मूर्त रूप प्रतीत होती थी। फलतः सन् १९३८ में राहुल जी ने जब भारतीय राजनीति में पुनः

प्रवेश किया तो वे पूर्ण साम्यवादी बन चुके थे। सन ३८ के छपरा जिले में होने वाले किसान आंदोलन में राहुल ने जमींदारों का विरोध किया, जेल भी गये और अपने निःस्वार्थ त्याग के कारण वे किसानों के सच्चे नेता बन गये।[३९] साम्यवाद में प्रवेश को राहुल जी एक नये जीवन का आरम्भ मानते थे।[४०] सन १९३९ में वर्धा में हुए कम्युनिस्ट पार्टी के अधिवेशन से राहुल जी प्रभावित हुए। इसी वर्ष 'बिहार कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना हुई और राहुल जी इस पार्टी के सदस्य बन गये।[४१] और तब से आजीवन वे साम्यवादी ही रहे। यद्यपि पार्टी से वे अलग भी हुए मतभेदों के कारण, पर विचारों से वे सदैव साम्यवादी ही बने रहे।[४२]

देश विदेश की यात्राओं में राहुल जी का साम्यवाद में अडिग विश्वास हो गया था। वह उनके लिए मानवतावाद का पर्याय था। वे मानव विकास के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग साम्यवाद को ही मानते थे और भारत के योगक्षेम के लिए उसे अनिवार्य समझते थे। साम्यवाद राहुल को अत्यन्त प्रिय था। वे लिखते हैं—"मुझे व्यक्ति के अलग अलग जीवन की अपेक्षा समष्टि का सामूहिक जीवन सदा ही अधिक पसंद रहा। राजनीतिक कार्यों में पड़ने के बाद तो मुझे और पता लगने लगा कि एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। क्रांति के संचालन के लिए जबर्दस्त सुसंगठित सेना होनी चाहिए। मैंने कम्युनिस्ट पार्टी को ऐसे रूप में पाया।"[४३] कांग्रेस की अपेक्षा मार्क्सवादी साम्यवाद राहुल को इसलिए प्रिय था कि वह आर्थिक समता एवं आर्थिक स्वराज्य की माँग करता है और गरीबों एवं मजदूरों को दुःखों एवं चिन्ताओं से मुक्त करता है। गांधीवाद और भूदान आंदोलन को वे अनुपयोगी मानते थे। उनकी दृष्टि में अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय राजनीति में गांधीवादी रास्ता देश के आत्मघात का रास्ता है[४४] और सभी कूड़ा-करकट सभी दमघोटू स्थितियों को हटाने का एक ही मार्ग है वह है लाल भवानी, साम्यवादी क्रान्ति।[४५]

राहुल जी के राजनीतिक व्यक्तित्व की अनेक विशिष्टताएँ हैं। यायावरी की अपेक्षा उन्होंने राजनीति में कम भाग लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि जब वे घुमक्कड़ी से निवृत्त होते अथवा परिस्थितियों की माँग सुनते तो राजनीति में कूद पड़ते। इस तथ्य की ओर उन्होंने स्वयं संकेत किया है "छपरा के मेरे राजनीतिक सहकर्मी अब भी जब-तब मिलते और कभी-कभी कार्यक्षेत्र में जाने के लिए जोर भी देते थे। किन्तु जान पड़ता है मैं प्रकृत्या राजनीति के लिए नहीं बनाया गया—तो भी वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक विधान से मैं संतुष्ट नहीं था, इसीलिए समय-समय पर मैं अपने को काबू नहीं रख पाता था।"[४६] राहुल जी ने यद्यपि सक्रिय रूप में राजनीति में भाग सन १९२१-२७ तथा सन १९३८-४३ में लिया, तथापि अपने घुमक्कड़ी जीवन में भी वे देश की राजनीतिक समस्याओं के प्रति जागरूक रहे।

राजनीति के क्षेत्र में भी राहुल क्रांतिकारी, प्रयोगशील एवं गतिशील रहे हैं। उन्होंने सन १९२१ में कांग्रेस में प्रवेश पाकर राजनीतिक जीवन आरम्भ किया।

सन् २२ मे वे काग्रेस के परिवतनवादी गुट म सम्मिलित हुए। मन् ३२ म वे सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य बने। सन १६३६ म वे मार्क्सवादी बने और आजीवन साम्यवादी रहे। इस प्रकार राहुल जी का राजनीतिक व्यक्तित्व गत्यात्मक एव सत्य के प्रयोगा मे व्यतीत हुआ। राहुल को मार्क्सवाद मानवतावाद के सर्वाधिक निकट लगा।[४७] इस प्रकार राहुल न किसी राजनीतिक मत का अधानुकरण नही किया। वे जब किसी वाद अथवा मत म खोखलापन देखते, उसे छोड स्वतन्त्र माग अपनाते। जब तक कोई राजनीतिक विचारधारा उन्ह बुद्धिग्राह्य प्रतीत न होनी थी, वे कदापि उसका अनुसरण न करते थे। उनके व्यक्तित्व की दो स्पष्टतम विशेषताए थी—सत्यान्वेषण और रूढिया के विरुद्ध सघष। प्रगति की जिस जिस दिशा म रूढियाँ दीवार बनी राहुल जी उसे तोडते गय। एसी ही प्रक्रियाओ के बीच राहुल जी के सबल व्यक्तित्व का निमाण एव प्रगतिवादी चेतना का विकास हुआ। राहुल सत्यजीवी थे, अनुभवा न उन्ह मार्क्सवाद तक पहुचाया। सम्भवत यही कारण है कि उनकी लेखनी सत्य की गाथा लिखत समय इतनी धारदार होती गइ है।[४८]

राजनीतिक क्रान्ति के साथ वे सामाजिक क्रान्ति को भी आवश्यक मानत थ। उन्ह दुख होता था जबकि तथाकथित राजनीतिज्ञ अपने आप को जाति पाति की सकीणता स मुक्त न कर पाते थे और निजी स्वार्थों क लिए पैंतरा बदलते रहत थे।[४६] राहुल रूढिवाद एव छूतछात के कट्टर विरोधी थे और राजनीतिक जीवन म इनके प्रवेश को शाप मानते थे।

राहुल जी की राजनीति उनके देश प्रेम एव देश भक्ति की भावना स युक्त व्यक्तित्व को मुखरित करती है। देश की स्वतन्त्रता उन्हे प्राणा से प्रिय थी। उनकी अभिलाषा थी तुलसी माला फेंककर अब इन हाथो म लगवाऊगा हथकडियाँ और गले म रुद्राक्ष की माला के बदले अगर मर सकू फाँसी का फन्दा लगवा कर तो समझूँगा कि अपना जीवन धन्य हुआ। अब तक साधु बनकर माँगता फिरता रहा था अपने लिए भीख और अब लडाकू बनकर अपने देश की आजादी वसूल करने के लिए लडूँगा। लाखा-करोडा भूखा के मुँह मे रोटी डालने का सकल्प लेकर चल पडूगा एक तूफान बन कर।[५]

राहुल के साहित्यिक व्यक्तित्व को घुमक्कडी के अनन्तर प्रभावित करने वाला दूसरा तत्त्व राजनीति है। राजनीतिक विषय उनकी कृतियो म प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सवत्र आए हैं। मेरे असहयोग के साथी म असहयोग आदोलन के उनके कुछ सहयोगिया क सस्मरण हैं। बाईसवी सदी' उनके मार्क्सवादी बनन से पूव की रचना है। उनका यह स्वप्न सोवियत जीवन म साकार होता हुआ दिखाई देता है। साम्यवाद ही क्या ?' दिमागी गुलामी, आज की राजनीति भागो नही दुनिया को बदलो आदि रचनाओ म साम्यवाद सम्बन्धी अनेक विषया पर चर्चा है। सिंह सेनापति जययौधेय 'मधुरस्वप्न जीने क लिए, वोल्गा के गगा आदि कथाकृतिया म

उनके साम्यवादी विचार अत्यन्त स्पष्ट हैं। राहुल जी के साहित्य म इस प्रकार उनके राजनीतिक विचार सवत्र बिखरे हुए हैं।

राहुल जी की धम दृष्टि

राहुल साकृत्यायन का जन्म वष्णव परिवार म हुआ। इनके नाना रामशरण पाठक वष्णव धम के अनुयायी थे, पर वे कट्टर वष्णव नहीं थे। उन्हें वेदार के गरीर को स्वस्थ एव पुष्ट बनाने के लिए माम मछली पका कर देने म कोई आपत्ति न थी। राहुल दस वष की अवस्था म अपने पिता के सम्पक म आए। उनके पिता गोवधन पाण्डे धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थ। पूजा के बडे नियमो के पालन के कारण वे 'पुजारी' नाम से पुकारे जाते थ। पर वे भी पुरानी परम्पराओं के अधानुयायी न थ। 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' उन्ह स्वीकार न था। ब्राह्मण होते हुए भी वे चिरागी चमार के गव का गया तीर जलाने के लिए ले गए।[५१] विचारो की यही स्वतन्त्रता राहुल के जीवन म आगे चल कर प्रस्फुटित हुई। बचपन म राहुल को नाना और पिता के धार्मिक सस्कार प्राप्त हुए जिनम रूढिवादिता का कहीं लेश नहीं था। राहुल जी के आरम्भिक धम-सम्बन्धी विचारो को प्रभावित करने वाले व्यक्तियों म बाबा परमहस उल्लेख्य हैं। राहुल के पिता जी की परमहस जी म आस्था थी। पिता के साथ वे भी परमहस की कुटिया म जाते थे। इस कुटिया म बाबा हरिकरण दास जी रहते थ जिन्होंने राहुल को वेदान्त का उपदेश दिया। राहुल १५ १६ वष की आयु म पक्के वेदान्ती बन गये थे। "ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्म व नापर" के सूत्र को कण्ठस्थ करके वे सन्यासी बनने की धुन म बद्रीनाथ की ओर भाग निकले। वेदान्त और वराग्य के अतिरिक्त उन्ह सब कुछ असह्य प्रतीत होता था। परन्तु शीघ्र ही राहुल जी के विचारो म परिवतन आया। वे वेदान्ती से निवमक्त जन और रुद्राष्टाध्यायी तथा महिम्न-स्तोत्र का पारायण करने लगे। सन् १९११ म राहुल जी मन्त्र साधना की ओर आकृष्ट हुए। स्वामी पूर्णानन्द से उन्होंने मन्त्र साधना सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन किया और उनकी प्रेरणा से पूरे नियम के साथ आठ दिन तक दुर्गा के दशनाथ मन्त्र-जप किया। पर जगदम्बा के दशन न हुए और जीवन व्यथ समझ कर आत्महत्या की सोच ली और धतूरे के बीज खा लिए। मरते मरते बचे। इस मन्त्र-साधना की व्यथता को देख राहुल जी म परिवतन आया। अपनी इस अवस्था के विषय म वे लिखते हैं, "धार्मिक वायुमण्डल मे उडने के साथ ठोस पृथ्वी पर भी पर रखना चाहिए इधर भी मेरा ख्याल गया।'[५२]

सन १९१२ म राहुल जी परसामठ के महन्त लछमनदास के सम्पक म आए और पुन वष्णव बन गये। केदारनाथ से वे 'रामउदारदास' बने। उनका अधिकतर समय साधुओं की सी दिनचर्या म बीतता परन्तु यहाँ वे असन्तुष्ट से ही रहते थे। परसामठ का निवास राहुल जी के लिए बौद्धिक अनशन था। उन्ह वहाँ

का सारा वातावरण सडाल्पूण प्रतीत होता था।[२३] राहुल जी इस कूपमण्डूकता के वातावरण से भाग निकलना चाहते थे। सन १९१४ म अयोध्या मे राहुल जी आय समाज के ससग म आए। आय समाज के भाषणो म मूर्तिपूजा, बहुदेववाद आदि का खण्डन होता था। राहुल जी आय समाज की ओर आकृष्ट हुए—'मैं अपने अतस्तल म एक सकीण गडहिया से निकल कर विशाल जलाशय म जाने की मक वेदना को अनुभव कर रहा था।'[२४] सन १९१८ म शिक्षा प्राप्ति के लिए राहुल जी आय मुसाफिर विद्यालय आगरा म प्रविष्ट हुए। इस विद्यालय म विद्यार्थियो को आय समाज के प्रचारक के रूप म तयार किया जाता था। यहा उन्हे नय प्रकाश का अनुभव हुआ 'वहा मेरे विचार वध्या समान थे किन्तु यहाँ आय समाज म अपनी बुद्धि का ज्यादा स्वच्छन्द, ज्यादा अनुकूल परिस्थितिया म पा रहा था।'[२५] आयसमाज को राहुल उन दिनो सावभौम धम समझते थे।[२६] उनका विश्वास था कि आय समाज ने प्राणो की आहुति देकर और पीडितो की सेवा करके अपने लिए आकषक इतिहास तयार किया था।[२७] राहुल जी ने स्वामी दयानन्द के विषय मे यहा तक कह दिया था— मैं दयानन्द के एक एक वाक्य को वेदवाक्य मानता हू।'[२८] आय मुसाफिर विद्यालय आगरा से शिक्षा प्राप्त कर कुछ समय तक राहुल आय समाज के प्रचारक के रूप म काय करते रहे।

आय-समाज भी चिरकाल तक राहुल जी को आकृष्ट नही कर सका। कई वर्षो से महात्मा बुद्ध के प्रति उनके मन म श्रद्धा जागत हो चुकी थी। उनकी जीवनी के पठन तथा बौद्ध धम के तीथ-स्थानो के पयटन के उपरान्त बौद्ध धम के प्रति उनका अनुराग बढ़ने लगा। पर अभी उनका ईश्वर के प्रति अडिग विश्वास था।[२९] सन् १९२६ म राहुल लका गय। यहाँ के वातावरण ने उनके हृदय म बौद्ध धम के प्रति और अधिक अनुराग पदा कर दिया। राहुल अभी तक ईश्वर अनीश्वर के अन्तद्वन्द्व म पडे थे। अन्तत वे इस निष्कष पर पहुचे — ईश्वर और बुद्ध साथ नही रह सकते यह साफ हो गया और यह भी स्पष्ट मालूम होने लगा कि ईश्वर कवल काल्पनिक चीज है बुद्ध यथाथ वक्ता है।[६] उनकी दृष्टि म बुद्ध मनुष्य की स्वतन्त्र बुद्धि का महत्त्व देने वाले थे और सत्य पर उनका विश्वास था। यहा से राहुल जी ने ईश्वरवाद को सदा के लिए त्याग दिया और बौद्ध धम के अनुयायी बनकर त्रिपिटकाचाय बन गय। सन् १९३० म राहुल जी ने बौद्ध धम म प्रव्रज्या ली और रामउदार से राहुल सांकृत्यायन बने। राहुल जी केवल बौद्ध भिक्षु ही नही बने, बौद्ध धम के प्रचारक भी बन गये। बौद्ध धम के प्रचार के लिए वे भदन्त आनन्द कौसल्यायन के साथ यूरोप गये और लका तथा तिब्बत की कई यात्राएं की। बौद्ध धम के ग्रन्थो की खोज एव बौद्ध-ग्रन्थो के पारायण से राहुल जी बौद्ध धम के प्रकाण्ड पडित बन गये। रत्नाकर पाण्डेय के शब्दो म 'बौद्ध साहित्य का महापण्डित ने बहुत कुछ दिया। स्वतन्त्रता के लिए सघषशील भारत म बौद्ध धम और साहित्य का पतन स्वाभाविक था। ऐसे समय कुछ भिक्षुगण अपने भौतिक यत्नो से उसकी सुरक्षा म

लवलीन थे। यदि राहुल का श्रमशील और नव्य भावनाओं से ओतप्रोत क्रान्तदर्शी व्यक्तित्व इस क्षेत्र में मशाल न जलाता तो बौद्ध साहित्य का विकास सम्भारहीन होकर आज भी ठिठराया होता और जन-जीवन में स्वतन्त्रता के उपरान्त भी उसकी युगविधायिनी मूल्यगत स्थापना असम्भव थी।'[११] पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी लिखते हैं— राहुल जी बौद्धों के शून्यवाद क्षणिकवाद और विज्ञानवाद का इतना सरल निर्वचन करते थे कि साधारण जन की बुद्धि में भी निर्वचन का कुछ अंश समा जाता था। बौद्धों के पांच स्कन्धों का विश्लेषण सुनकर लोगों का हृदय उल्लास से भर जाता था।'[१२]

सन् १९३५ में राहुल जी के धर्म सम्बन्धी विचारों में पुनः परिवर्तन आया। बौद्धधर्म से भी उनका विश्वास उठने लगा। बौद्धों का निर्वाण उन्हें निरर्थक प्रतीत होने लगा। द्वितीय रूस-यात्रा ने उनकी नास्तिकता को और भी दृढ़ कर दिया। ईश्वर और धर्म में अब उनका किंचित् भी विश्वास न रहा। अक्तूबर १९३६ में राहुल जी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन और साथ ही पूर्णतया नास्तिक एवं मार्क्स वादी भौतिकवाद के अनुयायी भी —जन्म मृत्यु ईश्वर धर्म के विचार से सुदूर। धर्म सम्बन्धी सभी बातें उन्हें व्यर्थ प्रतीत होते थे और ईश्वर की सम्भावना तक उन्हें स्वीकार्य न थी।[१३] द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन उन्हें सत्य प्रतीत होने लगा क्योंकि 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद अपने को प्रचलित तर्कशास्त्र की कोटि में रखने के लिए तैयार नहीं क्योंकि वह दिमागी कसरत को नहीं बल्कि प्रयोग को परम प्रमाण मानता है यही उसके लिए सत्य की सर्वश्रेष्ठ कसौटी है।[१४] इस प्रकार राहुल जी की धर्म दृष्टि अन्ततः भौतिकवाद पर आकर स्थिर हुई। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद उनके लिए अत्यन्त कर्मानिक था। वह जीवन और जगत से पलायनवादी मार्ग न होकर दुनिया को परिवर्तित करने का मार्ग था। जीवनपर्यन्त राहुल मार्क्सवादी भौतिकवाद में दृढ़ विश्वास बनाये रखे और उन्होंने स्मृति-लोप एवं बेसुधपन की अवस्था में भी 'ईश्वर' का नाम अपने होठों पर नहीं आने दिया।

राहुल जी की धर्म दृष्टि की उपर्युक्त विवेचना के अनन्तर हम कह सकते हैं कि उनकी धर्म दृष्टि भी गत्यात्मक एवं प्रगतिशील थी। उन्होंने प्रत्येक धार्मिक मत को उपयोगिता के निकष पर रख कर परखा और उन्हें प्रतीत होने लगा कि तथाकथित धर्म जीवन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं। राहुल जी का यदि कोई धर्म था तो वह था मानवतावाद। परिणामतः वे वेदान्त शैव, वैष्णव मत आर्य समाज को लांघते हुए बौद्ध बन और बौद्ध धर्म के साथ भी उनका वहीं तक समझौता रहा जहाँ तक वह मानवतावादी था। अन्ततः भौतिकवाद में उन्हें मानवतावाद के दर्शन हुए। राहुल जी की धर्म-दृष्टि के निरन्तर विकास का परिचय उनके इन शब्दों से मिलता है— आर्य-समाज के स्वतन्त्र विचारों के बाद मैं बुद्ध के पास पहुँचा और उनके अनीश्वरवाद, विचार स्वातन्त्र्यवाद, आर्थिक समतावाद में

बहुत प्रभावित हुआ। उसके बाद मार्क्स के विचारों को अपनाना मुझे बिल्कुल स्वाभाविक-सा मालूम हुआ। मार्क्स को दुनिया और उसकी वस्तुओं की व्याख्या नहीं करनी थी बल्कि उन्हें बदलना था।"[१४] इस प्रकार राहुल जी का धर्म किसी तथाकथित धर्म का रूप नहीं है वह कर्त्तव्य, 'मानवतावाद एवं वैज्ञानिक भौतिकवाद का पर्यायवाची है।

राहुल जी की धर्म दृष्टि ने उनके साहित्य सृजन को भी प्रभावित किया है। अपने धार्मिक अनुभवों के आधार पर उन्होंने कई रचनाएं हिन्दी साहित्य को प्रदान की है। महामानव बुद्ध 'बौद्ध दर्शन दर्शन दिग्दर्शन, दीघ निकाय वैज्ञानिक भौतिकवाद आदि ऐसी ही कृतियां हैं। इस क्षेत्र में राहुल जी आधुनिक हिन्दी साहित्य में निस्सन्देह अग्रणी है।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

त्रिपिटकाचार्य महापण्डित राहुल सांकृत्यायन बहुत विद्वान थे। शैशव से ही केदारनाथ में उत्कट ज्ञान पिपासा थी अदम्य महत्त्वाकांक्षा थी वे विद्यावारिधि बनना ही नहीं चाहते थे, जगतीतल के समस्त विद्यासागरों को घोल कर पी जाना भी चाहते थे। [१५] आचार्य पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी राहुल जी की बहुज्ञता के विषय में लिखते हैं 'राहुल बहुश्रुत और बहुज्ञ थे। बौद्ध धर्म व दर्शन के विद्वान थे। भारतीय इतिहास पुरातत्त्व भाषा विज्ञान लिपि विज्ञान खगोल विज्ञान मनोविज्ञान समाज विज्ञान कोष विज्ञान अंग्रेजी संस्कृत, प्राकृत ईरानी, अरबी पाली हिन्दी आदि दर्जनों भाषाओं विद्याओं और कलाओं के पण्डित थे। आपके बहुमुख ज्ञान विज्ञान का पाण्डित्य देख कर ही प्रसिद्ध पंडितों ने आपको महापण्डित की उपाधि दी थी। [१७] इस प्रकार राहुल विश्वविख्यात असाधारण भारतीय विद्वान हैं। वे विषय की गहराई में जाकर नवलतम उपलब्धियों के सम्बन्ध में विचार कर तत्त्व दर्शन देने वाले प्रकाण्ड विद्वान हैं।

राहुल जी अपने विशाल साहित्य निकेतन के स्वयं निर्माता शिल्पी थे। उनकी योजनाएं अपनी थी और उन्हें पूर्ण करने के लिए उनमें अदभुत परिश्रम शक्ति थी। वे निरंतर ज्ञान की सीमाओं को विस्तीर्ण करते रहे। उनमें ज्ञानार्जन के लिए विलक्षण कर्मठता एवं क्रियाशीलता थी। श्री सन्तराम बी० ए० लिखते हैं राहुल जी में उत्कट ज्ञान पिपासा थी। ज्ञान वृद्धि के लिए वे कठोर-से कठोर परिश्रम करने में तनिक भी हिचकिचाते न थे। संस्कृत साहित्य का गम्भीर अध्ययन करने के उद्देश्य से वे साधु बन गये। [१८] भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी राहुल जी के गुणों में उनकी प्रखर मेधा और स्वतन्त्र चिन्तन का विशिष्ट मानते हैं।[१९] श्री बनारसीदास चतुर्वेदी लिखते हैं राहुल जी में अनेक गुण हैं अदमुत परिश्रम शक्ति है अदम्य पौरुष है गम्भीर विद्वत्ता है——कुल मिलाकर हिन्दी जगत में वे एक बेजोड आदमी हैं और हम सब उन पर अभिमान कर सकते हैं। [*] श्री अमृतराय उनकी कर्मठता के विषय

मे कहते हैं, राहुल तो एक स्वप्न का नाम है, एक गहरी सामाजिक दृष्टि का— और उसको चरितार्थ करने वाली एक तेजस्वी, एकाग्र, अजेय, हठीली अनथक क्रियाशीलता का। जितना काम इस आदमी ने अकेले किया है उतना शायद दस बीस मिलकर भी न कर सकते।——राहुल एक व्यक्ति नहीं हैं, जिस साधारण अर्थ में हम इस शब्द को ग्रहण करते हैं,——वह एक में अनेक व्यक्ति हैं।'[51] वस्तुतः राहुल के जीवन की सिद्धि उनकी कर्मठता एवं क्रियाशीलता है, यही उनका सबसे बड़ा सुख है और यही उनकी विद्वता एवं पाण्डित्य उपलब्धि का मूल। डा० कमला सांकृत्यायन राहुल जी की कर्मठता के विषय में लिखती हैं 'मेरे पूज्य स्वर्गीय राहुल जी अपने काम करने में जितने कर्मठ थे, उतने ही वे दूसरों से भी अपेक्षा रखते थे। उनमें आलस्य नाममात्र को भी न था। आज के काम को कल के लिए छोड़ना सदैव उनके स्वभाव के विरुद्ध था। वे अवसर ये पंक्तियाँ दोहराया करते थे 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब' और उनका सारा जीवन इसी सिद्धान्त पर अटल रहा।'[52] रत्नाकर पांडेय के शब्दों में "उन्होंने कई तथा अनेक अवसरों पर ऐसे ऐसे महान ग्रन्थों की सृष्टि की, जिसे अनेक महत्वपूर्ण संस्थाएँ कई वर्षों के श्रम से भी पूर्ण न कर पाती। राहुल जी द्वारा बाईस खच्चरों पर लाद कर तिब्बत से लाया गया विशाल बौद्ध-साहित्य हमारे शोध के लिए ऐतिहासिक धरोहर है।"[53] वस्तुतः महापण्डित राहुल में जिज्ञासु मेधा, सजग सक्रियता, असीम साहस एवं उद्दाम पौरुष था जिसके बल पर उन्होंने अनथक ज्ञानार्जन किया एवं विपुल साहित्य साधना की।

महापण्डित राहुल में प्रकाण्ड पाण्डित्य के साथ पण्डितजन सुलभ विनम्रता, कृतज्ञता एवं सरलता भी थी। उनमें अनथक परिश्रम, सत्य के प्रति अडिग प्रेम और साहस के साथ व्यक्तिगत निश्छल उदारता भी थी। भगवतशरण उपाध्याय के शब्दों में, 'श्री राहुल का व्यक्तित्व सरल और आकर्षक है, यद्यपि उनकी मेधा की गहराइयाँ बहुत हैं। उनका हृदय सर्वथा बाहरी तल पर है जिसे समझने में किसी को कभी धोखा नहीं हो सकता'[54]।

महापण्डित राहुल कृतज्ञता के साकार रूप थे। उनकी जीवन यात्रा में जो लोग उनके मानसिक सम्बल बने, जिनसे उन्होंने मार्ग दर्शन पाया, कुछ भी सीखा, उनके प्रति वे सदा विनयावनत ही नहीं रहे, अनेकों का मौन उपकार भी उन्होंने किया था। जिस किसी से भी राहुल ने प्रेरणा प्राप्त की, उसके वे चिर कृतज्ञ हो गये। इनमें से कुछ मनीषियों को उन्होंने अपने ग्रन्थ समर्पित किये हैं। अपनी 'जीवन यात्रा' तथा 'जिनका मैं कृतज्ञ' में उन्होंने अपने बुजुर्गों, बन्धुओं एवं मित्रों के ऐतिहासिक संस्मरण अंकित किए हैं। राहुल सांकृत्यायन कृतज्ञताज्ञापन को कितना महत्व देते हैं उन्हीं के शब्दों में पठनीय है 'जिनका मैं कृतज्ञ लिख कर मैं उस ऋण से उऋण होना चाहता हूँ, जो इन बुजुर्गों, बन्धुओं और मित्रों का मेरे ऊपर है।——

—दनम सिफ वही नही हैं, जिनसे मैंन माग दशन पाया या कुछ सीखा, बल्कि ऐसे भी पुरप हैं जिनका सम्पक मेरे मानसिक सम्बल के रूप म जीवन यात्रा म सहायक हुआ।———— कृतज्ञ और कृतवती मनुष्य को सत्य होना चाहिए।[७५] वस्तुत राहुल विद्या विनय सम्पन्न महापण्डित थे। विस्तीण ससार म पयटन कर यत्र तत्र विकीण ज्ञान कणा को चुनना—यही राहुल का अखण्ड व्रत था। जहा से भी उन्ह यत्किंचित ज्ञानोपलब्धि हुई उसके प्रति श्रद्धावनत होकर उन्हाने कृतज्ञता ज्ञापित की है।

अन्तर्राष्ट्रीय युगपण्डित राहुल ने विदेशा म ह्यूनसाग और फाह्यान की भाँति घूमकर केवल दशन का व्यामोह नही रखा, अपितु हिन्दी प्राच्य भारतीय वाङ्मय, तिब्बती मस्कृत, भाषा विज्ञान आदि के महत्त्वपूण प्राध्यापक रहकर दो दो बार लेनिनग्राड और लका म भारतीय ज्ञान की अजस्र सास्कृतिक धारा का गुरुत्वस्रात भी बहाया। अपनी इस विद्वता और पाण्डित्य के कारण राहुल को भारतीय जनता से भारतीय विद्वत्जगत से बहुत प्यार मिला बहुत सम्मान मिला। भारत के बाहर विदेशी विद्वान भी राहुल जी क पाण्डित्य की प्रशसा करत थे। लका के विद्यालकार विश्वविद्यालय न इस भारतीय पण्डित को साहित्य चक्रवर्ती की उपाधि से विभूषित किया[७६]। विद्यालकार विश्वविद्यालय के कुलपति किरिवत्तुडुवे प्रज्ञासार नायकपाद का कथन है राहुल जी हमारे विश्वविद्यालय की शोभा थे विद्यालकार का अलकार थे उन्हान अपनी विद्वता, सरलता और सबस बढ़कर अपनी विनम्रता से हम सब के मन का मोह लिया था[७७]।

राहुल जी की प्रतिभा का क्षेत्र अत्यन्त विशद और बहुरंगी था। उनका लेखन-पथ अत्यन्त बीहड एव कठिन था। वस्तुत व अध्ययन और लेखन के बीहड पथ के महायायावर थे। उन्हाने दशन इतिहास भाषा शास्त्र साम्यवाद, उपन्यास, कहानी एकाकी यात्रावणन, सस्मरण जावनी काव्य, निबन्ध सभी विषया पर गम्भीरतापूवक लिखा। साथ ही अपने साहस और परिश्रम स रहस्यमयी ऐतिहासिक बहुमूल्य पाथियाँ और साहसिक यात्री की उज्ज्वल जीवन-गाथा छाड गये हैं।

राहुल जी ने विशाल साहित्य रचना द्वारा अपने महापाण्डित्य का परिचय दिया है। उनका कृतित्व गुणात्मक एव परिमाणात्मक वविध्य स युक्त है। उनकी प्रकाशित अप्रकाशित मौलिक व अनूदित रचनाओं की सख्या १५० स कम नही है। उनकी रचनाओं म विधाओं की विविधता है साथ ही वे विषय-ववध्य भी लिए हुए हैं। मध्य एशिया का इतिहास उनके गहन इतिहास प्रेम का परिचायक है तो 'दशन दिग्दशन' उनका गम्भीर एव पाण्डित्यपूण दशन-ग्रन्थ है। 'आज की राजनीति तथा भागो नहीं दुनिया का बदलो' म साधारण शली एव सरल भाषा म साम्यवाद का सन्देश है। पारिभाषिक कोष निमाण के द्वारा उन्हाने सरकारी काम काज के लिए हिन्दी के प्रयाग की नींव रखन का ऐतिहासिक काय किया। इसी प्रकार वाल्गा से गगा उनका कहानी-साहित्य का अनुपम रत्न है तो सिंह-सेनापति, 'जय-यौधेय तथा

'मधुरस्वप्न एतिहासिक उपन्यास का आदर्श हैं। देश विदेश की यात्राओं के विवरण उनके यात्रा साहित्य म मिलत हैं तो देश विदेश की महान विभूतियों का चित्रण उनकी जीवनी सम्बन्धी रचनाओं म प्राप्त होता है। हिन्दी काव्य धारा' तथा दक्खिनी हिन्दी काव्य धारा' उनकी दो साहित्य के इतिहास स सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। अभिप्राय यह कि महापण्डित राहुल का साहित्य विषय, गुण एव परिमाण-सभी दृष्टियों से वैविध्ययुक्त है। उससे हिन्दी साहित्य के भंडार की महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

राहुल जी का कई भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था। डॉ० कमला सांकृत्यायन के अनुसार, आरम्भ म व ३६ भाषाएँ जानते थे। बाद म काम न पडने स व कितनी ही भाषाएँ भूल गये थे। १६ भाषाओं को व भली प्रकार पढते, लिखते व समझते थे[८८]। हिन्दी भाषा के प्रति उनका अनन्य अनुराग था। रत्नाकर पाण्डेय के शब्दो म, 'उनका धर्म हिन्दी के अतिरिक्त कुछ नहीं था और उनका कार्य हिन्दी धर्म की पूर्णता की ओर सदैव सतत उन्मुख रहा'[८९]। राहुल जी हिन्दी के प्रति कभी कर्त्तव्य च्युत नहीं हुए। उन जैसे हिन्दी के निष्ठावान समर्थक विरले ही होते हैं। व राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए जिये और उसी के लिए उन्होंने अपने को होम कर दिया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षपद से उन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के समर्थन म भाषण दिये। इसके लिए उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी की घोषित नीति की भी चिन्ता नहीं की[९१]। उनकी हिन्दी को कितनी देन है, इस विषय म पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी का कथन ध्यातव्य है उन्होंने अपने ज्ञान विज्ञान से हिन्दी का जो भण्डार भरा है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। हिन्दी के उद्धार और उन्नयन के लिए उन्होंने बड बडे कष्ट उठाये। इसके लिए उन्होंने वन-वन की, निबिड कान्तारों की खाक छान डाली। वे खाते-पीते, उठते-बैठते बोलते-बतराते, सदा हिन्दी के विकास की चिन्ता म रहते थे। वे चाहते थ कि हिन्दी सर्वांगपूर्ण हो—वह सभी विषयों के ग्रन्थों का आगार बन जाय।—-——वस्तुत राहुल जी जीते-जागते कोष थे[९२]।

राहुल जी महापण्डित थे। पर कभी उन्होंने सत्य की प्राप्ति का दावा नहीं किया था—केवल सत्य के समीपतम प्रदेश म पहुचने का ही दावा करते थ। उनमे वचस्व था, विशिष्ट प्रज्ञा और प्रखर प्रतिभा थी, जिसने सारे हिन्दी संसार को आलोकित कर दिया था। उनके पाण्डित्य और विशिष्ट शोध का लोहा भारत लका और तिब्बत के विद्वान् ही नहीं मानते थे विश्वविख्यात जान मार्शल (लन्दन) सिलवन लेवी (परिस) स्टनकोनो (नारवे), आरेल स्टाइन (इग्लण्ड) एल० डी० बर्नेट (लदन), जार्ज ग्रियर्सन (लदन), जार्ज ग्रोमलिये (कम्बोडिया), क० हमदा (टोकियो) माङग म (बर्मा), आटास्टाइन (चेकोस्लावाकिया) ओल्डेनबर्ग (रूस), विन्टरनीट्ज (चेकोस्लोवाकिया) फ्रैंकलिन इजटन (अमेरिका), ज० वागल (हालैंड), जी० तुमी (इटली) आदि विद्वान् भी मानते थ[९३]।

महामानव राहुल

राहुल जी महापण्डित ही नहीं सच्चे अर्थों म महामानव भी थे। उनम लोभ क्रोध एव अहकार का लेश भी न था। उनकी बातचीत का ढग इतना सरल और सहज होना था कि अपरिचित भी चार छ वाक्या म ही उनसे आत्मीयता मान बठता था। निरभिमानिता राहुल जी के प्रत्येक व्यवहार की सगिनी थी। दिखावा उह न तो किसी व्यवहार म रुचिकर था न व्याख्यान तथा बातचीत के सदभ म। पण्डित रामगोविन्द त्रिवदी लिखते हैं उनकी बठका की सर्वाधिक उल्लेखनीय वस्तु है राहुल जी के मन प्राणा को रस स परिप्लुत करने वाली विनोदप्रियता——— —राहुल जी के लिए 'सम्पूर्ण जगत्' व नन्दनवनम् था। वे जिस परिवार म ठहरते उसक एक सदस्य बन जाते थे। देश म एसे अनेक परिवार हैं जो समझते है कि राहुल जी हमारे थे, हमारे परिवार को और परिवार के बच्चो को सबसे अधिक मानते थे[८४]।

राहुल जी को प्रकृति ने निमल मेधा, विलक्षण प्रतिभा, सहज विमोहिनी काया के साथ नवनीत सा मृदु हृदय प्रदान किया था। उनकी गम्भीर विवचना स विभासित आँखो मे बोधिसत्व की अनन्त करुणा की छाया थी। राहुल जी म पौरुष क साथ भावुकता एव करुणा भी थी। हिमालय की तरह गम्भीर व्यक्तित्व वाले महापण्डित को भावुकता कभी-कभी परास्त कर दती थी। डा० कमला साकृत्यायन के शा । म बाहर से धीर गम्भीर होन पर भी उनके हृदय म असीम करुणा थी[८५]। वस्तुत राहुल लोकोत्तर व्यक्ति थ। जहाँ सामाजिक कुरूपताओ के प्रति वे अत्यधिक कठोर थे वहाँ व्यक्तिगत स्तर पर वे कुसुम से भी अधिक कोमल थे। जया व जेता के नाम लिखे उनके पत्रा म उनका करुण पितृ हृदय उमडता हुआ दिखाई देता है[८६]।

मानव को सारे गुण दने की ससार रचयिता की प्रवृत्ति ही नहा है। सब का गुणावली म कही न कहा कुछ कमी रह ही जाती है। इसीलिए तो वह मानव है। राहुल जी म भी कुछ कमियाँ थी। अभक्ष्य भक्षण की वृत्ति तथा उसका अत्यधिक प्रचार बौद्ध दाशनिका क समक्ष शकराचाय को तुच्छ मानने की प्रवृत्ति, गोस्वामी तुलसी को स्वयभू का अनुकर्त्ता मानने का पूर्वाग्रह विरक्तावस्था म रूस म परिणय ति बत म एक तिब्बती युवती से प्रणय सम्ब ध प्रथम परिणीता का परित्याग बौद्ध धम की तुलना म हिन्दू धम को नगण्य स्वीकारना आदि कुछ त्रुटियो की ओर सकेत किया जा सकता है पर राहुल जी क प्रभूत गुणा म उनकी य दुबलताएँ सहज ही विलुप्त हा जाती हैं। फिर गुण और दोष परस्पर सापेक्ष होते हैं। एक की दृष्टि म जो दुराग्रह है दूसरे की दृष्टि म वही दृढनिश्चय का प्रमाण अत य कमियाँ राहुल जी के अपने सिद्धाता के अनुसार गुण मान जा सकते हैं। पर इन्हें मानव-सुलभ दुबलताएँ मानना ही उचित प्रतीत होता है।

राहुल जी महामानव थे और मानव को जीवन व जगत् का केन्द्र मानते थे।

उनका मानव अपने भाग्य का स्वय निमाता है, अच्छे-बुरे कर्मों को चुनने के लिए स्वतन्त्र है। वह वास्तविक जगत का मनुष्य है। वह वस्तुवादी है और ठीक-ठीक दमता है भ्रमा से वह मुक्त है। राहुल जी स्वय इसी आदमी क प्रतीक महा मानव थे।

राहुल जी सवतन्त्र स्वतन्त्र थ। पारिवारिक व सामाजिक बधना स मुक्त होकर ही व इतना गुरु काय करन म समथ हुए। वे विशुद्ध बुद्धिवादी थ। बुद्धि वमव के बल पर उन्होंने हिन्दी ससार म धूम मचा दी। व स्वनिर्मित पुरुष थ कवल गयन अध्यव साय स महापण्डित हो गय थे। आचाय पण्डित रामगोविन्द त्रिवदी क शब्दा म, 'वे विनय तप गाम्भीय की मूर्ति थे। स्वाध्याय म लीन दान्त शान्त ऋषिकुमार थ और ग्रन्थ प्रणयन म लघुव्यास थ। उनका प्रोज्ज्वल और प्रदीप्त मुखमण्डल ही कहता था कि सम्य, शिष्ट और अधिकारी विद्वान थ। उनकी आराध्या शारदा थी, उसी की सवा म निरन्तर रमण करत थे। व दश की विशेषत हिन्दी की विभूति थे। वे उच्चकोटि क मनुष्य थे—चमत्कारी पुरुष, ज्योति-पुज[८]। निस्सन्देह वाणी, विचार और कम तीना की विभूतिया स सम्पन्न राहुल का महाप्राण क्रान्तिकारी व्यक्तित्व विश्व म विरल है। अपनी प्रसिद्ध कृति घुमक्कड शास्त्र की इन पक्तिया म राहुल जी न अपना व्यक्तित्व एव जीवन दशन ही उडेल दिया है—'बिना अपने कलवर की आग बढाय अपन जीवित समय म विश्व का कुछ देना और सदा के लिए शून्य म विलीन हो जाना, यह कल्पना कितना के लिए अनाकषक मालूम होगी किन्तु कितने ही एस भी विचारशील हो सकत हैं, जो अपना काम करने के बाद बालू क पदचिह्नो की भाँति विलीन हो जान क विचार से भयभीत नहा, बल्कि प्रसन्न ही होग[९]।

(ख) राहुल साकृत्यायन का कृतित्व

बहुमुखी प्रतिभा बहुमुखी कतित्व

महापण्डित राहुल साकृत्यायन की प्रतिभा बहुमुखी थी। भारतीय समाज के नवजागरण म उनकी देन अद्वितीय है। राहुल जी न देश विदेश का भ्रमण किया, भारतीय राजनीति में भाग लिया धम-सस्थानो म घूम कर तथा सन्यासिया के मठो म रह कर सार तत्त्व की खोज करत रहे। इतने व्यस्त जीवन म भी उन्होंने विपुल साहित्य रचना की जो किसी ग्रन्थवसायी एव कमठ साहित्यकार स ही सम्भव थी। इस क्षेत्र म वे अनन्य हैं। राहुल जी दजनो भाषाए जानत थ। पाली, सस्कृत, तिब्बती भाषा शास्त्र, दशन-शास्त्र इतिहास—ज्ञान की अनेक शाखाओं क प्रकाण्ड अप्रतिम महापण्डित थ। राहुल जी न 'दो सौ स अधिक ग्रन्थ लिख जिनम उन्होंने ज्ञान की परिधि का विस्तार किया। उन्होंने उपन्यास लिख, कहानियाँ लिखा, गीत लिखे, नाटक लिख। उन्होंने आत्मकथा लिखी, जीवनियाँ लिखा, दशन-सम्बन्धी

ग्रन्थ लिखे इतिहास लिखे यात्रा वर्णन लिखे, राजनीति पर लिखा। उन्होंने शोध ग्रन्थ लिखे और हिन्दी के आदिकालीन साहित्य पर नया प्रकाश डाला। वे प्रकाण्ड पण्डित थे और साथ ही कर्मयोगी भी थे। वे दुनिया को समझना ही नहीं चाहते थे, वे दुनिया को बदलना भी चाहते थे।'[८] वस्तुतः राहुल जी का रचना-कार्य वृहद्, अनेकमुखी एवं प्रेरणाप्रद है जिसे देख आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। श्री आदित्य मिश्र के शब्दों में, 'महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की साहित्यिक प्रतिभा का उन्मेष, विकास और प्रसार स्वयं एक ग्रन्थ का विषय है। भारतीय नवजागरण में साहित्यकारों का जो सहयोग रहा है उसमें राहुल का साहित्य अग्रणी रहा है। वस्तुतः उनका कृतित्व इतना विशाल इतना बहुमुखी और इतनी प्रेरणाओं से उद्‌भूत है कि उसकी तुलना गत शताब्दी के यूरोपीय विश्वकोषवादियों की प्रतिभा से की जा सकती है।'[६०] और श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार के शब्दों में 'बहुमुखी प्रतिभा के धनी राहुल जी ने ७० वर्ष की आयु में जो कुछ दिया, वह पृष्ठों की दृष्टि से विपुल है शब्द गणना की दृष्टि से महान है और नया मार्ग बनाने की दृष्टि से अद्‌भुत है।'[६१]

प्रतिभा-उन्मेष एवं साहित्य साधना

साहित्य रचना के क्षेत्र में राहुल जी ने सन् १९२७ में पदार्पण किया। यद्यपि इससे पूर्व सन् १९१५ में उनका प्रथम हिन्दी लेख मेरठ के 'भास्कर' पत्र में प्रकाशित हुआ था और यदाकदा कुछ और भी लेख हिन्दी-पत्रों में प्रकाशित होते रहे, तथापि सन् १९२७ से ही उनके साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ माना जाना चाहिए। इस समय वे लंका में थे और लंका के सम्बन्ध में उन्होंने धारावाहिक क्रम से लेख लिखे जो 'सरस्वती' (मासिक) 'विश्वामित्र' (दैनिक) तथा 'मिलाप' (दैनिक) में छपे थे। तब से उनकी लेखनी अविश्रान्त रूप से चलती रही और सन् १९६१ में गम्भीर रूप से रुग्ण हो जाने पर ही उनकी लेखनी ने विराम लिया। इस प्रकार राहुल जी की साहित्य साधना की अवधि चौंतीस वर्ष है और इस अवधि-परिधि में उन्होंने निरन्तर लिखा है। राहुल जी योजनाबद्ध होकर लिखते थे। राहुल जी की लेखन प्रक्रिया तथा साहित्य साधना के विषय में प्रकाशचन्द्र गुप्त का कहना है 'घड़ी देखकर वे काम शुरू करते थे और घड़ी देखकर ही खत्म करते थे। ... मानो किसी दफ्तर के काम की तरह लिखने का काम समय बाँध कर करते थे।'[६२] इस प्रकार राहुल जी ने निरन्तर योजनाबद्ध होकर लिखा और हिन्दी संस्कृत एवं तिब्बती भाषाओं में अनेक रचनाओं को प्रस्तुत किया।

राहुल-साहित्य

राहुल जी का साहित्य परिमाण और गुण दोनों दृष्टियों से विपुल है। राहुल जी ने कुल कितनी रचनाएँ लिखीं अथवा उनकी संख्या कितनी है इस विषय में मतैक्य नहीं। कतिपय विद्वान उनकी संख्या ६०० तक कहते हैं।[६३] अधिकतर विद्वान उनकी रचनाओं की संख्या दो सौ से तीन सौ तक बताते हैं। राहुल जी की रचनाओं

की सख्या के विषय म इतना बडा मतभेद होने का कारण राहुल जी का निरन्तर लेखन काय था और वह भी हिन्दी, सस्कृत प्राकृत तिब्बती भोजपुरी आदि विभिन्न भाषाओ म। इसके अतिरिक्त उनकी रचनाओ के प्रकाशक विभिन्न थे जिन्होंने अनुमानत राहुल जी की पुस्तकों की सूची पुस्तकों के आवरण-पत्रों पर दी है, जिसमे सख्या की न्यूनाधिकता होना स्वाभाविक था। श्रीमती कमला साकृत्यायन के शब्दों से भी इस मत की पुष्टि होती है 'कुछ श्रद्धालु लेखक उनके ग्रथो की सख्या तीन सौ सकडा तक लिख देते हैं। राहुल जी की लेखन-गति बहुआयामी ग्रथो का प्रणयन और विषय विविधता को देखते हुए उनकी ग्रथ-सख्या के बारे म बहुतो को भ्रम होना स्वाभाविक ही है। दूसरो की क्या कहूँ आज से पहले मुझे म ही यदि कोई राहुल जी के ग्रथो की ठीक-ठीक सख्या पूछता तो मेरे लिए भी बताना आसान न होता।[६४]

राहुल जी की प्रकाशित रचनाएँ

राहुल जी की प्रकाशित रचनाओ की विविध सूचियाँ प्राप्त हैं जिनम से कुछ उल्लेखनीय सूचियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

(१) 'बहुरगी मधुपुरी' (कहानी-सग्रह) के आवरण-पत्र के पिछली ओर छपी सूची।

(२) 'उपमा (अगस्त १९६३) के अन्तगत छपी सूची।

(३) ज्ञानपीठ' (नवम्बर, १९६३) म प्रकाशित सूची।

(४) हिन्दी म उच्चतर साहित्य' पर आधारित सूची।

(५) डॉ० प्रभाकर मिश्र द्वारा प्रस्तुत सूची।

(६) श्रीमती कमला साकृत्यायन द्वारा प्रस्तुत 'राहुल साहित्य शीर्षक (सम्मेलन पत्रिका, वर्ष १९८७ म प्रकाशित) सूची।

उपयुक्त सूचियो का तुलनात्मक विश्लेषण इन पक्तियो म प्रस्तुत है—

(१) 'बहुरगी मधुपुरी' के आवरण-पत्र पर प्रकाशित सूची[६५]—इस सूची म राहुल जी के यात्रा दर्शन-दर्शन साम्यवाद, राजनीति विज्ञान साहित्य इतिहास, उपन्यास, कहानी, जीवनी बौद्ध धम, भोजपुरी नाटक, सस्कृत तिब्बती कोश आदि स सम्बधित १०४ ग्रथो की सख्या गिनाई गई है। इसम राहुल जी की १९५४ तक की ग्रथ सख्या आ पाई है। इस पुस्तक की प्रकाशिका स्वय कमला जी हैं। इसम नेपाल और हिमाचल प्रदेश के नाम भी हैं जो अभी तक अप्रकाशित हैं। दूसरे इस सूची मे राहुल के आठ छोटे-छोटे नाटको को आठ पुस्तकें माना गया है जबकि वे दो रचनाओ के रूप म प्रकाशित हैं।

(२) उपमा' (राहुल-स्मृति विशेषाक) के अन्तगत छपी सूची[६६]—इस सूची म भी उक्त विषयो स सम्बद्ध राहुल जी की प्रकाशित एव अप्रकाशित रचनाओं की

सख्या १३४ दी गई है। इसमे प्रकाशित पुस्तकें १२६ हैं। नाटको की सख्या यहाँ भी आठ ही गिनाई गई है और उन्हे आठ पुस्तकें माना गया है।

(३) ज्ञानपीठ मे प्रकाशित सूची[६७]—इस सूची मे पुस्तको की सख्या १२५ है। इसमे 'नेपाल' तथा 'हिमाचल प्रदेश' को प्रकाशित दिखाया गया है। 'मेरी जीवन यात्रा' (पहले तीन भाग), 'सोवियत भूमि' (दो भाग) 'मध्य एशिया का इतिहास' (दो भाग)—इन्हे तीन पुस्तक न गिनाकर सात पुस्तकें दिखाया गया है। इस सूची मे सबसे बडी त्रुटि यह है कि इसमे 'सप्तसिन्धु' और 'सिंहसेनापति' को दो पृथक पुस्तकें दिखाया गया है, जबकि यह एक ही औपन्यासिक कृति के दो पृथक नाम हैं। इस प्रकार ११७ रचनाओ को ही १२५ गिनाया गया है। कुछ रचनाएँ जैसे 'जादू का मुल्क' जो प्रेस मे थे 'सूत्रधार की मौत' तथा 'शादी' इस सूची मे नही हैं।

(४) हिन्दी मे उच्चतर साहित्य पर आधारित सूची[६८]—इसमे राहुल जी की केवल ८८ रचनाओ के नाम हैं। यह सूची स्वल्प तो है ही साथ ही त्रुटिपूर्ण है। इसमे कुछ रचनाओ के नाम दो-दो बार हैं जैसे 'तिब्बत मे बौद्ध धर्म' 'विश्व की रूप रेखा' 'रूस मे पच्चीस मास' तथा 'दार्जिलिंग परिचय'। 'सोवियत भूमि' तथा 'मेरी जीवन यात्रा' के दो दो भागो को पृथक पुस्तक के रूप मे गिना गया है। 'हिमाचल प्रदेश' को भी प्रकाशित दिखाया गया है। वस्तुत इसमे राहुल जी की प्रकाशित रचनाएँ ८१ ही रह जाती हैं।

(५) डा० प्रभाकर मिश्र द्वारा प्रस्तुत सूची[६९]—डा० प्रभाकर मिश्र ने राहुल जी के प्रकाशित ग्रथो की सख्या १२६ मानी है। यह ग्रन्थ सख्या उपमा मे प्रकाशित तथा कमला जी द्वारा उन्हे दी गई सूचनाओ के आधार पर है। परन्तु इसमे सन् १९६७ तक की उनकी सभी प्रकाशित रचनाओ का समावेश नही हुआ। साथ ही किताब महल इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित 'वीर चन्द्र सिंह गढवाली' (१९५७) जो राहुल जी की जीवनी रचनाओ मे प्रमुख है का भी उल्लेख नही। इसके अतिरिक्त कई रचनाओ के लेखन काल भी अशुद्ध हैं। 'रामराज्य और मार्क्सवाद' की भी गणना नही हुई। 'पाठावलि' (भाग ३) तथा 'संस्कृत पाठमाला' को दो के स्थान पर आठ पुस्तक माना गया है।

(६) श्रीमती कमला साकृत्यायन द्वारा प्रस्तुत सूची[७०]—कमला साकृत्यायन द्वारा प्रस्तुत यह सूची सर्वाधिक प्रामाणिक एव उल्लेख्य है। इसमे राहुल जी की रचनाओ की सख्या १२९ दी गई है। इस सूची की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं[७१] जैसे—

(१) जिन ग्रन्थो के अनेक भाग हैं उन्हे एक ही ग्रन्थ माना गया है।

(२) अन्य विद्वानो के सहयोग से सम्पादित ग्रन्थो का नाम भी नही गिनाया गया।

(३) विभिन्न पुस्तको के अन्य भाषाओ में अनुवादो का भी उल्लेख है।

(४) अप्रकाशित ग्रन्थ जिनकी पाण्डुलिपियाँ कमला जी के पास हैं उनकी

गणना भी इसम है।

इस प्रकार 'राहुल साहित्य सूची म उन्होंने उन्ही ग्रन्था का समावेश किया है जिनका समावेश स्वय राहुल जी पसन्द करते। कमला जी के अनुसार राहुल साहित्य के प्रकाशित पष्ठ ५०,००० है।[१२] कमला सांकृत्यायन द्वारा प्रस्तुत सूची सर्वाधिक प्रामाणिक होते हुए भी सवथा निर्दोष नही। इसमें कुछ पुस्तकों के प्रकाशकों का लेखिका को ज्ञान नहीं जैसे श्रीराम आदि का। इसी प्रकार कुछ पुस्तका का वर्गीकरण उनके विषय के अनुकूल नहीं।

राहुल जी की अप्रकाशित रचनाएँ

राहुल जी की उपयुक्त प्रकाशित रचनाओं के अतिरिक्त उनका अप्रकाशित साहित्य भी है। इन रचनाओं की पाण्डुलिपियां श्रीमती कमला सांकृत्यायन के पास हैं। ज्ञानपीठ पत्रिका,[१३] उपमा[१४] सम्मेलन पत्रिका,[१५] म समय-समय पर उन्होंने राहुल जी की अप्रकाशित रचनाओं का उल्लेख किया है—

(१) तिब्बती-संस्कृत-कोश। (२) हिमाचल प्रदेश। (३) नेपाल। (४) तिब्बती हिन्दी-कोश (य त्रस्य साहित्य अकादमी)। (५) पालि काव्यधारा। (६) आजमगढ़ की पुरा कथा (सम्मेलन-पत्रिका म प्रकाशित। (७) राहुल जी द्वारा जया और जेता के नाम लिखे गय पत्र।[१६] (८) पांच बौद्ध दार्शनिक एव बौद्ध साहित्य (य त्रस्थ)।[१७] (९) निबन्ध सकलन (हिन्दी) (आठ-खण्ड) अनुमानित।[१८] (१०) राहुल पत्रावली (दो खण्ड)।[१९] (११) संस्कृत निबन्ध (फुटकल) एक सग्रह[२०] (१२) फुटकल अंग्रेजी निबन्ध एक सग्रह।[२१]

राहुल जी का सजनात्मक साहित्य

राहुल जी के सजनात्मक साहित्य पर विचार करने से पूव साहित्य के स्वरूप पर विचार करना अपेक्षित है। साहित्य की परिभाषा एव उसके स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए भारतीय एव पाश्चात्य मनीषियों एव समालोचकों ने पर्याप्त विचार किया है। साहित्य' अपने व्युत्पत्तिमूलक रूप म सहित+यन् प्रत्यय से बना है अत साहित्य का अथ है शब्द और अथ का यथावत सहभाव अर्थात साथ होना। इस प्रकार साथक शब्दमात्र का नाम 'साहित्य' है। साहित्य की यह परिभाषा अत्यन्त व्यापक है और इसम मनुष्य की सारी बोधन और भावन चेष्टा समाविष्ट हो जाती है तथा समस्त ग्रन्थ समूह साहित्य के अन्तगत आ जाते हैं।[२२] अत व्यापक अथ म साहित्य समस्त वाङ्मय का प्रतीक है, समस्त सचित ज्ञानराशि का समावेश उसम हो जाता है। साहित्य अपने इस व्यापक अथ म अंग्रेजी के लिटरेचर शब्द का पर्याय वाची है। 'काव्य' और 'शास्त्र' दोनों इसके अन्तगत आ जाते हैं। काव्य रसात्मक होता है और 'शास्त्र' ज्ञान प्रधान। प्राचीन आचार्यों ने जिसे काव्य और 'शास्त्र' कहा है उसे आधुनिक शब्दावली मे क्रमशः ललित साहित्य या सजनात्मक साहित्य' और उपयोगी साहित्य का सज्ञा प्राप्त है। डॉ० क्विन्सी के शब्दों म दो हैं 'लिटरेचर आफ

पावर' एव लिटरेचर ग्राफ नौलेज कहा जा सकता है। एक (शास्त्र) का उद्देश्य सिखाना है दूसरे (काव्य) का उद्देश्य प्रभावित करना है।[११३] सजनात्मक साहित्य (ललित साहित्य) मे 'साहित्य की व समी कोटियाँ आएँगी जिनम बोधपक्ष उतना प्रधान नही जितना भावपक्ष, अर्थात जिनम बुद्धि की अपेक्षा हृदय को स्पश करने की सामथ्य अधिक है।[११४] आचाय हजारीप्रसाद द्विवेदी सजनात्मक साहित्य (रचनात्मक साहित्य) की प्रमुख विशिष्टता लोकोत्तर आनन्द को मानते हैं। व लिखते है 'ये पुस्तकें हम सुख दुख की व्यक्तिगत सकीणता और दुनियावी झगडा से ऊपर ले जाती हैं और सम्पूण मनुष्य जाति के—और भी आगे बढ़कर प्राणिमात्र के दुख शोक राग विराग आह्लाद आमाद का समझने की सहानुभूतिमय दष्टि देती है। वे पाठक के हृदय को कोमल और सवेदनशील बनाती है कि वह अपने क्षुद्र स्वाथ का भूलकर प्राणिमात्र के दुख सुख को अपना समझने लगता है—सारी दुनिया क साथ आत्मीयता का अनुभव करने लगता है। इससे पाठक को एक प्रकार का ऐसा आनन्द मिलता है जो स्वाथगत दुख सुख स ऊपर की चीज है। शास्त्रकार न इसी को लोकोत्तर आनन्द कहा है।[११५] इस प्रकार सजनात्मक साहित्य म मनुष्य की केवल बौद्धिक तुष्टि तथा ज्ञान प्राप्ति की इच्छा को पूण करने वाली पुस्तका को ग्रहण नही किया जाता बल्कि मनुष्य के जीवन को सरस सुखी तथा सुदर बनाने वाले साहित्य को ही लिया जाता है। गद्य और पद्य दोना म ही सजनात्मक साहित्य की सष्टि समव है। शात है सजनात्मक तत्त्व की लालित्य एव सौन्दर्यनिष्ठा की। काव्य, उपयास कहानी नाटक रेखाचित्र, वणनात्मक गद्य पद्य सजनात्मक साहित्य के ही अग हैं। डा० रामकुमार वर्मा साहित्य की ललित दष्टि के विषय म लिखत हैं—'कलात्मकता सौंदय स उठती है और साहित्य की उन समस्त दिशाओ म छा जाती है जिनका सम्बध अन्तजगत की कल्पना और भावना स है। यह वह ललित दष्टि है जो वसन्त ऋतु की भाँति अग्रसर होती है, जिसम काव्य नाटक कथा, उपयास विविध रगा क पुष्पा की भाति प्रस्फुटित हो उठते हैं। उनमे मनोभावो की सुरभि भाषा की तरगा पर झूमती है और प्रतिक्षण आनन्द और सतोष की दिशा मे प्रवाहित होती रहती है।'[११६] सजनात्मक अथवा ललित साहित्य म उपयोगिता का सवथा निषेध भी नही, यह निश्चित है कि ललित साहित्य म कलात्मकता सौदयत्व कल्पनाविलास, भावना परिष्कार आदि का महत्व अधिक है और तत्त्वज्ञान इतिहास समाज शास्त्र और अन्य ज्ञानमूलक साहित्य-चेष्टाओ का बोध है।[११७]

काव्येतर वाङ्मय क रूप म जो भी उपलब्ध है उस शास्त्र' या उपयोगी साहित्य' कहा जा सकता है। सिद्धान्त प्रतिपादन या वस्तु-परिगणन सम्बन्धी मानव की बौद्धिक तुष्टि क लिए लिखी गइ सामग्री केवल मनुष्य की ज्ञान प्राप्ति का साधन है, वह उसके हृदय को रसप्लावित नही कर सकती। इसी कारण ज्ञान प्राप्ति के सम्पूण विषय शास्त्र के अन्तगत गृहीत किए जात है।[११८]

'उपयोगी साहित्य' के रूप मे आज जो साहित्य प्राप्त होता है वह 'शास्त्र को आत्मसात करता हुआ पर्याप्त आग बढ गया है, क्योंकि आधुनिक युग मे ज्ञान-विज्ञान के अनेक नये क्षेत्र प्रकाश म आए हैं। उपयोगी साहित्य' को आज हम (१) वैज्ञानिक साहित्य (२) टकनीकी साहित्य (३) मानवीय सम्बन्धो के साहित्य जसे अर्थशास्त्र, समाज विज्ञान राजनीति आदि (४) मनोविज्ञान एव मनोविश्लेषण (५) चिकित्सा शास्त्र (६) क्रीडा और आमोद प्रमोद का साहित्य (७) साहित्य शास्त्र (८) दर्शन (९) धर्म और (१०) विविध आदि अनेक वर्गों म रख सकते हैं।[११९] हिन्दी साहित्य कोश म आगे लिखा है—'वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विवेचनात्मक एव वैज्ञानिक तर्कवादी तथा तथ्य प्रधान शलियो का उपयोगी साहित्य म विशेष महत्त्व है। भावात्मक, कल्पना सृष्टी और लालित्यमय (अलकृत) शलिया उपयोगी साहित्य के क्षेत्र से बाहर हैं।[१२]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जहाँ उपयोगी साहित्य का लक्ष्य तत्त्वज्ञान एव बौद्धिक ऊहापोह है, वहाँ विशुद्ध साहित्य का सम्बल रसानुभूति एव कल्पनानन्द है। दोना के क्षेत्र और प्रयोजन विभिन्न हैं। पाण्डित्य और कवित्व दो भिन्न वत्तियो के प्रतिफल हैं और वे अनिवायत अंतरावलम्बित नही हैं।[१२१] डॉ० रामकुमार वर्मा के शब्दो म दोना के अन्तर एव महत्त्व को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है 'ज्ञान विज्ञान मे बुद्धि और तर्क है, कला और उसके सौन्दय म कल्पना और भावना है। प्रथम स्थूल जगत से सम्बद्ध है द्वितीय सूक्ष्म जगत् से जिसम मानव को स्फूर्ति और प्रेरणा प्राप्ति होती है और उसका जीवन अधिक सवेदनशील हो जाता है। प्रथम रूप हमारी सभ्यता को प्रशस्त करता है, द्वितीय हमारी सस्कृति को। किसी भी राष्ट्र के विकास म सभ्यता और सस्कृति दानो ही अपेक्षित हैं। अत राष्ट्र के साहित्य म उपयोगी और ललित दोना ही प्रकार के साहित्य की अपेक्षा है।[१२२] कभी-कभी उपयोगी साहित्य मे भी लालित्य और शली का चमत्कार मिलता है जस भारतीय-दर्शन, स्मृति, अर्थ शास्त्र, काम शास्त्र, साहित्य शास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थो म चिन्तन और मनन की गरिमा के साथ वाग्विदग्धता भी है। परन्तु इसे रचयिता की स्वभावगत विवशता ही स्वीकारा जा सकता है।[१२३] अन्त म, यह भी मान्य है कि सजनात्मक साहित्य के लिए उपयोगी साहित्य उपजीव्य है। जिस भाषा का उपयोगी साहित्य समृद्ध नही, उसके सजनात्मक साहित्य का स्तर भी अधिक समुन्नत एव व्यापक नही हो सकता। राहुल जी का हिन्दी साहित्य म इस दृष्टि स गौरवपूर्ण स्थान है क्योंकि उन्होंने उपयोगी एव सजनात्मक दोना प्रकार की रचनाओ द्वारा हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि की है।

उपयोगी साहित्य

साहित्य के उपयोगी साहित्य तथा 'सजनात्मक साहित्य' इन दो विभागो के आधार पर राहुल कृत विज्ञान समाज विज्ञान राजनीति, दर्शन धर्म इतिहास,

साम्यवाद, भाषा व्याकरण कोश तथा सम्पादन सम्बन्धी रचनाएँ उपयोगी साहित्य के अन्तगत आती हैं। उपयोगी साहित्य के अन्तगत राहुल जी की रचनाएँ है —

(क) **विज्ञान** —१ विश्व की रूपरेखा।

(ख) **समाज विज्ञान** —१ मानव समाज।

(ग) **राजनीति और साम्यवाद** —(१) सोवियत न्याय (२) राहुल जी का अपराध (३) आज की राजनीति (४) कम्युनिस्ट क्या चाहते हैं? (५) क्या करें? (६) चीन म कम्यून (७) सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास (८) रामराज्य और मार्क्सवाद।

(घ) **दर्शन**—(१) वैज्ञानिक भौतिकवाद (२) दर्शन दिग्दर्शन (३) बौद्ध दर्शन।

(ङ) **धर्म**—(अ) **बौद्ध धर्म**—(१) बुद्ध चर्या (२) धम्मपद (३) मज्झिमनिकाय, (४) विनयपिटक (५) दीघनिकाय (६) तिब्बत म बौद्ध धर्म, (७) बौद्ध संस्कृति (८) पाच बौद्ध दार्शनिक एव बौद्ध साहित्य (यन्त्रस्थ)।

(आ) **इस्लाम धर्म**—(१) इस्लाम धर्म की रूप रेखा।

(च) **देश दर्शन**—(१) सोवियत भूमि (२) सोवियत मध्य एशिया (३) दोर्जेलिङ परिचय (४) कुमाऊ (५) गढ़वाल (६) जौनसार (७) आजमगढ़ की पुरातत्था, (८) हिमाचल प्रदेश (अप्रकाशित) (९) नेपाल (अप्रकाशित)।

(छ) **कोश**—(१) शासन शब्द कोश (२) राष्ट्रभाषा कोश (३) तिब्बती हिन्दी कोश (यन्त्रस्थ) (४) तिब्बती संस्कृत कोश।

(ज) **इतिहास**—(१) हिन्दी काव्यधारा (अपभ्रंश), (२) दक्खिनी हिन्दी काव्य धारा, (३) आदि हिन्दी की कहानियां तथा गीतें (संकलन) (४) सरहपाद कृत दोहा कोश (५) मध्य एशिया का इतिहास (दो भाग) (६) ऋग्वैदिक आर्य (७) अकबर (८) भारत म अंग्रेजी राज्य के संस्थापक (अनुवाद) (९) पालि साहित्य का इतिहास (१०) तुलसी रामायण संक्षेप (संकलन) (११) सूत्रकृताग (१२) संस्कृत काव्यधारा (१३) पालि काव्यधारा (अप्रकाशित)।

(झ) **तिब्बती (भाषा-व्याकरण)**—(१) तिब्बती बाल शिक्षा (२) पाठावलि (१ २ ३) (३) तिब्बती व्याकरण।

(ञ) **संस्कृत (टीका अनुवाद)**—(१) संस्कृत पाठमाला (पाच भाग) (२) अभिधर्म कोश (३) विज्ञप्तिमात्रता सिद्धि (४) प्रमाणवार्तिक स्ववृत्ति (५) हेतु बिन्दु (६) सम्बन्ध-परीक्षा, (७) निदान सूत्र (परीक्षा), (८) महा परिनिर्वाण सूत्र।

(ट) **संस्कृत ताल पोथी सम्पादन**—(१) वाद-न्याय (२) प्रमाण वार्तिक (३) अध्यर्द्ध शतक (४) विग्रह व्यावर्तनी, (५) प्रमाण वार्तिक भाष्य (६) प्रमाण वार्तिक वृत्ति (७) प्रमाण वार्तिक स्ववृत्ति टीका (८) विनय सूत्र।

(ठ) **अनुवाद काय (उपन्यास)**—(१) शैतान की आख (२) विस्मृति के

गम म (३) जादू का मुल्क, (४) सोने की ढाल, (५) दाखुदा (६) जो दास थे, (७) अनाथ, (८) अदीना (९) सूदखोर की मौत, (१०) शादी।

सजनात्मक साहित्य

सजनात्मक साहित्य के अन्तगत राहुल जी की मौलिक रचनाओं—उपन्यास कहानी, जीवनी यात्रा-साहित्य तथा निबंध समाविष्ट हैं। डा० प्रभाकर मिश्र ने राहुल जी के ललित-साहित्य' की परिधि म आने वाली रचनाओं की संख्या ३६ मानी है[२५]। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने राहुल जी के निबंध-संग्रहों तथा कुछ जीवनियों को सूचीपत्रों मे प्रकाशित विभिन्न शीर्षकों के अन्तगत पढ़कर उन्हें छोड दिया है। राहुल जी की निम्नलिखित ५१ रचनाएँ उनके सजनात्मक साहित्य के अन्तगत मानी जानी चाहिएँ। जिनमे ४९ हिन्दी म और २ भोजपुरी म हैं।

(क) उपन्यास—(१) बाईसवीं सदी (सन १९२३-लेखन काल) (२) जीने के लिए (सन १९४०), (३) सिंह सेनापति (सन १९४४) (४) जय यौधेय (सन १९४४), (५) भागो नहीं दुनिया को बदलो (सन १९४४), (६) मधुर स्वप्न (सन १९४९), (७) राजस्थानी रनिवास (सन १९५३), (८) विस्मृत यात्री (सन १९५४), (९) दिवोदास (सन १९६०)।

(ख) कहानी—(१) सतमी के बच्चे (लेखन काल सन १९३५), (२) वोल्गा से गंगा (सन् १९४४) (३) बहुरंगी मधुपुरी (सन १९५३), (४) कनैला की कथा (सन् १९५५ ५६)।

(ग) जीवनी आत्मकथा-संस्मरण—(१) मेरी जीवन-यात्रा (पाँच भाग), (२) सरदार पृथ्वीसिंह (सन १९५५) (३) नये भारत के नये नेता (दो भाग) (सन १९४७), (४) बचपन की स्मृतियाँ (सन १९५३) (५) अतीत से वतमान (केवल प्रथम खण्ड, सन १९५३) (६) स्तालिन (सन १९५४), (७) लेनिन (सन् १९५४) (८) कालमार्क्स (सन् १९५४), माओ चे-तुंग (सन १९५४), (१०) घुमक्कड स्वामी (सन् १९५६) (११) मेरे असहयोग के साथी (सन १९५६) (१२) जिनका मैं कृतज्ञ (सन १९५६), (१३) वीर चन्द्रसिंह गढवाली (सन १९५६) (१४) सिंहल घुमक्कड जयवर्धन (सन १९६०), (१५) कप्तान लाल (सन् १९६१), (१६) सिंहल के वीर पुरुष (सन् १९६१) (१७) महा मानव बुद्ध (सन् १९५६)।

(घ) यात्रा-साहित्य—(१) मेरी लद्दाख यात्रा (सन १९२६) (२) लंका (सन् १९२६ २७) (३) मेरी यूरोप-यात्रा (सन् १९३२), (४) मेरी तिब्बत यात्रा (सन् १९३७) (५) यात्रा के पन्ने (सन् १९३४ ३६), (६) जापान (सन् १९३५), (७) ईरान (प्रथम द्वितीय भाग) (सन १९३५ ३६), (८) रूस मे पच्चीस मास (सन् १९४४ ४७), (९) किन्नर देश (सन १९४८), (१०) तिब्बत म सवा वर्ष (सन् १९३१), (११) घुमक्कड शास्त्र (सन् १९४८),

(१२) एशिया के दुर्गम भूखण्डों में (सन १९५६), (१३) चीन में क्या देखा ? (सन १९६०)।

(ड) निबन्ध साहित्य—(१) साहित्य निबन्धावलि (सन १९४९), (२) पुरातत्त्व निबन्धावली (सन १९३६), (३) दिमागी गुलामी (सन १९३७), (४) तुम्हारी क्षय (सन् १९३७) (५) आज की समस्याएँ (सन १९४४), (६) साम्यवाद ही क्यों ? (सन १९३४), (७) अतीत से वर्तमान (केवल द्वितीय खण्ड) (सन १९५३)।

(च) भोजपुरी नाटक—(१) तीन नाटक (सन् १९४२) (२) पाँच नाटक (सन १९४२)।

निम्न पंक्तियों में राहुल जी की उपर्युक्त सर्जनात्मक कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

(क) उपन्यास —

(१) **बाईसवीं सदी** —'बाईसवीं सदी' को हिन्दी का प्रथम यूटोपिया माना जा सकता है। इस कथाभास में लेखक का प्रतिपाद्य है साम्यवाद के बिना मानवता के विकास का कोई रास्ता नहीं है। लेखक का विश्वास है कि भारत भी साम्यवादी हो जाएगा। बाईसवीं सदी के साम्यवादी भारत के ग्रामों, नगरों, कृषि, गोपालन, उद्योग धन्धा, यातायात, शिक्षा आदि का इसमें बहुत ही सुन्दर चित्रण है। भावी भारत की सभ्यता और संस्कृति की सजीव कल्पना इसमें है। साथ ही वर्तमान भारत की दयनीय दशा भी इसमें अंकित है।

(२) **जीने के लिए**—राहुल जी का यह राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास में बीसवीं शती के प्रारम्भ से लेकर सन १९३९ तक के भारत की राजनीतिक एवं सामाजिक अवस्था का अच्छा दिग्दर्शन हुआ है। प्रथम विश्व-युद्ध के उपरान्त भारतीयों द्वारा स्वातन्त्र्य प्राप्ति के लिए किये गये प्रयत्नों, आन्दोलनों तथा कृषकों और जमींदारों के मध्य भूमि अधिकार सम्बन्धी झगड़ों को लेकर इस उपन्यास की रचना की गई है। लेखक का झुकाव स्पष्टतः साम्यवाद की ओर है।

(३) **सिंह सेनापति**— सिंह सेनापति राहुल जी का प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। सेनापति 'सिंह' को कथा का केन्द्र बिन्दु मानकर लेखक ने आज से पच्चीस सौ वर्ष पहले के लिच्छवि गणतन्त्र के सामाजिक जीवन को प्रस्तुत किया है। यह युग स्वच्छन्दता का युग था। वीरता और विलासिता की रम्य कहानी इस उपन्यास में संकलित है।

(४) **जय यौधेय**— जय यौधेय में राहुल जी गुप्त साम्राज्य की तुलना में यौधेय गण की प्रतिष्ठा स्थापित करते हैं। यह उपन्यास जय की आत्मकथा के रूप में ढाला गया है। यह उपन्यास सिंह सेनापति की अपेक्षा प्राचीन भारत की अधिक व्यापक झाँकी देता है। एक प्रकार से यह कथा जय की भारत यात्रा का वर्णन है।

हिमवन्त से सिंहलद्वीप तक जय यौधेय की यह विराट यात्रा राहुल के अपने जीवन का स्मरण दिलाती है। इस ऐतिहासिक कथा के माध्यम से राहुल जी पाठक को आधुनिक दिव्य दृष्टि भी प्रदान करना चाहते हैं।

(५) भागो नहीं दुनिया को बदलो—संवादात्मक शैली म लिखा यह उपन्यास उपन्यास की अपेक्षा 'कथाभास' है। इसमे लेखक ने साम्यवाद के सिद्धान्तो का सरल भाषा म आख्यान किया है।

(६) मधुर स्वप्न—"मधुर स्वप्न म राहुल प्राचीन ईरान का इतिहास कथा के रूप म उठाते हैं। लेखक ईरानी राजदरबार और वहाँ की सामाजिक रीति नीतियो का वणन गहरी अन्तर्दृष्टि से करता है। इस उपन्यास का उद्देश्य भी प्राचीन ईरान के जीवन द्वारा मार्क्सवादी सिद्धान्तो का समथन करना है। मज्दकियो के साम्यवादी विचारो के माध्यम से राहुल जी ने अपने विचारो को सशक्त अभिव्यक्ति दी है।

(७) राजस्थानी रनिवास—इस ऐतिहासिक कथाकृति म राजस्थान की साल पर्दो म रहने वाली रानियो और ठाकुरानियो की बेबसी, दुखगाथा और वहाँ के पुरुषो की स्वेच्छाचारिता का वणन किया गया है। लेखक न यद्यपि इसे उपन्यास की सज्ञा देना उचित नही समझा तथापि इसे 'कथाभास' तो माना ही जा सकता है। हतभागिनी गौरी का करुणापूण चित्राकन इसम हुआ है।

(८) विस्मृत यात्री—विस्मृत यात्री राहुल जी का ऐतिहासिक उपन्यास है। इसम छठी शताब्दी के भारत का चित्रण है। इसम नरेन्द्रयश की यात्राओ एव बौद्ध धम प्रसार सम्बन्धी गतिविधियो का अकन है। नरेन्द्र यश राहुल जी की मार्क्सवादी विचारधारा का पोषक है। वह आर्थिक वैषम्य को समाप्त कर साम्यवादी समाज की स्थापना चाहता है। प्राकृतिक वातावरण का अकन इस उपन्यास म सजीव बन पडा है।

(९) दिवोदास—'दिवोदास' सप्तसिन्धु के १२ १३वी शती ई० पूव के आर्यों के जीवन को लेकर लिखा गया ऐतिहासिक उपन्यास है। ऋग्वदिक ऋचाएँ इस उपन्यास का आधार हैं। ऋग्वदिक आर्यों की सभ्यता का अकन ही उपन्यास का लक्ष्य है। आर्यों और असुरो के सघष का कलात्मक चित्रण 'दिवोदास' की विशेषता है।

(ख) कहानी

(१) सतमी के बच्चे—'सतमी के बच्चे' राहुल जी का प्रथम कहानी-सग्रह है। इसम दस कहानियाँ हैं—'सतमी के बच्चे' 'डीह बाबा', 'पाठक जी', 'पुजारी स्मृतिज्ञानकीर्ति', 'जसिरा राजबली 'रामगोपाल, 'घुरबिन', तथा 'दल सिगार। स्मृतिज्ञानकीर्ति के अतिरिक्त अन्य सभी कहानियो म राहुल जी न समसामयिक समाज की आर्थिक एव सामाजिक परिस्थितियो मे पीडित व्यक्तियो के जीवन चित्र

प्रस्तुत किये हैं। इन कहानियों के प्राय सभी पात्र उनके जीवन अनुभव में आए व्यक्ति है। अधिकतर कहानियाँ ग्रामीण जीवन से सम्बद्ध हैं।

(२) वोल्गा से गंगा— वोल्गा से गंगा' राहुल की ऐतिहासिक कथाकृति है। इस संग्रह में बीस कहानियाँ हैं—निशा, दिवा, अमृताश्व पुरुहूत पुरधान अंगिरा सुदास प्रवाहण बंधुल मल्ल नागदत्त प्रभा सुपर्ण यौधेय दुर्मुख चक्रपाणि बाबा नूरदीन सुरैया रेखा भगत मंगलसिंह सफ्दर तथा सुमेर। इस कथासंग्रह की सर्वप्रमुख विशेषता इसकी ऐतिहासिकता है। लेखक के व्यापक दृष्टिविस्तार ने आठ सहस्र वर्षों तक प्रसरित मानव जीवन के विकास का साक्षात्कार इन कहानियों के माध्यम से करवाया है। इनमें कहानीपन कम एवं ऐतिहासिकता अधिक है।

(३) बहुरंगी मधुपुरी—इस संग्रह में विलासपुरी मधुपुरी (मसूरी) से सम्बद्ध २१ कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ काल्पनिक न होकर वास्तविक जीवन के आधार पर लिखी गई है। कहानियों के शीर्षक है--बूढ़े लाला' 'हाय बुढ़ापा' 'कुमार दुरजय मेम साहब महाप्रभु पेड़ बाबा ठाकुर जी लिपिस्टिक राय बहादुर गुरु जी' मीनाक्षी गोलू रूपी राउत 'कमल सिंह' 'डोरा विसुन सुलतान', मास्टर जी 'चम्पा' तथा 'काठ के साहब। इस संग्रह की कहानियों में मसूरी के जीवन से सम्बंधित सामाजिक आर्थिक धार्मिक आदि विविध पहलुओं का यथार्थ अंकन है। रूपी शीर्षक से इस संग्रह की नौ चुनी हुई कहानियों का पृथक प्रकाशन भी हुआ है।

(४) कनैला की कथा—कनैला की कथा राहुल का चौथा कहानी-संग्रह है। डा० प्रभाशंकर मिश्र इस संग्रह को इतिहासात्मक नित्र व संग्रह मानते हैं।[१२४] परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है। इस कहानी संग्रह में इतिहास तत्त्व की प्रधानता अवश्य है जैसा कि 'वोल्गा से गंगा' में भी। परन्तु इसमें कथा कल्पना व चरित्र चित्रण को देखते हुए इसे कहानी संग्रह ही माना जाना अधिक समीचीन है। राहुल जी ने स्वयं भी इस संग्रह की कहानियों के शीर्षकों के साथ कहानी शब्द का प्रयोग किया है।[१२५] डा० महादेव साहा भी इसे कहानी संग्रह ही स्वीकारते हैं—कनैला की कथा में जहां-तहां इतिहास का पुट है मगर वह ऐतिहासिक रचना नहीं है। बंगला अनुवाद के प्रकाशक ने इसे वोल्गा से गंगा (भाग २) के नाम से प्रकाशित किया है।[१२७] श्रीमती कमला सांकृत्यायन ने भी इसे कहानी संग्रह ही माना है।[१२८] इस संग्रह में नौ कहानियाँ हैं 'त्रिवेणी 'काशीग्राम बड़ी रानी देवपुत्र कलाकार सैयद बाबा नरमेध सन ५७ तथा स्वराज्य। इन कथाओं में १३०० ई० पूर्व से लेकर १९५७ ई० तक कनैला के जनजीवन का इतिहास निहित है।

(ग) जीवनी आत्मकथा संस्मरण

(१) मेरी जीवन-यात्रा (पांच भाग)—आत्मकथापरक साहित्य में राहुल द्वारा लिखित मेरी जीवन यात्रा एक महत्त्वपूर्ण कृति है। पांच भागों में लिखित इस

यात्रा में कुल पृष्ठ संख्या २८१४ है। मेरी जीवन यात्रा' में राहुल के जीवनवृत्त के साथ उनके समसामयिक जीवन और जगत की भिन्न भिन्न गतियाँ और विचित्रताएँ अंकित हैं। कहीं राहुल अपने व्यक्ति-वृत्त को प्रस्तुत करते हैं कहीं साधारण यात्री की तरह गाथाएँ सुनाते हैं कहीं दार्शनिक की तरह प्रश्न पर प्रश्न उठाते हैं और कहीं महान् भाषाशास्त्री व पुरातत्त्ववेत्ता की तरह इतिहास और वर्तमान की समस्याएँ प्रस्तुत करते हैं। लेखक इसमें बड़ी-से-बड़ी और छोटी-से-छोटी सभी वस्तुओं से परिचय करवाता चलता है, सर्वत्र सहज भाव से। शिवचन्द्र शर्मा के शब्दों में 'अपनी जीवन-यात्रा में वे स्वयं कम हैं दूसरे अधिक। उनकी जीवन-यात्रा एक प्रकार से दर्जनों व्यक्तियों के समूह का, राजनीतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक परिस्थितियों से उत्पन्न वातावरण का वास्तविक विश्वकोश है।'[१२८]

(२) सरदार पृथ्वीसिंह—सरदार पृथ्वीसिंह देश की स्वतन्त्रता के निर्भीक सेनानी पृथ्वीसिंह का जीवन चरित्र है। देश की स्वतन्त्रता के लिए सरदार ने भयंकर कष्टों का सामना किया और लोमहर्षक स्थितियों में भी उनकी अदम्य आत्मा ने पराजय स्वीकार नहीं की। सरदार पृथ्वीसिंह शांति के पुजारी हैं। इस जीवनी में पृथ्वीसिंह के समय समय के मानसिक उतार चढ़ाव हैं, पर वे संचारी भाव हैं। स्थायी भाव है अद्‌भुत उत्साह, जो जीवनीनायक में सर्वत्र दिखाई देता है। सरदार पृथ्वीसिंह तूफानों के बीच नाव खेते रहने वाले नाविक की कहानी है। जीवन-चरित के साथ साथ बीसवीं शती के पूर्वार्ध की देश की राजनीतिक अवस्था का भी इसमें अंकन हुआ है।

(३) नये भारत के नये नेता (दो भाग)—नये भारत के नये नेता लेखक का एक तरह से 'वोल्गा से गंगा' के साथ का ग्रंथ है। जहाँ वोल्गा से गंगा का विस्तार आठ हजार वर्षों के विस्तृत काल में है वहां इस ग्रंथ का क्षेत्र वर्तमान काल की विस्तृत भारत भूमि है।' इस ग्रन्थ के जीवनी-नायक हैं—शेर कश्मीर शेख अब्दुल्ला कामरेड मुजफ्फर, स० द० भारद्वाज, श्री निवास ग० सरदसाई, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, श्रीपाद अमृत डांगे, कल्पनादत्त जोशी, बंकिम मुकर्जी, पी० सुन्दरय्या, क० केरलियन रामचन्द्र व० मोरे डा० गंगाधर अधिकारी, डॉ० कुंवर मुहम्मद अशरफ, पूरनचन्द्र जोशी, साहराव डा० वाटलीवाला मुहम्मद शाहिद, सयद जमालुद्दीन बुखारी, फज्रइलाही कुरबान, मुबारक सागर आदि। लेखक ने इन जीवनी-नायकों को देश की परिस्थितियों से सम्पृक्त करके देखा है। ये जीवनियाँ भारत की विविध समस्याओं एवं संघर्षों को साकार रूप में प्रस्तुत करती हैं। राहुल जी की इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि लेखक ने प्रत्येक जीवनी-नायक से सम्पर्क स्थापित करके तद्विषयक सामग्री का संचित किया है।

(४) बचपन की स्मृतियां—रूप विधान की दृष्टि से निबन्ध कहानी तथा रेखाचित्र की अनेक विशेषताओं से समन्वित 'बचपन की स्मृतियाँ' राहुल जी की एक

उत्तम सस्मरण कृति है। रचना शीर्षक की सार्थकता एव प्रतिपाद्य विषय इसके प्रथम सस्मरण 'इतिहास' की प्रथम पक्तिया से ही व्यक्त हैं—"जन्मभूमि सबको प्यारी होती है। मनुष्य बचपन म जिन जिन वस्तुओं के घनिष्ठ सम्पर्क म आता है वह उसके लिए सहज प्रिय हो जाती है।"[१] इस रचना मे राहुल जी के बाल्यकाल से सम्बन्धित ३५ सस्मरण हैं। इनम उन्होने पन्दहा एव कनला मे व्यतीत अपने बचपन की मधुर स्मृतिया को प्रस्तुत किया है। जन्मभूमि पन्दहा पितृभूमि कनला, शैशव के मित्र क्रीडाएँ क्रीडा स्थल उद्यान, सरोवर, विद्यालय के सहपाठी शिक्षक, बचपन के प्रिय खाद्य तथा पेय प्रभावित करने वाले व्यक्ति और वस्तुएँ कौतूहलपूर्ण एव विस्मयकारी घटनाएँ तथा कथाएँ—बचपन मे सम्बन्धित इन सबके सस्मरण राहुल जी ने अकित किए हैं। बाल्यकाल की इन रम्य स्मृतिया के साथ उन्होंने पन्दहा एव कनला के इतिहास जन जीवन, भाषा, पर्व-त्योहार धर्म एव समाज के विविध स्तर के लोगा की स्थिति आदि का भी चित्रण किया है।

(५) **अतीत से वर्तमान**— अतीत से वर्तमान पुस्तक तीन खण्डा मे विभक्त है। प्रथम खण्ड मे चरित्र एव सस्मरण हैं द्वितीय खण्ड म कला इतिहास और धर्म सम्बन्धी निबन्ध हैं और तृतीय खड देश-दर्शन से सम्बन्धित है। प्रमुख चरित हैं—घुमक्कडराज नरेन्द्रयश, घुमक्कड भट्ट दिवाकर आचार्य दीपकर श्री ज्ञान, महापर्यटक किनथुप भदन्त बोधानन्द महास्थविर मौलवी महेशप्रसाद अक्दमिक वर्रान्निकोफ नेपाली महाकवि देवकोटा किशोरीलाल वाजपेयी आदि। सस्मरणो म जायसवाल सस्मरण अत्यन्त रोचक बन पडा है। इस प्रकार इस पुस्तक म जिन जीवन चरिता को रखा गया है वे अतीत स वर्तमान तक के विस्तृत काल से सम्बन्धित हैं। लेखक की रुचि के अनुकूल यह जीवनी-नायक घुमक्कड बौद्ध धर्म प्रचारक इतिहासज्ञ एव समाज सुधारक है।

(६ १) **कार्ल मार्क्स लेनिन स्तालिन तथा माओ चे तु ग**—राहुल जी साम्यवाद को मानव जाति की सारी बीमारिया की एकमात्र रामबाण औषधि स्वीकारते है। इसीलिए उन्होने हिन्दी के पाठका को साम्यवाद के महान तत्त्वदर्शियो एव पथ प्रदर्शका कार्लमार्क्स लेनिन स्तालिन तथा माओ चे-तु ग की जीवनियो स परिचित करवाने के लिए इन चार जीवन चरितो को लिखा है। इस प्रकार उन्होन हिन्दी क एक अभाव की पूर्ति की है। इन जीवनियो म जीवनी-नायका की जीवन घटनाएँ मात्र ही नही हैं, प्रत्युत इन साम्यवादियो के सिद्धान्त उनकी विचार धारा तथा उनके क्रियाकलापा का विशद एव गम्भीर विवेचन है। राहुल जी के ये जीवनी नायक नये समाज एव नव मानवता के निर्माता हैं।

(१०) **घुमक्कड स्वामी** —घुमक्कड स्वामी राहुल जी द्वारा लिखित स्वामी हरिशरणानन्द का जीवन चरित है। इसमे राहुल ने पजाब आयुर्वेदिक फार्मेसी' के सस्थापक स्वामी हरिशरणानन्द का जीवन-वृत्त प्रस्तुत किया है। स्वामी का व्यक्तित्व

भी लखक की तरह गत्यात्मक है। व हरिश्चन्द्र से हरिदास, हरिदास स हरिशरण फिर हरिशरणानन्द बने और फिर पूरे नास्तिक। अन्त म आयुर्वेद के क्षेत्र म अनक वज्ञानिक प्रयोग किए। राहुल की तरह घुमक्कडी भी उन्हें प्रिय थी। राहुल उन्हें 'भया' कहत थे। घुमक्कड स्वामी हरिशरणानन्द का चरित्राकन तथा समसामयिक भारतीय आदोलनों—विशेष रूप से जलियांवाला बाग की घटनाएँ—'घुमक्कड स्वामी' म अकित हैं।

(११) मेरे असहयोग केसाथी —भारतीय-स्वातन्त्र्य-समर म कितन ही लोगो ने तिल तिल करके अपने आपको मिटाया है किन्तु उनम स कितन ही शहीदो क नाम विस्मृति के गहन गत्त म सदा के लिए विलीन हो चुके हैं। सन् १९२१ से १९२६ तक राहुल ने काग्रेस की ओर से छपरा तथा उसके आस-पास के गांवो म सगठन एव प्रचार का काय किया। राष्ट्रीय आन्दोलन म यह राहुल की सक्रिय भूमिका थी। इसी समय जो अन्य लोग भी उसी प्रदेश म राष्ट्रीय यज्ञ म आहुति डाल रहे थे ऐसी ही ३८ विभूतियो का परिचय मेरे असहयोग के साथी नामक पुस्तक में दिया गया है। पुस्तक की शली जीवनी-लेखन की न होकर सस्मरणात्मक है। कुछ सस्मरण-नायको के नाम हैं—मथुरा बाबू प० नगनारायण तिवारी, बाबू मधुसूदन सिंह बाबू रामनरेश सिंह, बाबू लक्ष्मीनारायण सिंह बाबू हरिहर सिंह, प० ऋषिदेव ओझा बाबू रामउदार राय, प० गिरीश तिवारी आदि। इन असहयोगी वीरो म से अधिकाश की आर्थिक स्थिति अत्यत शोचनीय थी। उन्हें एक ओर दरिद्रता स सघष करना पडता था दूसरी ओर राष्ट्रीय आन्दोलन म सक्रिय भाग लेना वे अपना कत्तव्य मानत थे। देश को स्वतन्त्र देखना उनका स्वप्न था, जिसकी पूर्ति के लिए उन्होंने कष्टो एव कष्टों के माग को अपनाया। राहुल के शब्दो म 'खास कर उन लोगो को याद करके तो और भी मन म करुणा आती है, जिन्होंने अपनी जवानी के अनमोल वष देश की आजादी के लिए लडन म लगाय। उन्हें जीवन म कोई ऐसी कीर्ति नही मिली और हरिहर बाबू की तरह कितनी ही गुमनाम मणियाएँ हमारे दश के स्वतन्त्रता-यज्ञ मे चुपचाप पडी। वे व्यथ नही गई। उन्होंने उस आग को प्रज्वलित रखा जो अन्त म अग्रजो को देश से बाहर निकालने म सफल हुई।'[32]

(१२) जिनका मैं कृतज्ञ—जिनका मैं कृतज्ञ म उन ५५ व्यक्तियो क सस्मरण हैं जिनसे राहुल जी ने माग-दशन पाया या कुछ सीखा है। कुछ व्यक्ति तो उनक मानसिक सम्बल के रूप म उनकी जीवन-यात्रा म सहायक हुए हैं। रामदीन मामा महादेव पण्डित, मगन, सत्यनारायण कविरत्न, प० सतराम प०कन्हदेव चौबे, प० भगवद्दत्त धूपनाथ सिंह भदन्त आनन्द कौसल्यायन आचाय नरेन्द्रदेव, डा० सत्यकेतु आदि क प्रति लेखक न अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है। ये ५५ व्यक्ति विभिन्न दशा के विभिन्न वर्गों के विभिन्न शिक्षा-स्तरो के तथा विभिन्न प्रवृत्तियो का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं।

(१३) वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली—'वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली' राहुल जी द्वारा लिखित एक बृहत जीवनी है। सरदार पृथ्वीसिंह की तरह चन्द्रसिंह गढ़वाली भी स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानियों म से हैं। चन्द्रसिंह एक अदभुत सेनानी एव जन नायक थे। लेकिन देश की परिस्थिति ने उन्हें अपनी शक्तियों के विकास और उप योग का अवसर नही दिया। पेशावर का विद्रोह देश की स्वतन्त्रता-हेतु भारतीयो के विद्रोहो की एक शृखला पदा करता है और वीर चन्द्रसिंह इसी पेशावर विद्रोह के अग्रणी थे वह एक प्रकार से आजाद हिन्द फौज का बीज बोने वाले थे। 'वीर चन्द्रसिंह गढवाली' राहुल जी की सर्वाधिक सफल एव सशक्त जीवनी है जो यथाथ तथ्यो पर आधारित है। लेखक ने स्वय गढ़वाली जी से जीवनी के लिए सामग्री एकत्रित की है और उसे अपनी सशक्त भाषा एव शैली म प्रस्तुत किया है।

(१४) सिंहल घुमक्कड जयवधन—गुमनाम साहसी यात्री सिंहल घुमक्कड जयवधन की यह जीवनी १५८ पष्ठो की है। जयवधन लका के एक पहाडी गाँव म पदा हुए। वे जन्मजात घुमक्कड थे। उनकी यात्राएँ स्वान्त सुखाय थी। वे वर्षं निरुद्देश्य घूमते रहे यद्यपि उनका घूमना अपने लिए साद्देश्य था। घूमने म उन्हें आनन्द मिलता था। ल्हासा तथा तिब्बत के इस यायावार मे कुछ बातें असाधारण हैं। वे निश्चिन्त जीव हैं। रुपये जोडने का विचार उन्हें कभी आया ही नही। बीसवी शताब्दी के पूर्वाध म भिन्न भिन्न प्रवृत्ति के लोगो को प्राय लेखक ने अपनी जीव नियो का नायक बनाया है। जयवधन भी उनम से एक हैं।

(१५) कप्तान लाल—इस लघु पुस्तिका म कप्टन जसवन्तचन्द्र लाल का जीवन-वृत्त है। कप्टन लाल अग्रेज सेना के सैनिक थे। रग रूप स भी वे अग्रेज ही लगते थे। परन्तु उनम हिन्दू सस्कार देश भक्ति जातीय गौरव स्वाभिमान तथा निर्भीकता की भावनाए विद्यमान थी, जिन्ह लेखक ने इस जीवनी म विशेष रूप से अकित किया है। 'कप्तान लाल' सरल और सीधा-सादी भाषा मे लिखी गई लघु जीवनी है। इसमे जीवनीनायक की चारित्रिक विशेषताओं के उदघाटन के साथ साथ दूसरे महायुद्ध की घटनाओं का भी सजीव चित्रण हुआ है।

(१६) सिंहल के वीर —सिंहल के वीर राहुल जी की एक लघु रचना है। इसम राहुल ने सिंहल म रहकर जिन सात महापुरुषो के जीवन का गहन अध्ययन किया था उन रोचक शैली म प्रस्तुत किया है। सरदार पृथ्वीसिंह अथवा वीर चन्द्रसिंह गढवाली की तरह यह एक बडी जीवनी नही, प्रत्युत सात लघु जीवन वृत्त है। सिंहल के ये सात वीर हैं—विजय (सिंहल का प्रथम वीर) महेन्द्र (सिंहल म बौद्ध धम का प्रचारक) दुष्ट ग्रामणी (सिंहल का अजेय वीर) विजयबाहु (सिंहल का त्राणकर्ता) महापराक्रमबाहु टिकिरी मण्णार (पोर्तुगीज़ दलन कर्ता) तथा श्री मण्णार नायक। इस प्रकार सिंहल के वीर म सात सिंहल निर्माताओं के व्यक्तित्व अकन के साथ-साथ सिंहल का इतिहास भी चित्रित है। ई० पू० पाँचवी शती

बीसवी शती तक की राजनीतिक उथल-पुथल की झाँकी इस पुस्तक म प्राप्य है, जो इतिहासवेत्ता राहुल की निजी विशेषता है।

(१७) महामानव बुद्ध—महात्मा बुद्ध के जीवन की भिन्न भिन्न घटनाओं पर इस पुस्तिका में प्रकाश डाला गया है। महात्मा बुद्ध की २५वी शताब्दी के उपलक्ष्य म लेखक के विभिन्न पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित लेखो का सकलन 'महामानव बुद्ध' म हुआ है। बुद्ध जनवाणी के सर्वप्रथम आश्रयदाता थे। उनके जीवन वाणी और दर्शन का दिग्दर्शन इस पुस्तक म है।

(घ) यात्रा-साहित्य

(१) मेरी लद्दाख-यात्रा—राहुल जी की 'मेरी लद्दाख यात्रा' सन् १९३९ ई० म इण्डियन प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक म लेखक ने अपनी लद्दाख यात्रा का सुन्दर वर्णन किया है। लेखक ने मेरठ स यह यात्रा प्रारम्भ की है। पजाब मुलतान, डेराग़ाज़ीखाँ, सीमान्त, पुँछराज्य, कश्मीर आदि के भ्रमण के उपरान्त लेखक जोजीला पार कर लद्दाख पहुचता है। लाहुल और कुल्लू का वर्णन भी इस रचना मे है। राहुल जी ने यात्रा मे आए स्थानो की भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक-सुषमा वहाँ के लोगो की वेशभूषा, आचार-व्यवहार, सभ्यता, भाषा तथा परम्पराओ का कलात्मक वर्णन किया है।

(२) लका—'लका' के कुछ अश देश-दर्शन सम्बन्धी हैं और कुछ यात्रा-वर्णन के रूप मे। अनुराधपुर, पोलन्नारुव (पुलस्त्यपुर), काण्डी आदि के वर्णन म लेखक की ऐतिहासिक प्रतिभा जागरूक है। लका के इन नगरो से सम्बन्धित पुराने इतिहास को रोचक रूप मे प्रस्तुत किया गया है। 'कोलम्बो की सर' तथा 'समन्तकूट दीपक' के अन्तर्गत यात्रा-वर्णन हैं। इस पुस्तक का लका नाम से पृथक प्रकाशन किताब महल, इलाहाबाद से हुआ है। राहुल यात्रावली (भाग १) म भी यह रचना सगहीत है।

(३) मेरी यूरोप-यात्रा—राहुल साकृत्यायन की 'मेरी यूरोप-यात्रा' का प्रथम सस्करण सन् १९३५ में साहित्य सेवक सघ छपरा से प्रकाशित हुआ था। इसमे राहुल जी की १९३२ ई० की यूरोप-यात्रा का वर्णन है। कोलम्बो म राहुल जी भदन्त आनन्द कौसल्यायन के साथ यूरोप का प्रस्थान करते हैं। कोलम्बो से सागरीय यात्रा करते हुए वे यूरोप पहुचते हैं। 'यूरोप की झाँकी' 'लदन टावर' कैम्ब्रिज 'ऑक्सफोर्ड' 'पेरिस' तथा 'जर्मनी' के रोचक वर्णन इस पुस्तिका म मिलते हैं।

(४) मेरी तिब्बत-यात्रा—'मेरी तिब्बत-यात्रा' सन् १९३७ म छात्रहितकारी पुस्तकमाला दारागज, प्रयाग स प्रकाशित हुई थी। इसम १६८ पृष्ठ हैं। डायरी शैली म लिखी इस पुस्तक म ल्हासा, चाङ्, सक्य, ञेनम नपाल आदि की यात्राओ का सुन्दर वर्णन है।

(५) यात्रा के पन्ने—'यात्रा क पन्ने' सन् १९५२ म साहित्य सदन, देहरादून

से प्रकाशित हुई। इसमें ४४० पृष्ठ हैं। इस ग्रन्थ में राहुल जी की तीसरी तिब्बत यात्रा का वर्णन है। नेपाल काठमाण्डू तथा तिब्बत की यात्राएँ इसमें सम्मिलित हैं। तिब्बत की यात्राएँ राहुल जी ने वहाँ के मठों में सुरक्षित पुस्तकों, तालपत्रों आदि की खोज के लिए की हैं। इस पुस्तक में यात्राओं के साथ वे पत्र भी संगृहीत हैं, जो उन्होंने भदन्त आनन्द कौसल्यायन को लिखे थे। साथ ही 'राजस्थान विहार' शीर्षक के अन्तर्गत लेखक की राजस्थान के विभिन्न स्थानों की यात्राओं का वर्णन भी संकलित है।

(६) जापान—'जापान' का प्रकाशन छपरा के अच्युतानन्द सिंह ने किया। 'जापान' में लेखक की सिंगापुर, हाङ-काङ, शाङ्-हैई, कोबे, तोक्यो, कोयासान की यात्राओं का वर्णन है।

(७) ईरान—ईरान में दो भाग हैं—प्राचीन ईरान तथा नवीन ईरान। प्राचीन ईरान में लेखक ने ईरान के राजवंशों का इतिहास प्रस्तुत किया है और 'नवीन ईरान' में लेखक की सोवियत रूस से भारत लौटते हुए ईरान की यात्रा का वर्णन है। इसमें बाकू, तहरान, इस्फहान, शीराज का वर्णन है।

(८) रूस में पच्चीस मास—यात्रा-साहित्य सम्बन्धी ४१७ पृष्ठों की यह पुस्तक आलोक प्रकाशन बीकानेर से सन् १९५२ में प्रकाशित हुई थी। सन् १९६७ में राजकमल प्रकाशन से यह पुस्तक 'मेरी जीवन-यात्रा (३)' के नाम से प्रकाशित हुई है। राहुल जी की यह तीसरी रूस यात्रा थी जो १७ अगस्त १९४७ को समाप्त हुई थी। इस पुस्तक में ईरान, तेहरान, रूस, लेनिनग्राद आदि की यात्राओं का वर्णन है।

(९) किन्नर देश—'किन्नर देश में' सर्वप्रथम इण्डिया पब्लिशर्स प्रयाग द्वारा सन् १९४८ में प्रकाशित हुई। सन् १९५६ में इसका दूसरा संस्करण किताब महल इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक की सन् १९४८ की मई अगस्त में की गई यात्रा का विवरण है साथ ही हिमालय के इस उपेक्षित भाग का परिचय भी है। इस यात्रा में उन्होंने नवीन भारत के नव निर्माण की दृष्टि से वस्तुओं का वर्णन किया है। किन्नर प्रदेश की यात्रा के साथ वहाँ की भाषा के कुछ उद्धरण और लोकगीत भी इसमें संगृहीत हैं।

(१०) तिब्बत में सवा वर्ष—महापण्डित राहुल जी की यह पुस्तक शारदा मन्दिर दिल्ली से प्रथम बार सन् १९३३ में प्रकाशित हुई। 'राहुल यात्रावली (भाग १)' में भी यह यात्रा संकलित है। इसमें भारत के बौद्ध खण्डहरों, कन्नौज कौशाम्बी सारनाथ वैशाली लुम्बिनी से लेकर नेपाल शीगर्ची ग्यांची ल्हासा तक की यात्रा का वर्णन है। इसमें लेखक ने तिब्बत-यात्रा एवं बौद्ध धर्म-सम्बन्धी ग्रन्थों की खोज का विवरण दिया है। यह लेखक की पहली तिब्बत-यात्रा है।

(११) घुमक्कड़ शास्त्र—'घुमक्कड़ शास्त्र' राहुल जी की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचना है। इस रचना का उद्देश्य युवकों में घुमक्कड़ी का अंकुर पैदा करना मात्र ही

नही प्रत्युत जनमजात अकुरा की पुष्टि, परिवद्धन तथा मार्गदर्शन भी इसका लक्ष्य है। घुमक्कडो के लिए अनेक उपयोगी बातें इस ग्रन्थ म आई हैं। इस ग्रन्थ की रचना शास्त्र-पद्धति के रूप म हुई है, इसीलिए इसका नाम लेखक ने घुमक्कड शास्त्र दिया है। घुमक्कडी को लेखक दुनिया की सवश्रेष्ठ वस्तु मानता है और इस धम को अनादि सनातन धम कहता है। घुमक्कडी रस राहुल के लिए काव्य रस तथा ब्रह्मानन्द स किसी भी प्रकार कम नहीं।

(१२) एशिया के दुगम भूखण्डों मे – 'एशिया क दुगम भूखण्डा म लेखक की १९३३ स १९३७ ई० तक की कुछ यात्राओ का सकलन है। इस पुस्तक में राहुल जी की चार यात्राएँ हैं। पहली है लद्दाख यात्रा जो मेरी लद्दाख यात्रा' क रूप म पृथक् प्रकाशित है। दूसरी यात्रा है तिब्बत की यात्रा'। इसम ल्हासा से मठ, ग्रन्थ तथा नेपाल का वणन है। यह लेखक की सन् १९३४ म की गई दूसरी तिब्बत-यात्रा है। इसमें पत्र शली का प्रयोग किया गया है। तीसरी यात्रा ईरान म सम्बन्धित है जो 'ईरान नामक पुस्तक म अलग से प्रकाशित है। इस सग्रह म चौथी यात्रा अफगानिस्तान की है। यह यात्रा लेखक न सन् १९३७ में की थी।

(१३) चीन मे क्या देखा ? —'चीन म क्या देखा ?' म सन् १९५८ की लेखक की चीन-यात्रा का वणन है। चीन-बौद्ध-सघ के निमन्त्रण पर लेखक न चीन की यात्रा की। इस पुस्तक म रगून, पकिंग, मचूरिया, तुङ्ह्वान तथा मध्य चीन की यात्रा का वणन है। साम्यवादी चीन की प्रगति स पाठका का परिचित करवाना लेखक का ध्येय प्रतीत होता है।

हिमालय परिचय की भाँति कुमाऊँ मे भी इस प्रदेश के भू भाग के परिचय के अतिरिक्त लेखक की मानसरोवर तथा दूसरी यात्राओं का वणन है।

(ड) निब ध साहित्य

(१) साहित्य निब धावलि— साहित्य निबन्धावलि म राहुल जी के हिन्दी साहित्य, हिन्दी भाषा एव दश न्शन सम्बन्धी १६ निबन्ध सगहीत हैं। अधिकतर निबन्ध भाषण के रूप म लिख गय है। लखक इन निबन्धा म हिन्दी के भविष्य के प्रति अत्यधिक आशान्वित है —हिन्दी अपने उस लक्ष्य पर पहुच रही है जिसे इस शताब्दी के प्रारम्भ के मनीषी दूर का स्वप्न समझते थे। वह स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी। हम अपने साहित्य को सब तरह के ज्ञान विज्ञान से समृद्ध करना है[133]। इन निबन्धा म लेखक की विचारगत दृढता एव प्रौढता दश नीय है।

(२) पुरातत्त्व निबन्धावली— पुरातत्त्व निबन्धावली मे राहुल जी के पुरातत्त्व सम्बन्धी १८ निबन्धा का सकलन है। हिन्दी म पुरातत्त्व-साहित्य की बडी आवश्यकता है। भारत के सच्चे इतिहास के निमाण के लिए पुरातत्त्व की सामग्री अत्यन्त उपयोगी है। लखक की यह रचना हिन्दी म पुरातत्त्व-साहित्य के अभाव की पूर्ति का एक प्रयत्न है। राहुल जी के इस सकलन के निबन्ध समय समय पर विभिन्न पत्रो म प्रकाशित हुए थे। कुछ निब धा के शीषक हैं—पुरातत्त्व काल निणय म ईटें और गहराई जेतवन मागधी हिन्दी का विकास तिब्बत म भारतीय साहित्य और कला आदि।

(३) दिमागी गुलामी—'दिमागी गुलामी' ८० पष्ठा का एक लघु निबन्ध सग्रह है। इसम राजनीतिक एव शिक्षा सम्बन्धी राहुल जी के विचार प्राप्त होते हैं। कुल निबन्ध दस हैं जिनके शीषक हैं—(१) दिमागी गुलामी (२) गाधीवाद, (३) हिन्दू मुस्लिम-समस्या (४) शिक्षा म आमूल परिवतन (५) नव निर्माण (६) जमीदारी नही चाहिए (७) किसानो सावधान (८) अछूता को क्या चाहिए? (९) खेतिहर मजदूर तथा (१०) रूस म ढाई मास। इन निबन्धा म लेखक ने साम्यवादी ढग म भारत की विविध समस्याओं पर विचार किया है। उनके विचार अत्यन्त स्पष्ट एव मुखर रूप म प्रकट हुए है।

(४) तुम्हारी क्षय— तुम्हारी क्षय छपरा जेल म लिखी राहुल जी की एक लघु निबन्ध रचना है। भारतीय समाज की विविध कुरीतिया एव उसके विकृतागा का लेखक समूल क्षय चाहता है। भारतीय समाज के धम भगवान् न्याय एव शोषक वग के कारण ही भारत की निधन जनता दरिद्रताग्रस्त है। इस वषम्यपूण समाज म सुखमय सामाजिक जीवन का विकास सम्भव नही। अन इस समाज पर अत्यन्त पने दान्दा म राहुल जी ने प्रहार किया है। पुस्तक म छ विषय हैं—(१) तुम्हारे समाज की क्षय (२) तुम्हारे धम की क्षय (३) तुम्हारे भगवान् की क्षय (४) तुम्हारे सदाचार की क्षय (५) तुम्हारे जात पाँत की क्षय, (६) तुम्हारी जाकी की क्षय।

भाव, विचार एवं भाषा की उग्रता इस पुस्तक की विशिष्टता है।

(५) आज की समस्याएँ—'आज की समस्याएँ' में राहुल जी के चार निबन्ध हैं—(१) पाकिस्तान की समस्या (२) मातृभाषाओं की समस्या (३) प्रगतिशीलता का प्रश्न (४) आज का साहित्यकार। राहुल जी प्रगतिशील विचारक एवं कलाकार हैं। इस संग्रह के अंतिम तीन निबन्धों में उनकी भाषागत एवं साहित्यगत प्रगतिशील विचारधारा का सुन्दर निदर्शन हुआ है। प्रगतिशील साहित्यकार के विषय में उनका कथन है 'साहित्यकार अपने वाक्यों में रस, अपने पदों में लालित्य अपनी उक्तियों में सूक्ष्म सकेत ध्वनि ही नहीं प्रदान करता बल्कि वह भविष्य का भी संकेत करता है भविष्य के निर्माण में साक्षात् या उत्तराधिकारियों द्वारा हाथ बटाता है[134]।"

(६) साम्यवाद ही क्यों ?—यह रचना राहुल जी ने ल्हासा में रहते हुए सन् १९३४ में लिखी थी। इस साम्यवादी विचारों को समझने के लिए प्रवेशिका माना जा सकता है। पूँजीवाद की उत्पत्ति, 'साम्यवाद क्यों पैदा हुआ, क्या पीछे लौटा जा सकता है ?, हमारे सामाजिक रोग और साम्यवाद' आदि १२ निबन्ध इस पुस्तक में हैं।

इन निबन्ध-संग्रहों के अतिरिक्त 'अतीत से वर्तमान' के द्वितीय व तृतीय खण्ड में राहुल जी के इतिहास, कला, दर्शन व देश-दर्शन से सम्बन्धित निबन्ध संगृहीत हैं। राहुल जी के अप्रकाशित निबन्धों के संग्रह भी कम से कम आठ हैं जिनमें राहुल जी ने राजनीति दर्शन धर्म, भाषा साहित्य आदि विषयों पर विचार प्रकट किये हैं।

राहुल जी के भोजपुरी में लिखित 'तीन नाटक' तथा 'पाँच नाटक' भी उनके सृजनात्मक साहित्य के अन्तर्गत लिए जा सकते हैं। इन नाटकों में भी राहुल जी की साम्यवादी विचारधारा प्रकट है। भोजपुरी में लिखित ये नाटक लेखक के भोजपुरी भाषा प्रेम के सूचक हैं। इस भाषा द्वारा वे अपने मातृभाषा प्रदेश के लोगों में—जनसाधारण में—जागृति लाना चाहते हैं।

राहुल जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के परिचय के उपरान्त यह सहज ही कहा जा सकता है कि महापण्डित राहुल सांकृत्यायन विराट-व्यक्तित्व-सम्पन्न साहित्यकार हैं और उनका कृतित्व-सृजनात्मक एवं उपयोगी-बहुल एवं अनेकमुखी है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में उन जैसा समर्थ एवं सशक्त व्यक्तित्व सहज सुलभ नहीं। उनका प्राणवान् व्यक्तित्व घुमक्कड़-परिव्राजक, असीम ज्ञान सम्पन्न विद्वान्, राजनीतिज्ञ महान् भाषाविद् एवं अनेक भाषाओं के दिग्गज महापण्डित, क्रान्तिकारी, समाज-सुधारक एवं महामानव के रूप में जाना जाता है। उनका यह व्यक्तित्व उनके कृतित्व में सर्वत्र अनुस्यूत है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की अद्भुत विलक्षणता विविधता एवं विशालता दर्शनीय है। उनका क्षेत्र महान् एवं उदात्त है। हिन्दी के ग्रन्थ भण्डार को उन्होंने १२५ कृतियों से सम्पन्न एवं समृद्ध बनाया है। वस्तुतः राहुल जी हिन्दी के गौरव हैं।

सन्दर्भ

१ सम्मेलन पत्रिका (भाग ५२) पृ० ३० ।
२ धर्मयुग (१२ मई, १९६३) पृ० ८ ।
३ धर्मयुग (२६ मई १९६३) पृ० ४१ ।
४ आज का हिंदी साहित्य प्रकाशचन्द्र गुप्त पृ २१८ ।
५ धर्मयुग (१ अगस्त १९६५) पृ १८ ।
६ स्वतन्त्रता और साहित्य रत्नाकर पाण्डेय पृ १७७ ।
७ उपमा (अगस्त १९६३) पृ० ६६ ।
८ प्रताक (अंक १०, हेमन्त) पृ० ६३ ।
९ भाषा (त्रैमासिक सितम्बर १९६४) पृ० १ १ ।
१० उपमा (अगस्त १९६३) पृ ४६ ४८ ।
११ वही पृ० ८८ ।
१२ आजकल (मासिक मार्च १९६४) पृ २ ।
१३ दिनमान (साप्ताहिक, पर्यटन विशेषांक २१ अक्तूबर १९६६) पृ० ४५ ।
१४ घुमक्कड शास्त्र राहुल सांकृत्यायन पृ० १ ।
१५ मेरी जीवन-यात्रा (१) पृ० २६ ।
१६ वही पृ २१ ।
१७ वही पृ० ३२ ।
१८ घुमक्कड शास्त्र पृ ११ ।
१९ वही, पृ० ७ ।
२ २१ वही पृ ११ ।
२२ वही पृ० ३९ ।
२३ मेरी जीवन यात्रा (१) पृ २९, ५० ५३ ।
२४ वही पृ० ६४ ।
२५ मेरी जीवन-यात्रा (१) पृ० १२६ १३ १७४ १८८ १९५ २२५ २४१ २६० २६६ ।
२६ वही पृ० ४४८ ४७१ ।
२७ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० १ ६ ।
२८ वही पृ १०६ ।
२९ वही पृ० २९ २२९ ३८३ ४८३ ।
३ वही पृ १२७ से १७५ ।
३१ वही पृ० ३४९ ।
३२ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ ४४७ ४७२ तथा मेरी जीवन-यात्रा (३) ।
३३ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ १७९ २२८ ३ ६ ३३७ ३३८ ३४९ ३६३ ३८४ ।
३४ घुमक्कड शास्त्र पृ० २७ ३८ ४१ ५१ के आधार पर ।
३५ सरस्वती (दिसम्बर १९६६) पृ० ५ ५ ।
३६ मेरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ४९६ ।
३७ आलोचना (अक्तूबर १९६७) पृ० १३७ १३८ ।
३८ मेरी जीवन-यात्रा (भाग १) पृ० ३८२ ८३ ।
३९ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ ५३५ ।
४ वही पृ ५३६ ।

४१ मेरी जीवन-यात्रा (२), पृ० ५३८ ।
४२ मेरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ६५ ।
४३ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० ५३७ ।
४४ मेरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ६७ ।
४५ मेरी जीवन-यात्रा (५) पृ० ३४१ ।
४६ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० २०६ ।
४७ मेरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ५ ।
४८ उपमा (राहुल-स्मृति विशेषांक) पृ० १६ ।
४९ मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० २०६ ।
५ सरस्वती (फरवरी १९६४) पृ० १५५ ।
५१ सनमा के बच्चे राहुल सांकृत्यायन पृ० ३६ ।
५२ मेरी जीवन-यात्रा (१) पृ० १४१ ।
५३ वही पृ० १७४ ।
५४ वही पृ० २३६ ।
५५ वही पृ० २४६ ।
५६ वही पृ० २३६ ।
५७ वही पृ० २६६ ।
५८ वही पृ० २६७ ।
५९ वही पृ० ४३३ ।
६० मेरी जीवन-यात्रा (२) पृ० ८ ।
६१ स्वतन्त्रता और साहित्य पृ० १६३ ।
६२ सम्मेलन पत्रिका (भाग ५२) पृ० ३१ ।
६३ वैज्ञानिक भौतिकवाद राहुल सांकृत्यायन पृ० ८२ ।
६४ वही पृ० ६ ।
६५ मेरी जीवन-यात्रा (४), पृ० ४५ ।
६६ सम्मेलन पत्रिका (भाग ५२) पृ० ३० ।
६७ वही पृ० ४२ ।
६८ साप्ताहिक हिन्दुस्तान (६ अप्रैल १९६७) पृ० ५७ ।
६९ धर्मयुग (१४ जुलाई १९६३) पृ० ३१ ।
७ रेखाचित्र-श्री बनारसीदास चतुर्वेदी पृ० १८५ ।
७१ उपमा पृ० ६६ ६७ ।
७२ राष्ट्र भारती (अप्रैल १९६४) पृ० १५७ ।
७३ स्वतन्त्रता और साहित्य पृ० १७७ ।
७४ प्रदीप (शरद् ६) पृ० ६४ ।
७५ जिनका मैं कृतज्ञ पृ० प्रस्तावना ४ ।
७६ राहुल सांकृत्यायन प्रभाकर माचवे भौगस्यायन पृ० १०६ ।
७७ धर्मयुग (१४ जुलाई १९६३) पृ० १६ ।
७८ राहुल सांकृत्यायन का कथासाहित्य पृ० ६७२ ।
७९ स्वतन्त्रता और साहित्य पृ० १८६ ।
८० मेरी जीवन-यात्रा (४) पृ० ४६१ ।
८१ वही पृ० ५४५५ ।
८ सम्मेलन-पत्रिका (भाग ५२) पृ० ४६ ।
८१ वही पृ० ८८ ।

८४ सम्मेलन-पत्रिका (भाग ५२) पृ० ३२।
८५ उपमा (राहुल स्मृति विशेषाक) पृ० २६।
८६ वही पृ २८।
८७ सम्मेलन-पत्रिका (भाग ५२) पृ० ४६।
८८ घुमक्कड शास्त्र प १३३ १३४।
८९ आज का हिन्दी साहित्य प्रकाशचन्द्र गुप्त प २१६।
९० उपमा (राहुल-स्मृति विशेषाक) पृ० ३७।
९१ वही पृ० ८८।
९२ आज का हिन्दी साहित्य प २१८।
९३ उपमा (राहुल-स्मृति विशेषाक) प ३०।
९४ सम्मेलन पत्रिका (भाग ५१) पृ० १६६।
९५ बहुरगी मधुपुरी (सस्करण १९५४) आवरण पत्र।
९६ उपमा (अगस्त १९६३) प १८० १८४।
९७ ज्ञानपीठ (नवम्बर १९६३) प १४ १६।
९८ हिंदी का उच्चतर साहित्य (विक्रमी सवत २०१४) पृ० ४४८ तथा अन्य।
९९ राहुल साकृत्यायन का कथा-साहित्य प ५५ ६०।
१ सम्मेलन पत्रिका (भाग ५१) प १७१ १७५।
१ १ १०२ वही पृ १६६।
१०३ ज्ञानपीठ (सितम्बर १९६५) पृ० ५५ ५७।
१ ४ उपमा (राहुल-स्मृति विशेषाक) पृ० १८३ १८४।
१ ५ सम्मेलन पत्रिका (पौष-ज्येष्ठ शक १८८७) प १६६ १७४।
१ ६ वही (भाग ५१) प १७।
१०७ द्रष्टव्य परिशिष्ट ५।
१ ८ सम्मेलन-पत्रिका प १७०।
१०९ राहुल जी द्वारा अपने मित्रो तथा अन्य व्यक्तियो को लिखे गये पत्र।
११ १११ ज्ञानपीठ (सितम्बर १९६५) पृ० ५७।
११२ हिंदी साहित्य कोश-स डॉ० धीरेंद्र वर्मा पृ ८४६।
११३ दि मेकिंग आफ़ लिटरेचर आर एन स्कार जेम्स प २२ पर उद्धत।
११४ हिन्दी साहित्य कोश पृ ६८२।
११५ साहित्य-सहचर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी प २।
११६ साहित्य-शास्त्र डा रामकुमार वर्मा प १६।
११७ हिन्दी साहित्य कोश प ६८२।
११८ साहित्य विवेचन-क्षेमचन्द्र सुमन प २।
११९ हिंदी साहित्य कोश पृ० १५६।
१२ १२१ वही प १६।
१२२ साहित्य शास्त्र प २०।
१२३ हिन्दी साहित्य कोश पृ० १६०।
१२४ राहुल साकृत्यायन का कथा-साहित्य पृ ६३।
१२५ वही पृ० ८१।
१२६ मेरी जीवन-यात्रा (५) पृ ३६३ ६४।
१२७ १२८ द्रष्टव्य परिशिष्ट-५।
१२९ आलोचना (१९६७) प १३७।
१३ नये भारत के नए नेता प ख।
१३१ बचपन की स्मृतियाँ पृ० १।
१३२ मेरे असहयोग के साथी पृ २१।
१३३ साहित्य निबन्धावलि प्राक्कथन।
१३४ आज की समस्याएँ पृ० ५६।

दूसरा परिवर्त

राहुल जी की कहानियाँ

कहानी का स्वरूप

कहानी आधुनिक हिन्दी-साहित्य की विकासशील एवं लोकप्रिय गद्य विधा है। इसलिए कहानी को निश्चित परिभाषा में बाँधना एवं उसका स्वरूप निर्धारित करना सहज नहीं। भारतीय एवं पाश्चात्य समालोचकों एवं कहानीकारों ने इसका स्वरूप निर्धारण करने के प्रयास में इसकी कतिपय विशेषताओं का ही उल्लेख किया है। हडसन कहानी के लिए एक मूल भाव एवं लक्ष्य की एकनिष्ठता आवश्यक मानते हैं[1]। एडगर एलिन पो कहानी की रूपविधि की व्याख्या करते हुए उसकी आधुनिक आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं। वे कहानी को संक्षिप्त, प्रभावोत्पादक एवं स्वत-पूर्ण बतलाते हैं।[2] सर ह्यू वाल पोल की परिभाषा कुछ अधिक व्यापक है। वे लिखते हैं— कहानी में घटनाओं का विवरण इस प्रकार चित्रित किया जाना चाहिए कि एक आशातीत विकास दिखाई पड़े। इस विकास की प्रक्रिया सक्रियता होनी चाहिए। यह विकास इस प्रकार चित्रित किया जाना चाहिए कि वह हमारी जिज्ञासावृत्ति को स्थिर रखते हुए चरमबिन्दु का स्पर्श कर एक सन्तोषजनक पर्यवसिति तक पहुँच जाए।'[3]

हिन्दी के विद्वानों ने भी कहानी के स्वरूप को स्पष्ट करने की चेष्टा की है। जयशंकर प्रसाद कहानी को सौन्दर्य की एक झलक का चित्रण और उसके द्वारा इसकी सृष्टि करना स्वीकारते हैं।[4] मुन्शी प्रेमचन्द कहानी में संक्षिप्तता, आकर्षक आरम्भ, प्रभावपूर्ण विकास एवं मुग्धकारी अन्त आवश्यक तत्त्व मानते हैं।[5] डॉ० श्यामसुन्दर दास निश्चित लक्ष्ययुक्त नाटकीय आख्यान को कहानी कहते हैं।[6] डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा कहानी को एक लघु गद्य रचना मानते हैं जिसमें एक तथ्यता संवेदनशीलता एवं प्रभावान्विति के गुणों का होना आवश्यक है।[7] भगवती चरण वर्मा कहानी को जीवन के किसी एक पहलू की झाँकी मात्र मानते हैं जिसके प्रभाव में तीव्रता रहती है।[8] डॉ० कृष्णलाल का मत है— 'आधुनिक कहानी साहित्य का एक विकसित कलात्मक रूप है जिसमें लेखक अपनी कल्पना शक्ति के सहारे कम-से-कम घटनाओं और प्रसंगों की सहायता से कथानक चरित्र वातावरण दृश्य अथवा प्रभाव की सृष्टि करता है।'[9] बाबू गुलाबराय जी कहानी की अनेक विशेषताओं को समन्वित करते हुए इसकी परिभाषा अपेक्षाकृत अधिक विश्लेषणात्मक एवं व्यापक रूप में देते हैं—'छोटी कहानी एक स्वतःपूर्ण रचना है जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति केन्द्रित घटना अथवा घटनाओं के आवश्यक परन्तु कुछ-कुछ अप्रत्याशित ढंग से उत्थान-पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतूहलपूर्ण वर्णन हो।'[1]

उक्त मता एव परिभाषाओ के आधार पर कहानी की समवित परिभाषा का रूप इस प्रकार निश्चित किया जा सकता है—आधुनिक कहानी एक एसी सक्षिप्त परन्तु स्वत पूण रचना है जिसका आधार किसी वनानिक सत्य, मानव जीवन या समाज की कोई समस्या हो और जा बिना इधर उधर भटके अपने ध्येय पर पहुच जाए और यदि उसम कोई घटना वर्णित ह तो उसका चित्रण इकहरा और रसपूण हो। कहानी के इस स्वरूप के आधार पर कहा जा सकता है कि आकार की लघुता, सवेदना की एकता प्रभावाविति, सनियता एव रसमयता उसक प्राणभूत तत्त्व हैं। वह हमारे जीवन के किसी विशिष्ट क्षण की अभिव्यक्ति है।

उपयास के समान कहानी के भी छ तत्त्व है, पर उनके स्वरूप म उनके आकार के अनुकूल अतर होना स्वाभाविक है। उसका कथानक छोटा होता है उस मे घटना प्रसग और दृश्य तथा पात्र और उनका चरित्र चित्रण अत्यत यून सूक्ष्म और सक्षिप्त होता है। कहानी प्रस्तुत करन म लेखक के दष्टिकोण से तथा कहानी का वातावरण अर्थात समस्त कहानी म व्याप्त सामाय मनोदशा स उसके शिल्प विधान म ऐसी एकता और प्रभावाविति आ जाती है जो कहानी की निजी विशेषता है और उसके रूपात्मक व्यक्तित्व की पथक्ता प्रकट करती ह।[11] कहानी के कथा वस्तु आदि तत्त्वा म स कहानीकार किसी एक या एकाधिक तत्त्वा पर बल दे सकता है फिर भी समस्त तत्त्वा का सामूहिक प्रभाव कहानी कला की मुख्य आत्मा है क्योकि प्रत्येक तत्त्व अपने अपने स्थान पर विशिष्ट एव मूल्यवान है।[12]

कहानी का वर्गीकरण

कहानी जीवन का चित्र प्रस्तुत करती है अत कहानी क विषय भी उतने ही हो सकते है जितन जीवन क पक्ष। डा० भगीरथ मिश्र का कहना है—'कहानी की विविधता की कोई सीमा नही। जीवन क विकास क्रम म सभ्यताओ एव सस्कृतियो के विकास एव ह्रास के साथ साथ जिस प्रकार सामाजिक ढाचा और नवीन समस्याओ का उदघाटन होता रहता है उसी प्रकार समाज एव जीवन की विविध स्थितियो एव घटनाओ के द्वारा कहानी के लिए विविध क्षत्र भी खुलते रहत हैं।'[13] फिर भी विद्वाना ने कहानी के विविध तत्त्वा एव विषया क आधार पर हिन्दी कहानी का वर्गी करण किया है। तत्त्व की प्रधानता क आधार पर कहानी का वर्गीकरण इस प्रकार स किया जा सकता है —(क) घटना प्रधान (ख) चरित्र प्रधान (ग) वातावरण प्रधान (घ) भाव प्रधान। परतु कुछ कहानिया ऐसी भी हैं जो इस वर्गीकरण मे नही आती, जिससे कहानी कला की विकासशीलता एव मौलिकता प्रकट होती है। प्रकृतवादी प्रतीकवादी और साकेतिक कहानिया के लिए इस वर्गीकरण म स्थान नही है। डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल न इसीलिए इन्हे विविध कहानियाँ शीषक क अतगत रखा है।

विपय की दृष्टि स कहानियाँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं यथा – ऐतिहासिक सामाजिक मनाव नानिक मनोविश्लेपणात्मक साहसिक, रोमामिक जासूसी आदि। परतु जसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि कहानी का शिल्प इतना तरल है और उस क विपय इतने विविध हैं कि वर्गों की कारा मे उस आबद्ध नही किया जा सकता। कहानी का जस-जस विकास होगा उसके भेदा की सख्या बढ़ती जायगी।

राहुल जी की कहानिया

आधुनिक हिन्दी कहानी अनक रूपा एव विविध शलिया म विकसित होकर अनक सोपानो को लाँघ चुकी है। राहुल साङ्कृत्यायन हिन्दी क यथाथवादी कहानी लखक है। राहुल जी ने जब कहानी के क्षत्र मे पदापण किया तो प्रमचन्द जी की सामाजिक और जयशकर प्रसाद जी की एतिहासिक कहानिया की परम्परा उनक सम्मुख विद्यमान थी। राहुल जी ने दोना प्रकार की कहानिया का सजन किया है, पर तेतिहासिक कहानिया की परम्परा को तो असन्दिग्ध रूप से उन्हाने विकसित किया है। डा० सुबाधचन्द्र सक्सेना के शब्दा म– भारतीय जीवन क बाहर के परिवेश से (राहुल जी ने) परिचित कराया हमारे सामने कहानी की रचना के आधार फलक को और विस्तत किया, हमार सामने भारतीय ग्रामीण जीवन के कुछ अछूत अगा का रखा पवतीय विलासपुरिया के वपम्यपूण रूप को और उसक आश्रय म पलत सामाजिक रोगो स हमे अवगत कराया हमारे सामन आय जाति के विकास का एक रोचक कथामय इतिहास प्रस्तुत किया, जो मानवता के विकास को समझने म सहायक है।[१४]

राहुल जी के चार कहानी-सग्रह हैं— सतमी क बच्च वोलगा से गगा' 'बहुरगी मधुपुरी तथा कनला की कथा। इनम क्रमश दस बीस इक्कीस तथा नौ कहानिया है। इस प्रकार राहुल जी की कुल कहानियाँ साठ हैं। विपय-वस्तु की दृष्टि स राहुल जी की कहानिया को दो भागा म विभक्त किया जा सकता है—

(क) ऐतिहासिक कहानियाँ।

(ख) सामाजिक कहानियाँ।

(क) ऐतिहासिक कहानिया

तेतिहासिक कहानिया म इतिहास स कोई घटना ली जाती है और कहानी के पात्र भी एतिहासिक ही हात हैं। वार्तालाप आदि शप भाग लेखक का अपना होता है। श्री मोहनलाल जिज्ञासु क शब्दा म, वह कहानी जिसम इतिहास की तरह घटनाओं की क्रमबद्धता की आर ध्यान दिया जाता है एतिहासिक कहानियो के नाम स पुकारी जाती हैं। एसी कहानियो म कथानक की प्रभावोत्पादकता के लिए कल्पना का पुट अधिक रहता है।[१५] आधुनिक तेतिहासिक कहानियाँ इतिहास को यथार्थवादी ढग स ग्रहण करती है। इस दृष्टि से प्राचीनता के प्रति मोह, जातीय गौरव,

राष्ट्र प्रेम एवं दास्य-स्वतन्त्रता की भावना में क्रान्तिकारी इतिहास के द्वार ... होता है। यों सामान्यतः आलोचकों ने 'प्रसाद' की ऐतिहासिक कहानियों के तीन रूप माने हैं— ऐतिहासिक, 'अर्धऐतिहासिक' तथा 'अनैतिहासिक'।[१६] राहुल जी ने दो प्रकार की ही ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी हैं। इनकी ऐतिहासिक कहानियों में इतिहास के यथार्थ चित्रण के साथ साम्यवादी धारणाओं की स्थापना का प्रयास है। राहुल जी ने ३१ ऐतिहासिक कहानियों की रचना की है। 'वोल्गा से गंगा' एवं 'कनैला की कथा' की समस्त कहानियाँ तथा 'सतमी के बच्चे' में संगृहीत 'स्मृतिज्ञान कीर्ति' तथा 'डीह बाबा' राहुल जी की ऐतिहासिक कहानियाँ हैं। 'वोल्गा से गंगा' में राहुल जी ने प्रागैतिहासिक आर्यों के वोल्गा से गंगा नदी तट के अभियान को कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। सहस्रों वर्षों का इतिहास इन कहानियों में पाठकों के नेत्रों के सामने से निकलता है। 'कनैला की कथा' में भी राहुल जी ने ३५०० वर्षों के विस्तृत इतिहास पर दृष्टि डाली है। कनैला के जनजीवन को इतने वर्षों के प्रसार में देखना कहानीकार की ऐतिहासिक प्रतिभा का परिचायक है। स्मृतिज्ञान कीर्ति एक भारतीय पण्डित की कथा है जो भोट प्रदेश में जाकर संस्कृत ग्रन्थों का भोटिया में अनुवाद करता है। डीह बाबा शीर्षक कहानी प्राचीन भारतीय इतिहास की एक झाँकी प्रस्तुत करती है। इस प्रकार राहुल जी ने अपनी ऐतिहासिक कहानियों द्वारा मानव जीवन की यात्रा वर्णित की है। वस्तुतः उनकी ऐतिहासिक कहानियाँ विशेषकर 'वोल्गा से गंगा' की कहानियाँ युगान्तरकारी हैं। राहुल जी की ऐतिहासिक कहानियों में इतिहास-तत्त्व का यथार्थ अंकन हुआ है। यहाँ उनकी कहानियों में निहित इतिहास तत्त्व की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है।

ऐतिहासिकता

राहुल जी की कहानियों में इतिहास-तत्त्व की प्रधानता है। 'वोल्गा से गंगा' तथा 'कनैला की कथा' की ऐतिहासिकता की ओर राहुल जी ने स्वयं संकेत किया है— "लेखक की एक-एक कहानी के पीछे उस युग के सम्बन्ध की वह भारी सामग्री है जो दुनिया की कितनी ही भाषाओं, तुलनात्मक भाषा विज्ञान, मिट्टी, पत्थर, ताम्बे, पीतल, लोहे पर सांकेतिक व लिखित साहित्य अथवा अलिखित गीतों, कहानियों, रीति-रिवाजों, टोटके-टोना में पाई जाती है।"[१७] डा० नगेन्द्र भी 'वोल्गा से गंगा' की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी ऐतिहासिकता को ही मानते हैं। उनका कथन है— 'इसकी सबसे बड़ी विशेषता है लेखक का व्यापक दृष्टि विस्तार जो ८००० वर्षों तक प्रसरित मानव जीवन के इतिहास का पूरी तरह साक्षात्कार कर उसको हमारे मानस के सामने प्रत्यक्ष कर सका है। इस दृष्टि विस्तार को सहायता मिली है लेखक के व्यापक पाण्डित्य से। पुरातत्त्व, मानव शास्त्र, समाज शास्त्र, दर्शन, साहित्य और इतिहास के विस्तृत पर्यालोचन के बिना यह सम्भव नहीं था।'[१८] भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने 'वोल्गा से गंगा' की कहानियों में कहानीपन कम और ऐतिहासिकता का अधिक उभरा हुआ पाया है।[१९] राहुल जी को स्वयं इन कहानियों को रोचक ढंग से लिखना इति-

में मात्र मानने में कोई आपत्ति नहीं।[20] निस्सन्देह राहुल जी की कहानियों में इतिहास-तत्त्व का प्राधान्य मिलता है, उनकी कहानियाँ कोरी कल्पना नहीं हैं।

वोल्गा से गंगा की प्रथम चार कहानियाँ—निशा, दिवा, अमृताश्व और पुरुहूत—प्रागैतिहासिक हैं। इनकी कालावधि लगभग ६००० ई० पूर्व से २५०० ई० पूर्व मानी है। भदन्त आनन्द कौसल्यायन के अनुसार, 'इन कहानियों में कल्पना का पुट विशेष है लेकिन वह केवल कल्पना जन्य कृति नहीं है। इन कहानियों में जो जो बातें हैं वह सब राहुल जी के इन्डो-यूरोपीय तथा इन्डो ईरानी भाषा शास्त्र विषयक अध्ययन का परिणाम हैं।'[21] गंगाप्रसाद मिश्र 'निशा' के विषय में लिखते हैं—'लेखक ने प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य का जैसा चित्रण किया है वह बहुत कुछ राहुल जी की विचारधारा से मिलता है।'[22] पुरुहूत कहानी में कृषि और पशुपालन के विषय में राहुल जी के वर्णन ऐतिहासिक हैं। 'मध्य एशिया का इतिहास' में उनका कथन है—'कृषि और पशुपालन के साथ सम्पत्ति का उत्पादन बढ़ चला। अधिक हाथों के होने पर अधिक काम तथा उससे अधिक सम्पत्ति के उत्पादन का रास्ता निकल आया था, इसलिए वैयक्तिक सम्पत्ति के उत्पादन और स्वामित्व के बल पर जहाँ पुरुष समाज का नेता बन गया, वहाँ इस पितृ-सत्ता युग के युग में युद्धों में पकड़े गये शत्रुओं को मारने की जगह दास बनाकर जीवित रखने का अधिकार लिया गया।'[23] इन कहानियों में नारी-सम्बन्धी राहुल जी की धारणा भी ऐतिहासिक है और भगवतशरण उपाध्याय द्वारा तत्कालीन नारी की स्थिति के वर्णन से साम्य रखती है—'मैं नारी हूँ पितृ-सत्तात्मक युग से पूर्व मातृ-सत्तात्मक युग की भारतीय नारी जिसने वनों का शासन किया जनों का निग्रह। तब मैं निर्बाध नग्नावस्था में गिरि शिखरों पर कुलाचें भरती थी गुफा गह्वरों में शयन करती थी वन वृक्षों को आपादमस्तक नाप लेती थी तरंगिणी नदियों का अवगाहन करती थी। ... पुरुष मेरा दास था मेरे श्रम से उपार्जित आहार का आश्रित।'[24]

भदन्त आनन्द कौसल्यायन पुरुधान, 'अङ्गिरा, सुदास और प्रवाहण' कहानियों की प्रामाणिकता का आधार प्राचीन साहित्यिक रचनाओं वेद, ब्राह्मण, महाभारत, पुराण और बौद्ध ग्रन्थों के 'अट्ठकथा' नाम से प्रसिद्ध भाष्य को मानते हैं।[25] सुदास सम्बन्धी वृत्त ऋग्वेद में उपलब्ध है। उसकी वीरता, दानशीलता आदि के प्रसंग ऋग्वेद में प्राप्य हैं।[26] 'बन्धुल मल्ल' का आधार बौद्ध-ग्रन्थ हैं। 'नागदत्त' चाणक्य के 'अर्थशास्त्र' तथा जायसवाल की 'हिन्दू पालिटी' पर आधारित है। 'प्रभा' कहानी की ऐतिहासिकता का प्रमाण अश्वघोष के काव्य 'बुद्धचरित' तथा 'सौन्दरनन्द' हैं। रीज डेविड्स का लिखा 'बौद्ध भारत' भी इसकी ऐतिहासिकता का साक्षी है। 'सुपर्ण यौधेय' गुप्तकालीन कथा है जिसका आधार कालिदास के ग्रन्थ हैं। 'दुर्मुख' कहानी बाण के 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' पर आधारित है। 'चक्रपाणि' से सम्बन्धित तथ्य नैषध से सब प्राप्त हैं। इस प्रकार 'बन्धुल मल्ल' से लेकर 'चक्रपाणि' की कहानियों का आधार विविध

साहित्यिक रचनाएं हैं। इन कहानियों में प्रतिपादित वातावरण—सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक आदि निस्सन्देह प्राचीन साहित्यिक रचनाओं से समानता रखता है। हाँ, घटनाएँ लेखक की कल्पना-सृष्टि का प्रतीक है।

'वोल्गा से गंगा' की अंतिम छः कहानियाँ हैं— बाबा नूरदीन, सुरैया रेखा भगत, मंगलसिंह, सफदर और सुमेर। 'नूरदीन' कहानी का सम्बन्ध खिलजी वंश के शासक अलाउद्दीन के शासनकाल से है इसमें वर्णित अलाउद्दीन की नीतियाँ इतिहास सम्मत हैं। सुरैया में लेखक ने अकबर की उदार नीति का इतिहासानुकूल चित्रण किया है। रेखाभगत में अंग्रेजी शासन के अत्याचारों का वर्णन है। *मंगलसिंह सफदर और सुमेर क्रमशः* १८५७ ई० १९२२ ई० और १९४२ ई० की भारत की राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक स्थिति को स्पष्ट करने वाली कहानियाँ है। इस प्रकार 'वोल्गा से गंगा' की २० कहानियों में प्राचीन काल (६००० ई० पूर्व) से लेकर सन १९४२ के आन्दोलन तक की भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता के विकास क्रम का इतिहास अंकित है। डा० नगेन्द्र के शब्दों में—'इतने विस्तृत *देश-काल पर समग्रत अधिकार रखने वाली दृष्टि हिन्दी के एकाध विद्वान की ही* प्राप्त होगी। और गौरव की बात यह है कि वह कहीं भी उलझी नहीं है। मानव जीवन के विकास में पड़ने वाले भिन्न भिन्न संस्थानों पर ठहरती हुई बड़ी सफाई के साथ सन १९४२ पर आकर ही रुकी है।[27] वोल्गा से गंगा मानव जीवन के सामाजिक विकास का इतिहास है और महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की व्यापक ऐतिहासिक दृष्टि की परिचायिका कृति है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं— 'हमारे प्राचीन साहित्य में मानवीय विकास क्रम को सूचित करने वाली अनेक कथाएँ और आख्यान हैं। इन्हीं को लेकर तथा इनके साथ मानव विकास सम्बन्धी आधुनिक वैज्ञानिक विचारों को जोड़कर श्री भगवतशरण उपाध्याय ने सवेरा संघर्ष आदि कहानी पुस्तकें लिखी हैं। वे उदभ्रान्त विकल मानव के सम्मुख गतिमयी मानवता का इतिहास रखने का दावा करते हैं।' श्री राहुल ने वोल्गा से गंगा में ६००० ई० पूर्व से लेकर १९४२ ई० तक के मानव समाज के ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रवाहों का चित्रण किया है।[28]

इतना होने पर भी 'वोल्गा से गंगा' के सभी तथ्यों को प्रामाणिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता। 'वोल्गा से गंगा' में निम्नलिखित तथ्य संदिग्ध ही कहे जाएंगे—

(१) 'पुरुधान' और अंगिरा कहानियों में असुर जाति का वर्णन है। परन्तु *यह असुर जाति कौन सी है—यह स्पष्ट नहीं। डा० भगवतशरण उपाध्याय के* अनुसार 'दो नितान्त विभिन्न जातियों का आपने मिलाकर एक कर दिया है एक के शरीर पर दूसरे का बाना पहनाया है। इन दोनों जातियों में एक तो असीरिया के असुर हैं दूसरे सिंध काठे में बसने वाले द्रविड। इन दोनों के शरीर और चरित्र, संस्कृति और निवास स्थान की ऐसी खिचड़ी की गई है कि पुरातत्ववेत्ता को भी

उनको यथास्थान करने में साधारण कठिनाई न होगी।'[२६] वस्तुतः दो विभिन्न असुर जातियों का इस प्रकार मिला देना ऐतिहासिक अनौचित्य ही कहा जाना चाहिए।

(२) राहुल जी ने वाल्मीकि रामायण का रचना काल शुंग वंश के शासन काल को माना है। परन्तु डा० नगेन्द्र के शब्दों में 'आदि-काव्य से सम्बद्ध महत्वपूर्ण परम्परा के विरुद्ध उनके पास कोई प्रमाण नहीं है, केवल एक क्षीण अनुमान भर है—'कोई ताज्जुब नहीं, कवि वाल्मीकि शुंग-वंश के आश्रित कवि हों जैसे कालिदास चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के, और शुंग वंश की राजधानी की महिमा को बढ़ाने के लिए उन्होंने जातकों के दशरथ की राजधानी वाराणसी से बदलकर साकेत या अयोध्या कर दी और राम के रूप में शुंग-सम्राट पुष्यमित्र या अग्निमित्र की प्रशंसा की, वैसे ही जैसे कालिदास ने रघुवंश के रघु और कुमारसम्भव' के कुमार के नाम से पिता पुत्र चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य और कुमारगुप्त की।[३] निस्सन्देह वाल्मीकि को शुंग-वंश का राज्याश्रित कहना—वह भी अनुमान के आधार पर—इतिहास की वैज्ञानिक सूक्ष्मता का बलिदान करना है। डा० रामविलास शर्मा व्यंग्यात्मक शैली में राहुल जी की इस अनैतिहासिकता की ओर संकेत करते हैं—'यह भी एक समाज शास्त्र है। राम शुंग सम्राट के प्रतीक हैं और कुमार सम्भव के कुमार सम्राट कुमारगुप्त के। राहुल जी को चाहिए कि वह यह भी बता दें कि दशरथ, कौशल्या, सीता लक्ष्मण, भरत आदि सम्राट् के खानदान में किस किस व्यक्ति के प्रतीक हैं और शुंग सम्राट जैसे सामंती शोषक के गुण राम में चित्रित हुए हैं तो रावण में उसके विरोधी क्या किसी गणराज्य के जननायक का चित्रण किया गया है।[३१]

(३) सुपर्ण यौधेय' कहानी में समुद्रगुप्त को हूणों को पराजित करने वाला कहा गया है।[३२] परन्तु यह तथ्य भी भ्रामक है क्योंकि हूणों को परास्त करने वाला कुमार स्कन्दगुप्त था।[३३]

(४) दुर्मुख कहानी में हर्षवर्धन के भाई राज्यवर्धन को कान्यकुब्जाधिपति कहा गया है।[३४] परन्तु राज्यवर्धन स्थाण्वीश्वर का राजा था न कि कन्नौजाधिपति। इसी प्रकार हर्षवर्धन अपने वंश को क्षत्रिय सातवाहनों से सम्बद्ध करता है पर सातवाहन ब्राह्मण थे, क्षत्रिय नहीं और सातवाहनों को क्षत्रिय अथवा हर्ष के पूर्व पुरुष मानना इतिहास को चुनौती देना है।[५]

(५) कन्नौज के गहड़वाल राजा जयचन्द का चित्र प्रस्तुत करते समय लेखक ने न्याय नहीं किया। चित्र इस प्रकार है—'उनके मांस लटके चिबुक, अतिफुल्ल कपाल, गंगा जमुनी मूछें, प्रसूता की तरह लम्बित स्तनों, महाकुम्भसा उदर, पृथुल कोमल मांस-मेदपूर्ण उरु तथा पेण्डुली रोमश स्थूल बाहुओं को देखकर साधारण तरुणी भी अवज्ञा किये बिना नहीं रहती किन्तु यहाँ उनका शरीर प्राण उस बूढ़े के हाथ था।[३५] परंतु मुसलमान इतिहासकारों ने उसे अफगानों के दाँत खट्टे करने वाला और समर क्षेत्र में वीरगति प्राप्त करने वाले वीर के रूप में स्मरण किया है।[३]

(६) अलाउद्दीन को लामदीन कहना और उसके राज्य म दूध की नदिया का वणन लेखक का अपना ऐतिहासिक दृष्टिकोण हो सकता है, क्योकि इतिहास तो अलाउद्दीन को नशस शासक के रूप म स्मरण करता है ।[३८]

(७) सुरया' कहानी म सुरया (अबुलफजल की बेटी) और कमल (टोडर मल का बेटा) का विवाह एक सुदर कल्पना ह परन्तु अकबर क शासनकाल म इन दोना का यूरोप भ्रमण किसी भी प्रकार सगत नही कहा जा सकता।

(८) डा० नगेद्र के अनुसार सबसे अधिक अविश्वसनीय राहुल जी का धम विषयक सिद्धात है "कि धम केवल परधन अपहारको को शाति स उपभोग करने का अवसर देने के लिए है। डा० नगन्द्र आगे लिखते हैं— यह भी माना जा सकता है कि विश्वामित्र वसिष्ठ आदि ऋषियो की ऋचाओ ने समसामयिक राजाओ को शक्ति-सचय म सहायता दी हो उन्होने अपना स्वाथ साधने के लिए एसा किया हो परन्तु वेद की सभी ऋचाओ के पीछे एसी ही कुत्सित प्ररणा है, यह धारणा सवथा मिथ्या है। इसी प्रकार प्रवाहण न अपने शोषण काय को निर्विघ्न चलाते रहन के लिए उपनिषद रहस्य की उदभावना की यह भी अमान्य है। [३९] राहुल जी के हिन्दू धम के प्रति इस प्रकार के विचार उनक बौद्ध धम के प्रति अत्यधिक झुकाव के कारण हैं। एक आश्चय की बात यह है कि धम का इतना घोर विरोध करने वाले राहुल जी के सामने जब बौद्ध धम का प्रसग आता है तो उनकी आलोचना सवथा शिथिल पड जाती है।[४] इस प्रकार वोल्गा स गगा की कहानियो म ऐतिहासिकता सम्बन्धी सभी तथ्य मान्य नही इसका कारण लेखक के कुछ विशिष्ट दृष्टिकोण ही कहे जा सकते हैं। डा० सुबोधचन्द्र सक्सेना के शब्दो म—ऐतिह्य की दृष्टि स 'वोल्गा स गगा की अधिकाश कहानिया त्रुटिपूण है यही वाग्प्रस्तता न उस भ्रमित किया है और कही कालदूषण न आक्रात।[४१]

वोल्गा स गगा के अनन्तर कनला की कथा राहुल जी की दूसरी एतिहासिक कृति है। राहुल जी ने इस सग्रह की कहानियो म सत्य अथवा इतिहास तत्त्व को प्रधानता दी है। हर गाँव की आपबीती रोचक कथाएँ होती है जिनको बाल्यकल्पना और भी मोहक बना देती हैं। हो सकता है मेरे लिये भी कनला की कथाएँ आकषक मालूम हुई हो। पर सत्य कल्पना म भी अधिक सुदर होता है।[४२] प्राक्कथन मे कनला की पुरातत्त्व सम्बन्धी सामग्री का भी उल्लेख है जिसम रचना की एतिहासिकता पुष्ट होती है।[४३] वोल्गा से गगा की तरह ही कनला की कथा भी जन जीवन का इतिहास है। इन कथाओ म १३०० ई० पू० स लकर १९५७ ई० तक कनला के जन-जीवन का इतिहास निहित है। यही इस पुस्तक की सवप्रमुख विशेषता है।

कनला की कथा की एतिहासिकता असन्दिग्ध है। लेखक न प्रत्यक कहानी के आरम्भ म उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट किया है। त्रिवेणी (१३०० ई० पू०) म कनला क आसपास की भूमि का वणन है और किरात, निषाद तथा

द्रमिल जाति का जीवन अंकित है। 'कामीग्राम' में ७०० ई० पू० का कनैला का इतिहास है, इस समय यह भूमि आर्यों के हाथ में थी। 'बड़ी रानी' कहानी में २५० ई० पू० के मौर्य युग काल की निशपा नगरी का वर्णन है। इस कहानी का ऐतिहासिक आधार बड़ी (तालाब) की ईंट है। देवपुत्र ई० पू० सन सौ के समय की शिंशपा नगरी और कणहट्ट (कनैला) से सम्बन्धित है। 'कनारकन' कहानी में गुप्तकालीन शिंशपा का वर्णन है। गुप्तकाल को लेखक ने कला की दृष्टि से स्वर्ण-युग कहा है। 'समदखाँ' में तुर्कों के अत्याचारों का वर्णन है। 'नरमेध' शेरशाह के समय की कथा है। सन ५७ में कनैला में स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता का प्रभाव अंकित है। 'स्वराज्य' में लेखक आधुनिक कनैला का चित्र प्रस्तुत करता है। कनैला एक साधारण-सा ग्राम है पर इस गाँव के पीछे कितना विस्तृत इतिहास छिपा है, उसे देख सकना राहुल जैसे मनीषी का ही काम है।

इन दो कहानी-संग्रहों के अतिरिक्त सतमी के बच्चे संग्रह की 'डीहू बाबा' तथा 'स्मृतिज्ञान कीर्ति' कहानियों में भी इतिहास तत्त्व मुख्य है। 'डीहू बाबा' में भारत के प्राचीन इतिहास की झाँकी है। डा० ब्रह्मदत्त शर्मा के शब्दों में—"इसमें भिन्न भिन्न जातियों का बाहर से आना, भारत में भर जाति तथा आर्यों का सम्पर्क तथा संघर्ष, जातियों का स्थान परिवर्तन और यवन शासकों द्वारा हिन्दू जातियों का धर्म परिवर्तन आदि विषयों की चर्चा हुई है।"[५४] 'स्मृति ज्ञानकीर्ति' में भारतीय पण्डित की कथा है जो तिब्बत में जाता है और वहाँ अनेक संस्कृत ग्रन्थों का तिब्बती में अनुवाद करता है।

राहुल जी की कहानियों की ऐतिहासिकता के विवेचन के उपरान्त यह कहना सर्वथा उपयुक्त है कि कुछेक ऐतिहासिक त्रुटियों के होते हुए भी राहुल जी ने अपनी कहानियों में इतिहास-तत्त्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। मानव-जीवन के सामाजिक विकास का इतिहास प्रस्तुत कर उन्होंने कहानी को नये आयाम प्रदान किये हैं। स्वयं राहुल जी के शब्दों में, "मानव आज जहाँ है वहाँ वह प्रारम्भ में ही नहीं पहुँच गया था, इसके लिये उसे बड़े बड़े संघर्षों से गुजरना पड़ा। मैंने हर एक काल के समाज को प्रामाणिक तौर से चित्रित करने की कोशिश की है।"[५५] वस्तुतः राहुल जी ने युग युग तक प्रसरित मानव जीवन की अनन्तता का आस्वादन करवाया है। ठाकुरप्रसाद सिंह लिखते हैं—"राहुल जी ने ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी हैं, उनका इतिहास-ज्ञान अगाध है। 'वोल्गा से गंगा' का एक अर्थ है, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।"

(ख) सामाजिक कहानियाँ

सामाजिक कहानी का उपजीव्य समाज है। इसमें सम्पूर्ण समाज का रहस्य एवं स्पंदन छिपा रहता है और इसके पात्र हमारे समाज के, सामाजिक समस्याओं के प्रतिनिधित्व करने वाले होते हैं। राहुल जी ने ऐतिहासिक कहानियों के अतिरिक्त सामा-

चित्र समस्याप्रधान कहानियों की भी रचना की है। वर्णन, मधुपुरी गाथा सतमी के बच्चे गदहा की कहानियाँ विविध सामाजिक राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं से सम्बन्धित कहानियाँ हैं। बहुरंगी मधुपुरी के पहले विवादपूर्ण मधुपुरी के सम्बन्ध में कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ यथार्थ जीवन पर आधारित हैं। इसमें राहुल जी ने मधुपुरी के जन जीवन के विविध पहलुओं को विभिन्न पात्रों द्वारा प्रस्तुत किया है। सन् १८०० ई० के आसपास इस स्थान के समाज की दुरवस्था मिटाने और नया जीवन और संस्कार लाने उसका इसका विकास किया। सब से पहले यहाँ तक मधुपुरी के लिए अंग्रेजों का पैसा है—राहुल जी ने उसका प्रत्यक्ष दर्शन किया है। राहुल जी की ये कहानियाँ उनके निजी अनुभवों पर आधारित हैं अतः यथार्थ और सत्य हैं। राहुल जी ने मधुपुरी के नाते सभी पहलुओं को छुआ है। मधुपुरी विलासप्रधान है—विलास मण्डी के निर्माण में जिन विभिन्न व्यक्तियों ने भाग लिया उनमें गोरा-भोरा साहिबों के अतिरिक्त भारतीय सामन्त, राजकुमार राजकुमारियों सम्पन्नों तो थे ही दुकानदार उनके नौकर-चाकर तथा खच्चरवाले भी हैं और साथ व्यवसायों का समाज भी इस नगरी को प्राप्त है। मधुपुरी का पूरा चित्र प्रस्तुत करने के लिए राहुल जी ने इन सभी प्रकार के पात्रों को लिया नहीं है और उनकी समस्याओं का चित्रण किया है।

गदहों के बच्चे की कहानियों में राहुल जी ने समसामयिक समाज की धार्मिक व सामाजिक परिस्थितियों से पीड़ित व्यक्तियों के अबतक चित्र संस्मरणात्मक शैली में प्रस्तुत किए हैं। इन कहानियों के पात्र सभी उनके जीवन अनुभव में आए व्यक्ति हैं। अधिकांश कहानियाँ समाज के निम्न वर्ग की धार्मिक असमर्थताओं के करुणापूर्ण चित्र प्रस्तुत करती हैं। वस्तुतः राहुल जी हिन्दी के यथार्थवादी कहानीकार हैं। उन्होंने कहानी की विधा के रूप में जो कुछ भी लिखा है उसमें उनका गहरा अध्ययन पाण्डित्य एवं जीवन-अनुभवों की झलक मिलती है।

राहुल जी की कहानियों की शिल्पविधि

कहानीकार अपने मनोवांछित अभिप्राय की अभिव्यक्ति के लिए उसके अनुरूप एक कथानक तैयार करता है, कथानक में सजीव पात्रों को जोड़ता है दोनों के सहारे वह परिस्थिति तथा वातावरण प्रस्तुत करता है और उत्तम शैली की क्रियाशीलता से वह पाठक को एक पथ से सहज गति से अभिप्राय के चरमोत्कर्ष पर ला खड़ा कर देता है और स्वयं दूर हट जाता है।[१४] यह प्रक्रिया कहानी की रचना है, उसका शिल्प है और कथावस्तु, पात्र और चरित्र चित्रण, संवाद, वातावरण, शैली और उद्देश्य इसके मूल उपकरण हैं। इन्हीं के आधार पर राहुल जी की कहानियों की शिल्पविधि का विवेचन प्रस्तुत है।

कथा शिल्प

कहानी में कथावस्तु का स्थान मुख्य है। यही कहानी का वह ढांचा है जिस पर कहानी निर्मित होता है। आधुनिक कहानीकार इस तत्व को परोक्ष में डालकर

पात्र और परिस्थितियों के चित्रण से कहानी का निर्माण करता है फिर भी व्यापक रूप में कथानक का सहारा किसी-न-किसी रूप में कहानीकार को अपनी कहानी में लेना ही पड़ता है। कहानी जीवन की एक झाँकी है। उसमें जीवन के किसी एक रम्य दृश्य का उद्घाटन होता है। इसे प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कहानीकार पात्र के व्यक्तित्व के उस मध्यबिंदु को व्यंजित करता है, जिससे उसका सम्पूर्ण जीवन चालित होता है। सारी कथावस्तु में केवल एक ही संवेदना रहती है। घटनाओं की प्रचुरता उसमें नहीं होती। घटनाओं के संयोजन के विषय में यह आवश्यक है कि वे परस्पर सम्बद्ध होनी चाहिएँ। समस्त घटनाएँ एक साथ बंधकर एक तारतम्य से ऊँचाई की ओर दौड़ती हैं और वहाँ पहुँचकर अपने सौंदर्य का प्रकाश सहसा ही बिखेर देती हैं। प्रासंगिक घटनाएँ कहानी को अग्राह्य हैं।

राहुल जी की कहानियों में निश्चित एवं क्रमबद्ध कथानक का अभाव है। कथा प्रवाह उनमें नहीं है। अनेक घटनाओं एवं प्रसंगों की योजना के कारण कथा की गति विच्छिन्न हो जाती है और कहानी का कहानीपन उनसे लुप्त हो जाता है। कथा प्रवाह को विराम लगाकर राहुल जी पात्रों के गुणों की अभिव्यक्ति के लिए अनेक उदाहरण, प्रसंग एवं घटनाएँ प्रस्तुत करने लगते हैं। 'कुमार दुरजय' कहानी में कुमार के मधुपुरी के विनाशी जीवन के चित्रण के साथ ही अन्य रियासती राजाओं की झाँकी भी है। कुमार के पिता का वर्णन और कुमार के कुत्ते पालने का व्यसन क्रमशः कहानी में दो और तीन पृष्ठों में वर्णित है।[१८] इसी प्रकार 'पुजारी' कहानी में पुजारी की धार्मिक उदारता का उल्लेख करते हुए लेखक उस द्वारा किए गए 'चिनगी चमार के दाह-संस्कार' के प्रसंग को भी सम्मिलित करता है।[२१] 'पहवारी बाबा' कहानी में लेखक पहवारी बाबा के वहाँ पर हठ साधना करने के प्रसंग में अपने मित्र घुमक्कड़ स्वामी हरिशरणानन्द की कहानी सुनाने लगता है।[२२] इसी प्रकार 'सुलतान' कहानी में धुनिया को देखकर लेखक नियार और धुनिया की कथा कहने लगता है और मधुपुरी के मुसलमानों की दशा से परिचित करवाने के लिए एक मुसलमान का पत्र भी उद्धृत करता है।[२३] ऐसे प्रसंग राहुल जी की कहानियों के प्रवाह में बाधक सिद्ध हुए हैं और इनसे कथावस्तु में क्रमबद्धता का अभाव आ गया है।

एक सफल कहानी का आरम्भ अत्यन्त आकर्षक होना आवश्यक है। पहला वाक्य पढ़ते ही यदि पाठक कहानी की ओर अनायास ही आकृष्ट हो जाय तो उस कहानी का आरम्भ सफल माना जायेगा। राहुल जी की अधिकतर कहानियों का आरम्भ इस कसौटी पर सफल नहीं उतरता। 'डीह बाबा' कहानी कुल तेरह पृष्ठों की है जिनमें से आठ पृष्ठ भूमिका के हैं। इस प्रस्तावना भाग में लेखक भर जाति के विकास तथा कनैला के इतिहास को प्रस्तुत करता है।[२४] 'कनैला की कथा' की सभी कहानियों की पूर्व पीठिका के रूप में इतिहास का वर्णन है। 'बहुरंगी मधुपुरी' की

अधिकांश कहानियों के आरम्भ में भी लम्बी प्रस्तावना है। हाय बुगाग कहानी के पहले ढाई पृष्ठों में मधुपुरी के सलानियों का वर्णन है।[५८] कुमार दुर्नय के आरम्भ में सामंतवाद सम्बन्धी भूमिका है[५९]। 'गुरुजी' कहानी के आरम्भ में मैथिल पण्डितों के आचार व्यवहार से सम्बन्धित लम्बी प्रस्तावना है।[६०] वोल्गा से गंगा' की भी कई कहानियाँ इस दोष से मुक्त नहीं[६१]। इस प्रकार राहुल जी की कहानियों का आरम्भ वर्णनात्मक चमत्कार शून्य और साधारण है। कहानी के कथानक की प्रस्तावना अंश विस्तृत है जिसमें घटनाओं और पात्रों की परिस्थिति का पूरा परिचय रहता है। यदि यह कहा जाए कि राहुल जी की कहानियों का आरम्भ निबन्धात्मक है तो असमीचीन न होगा। प्रभाकर माचवे लिखते हैं ये अपनी कहानियाँ भी निबन्धकार की तरह से लिखते हैं जबकि निबन्धों में भी कहानी जैसी सूत्रमयता रहती है।[५९] कनैला की कथा की सन ५७ और स्वराज्य शीर्षक कहानियों में निबन्धात्मकता का तत्त्व अधिक है।

आरम्भ में ही नहीं कहानी के कलेवर में भी राहुल जी ने सामाजिक राजनैतिक आर्थिक परिस्थितियों का विशद अंकन किया है। लिस्टिक कहानी में विमना और शला के बीच समाज की स्थिति पर लम्बी बातचीत है।[६] सुदास कहानी में राजतन्त्र की हीनता और गणतन्त्र की उत्कृष्टता से सम्बद्ध चार पृष्ठों का वाद विवाद है।[६१] मंगलसिंह कहानी में मंगलसिंह वैज्ञानिक आविष्कारों के नाम ही गिनाना शुरू कर देता है।[६२] इस प्रकार राहुल जी की कई कहानियों में निबन्ध की भ्रान्ति होने लगती है। कहानी में भूमिका घातक है। आरम्भ से ही गति भर कर अन्त तक पहुँचना चाहिए। उसमें विषयान्तरता का स्थान नहीं होता। राहुल जी की अधिकांश कहानियाँ इन्हीं दुर्बलताओं के कारण कथाशिल्प का सफल निर्वाह नहीं कर पाई।

राहुल जी की कुछ कहानियों का आरम्भ आकर्षक एवं जिज्ञासामूलक भी है। 'वोल्गा से गंगा' की कई कहानियों का आरम्भ प्रकृति चित्रण से हुआ है जो अत्यन्त चित्रात्मक एवं सुन्दर हैं। रूपी कहानी भी इस दृष्टि से सुन्दर है। इसकी प्रथम पंक्ति है— वह इस जीवन के लिए नहीं पैदा हुई थी। कई बार इस दलदल से निकलने की कोशिश उसने की।[६३] इस प्रकार राहुल जी की कहानियाँ कथा आरम्भ की दृष्टि से विशेष आकर्षक नहीं। रूपी तथा वोल्गा से गंगा की कुछ कहानियाँ इसका अपवाद अवश्य हैं जिनमें आकर्षण और लक्ष्य संकेत की विशिष्टता प्राप्य है।

राहुल जी की कहानियों में नाटकीयता का भी प्रायः अभाव है। कथानक में आरम्भ विकास चरमसीमा जैसी स्थितियों का अस्तित्व नहीं है। स्मृतिमानकीर्ति में एक भारतीय पण्डित के जीवन की झाँकी है यहाँ विषय का वर्णन मात्र है।[६४] 'ठाकुर जी (बहुरंग मधुपुरी) रामगोपाल (सतमी के बच्चे) त्रिवेणी (कनैला की कथा) आदि में कथा के आरम्भ विकास संघर्ष चरमसीमा आदि की कहीं स्थिति नहीं है। कहानी की समाप्ति चरमसीमा पर हो जानी चाहिए किन्तु

राहुल जी ऐसा नहीं करते। प्रभा राहुल जी की सर्वोत्कृष्ट कहानी मानी जाती है इस कहानी की परिसमाप्ति प्रभा की मृत्यु के साथ हो जानी चाहिए, परन्तु लेखक अश्वघोष के शेष जीवन की घटनाएँ उपसंहार के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार राहुल जी की कहानियाँ घटनाओं का स्थूल एवं विशद वर्णन मात्र हैं। वे घटनाओं का विवरण और पात्रों का इतिवृत्त प्रस्तुत करती हैं।

राहुल जी की कहानियाँ सुखान्त एवं दुःखान्त दोनों प्रकार की हैं। सुखान्त की अपेक्षा दुःखान्त कहानियाँ अधिक मार्मिक हैं। 'सतमी के बच्चे' की अधिकांश कहानियाँ हृदय को करुणा से द्रवित करने वाली हैं। इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ यथा सतमी के बच्चे, डीह बाबा, पाठक जी, रजवनी, दर्लसिंगार आदि करुणान्त हैं, साथ ही हृदय में निराशा और विषाद के स्थान पर आशा और विद्रोह की भावना जागृत करने वाली हैं। 'वोल्गा से गंगा' संग्रह की 'सुरया', 'मंगलसिंह' और 'सुमेर' दुःखान्त हैं। 'कनैला की कथा' में 'कलावार' का अन्त कारुणिक है। इसी प्रकार 'बहुरंगी मधुपुरी' में 'डारा' और 'चम्पा' दुःखान्त हैं। ये दुःखान्त कहानियाँ पाठक को करुणाभिभूत करने में समर्थ हैं।

कथा शिल्प की दृष्टि से राहुल जी के अधिकांश प्रयत्न असफल हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ निबन्ध सी लगती हैं। कथा कहने का ढंग इनमें अविकसित है, कथात्मक गति, मोड़ और कौतूहल का अभाव है। डा० नगेन्द्र के शब्दों में— विशेष रूप से 'सुदास' और साधारणतः 'नागदत्त' तथा 'सुरया' को छोड़कर शेष कोई भी प्रसंग कहानी के गौरव का अधिकारी नहीं है। उनमें घटनाओं या मनोवृत्तियों के उत्थान-पतन का सर्वथा अभाव है—चरमस्थिति का कहीं भी पता नहीं है।[१८] डॉ० नगेन्द्र के 'वोल्गा से गंगा' के लिए कहे गये ये शब्द उनकी सभी कहानियों के लिए उपयुक्त हैं।

इतना होते हुए भी राहुल जी की कहानियों में रोचकता का तत्त्व मिलता है। 'हाय बुढ़ापा' में प्रमोदबाला का अपने बुढ़ापे को छिपाने के लिए शृंगार रचना का प्रसंग, 'कुमार दुरजय' में लादूराम का प्रसंग, 'ठाकुर जी' में ठाकुर की तपस्या का वर्णन, 'कलाकार' कहानी तथा 'सतमी के बच्चे' की कहानियों में व्याप्त करुणा राहुल जी की कहानियों में मार्मिकता एवं रोचकता लाने वाले प्रसंग हैं। 'वोल्गा से गंगा' की कहानियों की रोचकता के विषय में डा० नगेन्द्र लिखते हैं— राहुल जी ने स्थान-स्थान पर मानवीय तत्त्व का आरोप करके इन कथाओं में रक्त और मांस भरने का प्रयत्न किया है जिससे वे हृदयग्राही हो गई हैं। हाँ, यह अवश्य मानना पड़ेगा कि ऐतिहासिक तथ्यों में रंग भरने का राहुल जी के पास केवल एक ही साधन है सेक्स, जिसका प्रयोग बार-बार दुहराया गया है। प्रत्येक युग के जीवन-नाटक के सूत्रधार रूप में कोई प्रेमी प्रेमिका ही रंगमंच पर अवतरित होते हैं और कहानी के मध्य में उनकी प्रगाढ़ प्रेम क्रीड़ाएँ, विशेषकर चुम्बनों की बौछारें और अन्त में किसी

न किसी रूप म, उनका अनन्त जीवन म लय हो जाना घटना चक्र म रस-सचार करता ह। [66] सवस के अतिरिक्त राहुल जी के पास कथावस्तु म रोचकता लान का दूसरा उपकरण वातावरण की सष्टि है। इस विषय म डा० ब्रह्मदत्त शर्मा का कथन द्रष्टव्य है – 'कथावस्तु म वातावरण विशेष की सष्टि द्वारा कहानी म रोचकता आ जाती है।' [67] विशेषकर प्राकृतिक वातावरण क सजीव चित्रण राहुल जी की कहानिया की सौन्दय वद्धि म अत्यधिक सहायक हुए हैं।

राहुल जी की कहानियाँ घटना प्रधान हैं और वणनात्मक एव इतिवृत्तात्मक रूप म प्रस्तुत हैं। यद्यपि कथाशिल्प का उनम अभाव है पर युग-युग तक प्रसरित मानव जीवन की अनन्तता का कहानिया के रूप म प्रस्तुत करना राहुल जी की ही विशेषता है।

कथावस्तु की दष्टि स राहुल जी की कहानिया का महत्व इसलिए है कि वे अपनी एक एक कहानी मे एक युग की कहानी कहते हैं। वह कहानी कल्पित कम तथ्या पर आधारित अधिक ह। इसलिए राहुल जी की कहानिया प्रमचन्द और प्रसाद की कहानिया की भाँति सगठित नही हं। राहुल जी का उद्देश्य इतिहास वणन है, जिसका वे कथात्मक रूप म अकित करत है। डा० ब्रह्मदत्त शर्मा का कथन इस विषय म सत्य प्रतीत हाता है— राहुल की कहानिया म भारतीय सस्कृति तथा सभ्यता क विकास क्रम का इतिहास उपस्थित किया गया है। आय सस्कृति का भिन्न भिन्न विदेशी सस्कृतिया से जो सम्पक प्रागतिहासिक काल से लेकर वतमान समय तक हुआ तथा मानवता ने जा विकास किया उन सबका चित्रण इन कहानियो म है।' [68] राहुल जी की कहानिया के कथानक इतिहास की भित्ति पर आधत वग वषम्य एव आर्थिक असमानता का चित्रण करन वाले हैं। उनम मानसिक ऊहापोह के चित्रण के प्रति आग्रह लक्षित नही होता। वस्तुत राहुल जी स्थूल कथानक दकर किसी विचारगत सत्य या यथाथ स्थिति को स्पष्ट करने के प्रति आग्रही दिखाई देत हैं जिससे उनका कथाशिल्प सम्पन्न नही बन पडा।

पात्र और चरित्र चित्रण

कहानी के कला विधान म पात्रो क चरित्राकन का महत्त्व अत्यधिक है। पात्र कथावस्तु के सजीव सचालक हैं जिनसे एक ओर कथावस्तु का आरम्भ विकास और अन्त होता है और दूसरी ओर जिनस हम कहानी म आत्मीयता प्राप्त करते हैं। [69] आधुनिक कहानी म तो पात्र के चरित्र का उदघाटन करना कहानी का लक्ष्य बन गया है। पात्र क व्यक्तित्व को उभार कर पाठक क सामन ला देना कहानी का सफलता मानी जाती है। स्वाभाविक रूप स प्रस्तुत पात्र और उसका चरित्र चित्रण कहानी म सहज विश्वसनीयता ला देता है। [70] डा० श्यामसुन्दर दास चरित्र चित्रण की प्रक्रिया म विश्लेषणात्मक तथा अभिनयात्मक दाना पद्धतिया की उपयोगिता स्वीकारत है। [71]

राहुल जी की कहानियों में पात्र और चरित्र चित्रण का तत्त्व अपेक्षाकृत कम उभरा है। उनकी कहानियाँ प्रमुखतः वातावरण प्रधान कहानियाँ हैं और उनमें इस तत्त्व को इतनी प्रमुखता प्राप्त हुई है कि अन्य तत्त्व गौण पड गये हैं। दूसरे स्थान पर उनकी कहानियों में उनके विचारक एवं इतिहासकार के रूप को स्थान मिला है यही कारण है कि उनकी कहानियों में ऐतिहासिकता एवं उनकी विचारधारा सर्वत्र मुखरित है। राहुल जी की कहानियों के पात्र उनके अपने विचारों एवं जीवन-दर्शन के अनुकूल हैं। अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने पात्रों का निर्माण किया है। प्रमुखतः उनके पात्र समाज-सुधारक हैं। सुदास नागदत्त सुपर्ण यौधेय बाबा नूरदीन, मंगलसिंह रेखा भगत सफदर, सुमेर लोपा प्रभा सुरैया—ये सभी पात्र कहानीकार के विचारों के वाहक मात्र है। ये सभी पात्र समाज के अप्रगतिशील तत्त्वों के विरोधी हैं। वे ब्रह्मवाद, धनवाद पुरोहितवाद पूंजीवाद एवं सामाजिक विषमता के विरोधी हैं और लेखक की मानवतावादी एवं साम्यवादी विचारधारा के अनुकूल है। बहुरंगी मधुपुरी के पात्र सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से विभिन्न स्तरों एवं वर्गों के हैं, उनका चयन-क्षेत्र प्रायः सीमित हैं। 'सतमी के बच्चे' के पात्र प्रायः एक ही प्रकार के हैं। अभिप्राय यह है कि राहुल जी ने अपनी कहानियों में ऐसे पात्रों का ग्रहण किया है जो उनके उद्देश्य एवं विचारधारा के अनुकूल हैं।

डा० लक्ष्मीनारायण लाल पात्रों के प्रमुखतः दो रूप मानते हैं—ऐतिहासिक एवं सामाजिक।[७२] राहुल जी के अधिकांश पात्र या तो इतिहास से लिए गये हैं या उनके अपने जीवन अनुभव में आए सामाजिक पात्र हैं। सतमी के बच्चे के पाठक जी, पुजारी जी दलसिंगार डीहू बाबा जसिरी, राजबली तथा रामगोपाल आदि पात्र राहुल जी के पितृग्राम तथा ननिहाल के सुपरिचित पात्र हैं। बहुरंगी मधुपुरी के पात्र राहुल जी के मसूरी निवास में उनके सम्पर्क में आए पात्र हैं। 'कनैला की कथा' के जयन्त, देवपुत्र श्रीकर मघदबाबा आदि पात्र तथा वोल्गा से गंगा के अधिकांश पात्र ऐतिहासिक हैं। इस प्रकार लेखक ने इतिहास प्रसिद्ध एवं जीवन अनुभव में आए सामाजिक पात्रों को अपनी विचारधारा के अनुकूल ढाल कर प्रस्तुत किया है। लोकोत्तर पात्र उनकी कहानियों में नहीं हैं। राहुल जी ने ऐतिहासिक पात्रों के चरित्रांकन में अपनी विशिष्ट कल्पना शक्ति और पाण्डित्य द्वारा उनके विशिष्ट व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है और उनके सामाजिक पात्र प्रायः वर्गगत पात्र है, वे धनी निर्धन एवं सामान्य वर्गों में विभक्त हैं।

डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा पात्रों के चरित्र चित्रण की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिकता के उपयोग पर बल देते हैं[७३] परन्तु राहुल जी का ध्यान पात्रों का चरित्रांकन करते समय उनके चरित्र के बाह्य रूप पर ही केंद्रित रहा है। सफलतापूर्ण चरित्र चित्रण के लिए लेखक में जिस मनोवैज्ञानिक अध्ययन की अत्यधिक आवश्यकता है[७४] वह राहुल जी में दृष्टिगोचर नहीं होती। उन्होंने पात्रों के चरित्रांकन में पात्रों की आकृति, वेश भूषा तथा उनके बाह्य क्रियाकलाप का ही चित्रण किया है। पात्रों की

प्रवत्तिगत विशेषताग्रा उनकी प्रतिक्रियाग्रा एव उनके अ तमन का विश्लेषण नही किया। निशा' कहानी म बाह्याकति का एक रेखाकन द्रष्टव्य है— उसके लाल मल छुए कपोल की अरुण श्वत छवि, ललाट को बचाते बिखरे हुए लट विहीन पाण्डु श्वेत केश अल्पमासल पथुल वक्ष पर गाल गोल श्यामलमुख स्तन, अनुदर कश कटि पुष्ट मध्यम परिमाण नितम्ब पेशीपूण वतु ल जघा श्रमधावन परिचित हलाकार पेण्डुली।[७५] इसी प्रकार कुमार दुरजय सुरया[७६] जीता पाठक जी[७७] किरात सरदार अमाना[७८] आदि पात्रा का चरित्र चित्रण उनके बाह्य सौन्दय, वशभूषा आदि के अङ्कन द्वारा किया गया हैं। पात्रा के गुणो एव क्रियाकलाप का वणन राहुल जी ने स्थूल ढग स वणनात्मक शली म ही प्रस्तुत किया है। जयन्त के नियाकलाप वणन का एक उदाहरण द्रष्टव्य है— 'जयन्त सुबाहु का वीर पुन था—वीरता और शौय म पिता क अनुरूप। युद्ध वजित हाने के कारण जयन्त अपनी निर्भीकता का परिचय मृगया के क्षेत्र म ही देता था। वह पचानन के आमने-सामने खडा हो उसका शिकार करता था।[७६] इस प्रकार राहुल जी की दष्टि चरित्राकन के बाह्य रूप तक ही सीमित रही है। पात्रा क अ तरग का विश्लेषण उन्होन नही किया। प्रवाहण सफदर सुमर जस विचारशील पात्रा के अ तमन का विश्लेषण भी उन्हाने नही दर्शाया।

बाह्य चरित्राकन म राहुल जी के विभिन्न पात्र साम्य रखते हैं। नारी-पात्रा के सौन्दर्याङ्कन म एक जसी विशषतायें प्रकट की गई है।[८०] बहुरगी मधुपुरी के अधिकाश पात्र समान चरित्र रखते है। महाप्रभु पेड बाबा, रायबहादुर कुमार दुरजय, प्रमादवाला मेमसाहब मीनाक्षी आदि पात्र स्वार्थी एव विलासी है। गोलू कमलसिंह राउत रूपी टोरा आदि पात्र भाग्यवादी एव विपन्न है। विविध पात्रा की चरित्रगत समानता पाठक पर विशेष प्रभाव डालने म असमथ है।

चरित्र चित्रण के लिए व्यवहारत चार साधना का उपयाग किया जाता है— वणन सकेत कथोपकथन और घटना काय व्यापार। इनम सकेत और कथोपकथन द्वारा चरित्र चित्रण की शली सर्वाधिक कलात्मक स्वीकार की जाती है।[८१] राहुल जी न प्रमुखत वणनात्मक शली म चरित्र चित्रण किया है। इस विषय म डा० ब्रह्मदत्त शर्मा का कथन है— राहुल जी ने पात्रा की विशषताओं का घटनाओं क सहार उपस्थित किया है। चरित्र चित्रण प्रत्यक्ष और वणनात्मक है।'[८२] सकेतात्मक-शली का उनम अभाव है। कहा कही काय व्यापार एव सवादात्मक शली म भी राहुल जी न चरित्र चित्रण किया है पर अधिकाशत व वणनात्मक ढग से ही चरित्राकन करत हैं। राहुल जी की चरित्र चित्रण कला अविकसित ही कही जा सकती है। आधुनिक कहानीकार की चरित्र चित्रण के क्षेत्र म प्रगति स्थूल स सूक्ष्म की ओर चरित्र क बाह्य सघष स आन्तरिक सघष की ओर गतिशील है वह राहुल जी म नही।

सवाद

सवाद मूलत नाटक का उपकरण हैं, पर सामान्यत अन्य सभी रचना प्रकारा म भी इसका प्रयोग अनिवाय है। कहानी म सवादा की योजना कथा विकास चरित्र चित्रण और वातावरण निर्माण के लिए अपेक्षित है। कहानी क सवादा म मनो वज्ञानिकता, सक्षिप्तता यथार्थता, व्यग्य विनोदात्मकता का गुण होना चाहिए। सक्षिप्त सवादा म राजनीति, समाज धम यथाथ और आदश का सकेत होना चाहिए ताकि पाठक के अन्त करण पर पात्रा के विश्वासा का चित्र अकित होता जाए। डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा के शब्दो मे—'कहानी म इसका लघु प्रसारी, वदग्ध्यपूण आकपक और चमत्कारी प्रयोग ही इष्ट होता है।'[८३]

राहुल जी की अनेक कहानियाँ सवादा से आरम्भ होती हैं। दिवा अगिरा, प्रवाहण नागदत्त बाबा नूरदीन (वोल्गा स गगा) धुरविन (सतमी के बच्चे), लिस्टिक डोरा (बहुरगी मधुपुरी) कहानियाँ सवादा से ही आरम्भ होती हैं। कुछ कहानिया म कथोपकथन द्वारा कथा का विकास हुआ है। अगिरा सुदास, प्रवाहण बन्धुल मल्ल, प्रभा, सुरया, रक्षामगत, सफदर सुमेर कहानिया म सवाद-तत्त्व प्रधान है।

राहुल जी ने सवादा का उपयोग कथानक के विकास तथा पात्रा के चरित्रा कन क लिए किया है। सुदास कहानी म सुदास तथा अपाला के सवाद सक्षिप्त एव सजीव हैं। दोना की प्रथम भेंट गाव के कुएँ पर होती है। सुदास अपनी यात्रा क विषय में बतलाता है कि वह काम की खोज में इधर उधर घूम रहा है। दोना में परस्पर प्रेम का उदय होता है। अपाला उसे अपने पिता के पास ले जाती है। वह भी सुदास की वार्ता स प्रभावित होकर उस काय पर लगा लेता है। इस कथा क य सवाद सक्षिप्त एव सजीव हैं कथा का गति देत हैं और सुदास के चरित्राकन म सहायक हैं।[८४] इस प्रकार के सहज सवाद राहुल जी की कहानिया में यत्र-तत्र बिखरे हैं। सोफिया और नागदत्त की प्रणय-वार्ता का एक चित्र सवादा के माध्यम से प्रस्तुत है[८५] —

> 'यह माला मैंने प्रियतम के लिए बनाई है।'
> 'बहुत अच्छी माला है, सोफी।"
> किन्तु मालूम नहीं उसे कसी लगेगी।
> 'क्यों बहुत अच्छी लगेगी।"
> 'उसके पीले केश, और यह माला अतिरिक्त गुलाबा की है।"
> सुदर मालूम होगी।'
> जरा तुम्हारे सिर पर रख कर देख लूँ।
> तुम्हारी मर्जी। मेरे भी केश पील हैं।

इसी प्रकार क सवाद सुरया और कमल की प्रणयवार्ता[८६] सूर तथा दिवा क ~~

प्रेमालाप[८७] म देखे जा सकते हैं । स्मृतिज्ञान कीर्ति तथा डोन् मा के सवादा म[८८] भी स्वाभाविकता एव सजीवता है । ऐसे लघु सवादा म लेखक कथा का गति दे सका है और पात्रा का चरित्राकन भी कर सका है ।

निजी विचारधारा एव दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति के लिए भी राहुल जी ने सवादा का उपयाग किया है । यहाँ राहुल जी के पात्र लेखक की विचारधारा के वाहक बन जाते हैं और सवाद उनकी अभिव्यक्ति का उपकरण । कालिदास और सुपर्ण यौधेय के सवादा म राजतन्त्र की विगहणा और गणराज्या की प्रशसा है ।[८९] *सुदास और दिवोदास की वार्ता का विषय भी प्राय यही है ।*[९०] *'सुमेर' कहानी के* सवादा में गाँधीवादी धर्म, भगवान विषयक विचारा को लेखक ने सवादा के माध्यम से व्यक्त किया है ।[९१] *'सफदर' कहानी में गाँधीवादी अहिंसा की निरथकता की ओर* सकेत है ।[९२] प्रभा कहानी के सवाद लेखक की बौद्ध धर्म के प्रति आस्था को व्यक्त करते हैं ।[९३]

> *लेकिन बौद्ध सबको विरागी तपस्वी और भिक्षु बनाना चाहते हैं ।*
>
> 'बौद्धा में गृहस्थो की अपेक्षा भिक्षु बहुत कम हाते हैं और बौद्ध गृहस्थ जीवन का रस लेने म किसी से पीछे नही रहते ।
>
> 'इस देश म और भी कितने ही धर्म हैं आखिर यवना का बौद्ध धर्म पर इतना पक्षपात क्यो ? यह फिर भी समझ में नही आता ।
>
> यहाँ बौद्ध ही सबमे उदार धर्म है । जब हमारे पूर्वज भारत में आए, तो सब म्लेच्छ कहकर हमसे घृणा करते थे । आक्रमणकारी यवना की बात मैं नही कर रही हूँ यहाँ बस जाने वाले अथवा व्यापार आदि के सम्बन्ध में आने वाले यवना के साथ भी यही बर्ताव था किन्तु बौद्ध उनसे कोई घृणा नही करते ।

यहाँ सवादा का उद्देश्य न तो कथा को गति देना है और न पात्रा के चरित्र पर प्रकाश डालना है । लेखक कथा विकास को विराम लगाकर अपनी विचारधारा को अभिव्यक्ति देता है ।

वातावरण सजना के लिए भी लेखक ने सवादा का उपयाग किया है । दिवा कहानी के सवाद तत्कालीन आर्यपूर्वजा की युद्धनीति शिकारवृत्ति एव धर्म प्रवणता के वातावरण को प्रस्तुत करते है ।[९४] सुरया और कमल के सवाद सामयिकालीन सागर का दृश्य अकित करने म सहायक है ।[९५] लिप्स्टिक कहानी म मुहल्ले की स्त्रियो के सवादा द्वारा बदलते हुए फैशनों पर टीका टिप्पणी है ।[९६]

राहुल जी की कहानिया म सवाद लम्बे एव विचारा के भार से लदे होने के कारण बोझिल बन गए है । जहाँ प्रणय प्रसगा म सक्षिप्त सवादो के द्वारा लेखक मादक चित्र प्रस्तुत करता है[९७] वहा लम्बे सवाद कथा विकास म बाधक एव चरित्राकन की दृष्टि स अनुपयोगी है । सफदर और उसके मित्र शकर के सवाद ग्यारह पृष्ठो के

है जिनमे देश की राजनीतिक स्थिति का अंकन है। नेता प्रश्न करता है और सफदर उनका उत्तर देता है। वार्तालाप चिन्तन प्रधान एवं नीरस हैं[९८]। 'सुमेर' कहानी के संवादों की भी यही स्थिति है[९९]। इस कहानी से एक उद्धरण यहाँ प्रस्तुत है—'ता आप नहीं चाहते कि अछूत सवर्ण सब एक हो जाएँ? चाल तो हम ऐसा कर दिया है किन्तु गांधी जी के प्रिय धर्म, भगवान पुराणपंथियता उसे हम समझने नहीं देती। मुझे देखिए, ओझा जी, मेरा रंग गेहुआँ नाक ज्यादा पतली ऊँची और आपका रंग काला, नाक बिल्कुल चपटी। इसका क्या अर्थ है? मेरे में आय रक्त अधिक है। आपमें मेरे पूर्वजों का रक्त अधिक है। आपके पूर्वजों ने वर्ण-व्यवस्था की लाह की दीवार खड़ी कर बहुत चाहा कि रक्त-सम्मिश्रण न होने पाये, किन्तु चाह नहीं पूरी हुई इसके सबूत हम आप मौजूद हैं। काला और गोरा तट के खून आपस में मिल गए हैं। आज वर्ण (रंग) को लेकर झगड़ा नहीं है। आपको कोई ब्राह्मण जाति से खारिज करने के लिए तैयार नहीं है। सारी बातें ठीक हो जाएँ यदि धर्म भगवान पुराणपंथियता हमारा पिण्ड छोड़ दें और यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कि नायक और गांधी जी जैसे उनके पोषक मौजूद हैं।' इस प्रकार के संवाद प्रवचन से प्रतीत होने लगते हैं। इनमें न तो मनोवैज्ञानिकता ही है और न ही व्यंग्य विनोदात्मकता। फलतः पाठक के अन्तःकरण पर पात्रों के विश्वासों का चित्र अंकित करने में भी सफल नहीं है।

कथोपकथन में नाटकीयता का गुण होना चाहिए परन्तु राहुल जी के संवादों में नाटकीयता का अभाव ही दृष्टिगोचर होना है। उनमें संक्षिप्तता, पैनापन एवं सजीवता का प्रायः अभाव है। नानासाहब और मंगलसिंह के संवाद नीरस हैं[१]। सुमेर और रामगोपाल ओझा की शपथ एवं गोपित सम्बन्धी वार्ता में भी नाटकीयता नहीं है।[२] कई स्थलों पर संक्षिप्त होने के बावजूद भी संवाद नाटकीय नहीं। जैसे —

और?'

'और हिन्दुस्तान का छुआछूत, जात पाँत, हिन्दू मुस्लिम का अन्तर मिटाना होगा। देखने हो हम किसी के हाथ का खाने में छूतछात का ख्याल रखते हैं।'

नहीं।'

'अंग्रेजों के भीतर धनी-गरीब के सिवा और छोटी बड़ी जात पाँत का कुछ ख्याल?'

'नहीं और?'

'सती बन्द करना होगा लाखों औरतों को हर साल आग में जलाना इसे क्या तुम समझते हो भगवान क्षमा कर देंगे।'[३]

इस प्रकार न तो लम्बे संवादों में और न संक्षिप्त संवादों में ही राहुल जी नाटकीयता का समावेश कर सके हैं। लम्बे संवाद गम्भीर विषयों पर विवेचन करते

वाले हैं अत बोभिल ह । लघु सवाद प्राय साधारण ह । प्रणय प्रसगा के सवादा म अवश्य नाटकीयता है । 'सतमी के बच्च म धुरनिन कहानी क आरम्भ क सवादा म भी कुछ नाटकीयता है ।'[१४] अधिकाशत राहुल जी क सवाद लम्ब एव अनाटकीय ही ह ।

राहुल जी के सवादा म भाषा पात्रानुकूल है । ग्रामीण पात्रा के सवादा मे लोकभाषा का पुट है । सतमी के बच्च क सवादा की भाषा सरल व्यग्यमयी तथा मुहावरा और लोकोक्तिया स सम्पन्न है ।'[१५] बाबा नूरदीन कहानी के सवाद लोक भाषा से युक्त हैं । उदाहरणाथ एक अश प्रस्तुत है ।

हमारी अहीरियाँ तो चादर भी नही लती । ऐसे ही छाती तानकर खेत हार म रात दिन घूमती फिरती हैं । उन्ह तो काई उठा नही ले जाता ।

इज्जतवाले धरा की इज्जत बिगाडत हैं ।

तो पण्डत ! हम बेइज्जत वाले हैं और कौन है सोरा इज्जतवाला ।'[१६] लोकभाषा स प्रभावित इस प्रकार के सवाद सजीव एव प्रभावपूण हैं । 'दुखे लाला कहानी के सवाद भी लोकभाषा म ह ।'[१७] इसके अतिरिक्त भाषा की पात्रानुकूलता सुरया कहानी म देखी जा सकती है । मुसलमान पात्रो के सवादा की भाषा म उदू फारसी के शब्दो का बाहुल्य है ।'[१८] मम साहब' तथा सफदर कहानिया म अग्रेजी शब्दो का प्रयोग है ।

राहुल जी की कहानिया मे प्रयुक्त सवादा के उपयुक्त विश्लेषण के उपरात यह कहना उपयुक्त होगा कि राहुल जी ने पात्रा के चरित्र विकास कथा की गति तथा उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए सवादा का प्रयोग किया है । उनके सक्षिप्त एव सुन्दर कथोपकथन वोल्गा स गगा' की आरम्भिक कहानिया म हैं । बाद की कहानिया म गम्भीर विषया का विवेचन होन के कारण उनके सवाद लम्ब हो गय हैं कई स्थल तक वितकपूण होने क कारण नीरस बन गय ह । कनला की कथा' सतमी क बच्चे तथा बहुरगी मधुपुरी म सवाद स्वल्प ही हैं । सवादा की उत्कृष्टता की दृष्टि स राहुल जी की निदा निशा, 'बन्धुल मल्ल तथा प्रभा कहानिया दशनीय है ।

वातावरण सृष्टि

कहानी-कला का मेरुदण्ड वास्तविक जीवन है काल्पनिक लोक नही । वास्तविक जीवन देश काल और जीवन की विभिन्न सत असत परिस्थितिया से निर्मित होता है अतएव उन तत्त्वा का एक स्थान पर सचयन और चित्रण करना कहानी म वातावरण उपस्थित करना है '[१९] शिल्प की दृष्टि स कहानी म और विशेष रूप से एतिहासिक कहानी म वातावरण का अवतारणा अनिवाय है । इसके बिना कहानी म न ता इतिहास की रसमयता एव प्राणवत्ता आ सकती है न कहानी

का वह चरम उद्देश्य ही चरिताथ हो सकता है, जिसके आधार पर ऐतिहासिक कहानी लिखी जाती है।"[10] वस्तुत लखक की सजन शक्ति का परिचय वातावरण की सष्टि स मिलता है। वह कहानी म वातावरण की परिकल्पना ऐसी परिस्थिति के रूप म करता है जिसके द्वारा कथानक तथा कथानक का विकसित करने वाले चरित्रो के अभीष्ट संवेदनात्मक लक्ष्य तक पहुचा जा सके।"[11]

महापण्डित राहुल साङ्कृत्यायन ऐतिहासिक कथाकार है और उन्होन इतिहास क प्रस्तरखण्डो को बडे कौशल स जोडकर उसके प्रत्यक युग के वातावरण की सजीव सष्टि की है। " राहुल जी की कहानिया इसलिए उत्कृष्ट है कि उनम परिपाश्व और परिवेश का सजीव चित्रण है। वस्तुत उनम अन्य तत्त्व गौण हैं देशकाल का चित्रण ही सवप्रमुख है। डा० ब्रह्मदत्त शर्मा लिखत हैं—'उन्होन कहानी के लिए जिस कलात्मक रूप का प्रयोग किया उसम ऐतिहासिकता तथा वातावरण का सौदय है तात्त्विक आकषण नही।"[13] 'वोल्गा से गगा, बहुरगी मधुपुरी', 'सतमी के बच्चे कनला की कथा सभी म देशकाल का चित्रण विशद एव सजीव रूप स हुआ है। वोल्गा स गगा तथा कनला की कथा म तो देशकाल का चित्रफलक अत्यन्त विशाल है। लखक के व्यापक दृष्टि विस्तार ने ८००० वर्षों तक प्रसरित मानव-जीवन के इतिहास को हमारे सामन प्रस्तुत किया है। इतन विस्तत देशकाल पर समग्रत अधिकार रखने वाली दृष्टि राहुल जी के अतिरिक्त अन्यत्र दुलभ है। राहुल जी वातावरण के कुशल चितर हैं।

घटनास्थल—राहुल जी की कहानिया म विस्तृत देशकाल का चित्रण है अत उनक घटनास्थल भी विविध है। 'वोल्गा से गगा की प्रथम पांच कहानिया—निशा, दिवा, अमतास्व पुरुहूत पुरुधान का सम्बन्ध वोल्गा और सुवास्तु नदी के मध्य स्थित प्रदेशो स है। इस सग्रह की अन्य पन्द्रह कहानियां तक्षशिला एव पटना के मध्य स्थित विभिन्न प्रदेशो एव नगरो की कहानिया हैं। 'कनला की कथा की सभी कहानिया का केन्द्र राहुल जी न कणहट (कनला) को ही बनाया है। बहुरगी मधुपुरी की समस्त कहानियो का घटनास्थल पवतीय विलासपुरी मधुपुरी (मसूरी) है। 'सतमी क बच्चे कहानी सग्रह की कहानिया विविध स्थानो स सम्बधित है। सतमी के बच्चे पाठक जी, जमिगे दर्लसिगार का सम्बध पन्दहा गांव से है। 'डीह बाबा व पुजारी' की घटनाएँ कनला म घटित हैं। 'राजवली तथा धुरविन की घटनाएँ कनला के आसपास क गावो स सम्बन्धित है। रामगोपाल का घटनाएँ प्रयाग और लाहौर से सम्बद्ध हैं। इस सग्रह की एक कथा 'स्फुलिगान कीर्ति का घटनास्थल मोट प्रदेश है। इस प्रकार राहुल जी की कथाओ के विविध घटनास्थल हैं। इन कहानियो म इन स्थानो क सजीव और यथाथ चित्र अकित हुए हैं।

परिवेश—राहुल जी न अपनी कहानियो म वातावरण-सजन के लिए पर्याप्त उद्योग किया है और इसम उन्ह सफलता भी मिली है। राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक

स्थितिया क सफल अङ्कन के साथ प्रकृति क भी सुन्दर चित्र उनकी कहानिया म मिलत हैं।

(क) राजनीतिक स्थिति—राहुल जी की कहानियाँ विभिन युगा स सम्बद्ध है अतएव उनम विभिन युगा की राजनीतिक स्थिति का अङ्कन हुआ है। वोल्गा से गगा की कालावधि ६००० ई० पू० स सन १९४२ तक है। 'कनला की कथा' का भी काल पर्याप्त विस्तत है। सतमी क बच्चे म बीसवी सदी के प्रथम तीन दशकों की स्थिति का चित्रण है और बहुरगी मधुपुरी म स्वातन्त्र्योत्तर भारत की भाँकी है।

वोल्गा स गगा की प्रथम पाँच कहानियाँ निशा दिवा, 'अमृताश्व, 'पुरुहूत तथा पुरुधान म ६००० ई० पू० स २००० ई० पू० की वोल्गा से स्वात तक प्रसरित हिन्दी-यूरोपीय जाति के राजनीतिक जीवन की भाँकी मिलती है। यह युग कबीलो का युग था आर्य-पूर्वज छोटे छोटे कबीलो (जनों) म विभक्त थ। इन जना म परस्पर युद्ध होते थ शासन जन समिति द्वारा चलाया जाता था तथा जन के *योग्यतम व्यक्ति को महापितर माना जाता था।*[११४] *महापितर की प्रधानता होने पर* भी जन ही सवस्व था। कालान्तर म जन सघर्षों न युद्ध-सेनापति इन्द्र को जन्म दिया।[११५]

अङ्गिरा, सुदास, प्रवाहण तथा बन्धुल मल्ल शीर्षक कहानियो म १८०० ई० पू० स ४९० ई० पू० तक की राजनीतिक स्थिति का अङ्कन है। इस काल मे आर्य जाति असुरा स सग्राम म विजयी हो तक्षशिला से श्रावस्ती तक पहुच जाती है। अगिरा कहानी म असुरा के राजतन्त्र का वणन है। गान्धार म गणतन्त्र-प्रणाली ह परन्तु धीरे धीरे आर्यों न भी गणतन्त्र के स्थान पर राजतन्त्र को अपना लिया। यह युग गणतन्त्र और राजतन्त्र के सघष का युग है। नागदत्त प्रभा सुपण यौधय दुमु ख कहानिया म चन्द्रगुप्त मौय स हषवधन तक की राजनीतिक स्थिति का चित्रण है। यह युग साम्राज्यवाद का युग है, इस काल मे गणराज्य का ह्रास हुआ और राजतन्त्र का विकास। इस काल के शासक स्वभावत साम्राज्यवादी थ—राज्य की सीमाओ का विस्तार उनका प्रमुख लक्ष्य था। सुपण यौधय म कालिदास गणराज्य के स्थान पर सामाज्यवाद का समथन करता है।[११६] चक्रपाणि कहानी म पृथ्वीराज और जयचन्द क पारस्परिक वमनस्य का वणन है जिसका परिणाम तुर्कों का भारत आगमन है। इस कहानी की घटनाए १२०० ई० के आसपास की है। बाबा नूरदीन म अलाउद्दीन की शासन स्थिति का उल्लेख है तथा सुरया म अकबरकालीन शासन का। मुगल शासन को लोकप्रिय बनाने के लिए अकबर हिन्दू मुस्लिम दोना स समान व्यवहार की नीति अपनाता है।

रेखाभगत म ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन का वणन है। 'मगलसिंह सन १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम स सम्बद्ध कहानी है जिसम भारतीय जनता की राजनीतिक चेतना का वणन है। सफदर और सुमर म दो महायुद्धा की राज

नीतिक स्थिति का अङ्कन है। इस युग म भारत गांधी के नतत्व म सत्याग्रह एव असहयाग आन्दोलना द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति क सघष को जारी रखता है। अग्रेज रालट एक्ट द्वारा भारतीया का दमन करत हैं। इसी अवधि म जलियाँवाला बाग की घटना भी हाती है।

स्वातन्त्र्यात्तर काल का वणन बहुरगी मधुपुरी और कनला की कथा की कुछ कहानिया मे विस्तार मे मिलता है। सन १९४७ म भारत स्वतन्त्र होता है जनतन्त्र की स्थापना हाती है। कांग्रेस द्वारा देश की उन्नति क लिए निमाण-योजनाएँ बनाई जाती हैं। लखक को कांग्रेस सरकार की नीतिया म और अग्रेजा की नीतिया म कोइ अन्तर दिखाइ नही पडता। वह साम्यवाद का उपासक है और साम्यवाद को ही शोषण का उपचार स्वीकारता है।

(ख) सामाजिक अवस्था —सामाजिक अवस्था के अन्तगत समाज की सास्कृतिक स्थिति, उसके आहार-व्यवहार वशभूषा, रहन-सहन आदि का वणन राहुल जी ने किया है।

राहुल जी न जिस समाज का चित्रण किया है—वह विभिन्न युगा एव आदर्शों का है। वह समाज गतिशील है अपनी आदिम अवस्था स विकसित हाता हुआ वह आधुनिक युग तक पहुचा है, उसके विविध रूप एव स्तर हैं। समाज चित्रण के अन्तगत उसकी सास्कृतिक अवस्था के चित्रण म राहुल जी ने विभिन्न युगा म नारी की स्थिति का सविस्तार यथाथ अकन किया है। आय-जाति म स्त्रिया का पुरुषो की तरह सम्मान प्राप्त था। आय पूवजा का समाज ता मात प्रधान समाज था ही। वहाँ नारी स्वतस्वामिनी थी। स्त्री आजीवन स्वतन्त्र रहती थी वह पुरुष की जगम सम्पत्ति न थी।[११] आय स्त्रिया का वदाध्ययन एव युद्ध म भाग लन का अधिकार था। लोपा ब्रह्मवादिनी है और गार्गी ब्रह्मवाद अनवाद एव पुनजन्मवाद जस गम्भीर विषया पर वाद विवाद करन म निपुण है।[१२] स्त्रिया गहकार्यों म कुशल हैं उनम पर्दे की प्रथा नही है। साम्राज्यवादी युग म स्त्री का सम्मान कम हाने लगा। वह पुरुषा विशेषकर राज्याधिकारिया की कामना का कन्दुक बनने लगी। रनिवासा म सहस्रो की सख्या म उन्हे भरा जान लगा।[१] यवना क भारत आगमन क अनन्तर नारी की स्थिति और भी नारकीय बन गई। स्त्री को घर की चहारदिवारी म बन्द कर दिया गया और पर्दे का प्रथा का प्रचलन हुआ। यवन राजाओ एव सनापतिया द्वारा हिन्दू नारिया का सतीत्व हरण किया जान लगा।[१] अकबर की उदार धार्मिक नीति के परिणामस्वरूप अतर्जातीय विवाह प्रथा का विकास हुआ। पर हिन्दू नारी की स्थिति म इसस कोई विशेष परिवतन नही हाना।

बीसवी शती म भारतीय समाज पर अग्रेजी सभ्यता का प्रभाव स्पष्ट दृष्टि-गोचर हाता है। नारी का इस काल म स्वतन्त्रता मिलती है। परन्तु उसम विलासिता, शृगारप्रियता एव आडम्बर अधिक आ जाता है। नागरिक स्त्रिया पर्दे की प्रथा को

दूर कर पुष्प के समान स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करती हैं। धनी स्त्रियों का जीवन अधिक विलासमय है। बहुरंगी मधुपुरी की अनेक नायिकाएँ विलासिनी हैं। मेम साहब अपने बनाव शृंगार पर सैकड़ों रुपये खर्च करती है। होटलों में नृत्य करना जुआ खेलना तथा तरुणों को आकृष्ट करने के लिए पानगोष्ठियों का आयोजन उनके दैनिक कार्य है। साथ ही बहुरंगी मधुपुरी में ऐसी भी निर्धन स्त्रियाँ हैं जिन्हें अपने एवं अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए वारवनिता बनना पड़ता है। धनी स्त्रियों की विलासिता उनके मनोरंजन का साधन है और निर्धन स्त्रियों का पेट पालने की मजबूरी।[११] श्रमिक एवं निर्धन सनमी जैसी नारियाँ पेट पालने के लिए दिन रात खेतों में काम करती है फिर भी भूख मिटाने के लिए दो कौर अन्न भी जुटा नहीं पाती।[१२] इस प्रकार राहुल की कहानियों में आर्यकाल से लेकर आधुनिक युग की नारी की सामाजिक स्थिति का अंकन है।

युगानुकूल आहार-व्यवहार, वेश भूषा रहन सहन के अंकन द्वारा राहुल जी की कहानियों में सामाजिक परिवेश का यथार्थ एवं सजीव चित्रण मिलता है। पर्वतीय गुहाओं में रहने वाले आर्यों से लेकर बीसवीं शती के अंग्रेजी सभ्यता में रंगे हुए भारतीय समाज के गतिशील चित्र उनकी कहानियों की विशिष्टता है।

भारत में आने से पूर्व आर्य पूर्वज (हिन्दी यूरोपीय जाति) पर्वतीय गुहाओं में जीवन व्यतीत करते थे। हिम और शीत से अपने को बचाने के लिए वे पशु चर्म का प्रयोग करते थे। शिकार उनकी जीविका का प्रमुख साधन था और कच्चा अथवा भुना हुआ मांस उनका आहार था। केवल आर्य पूर्वजों का ही नहीं भारत की आदि जातियों किरात निषाद आदि का आहार भी मांस ही था। मांस के अतिरिक्त उनके खान पान में दूध और सोमरस का भी प्रयोग होता था। विशेषकर भारतीय आर्यों के लिए तो सोमरस महत्त्वपूर्ण पेय था।[१३] भारत आने पर आर्यों की वेशभूषा में अन्तर आ जाता है। वे ऋतु अनुसार एवं पुरुष-स्त्री के भेद के साथ पहरावा पहनते हैं। पुरुषों की वेशभूषा में उष्णीष कंचुक अन्तरवासक और कमरबंद का प्रमुख स्थान है और स्त्रियाँ उत्तरासंग (चादर), कंचुक व अन्तरवासक धारण करती हैं।[१३] भोजन में मांस व सोमरस की ही प्रधानता थी। निवास के लिए आरम्भ में तम्बू और बाद में कच्चे पक्के मकानों का प्रयोग होने लगा था। आर्यों की अपेक्षा असुरों के मकान अधिक सुन्दर और सुदृढ़ थे उनके निर्माण में ईंटों का प्रयोग होता था।[१४] यह अवस्था वैदिकयुगीन आर्यों की थी।

वैदिकोत्तर काल में क्रमशः आर्यों के रहन सहन एवं खान पान में विकास होता है। साम्राज्यवादी युग में आर्य वंशजों का जीवन अधिक सुखमय था। ग्राम जीवन और नगर जीवन में भारी अन्तर आ गया था। नगरों में भव्य प्रासादों एवं अट्टालिकाओं का निर्माण होने लगा था। राजप्रासादों में सुरा सुन्दरी एवं नृत्य का महत्त्व था। सफदर बाबा बाबा नूरदीन एवं सुरैया आदि कहानियों में मुगलकालीन

भारत की सामाजिक स्थिति का चित्रण है। नगरों में भव्य प्रासाद हैं और लोग कुर्ते अचकन का प्रयोग अधिक करते हैं।[१२६]

बीसवीं शती में भारतीयों के जीवन में पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। इस समय का समाज खान-पान और वेशभूषा में पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगा हुआ है। 'मधुपुरी' की कहानियों में विलासी समाज का चित्र है जिसमें आडम्बर और दिखावा अधिक है। पुरुष और स्त्रियाँ दोनों ही कोट-पैंट पहनते हैं। रहने के लिए नवीन फैशन की कोठियाँ हैं। नगर में रहने वाले श्रमिक एवं निर्धन वर्ग का जीवन बड़ा कठिन है। उनके पास रहने के लिए साधारण मकान हैं पेट भर भोजन प्राप्त कर लेना उनके लिए समस्या है।[१२७] इसके विपरीत ग्रामों में रहन सहन का क्रम अब भी पुराना है। वही धोती-कुर्ते का पहनावा, वही पौष्टिक एवं सरल भोजन और कच्चे तथा साधारण मकान।

समाज चित्रण में राहुल जी ने समाज के मनोरंजन आदि के साधनों का भी यत्र-तत्र उल्लेख किया है। इससे उसकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का, उसकी सम्पन्नता विपन्नता का संकेत मिलता है। मनोरंजन के साधनों में नृत्य प्रधान है साथ ही आर्यों एवं आर्य-पुत्रजों को संगीत एवं पान-गोष्ठियाँ विशेषकर प्रिय थीं।[१२८] संगीत उनके सम्मिलित काम का एक अंग है।[१२९] तरुण-तरुणियाँ स्वच्छन्दता से नृत्य-गान में सम्मिलित होते हैं परस्पर प्रेम प्रदर्शन, हास-परिहास, प्रेमालाप में वे स्वतन्त्र हैं।[१३०] आर्य युवक एवं युवतियों को उत्सव विशेष प्रिय थे। इन उत्सवों में युवक-युवतियाँ सुरापान कर अपने नृत्य-कौशल का प्रदर्शन करते थे। नृत्य केवल अपने पति या प्रिय के साथ मिलकर ही नहीं होता था किसी भी प्रेमी के साथ प्रेमिकाएँ निस्संकोच नृत्य करती थीं।[१३१] अश्वारोहण तथा तैराकी भी उनके लिए मनोरंजन एवं व्यायाम के साधन थे।[१३२] साम्राज्यकालीन भारत में भी नृत्य एवं संगीत का महत्व था। मनोरंजन के साधनों में नाटक लोकप्रिय थे। अश्वघोष एवं कालिदास के नाटक इसी युग की देन हैं। मुगलकालीन भारत में हिन्दू-समाज के लिए जीविका के साधन जुटाना तथा अपनी मान मर्यादा को बचाने का प्रश्न था, मनोरंजन की ओर उनका ध्यान कम था फिर भी अकबर के शासनकाल में उत्सवों की ओर जनता का ध्यान देखा जा सकता है।

पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव आधुनिक मनोरंजन के साधनों पर भी पड़ा है। आधुनिक धनियों का जीवन विलासमय है। तरुण-तरुणियाँ ग्रीष्मकाल में पर्वतीय विलास पुरियों में जाना पसन्द करते हैं जहाँ पान गोष्ठियाँ, नृत्य, जुआ शृंगार-सज्जा आदि की ओर उनका विशेष ध्यान होता है।[१३३]

इस प्रकार सामाजिक स्थिति के अंकन में राहुल जी ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विभिन्न गतिशील चित्र प्रस्तुत किये हैं। डा० ब्रह्मदत्त शर्मा का इस विषय में कथन सत्य है— राहुल सांकृत्यायन की कहानियों में भारतीय संस्कृति तथा

सभ्यता के विकास क्रम का इतिहास उपस्थित किया गया है। आर्य-संस्कृति की भिन्न भिन्न विकासी संस्कृतियों में जो सम्यक प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान समय तक हुआ उन सबका चित्रण इन कहानियों में है।[134]

(ग) आर्थिक स्थिति—राहुल जी की कहानियाँ राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति की तरह आर्थिक स्थिति का भी चित्र प्रस्तुत करती है।

आर्थिक दृष्टि से प्राचीन आर्य लोग सम्पन्न थे। आर्य-पूर्वज जब वक्षु-तट पर रहते थे तो उनका जीवन वन्य था और वन्य-पशुओं का आखेट उनका व्यवसाय था, आजीविका का साधन था।[135] मध्य एशिया के आर्यों का व्यवसाय पशुपालन था।[136] उनके मुख्य पशु गाय और अश्व थे। भेड़ों को भी आर्य पालते थे।[137] पशुधन ही उनकी सम्पन्नता एवं विपन्नता का सूचक था। कालान्तर में कृषि उनका मुख्य व्यवसाय बन गया।[138] स्थायी रूप से सप्त सिन्धु में बस जाने पर व्यापार और कृषि उनके मुख्य धन्धे थे।[139] प्रारम्भिक आर्य वन्य पुष्पों एवं पत्तों से अपनी स्त्रियों को सजाते थे परन्तु अनार्य नागों के अनुकरण पर स्त्रियाँ सोने चाँदी के आभूषणों से अपने को अलंकृत करने लगी थी।

कनिष्क एवं गुप्तकालीन भारत में वाणिज्य उन्नति के शिखर पर था। इस काल की आर्थिक सम्पन्नता का मुख्य लाभ राजाओं, सामंतों एवं व्यापारियों को था।[140] इस काल में ग्रामों की अपेक्षा नगरों की स्थिति अधिक अच्छी थी। गाँवों के लोग दरिद्र थे यद्यपि वहाँ शिल्पी, तन्तुवाय, स्वर्णकार, चर्मकार सभी प्रकार के शिल्प व्यवसायी रहते थे परन्तु उनके इस शिल्प का लाभ उठाने वाले नगर थे।[141] मुसलमानी राज्य में आर्थिक स्थिति लगभग उसी प्रकार की थी जिस प्रकार की साम्राज्यकालीन भारत में। निर्धन और धनी का अन्तर उसी प्रकार से बना रहा।

आर्थिक स्थिति में तीसरा परिवर्तन अंग्रेजों के समय दिखाई देता है। इस समय आर्थिक विषमता पहले से भी अधिक बढ़ने लगी। इस युग में धन-धान्य सामन्तों, जमींदारों व सेठों के पास सिमट सिमट कर आने लगे। निर्धन और निर्धन होने लगे। दिन रात काम करने के बाद भी उन्हें पेट भर अन्न प्राप्त नहीं होता। भुखमरी से उनकी मृत्यु हो जाती है। सतमी के बच्चे कहानी समाज के इसी वर्ग की कारुणिक कथा है।[142] बहुरंगी मधुपुरी के पात्र गालू, राउत, बिसुन, कमलसिंह आदि भी धनाभाव से संतप्त हैं। इसके विपरीत मधुपुरी के कुमार दुरजय, ठाकुर जी, मेमसाहब आदि धनी पात्र हैं जिन्हें सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हैं।

(घ) प्रकृति चित्रण—वातावरण की सृष्टि के लिए राहुल जी ने तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का सफल चित्रण करने के अतिरिक्त प्राकृतिक वातावरण का भी सजीव अङ्कन किया है। राहुल जी के प्रकृति चित्र अत्यन्त सजीव हैं उनकी रेखाएँ अत्यन्त पुष्ट और रंग अत्यन्त मनोरम हैं।[143] प्रकृति चित्रण के विविध रूपों की ओर आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र संकेत करते

है— 'प्रकृति का वणन कई प्रकार का देखा जाता है—शुद्ध भावाक्षिप्त और अलङ्कृत। शुद्ध वणन वह है जिनम प्रकृति जैसी दिखाई देती है वैसी ही प्रस्तुत कर दी जाए। भावाक्षिप्त वणन वह है जिसम वणन करने वाले के हृदयगत भावा का आरोप भी हो। इस प्रकार प्रकृति कही प्रफुल्ल दिखाई देती है और कही विपण्ण। अलकृत वणन वह है जिसम उपमा उत्प्रेक्षा आदि अलकारो का विशेष लदाव हो।'[१४] राहुल जी के प्रकृति चित्र अधिकतर शुद्ध और अलकृत हैं।

राहुल जी के प्रकृत चित्र प्राय ऋतुआ, पवतीय स्थाना, उपवनो वनस्थलिया एव नदिया से सम्बधित हैं। ऋतुआ मे ग्रीष्म वषा और वसत के चित्र अधिक हैं। वोल्गा से गगा की आरम्भिक कहानिया किसी-न किसी प्रकृति चित्र से आरम्भ होती हैं। वस्तुत इन कहानिया के नायक-नायिकाआ का चरित्र इन प्राकृतिक दृश्या के मध्य अत्यत निखर उठा है। 'निशा' और 'दिवा' की कथाआ म वोल्गा तट के तुषार मण्डित विभिन्न प्रदेशो के वणन चित्रकला क उत्कृष्ट उदाहरण हैं। राहुल जी के वसत ऋतु के चित्र अत्यत रम्य और आकषक हैं। कही उन्हाने वसतागमन के चित्र प्रस्तुत किय हैं तो कही वसन्त श्री के। वसतागमन से निर्जीव प्रकृति सजीव हो उठी है, देखिए— वसत के दिन थे। विस्मृत प्रकृति म नवजीवन का सचार हो रहा था। छ महीने स सूखे भुज-वक्षो पर हूस पत्ते निकल रहे थे। बफ पिघली, धरती हरियाली से ढकती जा रही थी। हवा मे वनस्पति और नई मिट्टी की भीनी भीनी मादक गध फल रही थी। जीवनहीन दिगत सजीव हो रहा था। कही वक्षो पर पक्षी नाना भाँति के मधुर शब्द सुना रहे थे कही झिल्ली अनवरत शोर मचा रही थी। कही हिमद्रवित प्रवाहो के किनारे बठे हजारो जल-पक्षी कृमि भक्षण म लगे हुए थे कही कलहम प्रणय क्रीडा कर रहे थे।'[१५] अमृताश्व कहानी का आरम्भ भी फगाना के पवतीय प्रदेश मे वसत-वणन के साथ हुआ है।[१६] वसन्त के यौवन का वणन बधुल मल्ल तथा 'प्रभा' म द्रष्टव्य है।[१७] वसन्तान्त का चित्र सुदास म सुन्दर बन पडा है।[१८] ग्रीष्मकाल के चित्र राहुल की कहानिया म स्वल्प ही हैं। वर्षा ऋतु का वणन 'सुरया' 'सुमेर' तथा नरमेध कहानिया म हुआ है। राहुल जी न वषा-वणन म वर्षा के जल के वणन के साथ साथ सावन के महीने म कुल वधुआ के मधुर कण्ठा स निसत गीता का भी वणन किया है।[१९] शिशिर शरद और हेमत को प्राय एव ही रूप म देखा गया है। शीत ऋतु के वणन छोटे, बाह्य और चलते हैं।[२०]

राहुल पवतीय-यात्राआ के प्रेमी थे। पवत की भूमि और वनस्पति ने उन्ह सर्वाधिक आकृष्ट किया है। पवतीय वक्ष और हिमवमना धरती उन्ह बहुत प्रिय है। देवदारु वृक्ष का वणन देखिए— वक्षु की घघर करती धारा बीच म बह रही थी। उसके दाहिन तट पर पहाड धारा स ही शुरू हो जाते थे किन्तु बाई तरफ अधिक ढालुआँ होन स उपत्यका चौडी मालूम होती थी। दूर स देखने पर सिवाय घनहरित उत्तुग देवदारु वक्षा की स्याही क कुछ नही दिखलाई पडता था और नजदीक आन पर नीचे ज्यादा लम्बी और ऊपर छोटी होती जाती शाखाओ के साथ उनके वाण

जंग जुगीन शुंग निगनाह पड़ते थे और उनमें नाना तरह-तरह की मालाएँ और दूसरे वस्त्र थे।[५१] इन पंक्तियों में स्वर्णिम काल का विशद चित्र प्रस्तुत है। हिमाच्छादित धरती का एक चित्रात्मक दृश्य भी द्रष्टव्य है— चारों ओर का दृश्य ? सफेद ... नभ के नीचे पृथ्वी कपूर-सी श्वेत हिम से आच्छादित है। चौबीस घंटे से हिमपात न होने के कारण दानेदार होते हुए भी हिम कठोर हो गया है। यह हिमवसना धरती दिगंत व्याप्त नहीं है बल्कि यह उत्तर से दक्षिण की ओर कुछ मील लम्बी पहाड़ी टेढ़ी मेढ़ी रेखा की भाँति चली गई है।[५२] मधुपुर पर्वतीय प्रकृति का एक चित्र स्मृतिशालनशीलता में सुन्दर बन पड़ा है।[५३] इनके अतिरिक्त राहुल जी ने नानाप्रकारी सरिता-तटों, उद्यानों और सरोवरों के चित्र भी अंकित किए हैं।[५४]

राहुल जी ने 'वोल्गा से गंगा' में ही प्रमुख रूप से प्रकृति चित्र प्रस्तुत किये हैं। 'कनैला की कथा', 'बहुरंगी मधुपुरी' तथा 'सतमी के बच्चे' में बहुत कम प्रकृति चित्र हैं। राहुल जी के प्रकृति चित्रण इतिवृत्तात्मक अधिक हैं, वस्तु-वर्णन की ओर ही उनका अधिक ध्यान रहा है। रसात्मक प्रकृति चित्र कम हैं—वनश्री और पुष्करिणी आदि के वर्णन में ही रसात्मकता है। इनमें लेखक की पूर्ण तन्मयता दृष्टिगोचर होती है। राहुल के प्रकृति चित्रण उनकी कहानियों में वातावरण निर्माण अथवा पृष्ठभूमि के रूप में अधिक आए हैं जो कहानी की सीमा के प्रायः अनुकूल हैं। प्रकृति चित्रण में बिम्बात्मकता दर्शनीय है। उनकी कहानियों में प्रयुक्त बिम्बों की शृंखला न केवल यथार्थ चित्र की सृष्टि करती है बल्कि उनमें सुन्दरता भी सन्निवेश कर देती है।

राहुल जी की वातावरण-सृष्टि के विविध रूपों पर विचार करने के अनन्तर यह कहा जा सकता है कि उनकी कहानियों में ऐतिहासिकता के कारण वातावरण का सौन्दर्य सर्वाधिक निखरा है। उनमें वातावरण निर्माण की अद्भुत क्षमता है। राहुल जी की 'वोल्गा से गंगा' तथा 'कनैला की कथा' तो वातावरण चित्रण प्रधान कहानियाँ कही जा सकती हैं। 'बहुरंगी मधुपुरी' एवं 'सतमी के बच्चे' में भी सामाजिक वातावरण के सजीव चित्र हैं। उनकी वातावरण-सृष्टि में प्राकृतिक वर्णन विशेष रूप से बिम्बात्मक हैं।

जीवन दर्शन और उद्देश्य

किसी भी साहित्यिक कृति का उद्देश्य केवल पाठकों का मनोरंजन कराना ही नहीं है अपितु जीवन की व्याख्या करना है। कहानीकार भी कहानी के माध्यम से मानव जीवन की व्याख्या करता है। यह व्याख्या उपन्यास की तरह विशद नहीं होती लेखक जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण मात्र प्रस्तुत करता है। राहुल जी चिन्तक कथाकार हैं। उनकी कहानियों में उनका निश्चित जीवन दर्शन एवं उद्देश्य व्यक्त है। 'बहुरंगी मधुपुरी' में राहुल जी का कथन है—'समकालीन चित्रण होते यदि पाठकों का इससे मनोरंजन के साथ साथ कुछ और लाभ भी हुआ, तो मुझे इससे सन्तोष होगा।'[५५]

राहुल जी की कहानियों में उनकी निजी जीवन दृष्टि है। उनमें मार्क्सवादी ढंग से जीवन की व्याख्या है अतः उनकी साहित्यकता में किंचित भी सदेह नहीं रह जाता। श्रेष्ठ कलाकार मानव आत्मा का शिल्पी होता है। मानवीय संवेदनाओं तथा जीवन की यथार्थ परिस्थितियों को ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त कर देना उसका लक्ष्य होता है। राहुल जी ऐसे ही मानवतावादी लेखक हैं। मानव और मानवता की गतिशीलता में—उनके निरन्तर विकास में—उनकी प्रबल आस्था है। वोल्गा से गंगा और वनला की कथा' में इसी मानव के विकास की कहानी है। राहुल जी का अटूट विश्वास है कि मनुष्य उच्छिन्न न होने वाला बहता प्रवाह है।[४६] वोल्गा से गंगा में मनुष्य की उसके पशुत्व से विकसित होकर मनुष्यत्व तक के विकास की कथा है। उनके अपने शब्दों में—'मानव आज जहाँ है वहाँ वह आरम्भ में ही नहीं पहुँच गया था, उसके लिए उसे बड़े-बड़े संघर्षों में होकर गुजरना पड़ा है।[४७] डा० नगेन्द्र का इस विषय में कथन है— पिछले आठ हजार वर्षों में ईसा से ६०००वर्ष पूर्व से लेकर जब मानव वोल्गा के किनारे पर्वत गुहा में अपने सहचर पशुओं के समान ही रहा करता था आज तक उसने अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए जो संघर्ष किये हैं उन सबका सरल और रोचक चित्रण है।[४८] वस्तुतः राहुल जी की कहानियों में प्रगतिशील मानव जीवन की कथा है। राहुल जी के अनुसार मानव के विकास की प्रारम्भिक स्थिति स्वच्छन्दतापूर्ण थी।[४९] वह युग जनयुग था जिसमें श्रम और सम्पत्ति सामूहिक थी व्यक्ति नहीं, बल्कि जन या समाज की प्रधानता थी।[५०] मानव विकास के इतिहास के मध्ययुग में मनुष्य की इस स्वच्छन्दता का अपहरण होता है उसे समाज और राज्य के अनुशासन में रहना पड़ता है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से यह उसकी असमानता का युग था। आधुनिक युग में मानवता का विकास बड़ी तीव्रता से हुआ है। वैज्ञानिक आविष्कारों एवं शिक्षा के प्रसार से आज मनुष्य एक-दूसरे के अत्यन्त निकट आ गया है। इस युग में मानव विकास के दो अवरोधक तत्त्व राहुल जी को लक्षित करते हैं। वे हैं—सामाजिक वैषम्य एवं पूँजीवाद। जाति पाँति का भेदभाव तथा सामाजिक वैषम्य हमारे समाज की नींवें हिला रहे हैं और पूँजीवाद अपनी अनवरत शोषण-वृत्ति द्वारा मानवता को उत्तरोत्तर विपन्न बना रहा है। ऐसी स्थिति में मानव विकास का पथ प्रशस्त करने वाला एक ही मार्ग है—साम्यवाद। राहुल जी की दृष्टि में वह भारत तथा विश्व की समस्याओं का एकमात्र समाधान है और मानवता के भविष्य की उज्ज्वल आशा। इस प्रकार राहुल जी मार्क्सवादी ढंग से जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। राहुल जी की कहानियों में व्यंजित विचारधारा उनके उपन्यासों की विचारधारा से अभिन्न है।

राहुल जी ने अपनी कहानियों में मानव जीवन की व्याख्या के लिए धर्म साम्यवाद पूँजीवाद गणतन्त्र प्रजातन्त्र आदि पर विचार प्रकट किए हैं। राहुल जी रूढ़िग्रस्त धर्म को समाज के लिए घातक एवं अहितकारी मानते हैं। धर्म का साम्प्रदायिक रूप समाज के लिए क्षयरोग के समान है, इसी ने मानव मानव में

भेद की दीवारें खडी की है। इस धम न मन्दिर मस्जिद तथा गिरजाघरा के निर्माण म तो स्पर्धा दिखलाई है परन्तु मानवता क निर्माण म नही। राहुल जी ने 'ठाकुर जी पेड बाबा, महाप्रभु आदि कहानिया मे शिक्षित एव अशिक्षित भारतीयो की अन्धश्रद्धा पर व्यग्य किया है। वे ब्राह्मणा, पुरोहिता एव ढोगी महात्माओ को शापक के रूप म प्रस्तुत करते हैं। ब्राह्मण धम तथा पुरोहितवाद का विरोध 'वोल्गा से गगा' की कई कहानियो म द्रष्टव्य है।[१६१] उनकी दृष्टि म पुरोहिता ने ही दास प्रथा को विकसित किया है। अपने एव राजाओ के अधिकारा को अक्षुण्ण बनाने के लिए पुरोहिता ने धम का आश्रय लिया है और वे जनता का राजभक्ति का उपदेश देने वाल है।[१६२] ब्रह्मवाद राजशक्ति को सुदढ करने का एक सबल शस्त्र है[१६३] तथा पुनजम का सिद्धान्त धनिया के हाथ म शोपण का प्रबल उपकरण।[१६४] इस प्रकार धम राहुल जी के लिए ढोग है, शोपण का अस्त्र है, वह परधन-अपहारका को शाति से परधन उपभोग करने का अवसर देने के लिए है।[१६५] ब्राह्मण धम को राहुल जी धूप छाह की सना देत है।[१६६] महाकवि अश्वघोप के शब्दो मे वे इस धम क प्रति घणा यक्त करते है— मुझे ब्राह्मणा के पाखण्डा से अपार घृणा है घणा से सारा गात्र जलता है।[१६७]

ब्राह्मण धम के प्रति तीव्र घृणा रखने वाले राहुल बौद्ध धम के प्रति श्रद्धावान हैं। बौद्ध धम उन्हें साम्यवाद के अधिक समीप प्रतीत होता है। राहुल जी इस उदार धम की सना दते है।[१६८] इस धम म जाति-पाँति ऊच-नीच आदि का भेद भाव नही।[१६९] वस्तुत राहुल जी का धम साम्यवाद है। बौद्ध धम उसके पर्याप्त निकट है अत इसके प्रति राहुल जी की आस्था सकारण है।

राहुल जी की कहानियो मे साम्यवाद के प्रति अत्यधिक आस्था यक्त की गई है। साम्यवाद अग्रेजा के कम्युनिज्म' का पर्यायवाची है। कम्युनिज्म लटिन भाषा का शब्द है। सामूहिक को लटिन म कम्युनिस कहत हैं। कम्युनिस्ट समाज वह समाज होता है जिसम सब कुछ—जमीन फक्टरिया—सब की मिली जुली सम्पत्ति होती है और सब लोग मिल जुल कर साझे मे काम करत हैं। यह कम्युनिज्म है।[१७०] साम्यवाद सवहारा वग के हिता को मुखरित करता है। वह सवहारा का सद्धान्तिक हथियार है।[१७१] आधुनिक बुद्धजीविया पर साम्यवाद की वस्तुवादी मायताओ का प्रभाव अधिक पडा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि मावसवाद सामयिक प्रश्नो पर बल दता है।[१७२] वस्तुत साम्यवाद का उद्देश्य वगहीन समाज की स्थापना है जिसम सम्पत्ति पर समाज का समानाधिकार हो। वह मानव समाज क लिए सुख सामग्री की वद्धि करता है।[१७३] राहुल जी साम्यवादी कहानी लेखको म अग्रणी है[१७४] अपनी ऐतिहासिक एव सामाजिक दोना प्रकार का कहानिया म उन्होने साम्यवाद को सामाजिक विपमताओ का एकमात्र उपचार बतलाया है। साम्यवादी दृष्टिकोण के कारण राहुल जी की कहानिया मे विचारोत्तेजक सवेदना प्राप्त होती है और सामाजिक शोपण, दरिद्रता, नग्नता आदि समस्यायें एक निश्चित आधार पर चित्रित हैं। वोल्गा

मे गंगा की आरम्भिक कहानियां 'निशा, दिवा' आदि मे उन्होने प्राचीन मानव समाज मे साम्यवादी विचारधारा का दिग्दर्शन कराया है। आदि मानव मेरा-तेरा के भाव से अपरिचित था[१७४] उसका समाज एक वर्गहीन समाज था जिसमे सम्पत्ति पर सभी का समाधिकार था और सभी व्यक्ति यथाशक्ति काम करते थे।[१७५] साम्यवादी विचारक होने के कारण राहुल पूँजीवाद साम्राज्यवाद एव ईश्वरवाद के विरोधी हैं। ये सभी आर्थिक शोषण के कारण हैं।[१७७] गांधीवाद भी राहुल जी की दृष्टि मे सामाजिक साम्य की स्थापना मे असमर्थ है। सफदर, सुमेर आदि कहानियों मे लेखक ने गांधीवादी विचारधारा की आलोचना की है। उनकी दृष्टि मे गांधीवाद राजनीति के क्षेत्र मे अनुपयोगी है।[१७८] हरिजन पत्रिका भारत को अन्धकार युग की ओर खींचने वाली पत्रिका है।[१७९] गांधीवाद का धर्म भगवान तथा पुराणपंथीपता मे विश्वास है और ये सभी लेखक की दृष्टि मे शोषण के साधन हैं। गांधीवाद निर्मागी गुलामी से इतर और कुछ नही।[१८०]

राहुल जी आर्थिक वैषम्य के उन्मूलन का एकमात्र उपाय साम्यवाद को ही मानते हैं। अपने उपन्यासों की तरह उन्होंने अपनी कहानियों मे अनेकशः दुहराया है कि साम्यवाद ही विश्व मानवता का हित साधक है। पूँजीवाद के विनाश पर साम्यवाद का जन्म होगा।[१८१] राहुल जी को साम्यवाद का यह प्रकाश सोवियत भूमि मे प्राप्त हुआ है। अतएव वह रूस को मजदूरों और किसानों की आशा बतलाते है।[१८२] राहुल जी साम्यवाद को भारत के लिए विदेशी वस्तु न मानकर स्वदेशी मानते हैं। अपने पात्र सुमेर के मुख से वे कहलवाते हैं— 'यदि साम्यवाद को विदेशी ही मान लें तो भी जैसे ईसाई इस्लाम जैसे विदेशी धर्म रेल तार हवाई जहाज कल कारखाना जैसी विदेशी चीजें हमारी आँखो के सामने स्वदेशी बनकर मौजूद हैं, वैसे ही साम्यवाद भी स्वदेशी हो जायगा बल्कि हो गया है।'[१८३] इस प्रकार राहुल जी की कहानियों मे उनकी साम्यवादी जीवन-दृष्टि सर्वत्र मुखरित है।

साम्यवादी चिन्तक राहुल राजनीति के क्षेत्र मे राजतन्त्र एव साम्राज्यवाद के विरोधी हैं। साम्राज्यवाद शोषण की वृत्ति का पोषक है धर्म ईश्वर एव पुरोहितवाद का संरक्षक है तथा मनुष्य की स्वतन्त्रता का अपहारक है।[१८४] इस प्रकार राहुल जी राजतन्त्र शासन प्रणाली के कटु आलोचक हैं। इसके विपरीत गणतन्त्र शासन प्रणाली के वे प्रबल समर्थक हैं।। यही शासन प्रणाली मनुष्य को आर्थिक शोषण से बचाती है उसके आत्मसम्मान और अधिकारों की रक्षा करती है एवं सभी नागरिकों को समान सुख सुविधायें प्रदान करती है। तक्षशिला वैशाली, कुशीनारा आदि प्राचीन भारत के प्रसिद्ध गणराज्य थे। मगध के राजतन्त्र के विकास के साथ इन गणराज्यों का ह्रास हो गया। गुप्त राजाओं के विषय मे सुपर्ण यौधेय का कथन है— नन्दों, मौर्यों यवनों शकों और हूणों ने भी जो पाप नहीं किया वह इन गुप्तों ने किया। भारतमही से इन्होंने गणराज्यों का नाम मिटा दिया।[१८५] यह गणराज्य-पद्धति आधुनिक प्रजातन्त्र से साम्य रखती है। इसमे किसी भी बात का निर्णय संस्थागार मे मत-मत्र

द्वारा होता था।[८८] सतमी तथा गुमर कहानियों में राहुल जी ने इसी 'प्रजातन्त्र' का स्वप्न देखा है और स्वराज्य में यह स्वप्न साकार हुआ है।[८९]

इस प्रकार राहुल जी की कहानियों में उनकी विचारधारा एवं जीवन-दृष्टि अत्यन्त स्पष्ट है। डा० सक्सेना के शब्दों में "वास्तव में लेखक वर्गहीन, धर्महीन सामाजिक जीवन का पक्षपाती है जो भारतीय जीवन की वर्गभावना एवं धर्माडम्बर के अनेकानेक दोषों को देखते हुए अनुचित नहीं है। वर्गभेद की खाई का उन्मूलन कर, स्त्री पुरुष के भेद को मिटाकर और धार्मिक रूढ़ियों का निष्कासन कर लेखक सर्वाङ्गीण समता, आर्थिक स्वतन्त्रता एवं बौद्धिकता पर आधारित एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहता है।"[९०]

कहानी में उद्देश्य एवं विचाराभिव्यक्ति के लिए कहानीकार विविध प्रणालियों का प्रयोग करता है। कहीं कहीं उद्देश्य व्यंजित रहता है और कहीं अत्यन्त स्पष्ट। कुछ कहानियों के प्रथम या अंतिम वाक्य में सूक्ति रूप में ही व्यक्त कर दिया जाता है। इस विषय में यह मत द्रष्टव्य है— कहानीकार का उद्देश्य चाहे कुछ भी हो, वह अधिक स्पष्ट रूप में व्यक्त नहीं किया जाना चाहिए। उसको और पात्रों के वार्तालाप में अथवा कहानी के अन्त में केवल एक संकेत मात्र ही लेखक को कर देना चाहिए। अधिक स्पष्ट हो जाने से लेखक का उद्देश्य उपदेश सा बन जायगा और अपने प्रभाव को खो बैठेगा, दूसरी ओर यदि लेखक अपना उद्देश्य व्यंग्य ही रखेगा तो इससे उस की रचना में सौंदर्य की वृद्धि होगी और उस उद्देश्य का प्रभाव अनायास पाठक के मन पर पड़ जायगा।[९१] आधुनिक कथा साहित्य में लेखक से यह अपेक्षित नहीं कि वह कथा में स्वयं आकर अपने उद्देश्य को व्यक्त करे।[९२] इस दृष्टि से देखने पर स्पष्ट है कि राहुल जी ने कहानी के उद्देश्य कथन में कलात्मकता की रक्षा नहीं की। उद्देश्य की सूक्ष्म व्यंजना न कर वे उसे स्वयं ही स्पष्ट कर देते हैं जिससे पाठक के लिए स्वतन्त्र चिंतन का अवकाश नहीं रहता 'लिपिस्टिक' कहानी के उपसंहार में लेखक कहानी के उद्देश्य को इस प्रकार प्रकट करता है— सचमुच ही मधुपुरी जैसी हिमालय की विलासपुरियों में फैशन का प्रचार जितना जल्दी और व्यापक रूप से होता है वैसा मैदानी शहरों में नहीं होता। इसका एक बड़ा कारण यही है कि सीजन में आए सुन्दरियों के सैलाब में यहाँ की साधारण तरुणियों के पैर उखड़ जाते हैं और वे भी प्रवाह के अनुसार बहने लगती हैं।[९३] 'रूपी' कहानी में भी उद्देश्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है "मधुपुरी के लिए यह अकेली रूपी नहीं है। यहाँ और भी कितनी ही रूपियाँ अपने जीवन को बर्बाद कर चुकी हैं। जब हम मधुपुरी के मधुर सौंदर्य की प्रशंसा करते नहीं थकते उस समय हमें नहीं ख्याल आता कि सौन्दर्य को पैदा करने के लिए कितनों को नरक कुण्ड में पड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।"[९४] इसी प्रकार राउत महाप्रभु' काठ का साहब' पेड़ बाबा'[९५] आदि कहानियों में उद्देश्य का कथन स्वयं लेखक द्वारा स्पष्ट रूप में हुआ है। सतमी के बच्चे' की कहानियों दर्लमिगार और पाठक जी की भी यही स्थिति है। वोल्गा से गंगा की एति

हासिक कहानियों में भी उद्देश्य-व्यंजना की यही पद्धति है। 'मंगलसिंह' कहानी में स्वतंत्र भारत में पंचायती राज्य की स्थापना सम्बन्धी उद्देश्य लेखक ने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है।[१८] 'बाबा नूरदीन' में सामाजिक वैषम्य[१९] 'नागदत्त' में साम्राज्यवादी निरंकुशता[१७] एवं 'प्रवाहण' में राजवाद ब्रह्मवाद एवं धनवाद की स्वार्थ लोलुपता[१८] को भी लेखक ने व्यंग्य रूप में नहीं रखा। 'कमला की कथा' 'की स्वराज्य' एवं 'सन ८७' कहानियाँ[१९] भी इसी प्रकार की हैं।

इस प्रकार राहुल जी की कहानियाँ सोद्देश्य हैं। उनमें उनका जीवन दर्शन एवं विचारधारा सर्वत्र मुखरित है। वे प्रगतिशील चिंतक एवं मानवतावादी कलाकार हैं और उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा साम्यवादी एवं मानवतावादी स्वरों को गुंजाया है। यदि कहानी को सामाजिक वस्तु[२] स्वीकारा जाय तो राहुल जी की कहानियों में उद्देश्यपूर्ण सामाजिकता प्रत्यक्ष ही अनुभव की जा सकती है तथा उनकी कहानियाँ लक्ष्यात्मक कही जा सकती हैं।

शैली

शैली-तत्व कहानी कला की वह रीति है जो कथावस्तु आदि तत्वों को अपने विधान में उपयोग करती है। इसके अन्तर्गत दो पक्ष आते हैं—प्रथम भाषा पक्ष द्वितीय रूप विधान पक्ष। राहुल जी की कहानियों में भावानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा का संयोजन हुआ है कहीं वह बोलचाल की भाषा है, कहीं गम्भीर और परिष्कृत है और कहीं अलंकृत चित्रात्मक तत्सम भाषा शैली है। शैली के रूप विधान पक्ष के अन्तर्गत कहानी निर्माण की विभिन्न प्रणालियाँ यथा कथात्मक शैली आत्म चरित-शैली पत्रात्मक-शैली डायरी शैली, नाटकीय शैली आदि आती हैं। राहुल जी ने अपनी कहानियों में प्रमुख रूप से कथात्मक शैली का प्रयोग किया है। वे अपनी कहानियों की सृष्टि वर्णनात्मक ढंग से करते हैं और समूची कहानी के सूत्रधार बनकर अन्य पुरुष में नायक से सम्बन्धित घटनाओं, विचारों आदि का वर्णन करते हैं। राहुल जी की यह ऐतिहासिक शैली सरल, सुगठित और बोधगम्य है। उनकी इस शैली का परिचय घटनाओं पात्रों एवं वातावरण के चित्रण में मिलता है।

आत्मचरित-शैली का प्रयोग राहुल जी ने दो कहानियों 'दुमुख' तथा 'सुपर्ण यौधेय' में किया है। इनमें कहानी के नायक आत्मवर्णन एवं आत्मचित्रण के रूप में पूरी कहानी प्रस्तुत करते हैं। आत्मचरित-शैली के अन्तर्गत पात्रों के अमूर्त भावों एवं अन्तर्द्वन्द्वों की अभिव्यक्ति सहज रूप से हो पाती है, परन्तु राहुल जी की इन कहा*नियों में अमूर्त भावों एवं अन्तर्द्वन्द्वों का प्राय अभाव ही है। वस्तुतः राहुल जी अपने* समग्र साहित्य में वर्णनात्मक शैली के ही समर्थ लेखक हैं। कहानियों में भी उनकी शैली का यही रूप मिलता है।

मूल्यांकन एवं स्थान

राहुल जी की कहानियों के कलाविधान की विवेचना के अनन्तर यह निष्कर्ष सहज ही निकाला जा सकता है कि आधुनिक ऐतिहासिक कहानीकारों में उनका

विशिष्ट स्थान है। हिन्दी म ऐतिहासिक कहानिया का प्राय अभाव ही है। इस दष्टि से उनकी कहानियाँ इस अभाव की पूर्ति के लिए अद्वितीय योगदान प्रमाणित हो सकती है। प्रेमचन्द की तरह राहुल जी ने भी ऐतिहासिक व सामाजिक दोना प्रकार की कथाए लिखी हैं पर ऐतिहासिक कहानियो के क्षेत्र म विविधता यथाथता एव ऐतिहासिक तत्त्वा के निरीक्षण की दष्टि स राहुल जी का स्थान उच्चतर है। प्रसाद जी की ऐतिहासिक कृतिया आकाशदीप पुरस्कार 'स्वग के खण्डहर, देवरथ' आदि हिन्दी की अद्वितीय ऐतिहासिक कहानिया हैं। इन कहानिया म इतिहास और अतीत के स्वणिम पष्ठा स रस लिप्तता की सहज भावना जातीय गौरव, आदश स्थापन और साथ ही वतमान स पलायन की वृत्ति—य अनेक विशेषताए एक ही व्यत्तित्व म मिल जाती हैं।[११] राहुल जी की ऐतिहासिक कहानिया प्रसाद स विभिन्न उद्देश्य स लिखी गई हैं। उनम वतमान स पलायन न होकर वतमान म प्रवत्ति है और व एक निश्चित उद्देश्य को लकर अतीत की ओर देखते है। राहुल जी की ऐतिहासिक कहानिया का महत्त्व इस दष्टि स सर्वाधिक है कि वे कवल इतिहास ही नही मानव समाज की सम्पूण प्रगति का चित्र अक्ति करती हैं। कला तत्त्व की दष्टि से उनकी ऐतिहासक कहानियाँ प्रसाद जी की कहानियो के निस्सन्देह अनन्तर हैं पर विस्तत ऐतिहासिक दष्टि जो राहुल जी की कहानिया म है प्रसाद की कहानिया मे नहीं। राहुल जी की एक एक ऐतिहासिक कथा के भीतर एक पूरे युग का चित्र प्रस्तुत है—यह राहुल जी की ही विशिष्टता है। वन्दावनलाल वर्मा की ऐतिहासिक कहानियाँ मुगल भारत से सम्बन्ध रखती हैं।[१२] उनकी ऐतिहासिक तथ्या के प्रति निष्ठा सराहनीय है। परन्तु वमा जी की कहानिया का ऐतिहासिक क्षत्र सीमित है। इसके विपरीत राहुल जी इस क्षत्र म सर्वोपरि ह। ऐतिहासिक तत्त्वा की यथाथता एव वातावरण की सजना की दष्टि स राहुल जी वमा जी स कही आग है। चतुरसेन शास्त्री का दुखवा मैं कास कहूँ मोरी सजनी, सिहगढ विजय' आदि कहानिया का निर्माण कल्पना एव इतिहास के रमानी धरातल पर हुआ है। राहुल जी कल्पना की अपेक्षा यथाथ को अधिक महत्त्व देने वाले कलाकार हैं। ऐतिहासिक तथ्या की सच्चाई उनम सर्वाधिक है। उनकी दष्टि म यथाथ कल्पना से भी अधिक रोमाचक है। आदिम युग स लेकर आधुनिक मानव-सस्कृति और इतिहास को कलात्मक रूप मे गूथ देना राहुल जस महान कलाकार का ही काय है। भगवतशरण उपाध्याय न भी मानव विकास स सम्बन्धित कहानियाँ सवेरा सघष आदि सग्रहो म प्रस्तुत की हैं परन्तु राहुल जी की इतिहास दष्टि उनस अधिक व्यापक एव विस्तत कालावधि के आरपार देखन वाली है। वोल्गा स गगा की प्रभा दीपक कहानी राहुल जी के कथासाहित्य म ही नही वरन प्रेम की उन्नयन वत्ति की दष्टि स हिन्दी की एक अमर कहानी है। इस कहानी मे लेखक की ऐतिहासिक प्रतिभा कल्पना रामास, भाषा एव भाव का अदभुत समन्वय है। हिन्दी की ऐतिहासिक कहानिया के विकास की परम्परा म राहुल जी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उन्होने ऐतिहासिक कहानी का जो रूप हमारे

सामने प्रस्तुत किया है उसे कलापक्ष के सहयोग से आधुनिक कहानीकारो को आगे बढाना चाहिए। राहुल जी की कहानी-कला की अपनी सीमाएँ है—वे वस्तु शिल्प, चरित्राकन की भावुकता एव कवित्वपूर्ण उदभावना, नाटकीय स्थितियो की अवतारणा और सघर्ष का वेग अपनी कहानियो मे नही दे सके, और इसके लिए पुरातत्व के एक विद्वान को दोषी ठहराना भी समीचीन प्रतीत नही होता। पर इन कहानियो मे व्याप्त सुलझी हुई जीवन दृष्टि व्यापक ऐतिहासिक प्रतिभा, पुरातात्विक सूक्ष्म विश्लेषण प्रगतिशील विचारधारा एव मूर्त वातावरण सृष्टि हिन्दी के विरले ही लेखको मे प्राप्त होती है। श्यामनन्दन प्रसाद सिंह के शब्दो मे कहा जा सकता है – "कथा साहित्य के निर्माण मे उन्होने प्राचीन और नवीन का निर्वाह पूरी तरह किया है। उनके कथा-साहित्य मे यथार्थ अधिक प्रबल हो उठा है। राजनीति की भावधारा वहाँ विराजमान है, क्योकि उनका सीधा सम्बन्ध राजनीति से रहा है। उनके कथा साहित्य मे शब्द चित्र और सस्मरण का आभास पूरी तरह से मिलता है। उनकी कहानियाँ एक नये दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने मे समर्थ हैं। उन्होने प्राचीन इतिहास के साथ वर्तमान जीवन के उन अगो का स्पर्श किया है, जिनकी ओर किसी ने ध्यान ही नही दिया था। साहित्यिक भाषा, कलात्मकता, व्यजना का सहारा लेना उनका उद्देश्य नही, उन्होने सीधी-सरल शैली का सहारा लिया है। इसी से उनकी कृतियाँ सभी के लिए समान रूप से मनोरजक एव बोधगम्य हैं।"[1]

सामाजिक कहानीकार की दृष्टि से राहुल जी यथार्थवादी प्रगतिशील कहे जाएँगे। उनकी सामाजिक कहानियाँ ग्रामीण समाज की चेतना को प्रेमचन्द की भाँति चित्रित करती हैं। यथार्थ के प्रति आग्रह उनकी सामाजिक कहानियो की प्रमुख विशेषता है। इतना होने पर भी राहुल जी की सफलता वोल्गा से गगा की ऐतिहासिक कहानियो हैं जो हिन्दी मे अन्यत्र दुर्लभ हैं। अपनी इस कथाकृति द्वारा राहुल जी ने मानव-सस्कृति को समृद्ध किया है। हिन्दी के लिए राहुल जी की कहानी-सृष्टि वरदान है।

सन्दर्भ

१ एन इण्ट्राडक्शन टू दि स्टडी आफ लिटरेचर पृ० ३३६ ।
२ प्वाइंट आफ व्यू-मामरसेट माम पृ १३५ ।
३ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त (द्वितीय भाग) पृ ४५२ ५३ से उद्धत ।
४ समीक्षा तत्व डा ओमप्रकाश शास्त्री पृ० ११७ ।
५ कुछ विचार (भाग १) प्रेमचन्द पृ० ३०
६ साहित्यालोचन श्यामसुन्दर दास पृ २२६ ।
७ कहानी का रचना विधान डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा पृ १४ ।
८ साहित्य की मान्यताएँ भगवतीचरण वर्मा पृ० १४१ ।
९ हिन्दी कहानियाँ-सं० डा० कृष्ण लाल पृ०३१ ।
१० काव्य के रूप-बाबू गुलाबराय पृ २०३ ।
११ हिन्दी साहित्य कोश पृ० २११ ।
१२ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास डा० लक्ष्मीनारायण लाल पृ० २६५।
१३ कथा साहित्य और समीक्षा भगीरथ मिश्र पृ० ७६ ।
१४ राहुल का कथा-साहित्य डा० सुबोधचन्द्र सक्सेना ।
१५ कहानी और कहानीकार मोहनलाल जिज्ञासु पृ० ४४ ।
१६ कहानी दर्शन भागचन्द्र गोस्वामी पृ ८४ ८५ ।
१७ वोल्गा से गंगा द्वितीय संस्करण पर दो शब्द ।
१८ विचार और विश्लेषण डा० नगेन्द्र पृ० १५७ ।
१९ २ वोल्गा से गंगा (परिशिष्ट) पृ ३८३ ।
२१ वही पृ ३८४ ।
२२ माधुरी (फरवरी १९४४) पृ ३ ।
२३ मध्य एशिया का इतिहास (भाग १) पृ० ५५ ।
२४ खून के छींटे इतिहास के पन्नों पर भगवतशरण उपाध्याय पृ० १ ।
२५ वोल्गा से गंगा (परिशिष्ट) पृ ३८५ ।
२६ हिन्दी ऋग्वेद-सम्पादक प रामगोविन्द त्रिवेदी पृ ३८ ६३ ।
२७ विचार और विश्लेषण पृ १५७ ।
२८ नया साहित्य नये प्रश्न नन्ददुलारे वाजपेयी पृ २०५ ।
२९ कसौटी पर डा भगवतशरण उपाध्याय पृ ७८ ।
३ विचार और विश्लेषण डॉ० नगेन्द्र पृ १५६ ।
३१ प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ डा रामविलास शर्मा पृ २६ ।
३२ वोल्गा से गंगा पृ २२२ ।
३३ प्राचीन भारत डॉ राधाकुमुद मुकर्जी पृ १ ६ ।
३४ वोल्गा से गंगा पृ० २३३ ।
३५ कसौटी पर पृ ६२ ।
३६ वोल्गा से गंगा पृ २५४ ।
३७ ३८ कसौटी पर पृ० ६४ ।
३९ ४ विचार और विश्लेषण पृ १५६ ५७ ।
४१ राहुल का कथा साहित्य ।
४२ कनैला की कथा (प्राक्कथन) पृ० १ ।

४० कनला की कथा प० २ ३।
४४ हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा पृ० ३६४ ।
४५ वोल्गा से गंगा (प्रथम संस्करण) प्राक्कथन।
४६ विचार और विश्लेषण प० १५८।
४७ हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ प० ६२।
४८ बहुरंगी मधुपुरी प ६२।
४९ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास पृ० २८१ ६५।
५ बहुरंगी मधुपुरी प २८ ३३ ३५।
५१ सतमी के बच्चे प ४२।
५२ बहुरंगी मधुपुरी प० २१६ २२ ।
५० वही पृ० २२८ २३६ २३७।
५४ सतमी के बच्चे पृ० ७ १४।
५५ बहुरंगी मधुपुरी प० १४ १६।
५६ वही पृ० २७ २८।
५७ वही प १ ६ १०७।
५८ वोल्गा से गंगा पृ १८० १८१।
५९ हिन्दी निबन्ध प्रभाकर माचवे प० ६१।
६ बहुरंगी मधुपुरी प ७५ ८ ।
६१ वोल्गा से गंगा प ११२ ११५।
६२ वही पृ ३२३।
६३ बहुरंगी मधुपुरी प० १४५।
६४ सतमी के बच्चे प० ४८ ६४।
६५ ६६ विचार और विश्लेषण पृ० १५८।
६७ ६८ हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन प० ३६५।
६९ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास प ३ ०।
७० अरिस्तातल्स थियरी आफ पोयट्री एण्ड फाइन आर्ट प० ५५।
७१ साहित्यालोचन प० २०१।
७२ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास पृ० २०१।
७३ कहानी की रचना विधान डा जगन्नाथप्रसाद शर्मा प १ ७।
७४ कहानी-कला विनोदशंकर व्यास प० ४६।
७५ वोल्गा से गंगा प० ४।
७६ वही प० २५८।
७७ सतमी के बच्चे प० २५ २८।
७८ कनला की कथा पृ ३ ६३।
७९ वही प ३४ ३५।
८ वोल्गा से गंगा प० ४ १७।
८१ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास प० ३ २ ३ ३।
८२ हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन प० ३६५।
८३ कहानी का रचना विधान पृ १२२।
८४ वोल्गा से गंगा पृ० १०१ १०२।
८५ वही पृ० १०७।

८६ वोल्गा से गंगा, पृ २८६ २८३।
८७ वही पृ० १८।
८८ सतमी के बच्चे पृ० ५२।
८९ वोल्गा से गंगा पृ० २२२ २२३।
९० वही पृ० १११ ११५।
९१ वही, पृ १६६ ६६।
९२ वही पृ० १६२।
९३ वही पृ० १६५।
९४ वही पृ २५।
९५ वही पृ० २६६।
९६ बहुरंगी मधुपुरी पृ० ६६ ७०।
९७ वोल्गा से गंगा पृ ११८।
९८ वही पृ १४७ १५७।
९९ वही पृ० १६५ १७३।
१ ० वहा पृ १७१।
१०१ वही पृ० ११७।
१०२ वही पृ० १७ १७३।
१०३ वही पृ० ११६।
१०४ सतमी के बच्चे पृ० ६३।
१०५ वही पृ० ६६।
१०६ वोल्गा से गंगा पृ० २८६।
१ ७ बहुरंगी मधुपुरी पृ० १।
१०८ वोल्गा से गंगा पृ २६२।
१ ९ हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास पृ० ३०७।
११० हिन्दी साहित्य-कोश पृ २१८।
१११ हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया डॉ० परमानंद श्रीवास्तव पृ० ७३।
११२ विचार और विश्लेषण पृ० १५८।
११३ हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन प० ३६६।
११४ वोल्गा से गंगा पृ ४४।
११५ वही पृ० ६६।
११६ वही पृ० २२३।
११७ वही पृ ६ ११ २६ ३७ ३६।
११८ वही पृ ७६ १३१।
११९ वोल्गा से गंगा प २२४।
१२ कनैला की कथा पृ० ६।
१२१ बहुरंगी मधुपुरी पृ० १४५ २५५।
१२२ सतमी के बच्चे पृ २।
१२३ वोल्गा से गंगा पृ ५१ ५८।
१२४ वही पृ ६६ १ ०।
१२५ वही प ८२।
१२६ वही पृ २२७ २८८।
१२७ बहुरंगी मधुपुरी पृ १७३ २४१, २५८।

१२८ बोल्गा से गंगा पृ० २४ ।
१२६ वही पृ० २३ ।
१३० वही पृ० १७ ।
१ १ बोल्गा से गंगा पृ० १०८ ११० ।
१.२ वही पृ० ८२ १०८ ।
१३३ बहुरंगी मधुपुरी पृ० २० ३४ ४७ ४६ ।
१३४ हिन्दी कहानियाँ का विवेचनात्मक अध्ययन पृ० ३६६ ।
१३५ बोल्गा से गंगा पृ० ६ ।
१३६ वही पृ ४. ।
१३७ वही प ४६ ।
१३८ वही पृ० ६३ ।
१ ६ वही पृ ६६ ।
१४० कनैला की कथा पृ० ५२ ।
१४१ बोल्गा से गंगा प २२७ ।
१४२ सतमी के बच्चे पृ० २ ६ ।
१४३ विचार और विश्लेषण पृ० १५८ ।
१४४ वाङ्मय विमर्श पृ० ७७ ।
१४५ बोल्गा से गंगा प १२ ।
१४६ वही पृ० ३३ ।
१४७ वही पृ० १३५ १८२ ।
१४८ वही पृ० ६६ ।
१४६ वही प २८५ ।
१५ वही पृ० २८ २६ २०४ ।
१५१ वही पृ० ४८ ।
१५२ वही पृ० १ ।
१५३ सतमी के बच्चे पृ० ४८ ।
१५४ बोल्गा से गंगा प ८५ १८४ २८८ ।
१५५ बहुरंगी मधुपुरी दो शब्द ।
१५६ कनैला की कथा पृ० ३३ ।
१५७ बोल्गा से गंगा प्राक्कथन ।
१५८ विचार और विश्लेषण पृ० १५५ ।
१५६ बोल्गा से गंगा पृ ११ १२ ।
१६० कनैला की कथा पृ ६ ।
१६१ बोल्गा से गंगा पृ० ६३ ६४ ११० ११२ ११५ ।
१६२ वही प १२५ ।
१६३ वही प १२७ ।
१६४ वही पृ० १२६ ।
१६५ वही पृ० १५५ ।
१६६ वही पृ० २१२ ।
१६७ वही पृ १६७ ।
१६८ वही पृ० १६५ ।

इन उपन्यासो म अंकित रहते हैं। हिंदी म विशुद्ध रूप स सामाजिक प्रश्नो को लेकर लिखे गय उपन्यास कम ही हैं। प्राय उपन्यासकारो ने समाज और राजनीति के प्रश्नो को एक साथ ही लेने की चेष्टा की है। प्रेमचन्द के सामाजिक उपन्यासो म राज नीतिक वातावरण का भी साथ ही चित्रण रहता है इसी प्रकार राजनीतिक उपन्यासो म सामाजिक भावनाओ का सम्मिश्रण रहता है। वस्तुत राजनीतिक आर्थिक, धार्मिक आदि समस्याएँ समाज का ही अंग हैं। अत इस प्रकार की समस्याओ को चित्रित करने वाले सभी उपन्यासो को स्थूलत सामाजिक उपन्यासो क अंतगत माना जाना चाहिए। राहुल जी क सामाजिक उपन्यास हैं—'बाईसवी सदी', 'जाने के लिए, 'भागो नही दुनिया को बदलो' तथा राजस्थानी रनिवास। इन उपन्यासो म राज-नीति-तत्त्व प्रधान है। राहुल जी ने इनम मार्क्सवादी राजनीतिक-दृष्टि क अनुरूप भारतीय समाज की व्याख्या करने का प्रयास किया है। अत इन उपन्यासो को राज नीति प्रधान सामाजिक उपन्यास कहा जा सकता है। राहुल जी सोद्देश्य साहित्य रचना के समथक हैं। प्रेमचन्द और यशपाल की भाँति वे कला के उपयोगितावादी पक्ष को मान्यता देते हैं। वे जीवन की साध व्यक्तिगत जीवन यापन म न मानकर सामाजिक जीवन की पूणता म स्वीकारते हैं। इस प्रकार राहुल जी लक्ष्य को प्रधानता देते हुए उपन्यास रचना करते हैं और उनके राजनीति प्रधान सामाजिक उपन्यासो में यह सोद्देश्यता स्पष्ट लक्षित है।

'बाईसवीं सदी' राहुल जी की प्रथम औपन्यासिक कृति है। प्रथम कृति होने के कारण इसम रचनागत दोषो की प्रचुरता है। इसम निबन्ध जसी शुष्कता एव एकरसता सी प्रतीत होती है परन्तु वस्तु की मौलिकता एव सरल तथा प्रवाह पूण भाषा की दृष्टि से राहुल जी का यह प्रथम प्रयास स्तुत्य है। बाईसवी सदी का महत्व इस दृष्टि म भी है कि यह हिन्दी का प्रथम कल्पलोकात्मक उपन्यास (यूनापियन नावल) है।

यूतोपिया ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अथ है कहीं नहीं। इसका प्रयोग प्रत्यक्ष कल्पनापूण अथवा आदश समाज के लिए होता है। यूतोपिया एक आदश राष्ट्रकुल है (जिसकी सत्ता कहीं नहीं) जिसके नागरिक परिपूर्णावस्था म रहते हैं और उनमे मानवीय प्रकृति की कोई भी त्रुटियाँ या कमियाँ या दुबलताए नही होती।[1] लुई वासरमन यूतोपियन विचारधारा का स्वरूप इन शब्दों मे स्पष्ट करते हैं—एक अपूण समाज से एक ऐसे काल्पनिक समाज की ओर अग्रसर होने का प्रयास जिसम आदश मानवीय मूल्यो की परिपूणता मिले इसका कोई भी रूप चाहे वह कितना ही कल्पनापूण क्यो न हो अपने ढग म वह सन्व समस्याओ के समा धान का यत्न करता है।[2] ए० एन० मार्टन वतमान समाज की आलोचना करने क उद्देश्य स किसी औपन्यासिक कृति में वर्णित काल्पनिक दश को यूतोपिया कहते हैं। वे लिखते हैं प्रारम्भ म यूतोपिया इच्छा की छाया मात्र है, किन्तु कालान्तर म यह अधिक गूढ और पृथक् हो जाती है और सामाजिक आलोचना एव व्यग्य की

अभिव्यक्ति हेतु एक विशद साधन का रूप धारण करती है।[८] इस प्रकार यूतोपियन विचारधारा वर्तमान से ऊपर उठकर वर्तमान की स्थितियों को परिवर्तित करने का आंशिक अथवा समग्र रूप से प्रयत्न करती है। यूतोपियन मस्तिष्क की मानसिक निर्मितियों के दो भेद हैं--विचारधारात्मक (आइडियोलॉजीकल) तथा कल्पनात्मक (यूतोपियन)। प्रथम का प्रयोजन वर्तमान यथार्थता को कायम रखने के लिए प्रशंसा करना अथवा उसे परिवर्तित करने के लिए निन्दा करना होता है। दूसरी उस यथार्थता में परिवर्तन के हेतु सग्राहक क्रियात्मकता को प्रेरित करती है यदि वह परिवर्तन उसके आदर्शों के अनुरूप हो।[९]

'बाईसवीं सदी' राहुल जी का मार्क्सवादी कल्पनात्मक उपन्यास है। इस कृति के दो शब्द इसके 'कल्पलोक' के अभिधान को सार्थक करते हैं --'महापण्डित राहुल साङ्कृत्यायन ने एक बार रात्रि के अन्तिम प्रहर में एक सपना देखा और विश्व बन्धु के रूप में नये सिरे से भ्रमण करना प्रारम्भ किया। फिर शायद जाग्रतावस्था में भी सिलसिला जारी रहा और कल्पना अपना रंग लाती रही। उसी कल्पना का साकार रूप है यह कृति।" 'बाईसवीं सदी' में राहुल जी ने दो शताब्दी बाद के विश्व की कल्पना की है और उसकी व्यवस्था में मार्क्सवादी ढंग से परिवर्तन देखे हैं। इस यूतोपिया में वर्तमान समाज की आलोचना तथा दो शताब्दी बाद के साम्यवादी मानव-समाज का स्वप्न है। यूतोपिया का नायक विश्वबन्धु वर्तमान समाज की विकृतियों, अभावों एवं विपन्नताओं की ओर संकेत करता है, जिसमें सामाजिक वैषम्य अपने विकराल रूप में व्याप्त है। सामान्यजन निर्वसन, निरन्न एवं वासविहीन है। प्रत्येक प्रकार से उसकी स्थिति शोचनीय है। क्षुधापीड़ित सामान्य व्यक्ति अन्धकारमय एवं घुटनमय वातावरण में सांस ले रहा है और उसके पास रुग्णता निवारण हेतु पैसा तक नहीं है। इसके विपरीत धनिक जो संख्या में अल्प हैं, सुखमय जीवन यापन करते हैं। उनके पास भौतिक सुख सुविधायें प्रभूत मात्रा में विद्यमान हैं। साधारण जनता इन धनियों के लिए दासों से बढ़कर नहीं है। वर्तमान स्थिति के दिग्दर्शन एवं उसकी आलोचना के अनन्तर राहुल जी ने बाईसवीं सदी के कल्पलोकात्मक समाज को प्रस्तुत किया है। यूतोपियन ग्रामीण समाज, सामूहिक कृषि, औद्योगिक स्थिति, शिशुपालन शिक्षा-पद्धति शासन प्रणाली, प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था आदि का आदर्श राहुल जी ने प्रस्तुत किया है।

'आधुनिक यूतोपिया को अपनी प्रभावपूर्ण कार्यपद्धति के लिए समग्र पृथ्वी की आवश्यकता है जिसका इस समावेश करना चाहिए। यह एक विश्वराज्य का चित्र होना चाहिए।" राहुल जी ने 'बाईसवीं सदी' में इसी प्रकार के कल्पलोक की स्थापना की है। इस कल्पलोक में देश अथवा राष्ट्र की प्राचीरें नहीं, भाषा का भेदभाव नहीं धर्म एवं जाति भावना जन्य ऊँच-नीच नहीं, समग्र विश्व की मानवता एक इकाई है। साथ ही सभी सुख सम्पन्न हैं। समाज में विकृतियाँ एवं दुर्बलताएं नहीं हैं। 'कामायनी' की शब्दावली में कोई शापित नहीं, कोई तापित अथवा पापी नहीं।

जीवन वसुधा समतल है, सभी सुखी एव समरस हैं। बाईसवी सदी के इस कल्पलोक को इन पक्तियो म देखा जा सकता है— अब भूमण्डल म सभी जगह समता का राज्य है। धम के नाम पर धन और प्रभुता के नाम पर, गोरे और काले के नाम पर जस अत्याचार पहले होते थे, जिस तरह मानव सन्तानें दूसरा के पैरा के नीचे आजन्म कुचली जाती थी उन सब का अब नाम नही। अब मनुष्य मनुष्य बराबर हैं। *सभी जगह श्रम और भोग का समत्व मूलमन्त्र रखा गया है।* न अब भूमण्डल म जमीदार हैं न सेठ-साहूकार है न राजा है न प्रजा न धनी है न निधन न ऊच है न नीच। सारे भूमण्डल के निवासियो का एक कुटुम्ब है। पृथ्वी की सभी स्थावर जगम सम्पत्ति उसी कुटुम्ब की सम्पत्ति है।'[1] इस प्रकार राहुल का स्वप्न विश्व मानवता का है जिसका प्रत्यक्षीकरण बाईसवी सदी म है। यह कल्पलोक राहुल जी की मार्क्सवादी जीवन दृष्टि के अनुरूप है।

जीने के लिए राहुल जी का दूसरा सामाजिक उपन्यास है। इसम बीसवी शती के प्रारम्भ से लेकर सन १९३९ तक की सामाजिक एव राजनीतिक परिस्थितियो का चित्रण है। प्रथम विश्वयुद्ध के अनन्तर स्वातन्त्र्य प्राप्ति हेतु भारतीयो के आन्दोलनो, अंग्रेजो की दमन नीति जमीदार और कृषको के मध्य भूमि अधिकार सम्बन्धी सघर्षों के अतिरिक्त अनक सामाजिक धार्मिक आदि अधपरम्पराओ का सजीव अकन इस उपन्यास म हुआ है। भारतीय समाज की विविध समस्याओ एव उनके मार्क्सवादी समाधान को राहुल जी ने प्रस्तुत किया है। 'जीने के लिए उपन्यास का वर्ण्य भारतीय समाज तक ही सीमित नही इसम अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज का भी स्पर्श है। देवराज के जीवन चरित के विकास को रखाकित करते हुए राहुल जी ने उसके माध्यम से साम्यवादी राजनीतिक स्वरो को मुखरित किया है। डा० चण्डीप्रसाद जोशी के शब्दो मे, विभिन्न राजनीतिक घटनाओ की मार्क्सवादी व्याख्या प्रस्तुत करना ही राहुल जी का उद्देश्य है। देवराज के चरित का निर्माण मार्क्सवादी सिद्धान्तो के अनुरूप हुआ है।'[2] वस्तुत भारत की राजनीतिक प्रगति का दर्शाना ही उपन्यास का उद्देश्य है। सामाजिक राजनीतिक उपन्यास की दृष्टि स जीने के लिए राहुल जी की एक समय कृति है।

भागो नहीं दुनिया को बदलो की रचना भी राजनीतिक उद्देश्य को लेकर की गयी है। उपन्यास की भूमिका म राहुल जी न लिखा है —'जनता को वोट देने का अख्तियार दे दने स काम नही चलेगा उसे अपनी भलाई बुराई भी मालूम होनी चाहिए कि राजनीति के अखाडे म कसे दाँव पेच खेले जाते हैं। इस पोथी मे इस बात की मैंने थोडी सी कोशिश की है।'[3] वस्तुत भागो नही दुनिया को बदलो म उपन्यास शिल्प का पूरा विधान नही है। इसमे सवादात्मक शली म मार्क्सवाद के सिद्धान्तो के अनुरूप भारतीय समाज की स्थिति पर विचार किया गया है। इस विचारक्रम मे कथा का सा आभास भी मिलता है अत इसे कथाभास की सज्ञा देना ही उचित प्रतीत होता है।

'राजस्थानी रनिवास' को यद्यपि राहुल जी ने औपन्यासिक रनिवास की संज्ञा दी है परन्तु इसमें बीसवीं सदी के आरम्भ के राजस्थान के समाज का ही प्रधान रूप में चित्रित किया गया है। गौरी के माध्यम से राजस्थानी रनिवासों में बन्दिनी नारी की दयनीय दशा का अंकन इस उपन्यास में हुआ है। सामंती जीवन की पाशविकता के चित्रण में भी राहुल जी को सफलता मिली है। डा० गणेशन भी इसे बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध की घटनाओं पर आधारित सामाजिक उपन्यास मानते हैं।[८]

समग्रत सामाजिक उपन्यासों में राहुल जी ने वर्तमान समाज की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि समस्याओं का अंकन किया है। सामाजिक वैषम्य, शोषक और शोषित की स्थिति सामन्ती समाज में पिसती हुई नारी, समाज के अंधविश्वास आदि विकृतियों तथा आर्थिक एवं राजनीतिक अवस्था आदि का चित्रण करते हुए सामाजिक साम्य की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। राहुल जी के इन राजनीतिक, सामाजिक उपन्यासों को प्रारम्भिक कोटि के उपन्यास ही माना जा सकता है। 'जीने के लिए' के अतिरिक्त अन्य उपन्यासों में औपन्यासिक शिल्प का अभाव है। वस्तुतः राहुल जी की औपन्यासिक देन का महत्त्व सामाजिक उपन्यास न होकर ऐतिहासिक उपन्यास हैं। उन्हीं में महापण्डित राहुल के व्यक्तित्व एवं विचारधारा की यथार्थ अभिव्यक्ति मिलती है।

ऐतिहासिक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास में इतिहास और उपन्यास के तत्वों का समन्वय होता है। उपन्यास में कल्पना की प्रधानता होती है और इतिहास में भौतिक सत्य ही को प्रस्तुत किया जाता है। इसी ऐतिहासिक सामग्री और औपन्यासिक कला के परिणय का परिणाम है ऐतिहासिक उपन्यास।[११] ऐतिहासिक उपन्यास में तथ्यों के यथार्थ रूप को ग्रहण कर कल्पना द्वारा उसे पूर्ण चित्र के रूप में परिणत किया जाता है। 'ऐतिहासिक उपन्यास के लिए तो इतिहास की रक्षा करने के साथ-साथ उसके स्वरूप का कल्पना के द्वारा स्पष्ट करना भी आवश्यक है। यह ध्यान रखना चाहिए कि उपन्यास इतिहास का अन्धानुकरण नहीं हो सकता सबसे पहले वह उपन्यास है – साहित्यिक कलावस्तु। साथ ही वह इतिहास भी है, जिसकी मर्यादा की भी रक्षा करनी पड़ती है, अतः यहां कल्पना अनियन्त्रित नहीं हो सकती।'[१७] डॉ० सत्येन्द्र ऐतिहासिक उपन्यास का स्वरूप इन शब्दों में प्रस्तुत करते हैं— ऐतिहासिक उपन्यासों में देश काल का सबसे अधिक ध्यान रखा जाता है। वास्तव में इन उपन्यासों के लेखक की सफलता ही इस बात में निहित रहती है कि वे जहां तक हो अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करके तात्कालिक परिस्थितियों का बिम्ब-ग्रहण करा दें। ऐतिहासिक घटनाक्रम में असत्य व अप्रामाणिक घटनाओं की भरमार नहीं हो सकती।[१८] इन मतों से स्पष्ट है कि इतिहास और कल्पना के अद्भुत सामंजस्य द्वारा ही ऐतिहासिक उपन्यास की सृष्टि सम्भव है। अतः यहां इतिहास और कल्पना की सीमा पर विचार करना उपयुक्त होगा।

इतिहास—इतिहास यथार्थ की परम्परा का वृत्त है। जीवन की व्यवस्था और गति का लेखा होने के कारण इतिहास उपन्यास का उपयोगी उपादान है। ऐतिहासिक उपन्यास में ऐतिहासिक सत्यता को अभिव्यक्त करना अनिवार्य धर्म है। उपन्यासकार इतिहास के साथ खिलवाड नहीं कर सकता। सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा के शब्दों में—'मेरी सम्मति में इतिहास के साथ खिलवाड करना अनुचित है। इतिहास के पूरे निर्वाह में जो कठिनाई लेखक को भुगतनी पडती है उस सर कर लेने पर जो सन्तोष और आनन्द प्राप्त होता है वह अपार है और सौन्दर्य बोध की निधि को बढाता है।'[1] वस्तुत ऐतिहासिक उपन्यासकार के सामने एक सीमा रेखा खिची होती है जिसका वह उल्लंघन नहीं कर सकता। ऐसा करने पर उसका ज्ञान विकृत एव अग्राह्य माना जाएगा। ऐतिहासिक कलाकृति में इतिहास के तथ्यों का यथार्थ अकन कला की पहली मर्यादा है। ऐतिहासिक उपन्यासकार अपने उपन्यास की सत्यता प्रकट करने के लिए जिन उपकरणों की सहायता लेता है डा० मक्खनलाल शर्मा के अनुसार वे उपकरण इस प्रकार हो सकते हैं—'प्राचीन शिलालेख, प्राचीन मुद्राए परवाने स्मारक ताम्रपत्र मौखिया की साक्षियाँ प्राचीन ग्रथ आदि।'[2] राहुल जी इन उपकरणों के साथ भौगोलिक ज्ञान को भी अनिवार्य मानते हैं।

कल्पना—इतिहास विवरण है, निर्माण नहीं। उपन्यास और इतिहास में यही मौलिक अन्तर है। वस्तुत उपन्यास यथार्थ के आधार पर कल्पना की सृष्टि है। जहाँ उपन्यासकार इतिहास को स्वीकार कर कल्पना द्वारा नीरसता और शुष्कता को दूर करने का प्रयत्न करता है वही वह इतिहास में उपन्यास का समावेश कर ऐतिहासिक उपन्यास की सृष्टि करता है। उपन्यास में सृजनात्मकता का तत्त्व उपन्यासकार की कल्पना शक्ति से समाविष्ट होता है। इसी से उसकी रचना आकर्षक और मनोरजक होती है।

ऐतिहासिक उपन्यासकार कल्पना के प्रयोग में सर्वथा स्वतन्त्र भी नहीं है। उसका कल्पना प्रयोग ऐतिहासिक तथ्यों को विकृत करने का मनमाना अधिकार नहीं रखता। कलाकार को नवीन तथ्य निर्माण का तो अधिकार है पर वास्तविक तथ्यों को विकृत करने का नहीं। कला की मर्यादा का उल्लेख करते हुए डा० रामानन्द तिवारी का कथन है—'कला की दूसरी मर्यादा का सम्बन्ध ऐतिहासिक तथ्यों के परिवर्तन से है। कलाकार इतिहास लेखक नहीं है इसलिए उसे इस परिवर्तन का उतना ही अधिकार है जितना नवीन तथ्यों और कल्पनाओं के सृजन का। किन्तु परिवर्तन द्वारा वास्तविक तथ्यों को विकृत बनाने का अधिकार कलाकार को भी नहीं है।'[1] डा० त्रिभुवनसिंह भी उपन्यासकार को इतिहास की मर्यादा में बधा हुआ स्वीकारते हैं—'कृतिकार को स्वतन्त्रता है कि वह जिस ऐतिहासिक चरित्र को चाहे आकर्षक रूप में रख सकता है परन्तु उसके लिए तत्कालीन देश और काल के बारे में जितनी भी मान्य बातें हैं, उन सब का समन्वय उसे चरित्र के विकास में दिखलाना आवश्यक

ही नहीं अनिवार्य भी है। राहुल जी कल्पना की इसी मर्यादा को ग्रहण करते हैं।

ऐतिहासिक उपन्यास राहुल जी के विचार—राहुल जी ने अपनी औपन्यासिक कृतियों एवं यत्र-तत्र कुछ लेखों में ऐतिहासिक उपन्यास के विषय में अपने विचार प्रकट किये हैं। उनके अनुसार ऐतिहासिक उपन्यास में हमें ऐसे समाज और उसके व्यक्तियों का चित्रण करना पड़ता है, जो सदा के लिए विलुप्त हो चुका है। किन्तु उसने पद-चिह्न कुछ जरूर छोड़े हैं जो उनके साथ मनमानी करने की इजाजत नहीं दे सकते। इन पद चिह्नों या ऐतिहासिक अवशेषों के पूरी तौर से अध्ययन को यदि अपने लिए दुष्कर समझते हैं तो कौन कहता है आप जरूर ही इस पथ पर कदम रखें? हम देखते हैं कम-से-कम हमारे देश में समय कथाकार भी ऐसी गलती कर बैठते हैं और बिना तैयारी के ही कलम उठा लेते हैं।[२३]

ऐतिहासिक उपन्यासकार का विवेक इतिहासकार की तरह ही होना चाहिए—उसे समझना चाहिए कि कौन-सी सामग्री का मूल्य अधिक और किनका कम है। लिखित सामग्री वही प्रथम श्रेणी की मानी जाएगी जिसे उसी समय लिपिबद्ध किया गया है। समकालीन लिपिबद्ध सामग्री सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जा सकती है। सिक्के शिलालेख और ताम्रपत्र उसी समय के लिखे होते हैं इसलिए उनका मूल्य अधिक है। वास्तु मूर्तियां और चित्र अपने समय के समाज के जीवन पर बहुत प्रकाश डालते हैं।[२४]

ऐतिहासिक उपन्यासकार के लिए भौगोलिक ज्ञान भी आवश्यक है। इस विषय में राहुल जी का कथन है—ऐतिहासिक अनौचित्य से बचने के लिए जिस तरह तत्कालीन ऐतिहासिक सामग्री और इतिहास का अच्छी तरह अध्ययन आवश्यक है वैसे ही भौगोलिक अध्ययन की भी आवश्यकता है। जिस तरह ऐतिहासिक मापदण्ड स्थापित करने के लिए तत्कालीन राजाओं के राज्य और शासनकाल की पहले से ही तालिका बनाकर उसमें वर्णनीय घटनाओं के अध्याय क्रम को टाँक लेना जरूरी है उसी तरह भौगोलिक स्थानों, उनकी दिशाओं और दूरियों को ठीक-ठीक अंदाज रखने के लिए तत्सम्बन्धी नक्शे का खाका हर वक्त सामने रखना चाहिए।[२५]

इस प्रकार राहुल जी ने ऐतिहासिक उपन्यास-सम्बन्धी मुख्यवान विचार प्रस्तुत किये हैं। वस्तुतः ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना सहज नहीं। जब तक तत्कालीन ऐतिहासिक सामग्री भौगोलिक स्थिति एवं तत्कालीन समाज के आचार व्यवहार रीति रिवाज रहन-सहन आदि की पूर्ण जानकारी न हो तब तक ऐतिहासिक उपन्यास जैसी कृति लिखने का दायित्व नहीं लेना चाहिए। राहुल जी इसे अगम्य भूल मानते हैं—'ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास और भूगोल या तत्कालीन संस्कृति की असंगति को मैं अगम्य दोष समझता हूँ।' ऐतिहासिक उपन्यास लिखने के लिए वस्तुतः गम्भीर अध्ययन की आवश्यकता है। राहुल जी अपने ऐतिहासिक उपन्यासों की ओर प्रवृत्त होने के मूल कारण की ओर संकेत करते हैं—इस तरह के उपन्यास

लिखने में जितने परिचय और अध्ययन की आवश्यकता है वैसे उपन्यास हिन्दी में अभी कम हैं दूसरे यह भी कि अतीत के प्रगतिशील प्रयत्नों को सामने लाकर पाठकों के हृदय में आदर्शों के प्रति इस प्रकार की प्रेरणा भी पैदा की जा सकती है।'[२७]

राहुल जी के ऐतिहासिक उपन्यास

राहुल जी के पाँच ऐतिहासिक उपन्यास हैं — 'दिवोदास' 'सिंह सेनापति', 'जय यौधेय' 'मधुर स्वप्न' तथा 'विस्मृत यात्री'। ऐतिहासिक उपन्यास लेखन के लिए अनेक प्रकार के दृष्टिकोण हो सकते हैं। यथा वर्तमान जीवन के कटु यथार्थ से असंतुष्ट एवं पराजित होकर अतीत के स्वप्न लोक में पलायन करके मानसिक विश्रान्ति प्राप्त करने का प्रयत्न, या विगतकाल के आदर्शों के प्रति अत्यन्त मोहासक्त होकर उनका अतिरंजित रूप में चित्रित करके वर्तमान के साथ उसके वैषम्य का रेखांकन, अथवा नये जीवन को ढालने के लिए इतिहास के समृद्ध युग में प्रकाश तत्वों का अन्वेषण। इन तीनों कारणों से भिन्न अतीतोन्मुख होने का एक यह कारण भी है कि कभी-कभी लेखक अपने जीवन दर्शन के आलोक में तत्कालीन जीवन के विविध पक्षों का विवेचन करता है। वह अतीत से उदाहरण खोजकर प्रस्तुत करना चाहता है ताकि वह अपने विचार एवं आंदोलन की जड़ें अत्यन्त गहरी सिद्ध कर सके।[२८] राहुल जी के अतीतोन्मुख होने का यही कारण है। उनका समस्त जीवन और साहित्य यह प्रमाणित करता है कि न तो विचार के क्षेत्र में वे पलायनवादी रहे हैं और न भाव के क्षेत्र में अतीत के प्रति मोहासक्त। समाजवादी विचारधारा पर उन्हें आस्था है और साम्यवादी जीवन दर्शन उनका अपना जीवन-दर्शन है। महेन्द्र चतुर्वेदी के शब्दों में 'उनका मूल उद्देश्य समाजवादी सिद्धान्तों के प्रसार द्वारा एक वर्गहीन आदर्श समाज की स्थापना को प्रोत्साहन देना है फलतः उन्होंने अतीत इतिहास से अपने मनोनुकूल पात्रों और घटनाओं का चयन किया है और अपने अभीष्ट लक्ष्य की ओर वे एकनिष्ठता के साथ अग्रसर हुए हैं।' इस प्रकार राहुल जी ने अपने उपन्यासों में वर्तमान समस्याओं को प्राचीन वातावरण के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

ऐतिहासिक सामग्री के स्रोत—राहुल जी के ऐतिहासिक उपन्यास दिवोदास सिंह सेनापति जय यौधेय मधुर स्वप्न तथा विस्मृत यात्री इतिहास के विस्मृत पृष्ठों से सम्बद्ध हैं। राहुल जी का इतिहास ज्ञान बड़ा व्यापक और गम्भीर है। शताब्दियों के व्यवधान को चीरती हुई उनकी पैनी दृष्टि भारतीय इतिहास के अनेक युगों का साक्षात्कार कराने में समर्थ हुई है। दिवोदास (१२२० ई०पू०) सिंह सेनापति (५०० ई०पू०), जय यौधेय (३५० ४०० ई०) मधुर स्वप्न (४६२ ५२६ ई०) तथा विस्मृत यात्री' (५१८ से ५८६ ई०) विभिन्न कालों से सम्बन्धित उपन्यास हैं। इन उपन्यासों की रचना में लेखक ने ऐतिहासिक तथ्यों के प्रति सावधानी एवं ईमानदारी दिखलाई है। ऐतिहासिक सामग्री जुटाने की ओर उनका ध्यान सदैव अधिक रहा है। उनकी दृष्टि में एक ऐतिहासिक उपन्यासकार का विवेक इतिहासकार की

तरह होना चाहिए। राहुल जी समकालीन लिपिबद्ध सामग्री को ही प्रामाणिक एव प्रथम श्रेणी की सामग्री मानते हैं, जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से तत्कालीन शिलालेख, ताम्र पत्र, सिक्के आदि आते हैं। राहुल जी ने अपने उपन्यासो में इतिहासकार के विवेक का परिचय दिया है इसमे किंचित् भी सन्देह नही। वस्तुत 'उनका व्यापक इतिहास ज्ञान उनकी कला की बहुत बडी शक्ति है।'[13]

राहुल जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासो के स्रोतो के विषय में उपन्यासो की भूमिकाओं एव परिशिष्टो में सकेत दिये हैं। दिवोदास में ऋग्वैदिक काल की घटनाएँ हैं। अत इस उपन्यास की ऐतिहासिक सामग्री ऋग्वेद की कथाएँ हैं। 'सिंह सेनापति' का आधार बौद्ध ग्रन्थ है। भूमिका मे राहुल का कथन है—'साहित्य पालि, संस्कृत तिब्बतीय मे अधिकता से और जैन साहित्य मे भी कुछ उस काल के गणो की सामग्री मिलती है। मैंने उस इस्तेमाल करने की कोशिश की है।'[14] जय यौधेय गुप्तकालीन यौधेय गण की कथा है। इसका ऐतिहासिक आधार अत्यन्त पुष्ट है— मैंने अपने उपन्यास मे गौरवशाली यौधेय-गण और उसकी ध्वसलीला को चित्रित किया है। यहाँ राजाओं राजकुमारो तथा दूसरे गुप्तवशी अधिकारियो के नाम देने मे ऐतिहासिक सामग्री का उपयोग किया है—समाज के चित्रण मे मैंने कालिदास के ग्रन्थो और उसी समय यात्रा करने वाले फाहियान के यात्रा विवरण का उपयोग किया है। डाक्टर अनतकर प्रोफेसर राखालदास बनर्जी और डा० आर० एन० दण्डेकर के ग्रन्थो, गुप्त कालीन शिलालेखो और सिक्को से मैंने इस ग्रन्थ मे बहुत सहायता ली है।[15] मधुर स्वप्न का आधार ईरान-सम्बन्धी इतिहास ग्रन्थ हैं। सन १९४४ ४५ की ईरान-यात्रा मे राहुल ने इसके लिए सामग्री सकलित की थी। उपन्यास के परिशिष्ट मे विस्तार से उपन्यास मे आए पात्रो के ऐतिहासिक व्यक्तित्व को प्रमाणित करने के लिए सामग्री उल्लिखित है।[16] विस्मृत यात्री' के लिए राहुल जी ने चीनी-साहित्य से सामग्री ली है।[17] इन ऐतिहासिक स्रोतो के उल्लेख से स्पष्ट है कि राहुल जी ने अपने उपन्यासो मे जिन ऐतिहासिक तथ्यो को प्रस्तुत किया है वे प्रामाणिक हैं।

राहुल जी के ऐतिहासिक उपन्यासों मे इतिहास और कल्पना—सृजनात्मक साहित्य के क्षेत्र मे राहुल जी की प्रतिभा का सर्वाधिक वरदान उनके ऐतिहासिक उपन्यासो को प्राप्त है। स्वय राहुल जी का कथन है—इतिहास का प्रेमी और विद्यार्थी होने से उसे मूर्तिमान करने की आकाक्षा हुई इसी के परिणाम मेरे उपन्यास हैं।'[18] राहुल जी का इतिहास ज्ञान बडा व्यापक एव गम्भीर है और यही उनकी कला की सबसे बडी शक्ति भी है। वे जिस ऐतिहासिक युग का अकन करते हैं उसे साकार रूप प्रदान करना उनकी कला की विशिष्टता है। राहुल इतिहास को कला का स्रष्टा मानते हैं— इतिहास एक तरफ विज्ञान है अर्थात हृदय को नही मस्तिष्क को तृप्त करना उसका काम है तो दूसरी ओर वह कला का स्रष्टा है।[19]

शचीरानी गुर्टू लिखती हैं—यद्यपि राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासो की संस्कृति का रूप निर्माण वर्तमान युग की समन्वित संस्कृति से सम्पन्न हुआ है तथापि

उन्होंने इतिहास के जिस विशिष्ट युग में भौतिकतर जीवन की भावभूमि में प्रवेश किया है उसका सर्वांगीण प्रस्तुत या कहें कि उससे भी व्यापक चित्रण उनके उपन्यासों में मिलता है।[15] युग विशेष के सर्वांगीण एवं व्यापक चित्रण के लिए राहुल जी ने इतिहास के साथ साथ एतिहासिक कल्पना का भी आश्रय लिया है जिससे उनके उपन्यास रोचक एवं सरस बन गये हैं। राहुल जी के उपन्यासों में इतिहास तत्त्व एवं कल्पना कुशलता द्रष्टव्य है। शिवदानसिंह चौहान लिखते हैं— इनके एतिहासिक उपन्यासों में सिंह सेनापति जय यौधेय मधुर स्वप्न उल्लेखनीय है उनका उद्देश्य विभिन्न प्राचीन संस्कृतियों और सामाजिक युग में मनुष्य के विकास की कहानी को चित्रित करना होता है। इसके लिए वे ऐतिहासिक और प्रागैतिहासिक युगों के विशिष्ट समाजों और उनके निर्माण में भाग लेने वाले विशिष्ट और साधारण जनों का कल्पनाजन्य चित्र प्रस्तुत करते हैं। इनके उपन्यासों में प्राचीन मानव संस्कृति और समाज के एतिहासिक विकास की सुन्दर झाँकी रहती है।[16] आगे के पृष्ठों में राहुल जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास और कल्पना तत्त्व का विवेचन प्रस्तुत है।

दिवोदास

इतिहास— दिवोदास ऋग्वैदिक आर्यों के जीवन से सम्बद्ध लघु उपन्यास है। इस उपन्यास में सप्तसिंधु में आर्यों एवं दस्युओं के संघर्ष का चित्रण है। इस संघर्ष में पुरु राजा पुरुकुत्स किलातों की सात पुरियों को ध्वस्त कर राज्य विस्तार करता है और तत्सुओं का राजा दिवोदास पणियों को परास्त कर किरातों की सौ पुरियों पर अधिकार करता है।

दिवोदास' की एतिहासिक घटनाओं के विषय में राहुल जी का कथन है— 'ऋग्वेदिक काल की घटनाएँ उपन्यास का विषय हो सकती हैं। शम्बु विजय और नागराजयुद्ध शबर विजय आदि रूप में।[1] इस उपन्यास में शम्बु विजय और शम्बर विजय से सम्बद्ध घटनाएं हैं क्योंकि उपन्यास के नायक के साथ इन्हीं का सीधा सम्बन्ध है। दिवोदास की इतिहास सम्मतता के लिए राहुल जी ने उपन्यास के प्रत्येक परिच्छेद के आरम्भ में ऋग्वेद की एक एक ऋचा को उद्धृत किया है। इस प्रकार उपन्यास के बारह अध्यायों की घटनाओं से सम्बद्ध बारह ऋचाएं उपन्यास में है। परन्तु ये बारह ऋचाएँ ही प्रस्तुत उपन्यास का आधार हों ऐसी बात नहीं। राहुल जी ने ऐसी अनेक अन्य ऋचाओं का भी आधार लिया है जिससे ऋग्वेदकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का अंकन करने में उन्हें सहायता मिला है। दिवोदास में पुरुकुत्स दिवोदास अबला सेना सरमा, शम्बर शुष्ण आदि का वर्णन ऋग्वेद की ऋचाओं के अनुकूल हुआ है।[4] ऋषि भरद्वाज तथा दिवोदास के विषय में राहुल जी संस्कृत काव्यधारा में लिखते हैं— भरद्वाज सप्तसिंधु के महान विजेता भरत जन के नायक दिवोदास के पुरोहित (गुरु तथा प्रधान मन्त्री) थे। शम्बर आदि पहाड़ी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भरद्वाज का बड़ा हाथ था।[1] उक्त तथ्य

'वदिक इण्डेक्स'[४१] तथा 'हिन्दी ऋग्वेद'[४३] तथा 'ऋग्वेदिक इण्डिया'[४४] नामक ग्रथा म सकलित तथ्या स भी साम्य रखते हैं। 'दिवोदास' मे वर्णित तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एव धार्मिक परिस्थितिया का विवरण ऋग्वेद की ऋचाग्रा पर आधृत है। साथ ही वदिक युग के इतिहासकारो द्वारा दिय गए तथ्या के अनुकूल है। कुछ तथ्य इस प्रकार हैं—

(१) ऋग्वेद के विवरणा से प्रमाणित होता है कि आर्यों का प्रधान उद्योग कृषि कर्म था। पशु-पालन तथा अन्य घरेलू जानवरा का पालन कृषि-कर्म से किसी भी प्रकार कम महत्त्वशाली नही था। गाया की बडी प्रतिष्ठा थी। उनका दूध ऋग्वेद कालीन समाज के भोजन का प्रधान अग था। प्रतिदिन पशुग्रा के झुण्डा को गोप चरागाहा म ले जाते थे।[४] राहुल जी ने ऋग्वेदिक आर्य की भूमिका म आर्यों की आजीविका के विषय में इसस मिलता जुलता विवरण दिया है।[१]

(२) ऋग्वेदकाल म आर्य और अनार्य जन का भेद स्पष्ट मिलता था। वह भेद शारीरिक भी था सास्कृतिक भी। अनार्य काले रग के और अनास या चपटी नाक वाले होते थे।[४७] इन्हें कृष्णचर्म कृष्णयोनि या कृष्णवर्ण कहा जाता था।[४८] मैकडोनल लिखते हैं— य नाग मानवीय शत्रु हैं जिनका रग काला है जो अनास हैं, अन्यव्रत तथा अयज्वा हैं।[९]

(३) पणिया से सम्बन्धित वर्णन एव उनके समुद्र तक फैले व्यापार आदि भी ऐतिहासिक तथ्य हैं—'पणि भी आर्य थे जिनका सम्बन्ध व्यापारिक श्रेणी से था। जो केवल स्थल मार्ग से ही नही बल्कि समुद्र मार्ग से भी व्यापार करते थे और अपनी लोभी तथा धन सचय की वृत्ति के लिए सभ्य आर्यों म बुरी दृष्टि स देखे जाते थे। वे उन यज्ञो को नही करते थे जिन्हें आर्य करते थे और आर्य उनसे घृणा करते थे। व गगा के किनारे रहते और नौका निर्माण के लिए प्रसिद्ध थ।'[५]

(४) दिवोदास में वर्णित आर्यों के आमोद प्रमोद भी इतिहासज्ञो को मान्य हैं। आमोद प्रमोद मे रथ की दौड घोडा की दौड, पासे खेलना, नृत्य और गान सम्मिलित थ। अक्ष खेलने के दुष्परिणामा का भी उल्लेख है। उससे लोगा का सब नाश हो जाता था।[५१]

(५) सप्तसिधु के विविध आर्य जना के विषय मे श्री अविनाशचन्द्र दास का कथन है—'सप्तसिधु के आर्य जनो म विभक्त थे अपने धार्मिक विश्वासा तथा सामाजिक रीति-नीतिया के कारण। कुछ के धार्मिक विश्वास, देवपूजा भाषा तथा सामाजिक आचार विचार म साम्य था, यद्यपि उनका पृथक राज्य एव राजा था। य ऋग्वेद के पचजन कहलाते हैं। अनु, द्रुह्यु, तुर्वश, तरसु तथा भरत पचजन थे। य पाँच जन सोम अर्पण के शौकीन थे। यह साम अर्पण इन्द्र को किया जाता था।[५३] आर्यों की सोमपान विषयक अनेक वदिक कथाएँ मिलती हैं।[५४] इनके अतिरिक्त आर्यों के मास भोजन का उल्लेख भी इन्ही ऋचाओ म है।[५५]

इस प्रकार 'दिवोदास' सप्तसिधु के ऋग्वेदिक आर्यों के जीवन का यथार्थ

लेखा जोखा है। राहुल जी ने ऋग्वेद की ऋचाओं को सामने रखकर एक एक पंक्ति लिखी है। उपन्यास की आधिकारिक कथा प्रासंगिक कथा तथा अन्य प्रसंगों की योजना का स्पष्ट आधार ऋग्वेद की ऋचाएं हैं। उपन्यास के प्रमुख पात्र एवं उनके संवाद भी ऋग्वेद में सम्बद्ध हैं। अतः उपन्यास की ऐतिहासिकता असंदिग्ध है।

कल्पना— दिवोदास में कल्पना का प्रयोग स्वल्प ही है। राहुल जी ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक तथ्यों को सच्चाई से प्रस्तुत करना अपना धर्म मानते हैं। दिवोदास में सप्तसिंधु के आर्यों के जन जीवन को प्रस्तुत करना उनका ध्येय है। और उसके लिए उनके सम्मुख ऋग्वेद की ऋचाओं के रूप में पर्याप्त सामग्री विद्यमान है। उसी को सुव्यवस्थित कर ऐसे रूप में प्रस्तुत किया गया है कि दिवोदास इतिहास मात्र न रहकर उपन्यास बन गया है। दिवोदास की कथा को शृंखलाबद्ध रूप में प्रस्तुत करने एवं उसमें और प्रासंगिक कथा के अनुकूल सरसता लाने के लिए कल्पना का पुट भी दिया है। यह कल्पना इतिहास सम्मत है।

ऋग्वेद वर्णित पुरुरवा तथा उर्वशी की स्वतन्त्र कथा यहाँ युगल गान के रूप में अत्यन्त रोचक बन पड़ी है। इस युगलगान की गायिकाएँ हैं—पुरुकुत्सानी तथा दिवोदास की माता पौरवा।[४४] आमोद प्रमोद के साधनों में अश्व समन आयोजन ऋग्वेद की ऋचाओं में संकलित है पर बारह वर्ष के दिवोदास को अश्व समन के विजेता के रूप में प्रस्तुत करना उपन्यासकार की कल्पना है जिससे उसके नायक के चरित्र उत्कर्ष में सवृद्धि होती है।[४५] द्यूत क्रीड़ा का वर्णन भी ऋग्वेद में आया है परन्तु उपन्यासकार ने उसे दिवोदास की शासन प्रबन्ध कुशलता के प्रसंग में वर्णित किया है।[४७] वैदिक काल में टिड्डी दल के आक्रमण प्रायः होते रहते थे पर भरद्वाज के मुख से टिड्डी दल के रूप में किरातों का वर्णन कल्पना का ही चमत्कार है।[४८] गन्धर्व गृहीता कुमारी की कथा भी कल्पना जन्य है।[४९] शम्बर दुहिता का नाम और उसके साथ देवक मन्यमान के प्रसंग को सम्बद्ध करना भी लेखक की कल्पना की ही उपज है।[५]

इस प्रकार राहुल जी के दिवोदास की कल्पनाएँ इतिहास सम्मत हैं वे ऐतिहासिक तथ्यों को कहीं विकृत नहीं करती।

सिंह सेनापति

इतिहास— सिंह सेनापति राहुल जी का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका कथानक ५०० ई० पू० के लिच्छवी गणराज्य से सम्बद्ध है। राहुल जी ने भूमिका में लिखा है— यह मेरा दूसरा उपन्यास है—ई० पू० ५०० का। मैं मानव समाज की उषा से लेकर आज तक के विकास को २० कहानियों में लिखना चाहता था। उन कहानियों में एक इस समय (बुद्धकाल) की भी थी। जब लिखने का समय आया तो मालूम हुआ कि सारी बातों को कहानी में नहीं लाया जा सकता इसलिए सिंह सेनापति उपन्यास के रूप में आपके सामने उपस्थित हो रहा है।"[५] भूमिका में ही राहुल जी ने प्रस्तुत उपन्यास के ऐतिहासिक आधारों की ओर भी संकेत किया है—

सिंह सेनापति के समकालीन समाज को चित्रित करने में मैंने ऐतिहासिक कर्तव्य और औचित्य का पूरा ध्यान रखा है। साहित्य पाली, संस्कृत, तिब्बतीय में अधिकता से और जैन साहित्य में भी कुछ उस काल के गणों (प्रजातन्त्रों) की सामग्री मिलती है। मैंने उस इस्तेमाल करने की कोशिश की है।"[1] राहुल जी ने 'सिंह सेनापति' की इतिहास सम्मतता का पाठकों को विश्वास दिलाने के लिए एक रोचक कथा उपन्यास के विषय प्रवेश में उल्लिखित की है।"[2] उनका कथन है कि छपरा जिला में एक मित्र के परती खेत को खुदवाते समय उन्हें कुछ ईंटें प्राप्त हुईं जिन पर ब्राह्मी अक्षरों में लिखा हुआ था। ये ईंटें नहीं किसी पुस्तक के पन्ने हैं। लेखक ने कागज-स्याही की जगह गीली ईंटों पर नोक लेखनी से अपनी पुस्तक को स्वयं लिखा या लिखवाया। फिर सूख जाने पर उन्हें पकाकर छली की शक्ल में यहाँ गाड़ दिया।"[3] उसी पुस्तक का अनुवाद 'सिंह सेनापति' है। अपनी बात का पाठकों को विश्वास दिलाने के लिए वे लिखते हैं—'आपको मेरी सच्चाई पर सन्देह हो तो इन सोलह सौ ईंटों को जाकर पटना म्यूज़ियम में देख लीजिये।'[4] पुरातत्ववेत्ता राहुल के कथन को अक्षरशः सत्य मानकर कुछ लोग पटना म्यूज़ियम में पहुँच गये। परन्तु 'सिंह सेनापति' किसी ऐसी अद्भुत पुस्तक का अनुवाद नहीं है। यह एक मौलिक उपन्यास है। विस्मृत यात्री में उन्होंने लिखा है—"यदि वह वस्तुतः ईंटों पर उत्कीर्ण होता तो वह उपन्यास नहीं होता। ईंटों के दर्शनार्थी पाठकों को समझ लेना चाहिए कि यह उपन्यास है हाँ ऐतिहासिक है अर्थात् उस काल के देशकाल पात्र की परिधि से बाहर नहीं जा सकता। मेरे सभी ऐतिहासिक उपन्यास उपन्यास हैं, इतिहास या जीवनी नहीं।"[5]

इस उपन्यास की कथा पालि वाङमय से ली गई है।"[6] डा० नगेन्द्र सिंह सेनापति की ऐतिहासिकता के विषय में लिखते हैं—'सिंह सेनापति' में बिम्बिसार और अजातशत्रु के व्यक्तित्व तथा उनका लिच्छवियों से युद्ध तो प्रामाणिक रूप से ऐतिहासिक कहा जा सकता है यहाँ तक कि नायक सिंह भी काल्पनिक व्यक्ति है।[7] इस प्रकार डा० नगेन्द्र नायक सिंह को काल्पनिक मानते हैं परन्तु विनयपिटक के 'महावग्ग' में सिंह के विषय में लिखा है—सिंह नाम का सेनापति पहले जैनमत का अनुयायी था। महात्मा बुद्ध के उपदेश को सुनकर वह उनका अनुयायी बन गया। महात्मा बुद्ध ने सिंह के निमन्त्रण पर सामिष भोजन किया।"[8] इसके अतिरिक्त डिक्शनरी ऑफ पाली प्रॉपर नेम्ज़ में सिंह का नाम सिंह के ऐतिहासिक व्यक्तित्व का प्रमाण है।[9] राहुल जी ने महामानव बुद्ध में भी सिंह का उल्लेख किया है।[10]

सिंह सेनापति में लिच्छवीगण के सामाजिक व राजनीतिक जीवन को प्रस्तुत करना लेखक का उद्देश्य रहा है। उपन्यास में वर्णित लिच्छवीगण की इतिहास सम्मतता के लिए डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी के निम्नलिखित वर्णन को उद्धृत करना अप्रासंगिक न होगा।

'सभी गणतन्त्रों में लिच्छवी गणतन्त्र अग्रगण्य था। उसकी राजधानी वैशाली

म थी जिसके दो भाग थे। (१) आभ्यन्तर या नगर का मुख्य भाग और (२) बाहिर (उपनगर) अथवा वहत्तर वैशाली। बुद्ध ने लिच्छवियों को कष्टसह बताया है जिनमे आलस्य और विलासिता नही थी जो मुलायम गद्दे तकियो की बजाय लकडी के लट्ठो के सिरहाने पर सोया करते थे। ये तीर चलाने हाथियो के साधन और कुत्तो से शिकार करने मे सिद्धहस्त थे। वे बुद्ध के भक्त थे और उन्होने उनसे वैशाली पधारने की प्रार्थना की थी।'[७२] डा० भगवतशरण उपाध्याय ने भी लिच्छवी गणतन्त्र वैशाली नगरी तथा बुद्ध और लिच्छवियो के सम्बन्ध आदि के विषय मे इसी प्रकार के तथ्यो का उल्लेख किया है।[७३] अजातशत्रु और लिच्छवियो के पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे नही थे। मगधराज अजातशत्रु साम्राज्य विस्तार की इच्छा से लिच्छवियो को पराजित करना चाहता था। सिंह सेनापति मे सकेतित उसके युद्ध की एतिहासिक प्रामाणिकता असदिग्ध है। इस युद्ध का उल्लेख डा० मुकर्जी ने भी किया है।[७४]

लिच्छवियो के प्रजातन्त्रात्मक शासन एव परिपाटी के विषय मे डा० भगवतशरण उपाध्याय का कथन है— लिच्छवी अपने सघ की बैठको के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी बैठको मे शासन के कार्य सुचारु रूप और एकता से सम्पन्न होते थे। राष्ट्र का शासन एक प्रकार की सस्थापिका द्वारा होता था। बैठकें सस्थागार मे होती थी। बौद्ध ग्रन्थो से पता चलता है कि इन सस्थागारो के कार्यक्रम बडी मुस्तैदी से होते थे। सदस्यो की सम्मति शलाकाओ द्वारा होती थी। शलाकाएँ उतने रग की काम मे लाई जाती थी जितनी सम्मतियाँ होती। मतदान सर्वथा स्वतन्त्र होता था और निश्चय बहुमत के पक्ष मे। इस प्रकार गणतन्त्रो की कार्यवाही प्रजातन्त्रात्मक थी।[७५] डा० प्रशान्त कुमार जायसवाल ने भी लिच्छवियो की गणतन्त्र शासन प्रणाली का उल्लेख किया है।[७६]

उपन्यास मे वर्णित कौशल-नरेश प्रसेनजित् भी एतिहासिक व्यक्तित्व है।[७७] उसका शिक्षण तक्षशिला के विख्यात विद्यापीठ मे हुआ था।[७८] पण्डित बलदेव उपाध्याय बिम्बसार एव प्रसेनजित् को समकालीन मानते हैं।[७९] बन्धुल मल्ल और महालि का तक्षशिला मे शिक्षा ग्रहण करने जाना भी एतिहासिक तथ्य है। डा० रागेय राघव के अनुसार कुशीनारा के एक राजा का बन्धुल नामक पुत्र तक्षशिला पढ़ने गया था महालि जब शिल्प सीख कर आया तो उसने पाँच सौ लिच्छवी युवको को शिल्प सिखाकर तैयार किया।[८०]

उक्त तथ्य डा० रमेशचन्द्र मजूमदार की ऐतिहासिक कृति वाकाटक गुप्त एज इन एन्शियट इण्डिया[८१] कैम्ब्रिज आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया[८२] डॉ० भगवतशरण उपाध्याय की पुस्तक प्राचीन भारत का इतिहास[८३] तथा डॉ० रागेय राघव की पुस्तक 'प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास[८४] मे भी मिलते हैं। बौद्ध धर्म और हिन्दू ग्रन्थो से भी उक्त तथ्यो की एतिहासिकता का निर्णय किया जा सकता है। इस पुष्टि

वर्णित वैशाली के वीग, कूटागारशाला महात्मा बुद्ध का सामिष भोजन ग्रहण करना, जैन और बौद्ध धर्म की प्रतिद्वंद्विता आदि के प्रसंग 'सिंह सेनापति' के अनुकूल हैं।

सिंह सेनापति' में वर्णित ऐतिहासिक तथ्यों एवं उपयुक्त ऐतिहासिक तथ्यों के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट है (१) सिंह सेनापति का नायक सिंह ऐतिहासिक पात्र है। (२) बिम्बसार, अजातशत्रु तथा प्रसनजित इतिहास प्रसिद्ध नायक (सम्राट) हैं ही। अन्य गौण पात्रों में वत्सराज जीवक, महालि तीर्थंकर महावीर एवं महात्मा बुद्ध भी ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं। (३) मगध और वैशाली के संघर्ष (युद्ध) सम्बन्धी घटनाएँ भी ऐतिहासिक हैं। (४) वैशाली एवं तक्षशिला का गौरवांकन भी इतिहास-सम्मत है। लिच्छवियों की गणतन्त्र प्रणाली का चित्रण इतिहासानुकूल है और तक्षशिला के विश्वविद्यालय का गौरव तो कभी विस्मृत हो ही नहीं सकता। (५) ब्राह्मणमत एवं जैनमत की प्रतिद्वंद्विता की चर्चा भी इतिहास में प्राप्य है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सिंह सेनापति इतिहास की आधारभित्ति पर स्थित औपन्यासिक रचना है। कला और काव्य की मर्यादा का इसमें निर्वाह है।

कल्पना — सिंह सेनापति' के प्रमुख पात्र एवं घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। साथ ही अनेक काल्पनिक प्रसंगों की सुन्दर योजना हुई है। गान्धार कुमार कपिल का पूरा-का-पूरा चरित्र कल्पना प्रसूत है। उसके पराक्रम की कथा देव सृष्टि के सुखोपभोग एवं प्रेम वर्णन लेखक की अपनी ही कल्पना है। गान्धार कुमार के चरित्र की कल्पना में लेखक का अपना जीवन दर्शन अभिव्यक्त होता है। विशेषकर 'उत्तरकुरु' में युद्ध प्रसंग से सम्बन्धित कपिल के चरित्र में। कृष्णा माता का प्रसंग भी कल्पनाप्रसूत है। इस कल्पना के पीछे भी राहुल जी का जीवन दर्शन है जिसमें वह हर मानव को स्वच्छन्द देखना चाहते हैं।

सिंह सेनापति' में बिम्बसार और लिच्छवियों के मध्य युद्ध का वर्णन है, इस युद्ध के वर्णन में लेखक ने अनुमान से काम लिया है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि अजातशत्रु ने लिच्छवियों को पराजित किया परन्तु यह प्रसंग उपन्यास का विषय नहीं है। सर्वोपरि सिंह सेनापति के सभी स्त्री-पात्र कल्पित हैं। रोहिणी और क्षेमा के प्रणय प्रसंग तथा मामा की शरारतें एवं 'धर्म विनाश' के प्रसंग में लेखक की कल्पना है। इसके अतिरिक्त तत्कालीन खान-पान तथा आचार विचार सम्बन्धी वर्णन में लेखक ने कल्पना का प्रचुर प्रयोग किया है। सिंह सेनापति' में इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय हुआ है, इसमें सन्देह नहीं।

जय यौधेय

इतिहास — जय यौधेय गुप्त सम्राटों के समकालीन यौधेय जाति के जन जीवन से सम्बन्धित ऐतिहासिक उपन्यास है। इसकी ऐतिहासिकता के विषय में राहुल जी उपन्यास के प्राक्कथन में लिखते हैं— जय यौधेय ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें ईसवी सन ३५०-४०० के भारत की राजनीतिक, सामाजिक अवस्था का चित्रण किया गया है।' प्राक्कथन में लेखक ने गुप्तकालीन शिलालेखों सिक्कों तथा डॉ० अल्तेकर

के एतिहासिक ग्रन्थो फाहियान के यात्रा विवरण तथा कालिदास के ग्रन्थो का ऐतिहासिक स्रोतो के रूप मे उल्लिखित किया है। जय यौधेय मे वर्णित मुख्य घटनाए पात्र एव स्थितिया ऐतिहासिक हैं।

यौधेय जाति के विषय मे डा० वासुदेव उपाध्याय का कथन है — यह जाति भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्त मे बहुत प्राचीन काल से निवास करती थी। पाणिनि ने (ई० पू० ५००) इस जाति को आयुधजीवित सघ मे उल्लिखित किया है। यौधेय एक बलशाली जाति समझी जाती थी जिसे समुद्रगुप्त द्वारा पराजित होना पडा। ऐसा समझा जाता है कि कुषाण वश को नष्ट करने मे इस सघ ने भी योग दिया था। यौधेयो के कई प्रकार के सिक्के मिलते हैं जिन पर यौधेयाना गणस्य जय लिखा रहता है। इनका राज्य उत्तरी राजपूताना तथा पूर्वी पजाब मे फला हुआ था।'[८६]

डा० रमेशचन्द्र मजूमदार तथा डा० अनन्त शिव अल्तकर की पुस्तक दि वाकाटक गुप्त एज' मे यौधेयगण के विषय मे निम्नलिखित तथ्य मिलते हैं— (१) यौधेयो ने द्वितीय शती के अन्त मे कुषाणो को पराजित कर उन्हे सतलुज पार भगा दिया। (२) ततीय और चतुर्थ शती मे उत्तरी राजपूताना और दक्षिण-पूर्वी पजाब मे यौधेयो का एक शक्तिशाली गणतन्त्रीय राज्य था। (३) समुद्रगुप्त के इलाहाबाद वाले शिलालेख से ज्ञात होता है कि यौधेय समुद्रगुप्त की प्रभुसत्ता को स्वीकार करते थे।[८७]

राजबती पाण्डेय यौधेयो की अधिगत भूमि के विषय मे लिखते है— ये पूर्वी दक्षिणी पजाब को अधिगत किये हुए थे। यह पूर्वी पजाब सतलुज तथा यमुना की घाटियो के समस्त क्षेत्रो मे प्रचुर परिमाण मे प्राप्त यौधेयो के सिक्को से स्पष्ट है।'[८८] डा० काशीप्रसाद जायसवाल लिखते है— यौधेय लोग बहुत कठिनता से अधीनता स्वीकार करते थे और समस्त क्षत्रियो से अपनी वीर उपाधि सार्थक करने के कारण उन्हे गर्व था।'[८९] डा० राधाकुमुद मुकर्जी ने भी यौधेयो सम्बन्धी उपरिवत तथ्य ही दिये है। स्वय राहुल जी ने यौधेयो का प्रामाणिक रूप से परिचय दिया है— यौधेय एक बहुत ही बलशाली गणराज्य था जो यमुना सतलुज तथा चम्बल हिमालय के बीच मे अवस्थित था। इतिहास और हमारे पुराने लेखको ने इसके बारे मे बडा ही क्रूर मौन धारण किया है। वस्तुत यदि इनकी चली होती तो यौधेय नाम भी हम तक न पहुचने पाता। अब तो इतिहास के गम्भीर गवेषक डा० अलतेकर जैसे विद्वान साफ शब्दो मे कहने लगे हैं कि भारत से विदेशी कुषाणो के शासन को खतम करने का श्रेय गुप्तवश भारशिव वश को नही बल्कि यौधेयो को है।'[९१]

सम्राट समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय के सम्बन्ध मे डा० वासुदेव उपाध्याय, डा० रमाशकर त्रिपाठी डा० राधाकुमुद मुकर्जी और डा० नगेन्द्रनाथ घोष ने इन तथ्यो को प्रकट किया है—(१) समुद्रगुप्त की प्रतिमा सर्वतोमुखी थी। वह न केवल युद्ध-नीति तथा रण-कौशल मे अद्वितीय था वरन शास्त्रो मे भी उसकी बुद्धि

अकुंठिता थी।[११] (२) समुद्रगुप्त के अनेक पुत्र थे जिनमे से एक का नाम रामगुप्त था जिसका पिता के पश्चात राज्य करना कहा जाता है रामगुप्त बडा कायर था। रामगुप्त को कायर समझकर चन्द्रगुप्त ने उसका वध कर दिया और स्वय चन्द्रगुप्त द्वितीय के नाम से गुप्त सम्राट बना।[१] (३) सम्राट समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात गुप्त साम्राज्य म अशान्ति-सी छा गई तथा राज्य को निबल समझकर शत्रुओ न युद्ध छेड दिया। एसी ही विषम स्थिति म विक्रमादित्य का उदय हुआ तथा इनकी माता दत्तदेवी न ऐस पराक्रमी पुत्र को पैदा कर अपने को कृताथ समझा।[१४] (४) समुद्रगुप्त की सगीतप्रियता के विषय म डॉ० उपाध्याय का कथन है "समुद्रगुप्त के कुछ सोन के सिक्के मिले हैं, जिनम रगमच पर बठे राजा की मूर्ति अंकित है और उसके एक ओर महाराजाधिराज समुद्रगुप्त लिखा है।"[१५] (५) दत्ता देवी के विषय म राखालदास बनर्जी का कथन है—'दत्तादेवी समुद्रगुप्त की रानी थी। शायद महारानी (अग्रमहिषा या पट्ट महादेवी) थी।[१६] (६) चन्द्रगुप्त महत्वा कांक्षी सेनानायक था। इसीलिए वह पूर्वी पजाब, मालवा, गुजरात को अपने पैतृक राज्य म शामिल करने म सफल हुआ। उसन अपने पिता की भांति सोन के सिक्के चलाय।[१७]

आचाय असग एव आचाय वसुबन्धु जो इस उपन्यास म जय के शिक्षक रूप मे आए हैं ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। दोनो ही बौद्ध धम और दशन के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। डा० वासुदेव उपाध्याय का कथन है—(१) "आचाय असग का पूरा नाम वसुबन्धु असग था। परन्तु य अधिकतर असग या आय असग के नाम स ही प्रसिद्ध हुए। इनका जन्म पुरुषपुर म हुआ सम्भवत गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के समय म चौथी शताब्दी म आपका आविर्भाव हुआ।'[१८] (२) आचाय वसुबन्धु असग के छोटे भाई थ। वे वाद विवाद म बडे कुशल थे। सत्तर वष की उम्र म अपन पूज्य ज्येष्ठ भ्राता असग की प्रेरणा तथा शिक्षा स यह महायान सम्प्रदाय के योगाचार मत म दीक्षित हुए—इन्होंने भारत के भिन्न भिन्न स्थानो म भ्रमण करके अपने जीवन के अनेक वष बिताए। शाकल तथा कौशाम्बी म भी इन्होने कुछ दिनो तक निवास किया था। अयोध्या तो इनकी मानो दूसरी जन्मभूमि थी। सम्भव है आचाय वसुबन्धु समुद्रगुप्त क समसामयिक तथा आश्रित हो।[१]

जय यौधय' का नायक कल्पित है परन्तु उसकी यात्राए कल्पित नही। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान की भाँति वह भारत के विभिन्न भागो म घूमता है। वह यात्रा म आय स्थानो वहाँ क शिलालखो एव मूर्तियो का वणन करता है। एसा प्रतीत होता है कि लेखक ने जय की यात्राओ के रूप म फाह्यान की यात्राओ का वणन किया है। फाह्यान के यात्रा विवरण इस उपन्यास के एतिहासिक आधार के रूप म लेखक न प्रयुक्त किए ही हैं।[११] नगेन्द्रनाथ घोष तथा मुकर्जी जसे इतिहास कारो द्वारा दिये गय फाह्यान के यात्रा विवरण प्रमाण क लिए दख जा सकते हैं। नगेन्द्रनाथ घोष के शब्दो म—"चन्द्रगुप्त द्वितीय क शासनकाल की एक महत्वपूण

घटना चीनी यात्री फाह्यान की भारत यात्रा थी। गान्धार के पहाड़ी इलाकों से होता हुआ और मार्ग में महान कठिनाइयों और संकटों का सामना करता हुआ पेशावर पहुंचा जहाँ उस समय के प्रायः सभी सुप्रसिद्ध बौद्ध धार्मिक स्थानों का दर्शन किया। पेशावर से वह पंजाब में आ घुसा और क्रमशः दक्षिण पूर्व की ओर बढ़ता गया। उसने अपनी यात्रा में पड़ने वाले मथुरा, सकाश्य कन्नौज कौशाम्बी काशी, कुशीनारा श्रावस्ती कपिलवस्तु पाटलिपुत्र, नालन्दा आदि स्थानों का भ्रमण किया। इसके बाद उसने ताम्रलिप्ति (तामलुक) के लिए प्रस्थान किया जहाँ से समुद्र द्वारा वह स्वदेश को लौट गया। स्वदेश लौटते समय वह सिंहल तथा जावा में भी ठहरा था।[१२] डा० राधाकुमुद मुकर्जी ने फाह्यान को चन्द्रगुप्त द्वितीय के समकालीन माना है। अपनी यात्रा में फाह्यान ने पेशावर पाटलिपुत्र गया आदि को देखा। तामलुक (ताम्रलिप्ति) से पोत द्वारा वह जावा, चम्पा और सिंहल गया। पोत-यात्रा में एक बार तूफान भी आया।[१३]

फाह्यान की इस यात्रा कथा और 'जय यौधेय' के जय के यात्रा स्थानों के विवरण की तुलना से स्पष्ट होता है कि दोनों यात्री अपनी यात्रा में एक ही मार्ग से गुजरे हैं और उनकी यात्रा का उद्देश्य भी बौद्धधर्म के दर्शनीय स्थानों का दर्शन करना है। यहाँ तक कि दोनों ने ताम्रलिप्ति से सिंहल की यात्रा पोतों में की और मार्ग में तूफान भी आया। अभिप्राय यह कि जय की देशयात्रा के रूप में राहुल ने फाह्यान की ऐतिहासिक यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया है।

जय यौधेय की रचना के लिए राहुल ने कालिदास के ग्रन्थों की भी सहायता ली है।[१४] वासुदेव उपाध्याय,[१५] डा० त्रिपाठी[१६] डा० एन०एन०घोष[१७] तथा मजूमदार[१८] कालिदास को चन्द्रगुप्त द्वितीय का समकालीन मानते हैं और डा० उपाध्याय ने तो कालिदास का कुन्तल प्रदेश में राजदूत बनकर जाने का भी उल्लेख किया है।[१९] राहुल जी भी कालिदास को चन्द्रगुप्त का समकालीन ही मानते हैं और उन्होंने यौधेय भूमि में राजदूत बनाकर भेजे जाने का अनुमान किया है। 'जय यौधेय' में वर्णित तत्कालीन परिस्थितियाँ कालिदास के ग्रन्थों पर आधृत प्रतीत होती हैं। हिमालय और उत्सव-संकेत का वर्णन कालिदास ने भी किया है।[११०] कालिदास ने अनेक ललित कलाओं का भी वर्णन किया है जो 'जय यौधेय' में भी वर्णित हैं। कविता तथा नाटक संगीत तथा नृत्य चित्रकला मूर्तिकरण तथा स्थापत्य विविध विवरण युक्त सबका वर्णन किया है। विवाह और वसन्तागमन के उत्सवों पर अभिनय साधारणतया होता था। ललित कलाओं को सीखने में स्त्रियों का विशेष स्थान था।[१११]

जय यौधेय में कालिदास ने अपने को दरबारी कवियों का कवि कहा है।[११२] और रघु के माध्यम से समुद्रगुप्त की कथा कही है। वासुदेव उपाध्याय का निम्नलिखित कथन इस तथ्य की प्रामाणिकता स्थापित करता है— महाकवि कालिदास ने रघु की दिग्विजय के ब्याज में इसी धर्म विजयी नरेश की दिग्विजय का वर्णन किया है।[११३]

डा राधाकमल मुकर्जी के अनुसार भी 'रघुवंश' में 'एक महान दिग्विजय का वर्णन किया गया है जिसे पढ़कर समुद्रगुप्त की भारत विजय की याद आती है। समुद्रगुप्त के अश्वमेध यज्ञ की प्रतिध्वनि 'मालविकाग्निमित्र' में भी है।'[१४]

इस प्रकार 'जय यौधेय' का कालिदास ऐतिहासिक व्यक्ति है। इस उपन्यास में उल्लिखित उत्सव-सकेत हिमालय का वर्णन, तत्कालीन भारतीय समाज की कला-प्रियता, समुद्रगुप्त की दिग्विजय आदि का उल्लेख कालिदास के 'रघुवंश', 'कुमार सम्भव' एवं 'मेघदूत' आदि रचनाओं के आधार पर है।

राहुल जी का 'जय यौधेय' यथार्थ ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। डा० सावित्री सिन्हा के शब्दों में—'जय यौधेय में गुप्तकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्थितियों का चित्रण किया गया है। ऐतिहासिक प्रमाण के लिए चीनी यात्री फाह्यान के वक्तव्यों, शिलालेखों और सिक्कों का आधार ग्रहण किया गया है।'[१५]

कल्पना —ऐतिहासिक तथ्यों की सुदृढ़ भित्ति पर आधारित 'जय यौधेय' में संयमित एवं मधुर कल्पना का सन्निवेश है। सर्वप्रथम उपन्यास का नायक 'जय' कल्पित पात्र है। इस विषय में राहुल जी की स्वीकृति है—"यौधेयों का जाति के तौर पर नाम विस्मृत हो चुका था, तो उनके व्यक्तियों के नामों के मिलने की आशा कहाँ से हो सकती है।"[१६] जय की बाल्यकाल की घटनाएँ एवं यौवन के मायावती के प्रसंग राहुल जी की मधुर कल्पनाएँ हैं। उपन्यास की आधिकारिक कथा में यौधेयों एवं गुप्त शासकों के सम्बन्ध एवं संघर्ष के अतिरिक्त अधिकांश घटनाएँ काल्पनिक हैं। हाँ, इतना अवश्य है कि वे घटनाएँ राहुल जी की ऐतिहासिक कल्पना से प्रसूत होने के कारण इतिहास विरोधी नहीं। 'जय' की तरह अन्य यौधेय पात्र भी कल्पित हैं। उनके प्रणय प्रसंग एवं आमोद प्रमोद के वर्णन में उपन्यासकार की कल्पना का चमत्कार द्रष्टव्य है।

जय से सम्बद्ध आधिकारिक कथा के अतिरिक्त उपन्यास में सिंहवर्मा और उसकी प्रेमिका वासन्ती का प्रसंग है। यह प्रसंग उपन्यासकार की कल्पना है। काची की ओर जाते हुए समुद्र में तूफान के आने के कारण सभी यात्री मर जाते हैं। केवल जय और उसका मित्र सिंहवर्मा अपनी प्रेमिका वासन्ती के साथ जीवित रहता है। सिंहवर्मा और वासन्ती के प्रणय-परिणय का प्रसंग उपन्यास में रोचकता की सृष्टि करता है। शबरों की पल्ली में जय का शबर युवती से विवाह भी काल्पनिक है। शबरों के जीवन प्रसंग में भी राहुल जी की मधुर-उर्वर कल्पना दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में वर्णित यौधेयों का जीवन भी कल्पना पर ही आधृत है। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इतिहास प्रसिद्ध गुप्त सम्राटों एवं यौधेयों के साथ उनके संघर्ष का चित्रण करने के लिए उपन्यासकार कल्पना-सूत्रों के उपयोग से कथा विकास करने में समर्थ हुआ है।

मधुर स्वप्न

इतिहास —'मधुर स्वप्न' में ईरान के सम्राट् शाह कवात् की जीवन घटनाओं

को चित्रित किया गया है। मज्दक मत का अनुयायी होने के कारण शाह कवात् को पदच्युत होना पडता है। कालान्तर मे हूण सम्राट तोरमान की सहायता से वह पुन सिंहासनारूढ होता है। उपन्यास के अन्त मे उत्तराधिकार के प्रश्न पर वह मज्दकियो का विरोध करता है और उनका वध करवा देता है। इस उपन्यास मे ५वी ६ठी शती ईसवी के ईरान के जीवन का चित्रण है। राहुल जी ने उपन्यास के प्राक्कथन मे कहा है—'मैंने इस उपन्यास के द्वारा इतिहास के एक विस्मृत पन्ने को पाठको के सामने रखने की कोशिश की है।" उपन्यास के परिशिष्ट मे राहुल जी ने ईसाई पारसी तथा मुसलमान लेखको की कृतियो से उद्धरण प्रस्तुत कर उपन्यास के ऐतिहासिक तथ्यो को स्पष्ट किया है।

'इनसाइक्लापीडिया आफ रिलीजन एण्ड एथिक्स,' 'ईरान' (आर० घिर्शमन तथा 'ईरान' (राहुल सांकृत्यायन) मे मज्दक और उसके मत के विषय मे निम्न लिखित तथ्य प्राप्त होते है—

१ वामदात पुत्र मज्दक, ईरान मे पाँचवी शती के अन्त मे साम्यवादी वर्ग का नेता हुआ है। ईरान की *अराजकता के कारण इस मत के प्रसार मे सहायता* मिली है। उस (कवात) राज्य मे शक्तिशाली सामन्तो तथा मज्दकी अनुयायियो जो दलित वर्ग को उन्नत बनाने के लिए सामाजिक सुधारो की माँग कर रहे थे—मे से एक का पक्ष लेना था और उसने मज्दकी अनुयायियो का पक्ष लिया।[११३]

२ *मज्दक का मत साम्यवादी था। वह सामाजिक वैषम्य का विरोधी था।* मज्दकी पति-पत्नी के सम्बन्ध के स्थान पर 'सम्मिलित पत्नी के सिद्धान्त के प्रचारक थे।[११८] 'इसके सामाजिक सिद्धान्त वस्तुओ के समवितरण पर जोर देते थे। अमीरो को अपनी सम्पत्ति निर्धनो को देनी चाहिए। सम्पत्ति ही नही, स्त्रियो तक पर भी व्यक्ति का अधिकार नही होना चाहिए।'[११] राहुल जी ने 'ईरान' मे भी इस प्रकार का तथ्य प्रस्तुत किया है।[१२]

३ मज्दकी आन्दोलन एक ऐसे धर्म का अनुयायी था जिसके अपने ही सिद्धान्त थे जो मुख्यत मानी की शिक्षाओ से लिये गये थे। मज्दक के सिद्धान्त रूढिवादी, सामन्तवादी समाज के लिए क्रान्तिकारी थे। इस ईरानी साम्यवाद उचित ही कहा जा सकता है।[१२१]

४ मज्दक समाज सुधारक था। साम्यवाद ही उसकी दृष्टि मे समाज-सुधार का मार्ग था। मज्दकी साम्यवाद धर्मसापेक्ष था। मज्दकी भगवान अहुरमज्द के उपासक थे।[१२२] उक्त तथ्य सर परसी स्काईस की पुस्तक 'ए हिस्ट्री आफ परशिया' मे भी इसी रूप मे प्राप्त होते हैं।[१२३]

'मधुर स्वप्न' के नायक सम्राट कवात के विषय मे 'ए हिस्ट्री आफ परशिया' 'ईरान' और 'दि इनसाइक्लोपीडिया अमरिकाना' मे निम्नलिखित तथ्य प्राप्त होते हैं —

१ कवात सन ४८७ ई० मे ईरान का शासक बना।[१२] कई वर्षों के अकाल,

फीरोज के युद्ध तथा उसकी पराजय के कारण, आर्थिक दृष्टि से उसका शासन अत्यन्त डावाडोल था। राजा का धन की आवश्यकता थी, परन्तु राजकोष रिक्त था। उसकी सीमा की हूणों से सुरक्षा का प्रबन्ध भी करना था।[१५]

२ शासनकाल के आरम्भ में कवाद मज्दक के साम्यवादी विचारों से प्रभावित हुआ। उसने इस आन्दोलन को संरक्षण प्रदान किया और बहुत से कानूनों में परिवर्तन किया, जिनमें से कुछ तो नारी सम्बन्धी थे। एक षडयन्त्र द्वारा उसे सिंहासन से उतार दिया गया और उसके भाई जामास्प को सिंहासन पर बैठाया गया। उसे मृत्यु की सजा नहीं दी गई और कारावास में डाल दिया गया।[१६]

३ अपनी पत्नी की सहायता से कारावास से निकल वह जल्दी ही भाग गया और हफ्तालियों के दरबार में शरण ली। ४९९ ई० में हफ्तालियों (हूणों) की सहायता से उसने अपने भाई जामास्प को राजगद्दी से उतार दिया।[१७]

४ कवाद (कवात्) के फिर से गद्दी पर बैठने पर मज्दक के अनुयायियों का प्रभाव फिर बढ़ने लगा और फिर वही तनातनी शुरू हुई। मज्दक के अनुयायियों ने अपनी शक्ति को मजबूत करना चाहा। इस पर कवद (कवात) भी विरोधी बन गया और उसकी आज्ञा से हजारों मज्दकी तलवार के घाट उतारे गये।[१८]

५ शाह कवात की मृत्यु ५३१ ई० में हुई।[१९] उसकी मृत्यु के बाद नौशेरवां ईरान का शासक बना। खुसरो के राज्यारोहण के विषय में 'ईरान' में लिखा है— 'अनवशिरवान सासानी वंश के बड़े प्रतापी राजाओं में है। कवाद की इच्छा नौशेरवां को ही गद्दी देने की थी। उसकी मृत्यु के बाद उसके बड़े लड़के ने ही गद्दी सम्भाली, किन्तु महामन्त्री ने मृत शाह की इच्छा को उपस्थित कर नौशेरवां का पक्ष लिया और इस प्रकार वह राजा उद्घोषित हुआ। अब भी भाइयों और सम्बन्धियों ने बड़े बड़े षडयन्त्र जारी रखे और नौशेरवां को अपने सभी भाइयों और उनकी पुत्र-सन्तानों को मार डालने पर मजबूर होना पड़ा। मज्दक अब भी जीवित था। उसके अनुयायियों की संख्या भी काफी थी। नौशेरवां ने इन्हें भी अपने रास्ते का कांटा समझा और मज्दक के साथ उसके एक लाख अनुयायी मार डाले गये। नौशेरवां का नाम पहले खुसरो था। मज्दकियों की हत्या के बाद ही उसने नवशिरवान की उपाधि धारण की।[२०]

इस प्रकार 'मधुर स्वप्न' में वर्णित मज्दक और उसके धर्म, शाहंशाहों एवं खुसरो से सम्बद्ध प्रसंग ऐतिहासिक हैं। 'मधुर स्वप्न' के परिशिष्ट में राहुल जी ने उपन्यास की ऐतिहासिक सामग्री के विषय में लिखा है—'मज्दक काल्पनिक नहीं, ऐतिहासिक व्यक्ति थे। मज्दक के सम्बन्ध में जो सामग्री मिलती है उसमें सबसे पुरानी ईसाई लेखकों की कृतियां हैं जिनमें अपने धर्म का इतिहास लिखते हुए प्रसंगतः ईरानी शाहंशाहों का जिक्र आ जाता है। इसके बाद दूसरा स्थान पारसी लेखकों की पुस्तकें हैं और तीसरी तथा अन्तिम सामग्री मुसलमान लेखकों की अरबी फारसी की पुस्तकों में मिलती है।' निष्कर्ष यह कि उपन्यास की मुख्य तथा मुख्य

पात्र एवं मञ्जरी आदि नन इतिहास-सम्मत तथ्य हैं। गौणपात्र जैसे जामाम्प, सम्राट तोरमान, मिहिरकुल आदि भी ऐतिहासिक पात्र हैं। तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण भी इतिहासानुकूल है। डा० कमलकुमारी जौहरी ने 'मधुर स्वप्न की ऐतिहासिकता पर आक्षेप किया है—'सिंह सेनापति' के तक्षशिला और वैशाली के गणतंत्र तथा 'मधुर स्वप्न' के दिहवगान—इन सभी का राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन बिल्कुल एक सा है और यह जीवन लेखक की रुचि और कल्पना का साम्यवादी जीवन है, यह सूर्य के प्रकाश की भाँति स्पष्ट है। यह कैसे माना जा सकता है कि चित्रित इन विभिन्न कालों और देशों का जीवन एक-सा ही होगा। अतः यह स्पष्ट है कि लेखक ने इनमें ऐतिहासिकता का निर्वाह प्रायः नहीं किया है बल्कि अपनी भावना का आरोप किया है।'[1] डा० जौहरी का कथन सर्वांशतः सत्य नहीं। यह ठीक है कि राहुल ने दिहवगान के चित्रण में कल्पना का प्रयोग किया है अपनी भावना का आरोप किया है परन्तु इससे मुख्य घटनाओं पात्रों एवं परिस्थितियों की ऐतिहासिकता को आँच नहीं आ सकती।

कल्पना — मधुर स्वप्न के अधिकांश नारी पात्र (सम्यिक को छोड़ कर) काल्पनिक हैं। इनमें शुद्ध काल्पनिक व्यक्तित्व घुमन्तु कन्या वदक का है। यह चरित्र इतना आकर्षक स्वाभाविक और सजीव रूप में अंकित किया गया है कि इससे राहुल की कल्पना अपने चरम पर पहुँच जाती है। राहुल जी की वदक—एक सुष्ठु कल्पना—मनमोहक है अविस्मरणीय है। इस लोली कन्या का रंगा के विस्पाह्न के प्रासाद में नृत्य करते हुए मृत्यु का प्रसंग अत्यन्त कारुणिक है। लालिया के स्वच्छन्द जीवन के चित्रण में भी लेखक की कल्पना सजीव है। दिहवगान का चित्रण—वहाँ की परिस्थितियाँ एवं सभ्यता का चित्रण—लेखक की साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित है। इस अंश को भी उपन्यास में कल्पित ही कहा जायगा। लेखक ने अतीत पर अपनी साम्यवादी भावनाओं का आरोप किया है। 'बाईसवीं सदी' में जिस साम्यवादी समाज की झलक है वह यहाँ भी द्रष्टव्य है।

विस्मृत यात्री

इतिहास— विस्मृत यात्री इतिहासज्ञ एवं यायावर राहुल की कृति है। यह रचना उनके अपने व्यक्तित्व के अनुरूप है। इसमें बौद्ध यात्री नरेन्द्रयश का जीवन चरित निरूपित हुआ है। नरेन्द्रयश छठी शती के उद्यान प्रदेश का एक बौद्ध यात्री है। वह भारत और लंका की यात्राओं के अनन्तर चीन जाता है। वहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार एवं बौद्ध ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद करता है। नरेन्द्रयश के विषय में राहुल जी लिखते हैं— नरेन्द्रयश कोई कल्पित पात्र नहीं है वह हमारे ही देश के—अब पश्चिमी पाकिस्तान के—स्वात (उद्यान) की भूमि में सन् ५१८ ई०में पैदा हुए थे। उन्होंने भिक्षु बनने के बाद भारत सिंहल मध्य एशिया और चीन में विचरण किया था और अन्त में आधुनिक सियान महानगरी में अपना शरीर छोड़ा।[2] नरेन्द्रयश विषयक ऐतिहासिक सामग्री लेखक को डा० पा० चाउ से प्राप्त हुई है जिसका उल्लेख

इन्होंने उपन्यास की भूमिका में किया है। इसके अतिरिक्त उनके जीवन-परिचय तथा यात्राओं आदि से सम्बन्धित विवरण राहुल जी ने 'घुमक्कड़राज नरेन्द्रयश' नामक लेख में भी दिए हैं।[133] उनकी भारत और सिंहल यात्रा के विषय में वे लिखते हैं—"वे भारत के सभी बौद्ध तीर्थों में गए। सर्वास्तिवादियों के गढ़ मथुरा को उन्होंने देखा ही होगा। श्रावस्ती जेतवन, लुम्बिनी, ऋषिपतन, सारनाथ आदि के दर्शन से वे अपने को कैसे वंचित रख सकते थे। भारत और सिंहल के उन पवित्र स्थानों को नरेन्द्रयश ने जरूर ही देखा होगा, जिनकी यात्रा एक शताब्दी पहले चीनी पर्यटक फाह्यान कर चुका था। सिंहल में वह महाविहार या अभयगिरि विहार में भी रहे होंगे। उनकी भारत की यह सारी यात्रा केवल यात्रा के तौर पर ही नहीं हुई होगी, बल्कि यहाँ पर उन्हें बड़े बड़े विद्वानों के सम्पर्क में आकर अपने ज्ञान-कोष को बढ़ाने का सौभाग्य भी मिला होगा।[134] इस प्रकार नरेन्द्रयश का व्यक्तित्व और उनकी यात्राएँ ऐतिहासिक हैं इसमें सन्देह नहीं।

नरेन्द्रयश ने चीन में रहकर बौद्ध धर्म के ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया। उनके समय चीन में और भी कितने ही भारतीय पण्डित अनुवाद का काम कर रहे थे जिनमें उपशून्य, परमार्थ, मन्द्रसेन, ज्ञानभद्र, जिनगुप्त, गौतम धर्मप्रज्ञ, विनीत रुचि और धर्मगुप्त मुख्य थे।[135]

इस प्रकार राहुल ने अपने उपन्यास की ऐतिहासिकता के विषय में स्वयं ही पर्याप्त प्रकाश डाला है। 'घुमक्कड़राज नरेन्द्रयश' लेख को प्रस्तुत उपन्यास की विस्तृत भूमिका माना जा सकता है। नरेन्द्रयश विषयक उक्त तथ्यों का समर्थन 'इण्डिया एण्ड चाइना' तथा 'चीनी बौद्ध धर्म का इतिहास' में हो जाता है। इन पुस्तकों में प्राप्त नरेन्द्रयश, उनके समकालीन भारतीय पण्डितों एवं सुइ वंश में सम्बन्धित तथ्य निम्नलिखित हैं—

(१) नरेन्द्रयश उद्यान प्रदेश का बौद्ध भिक्षु था। उसने मध्य-एशिया के विभिन्न देशों की यात्रा की। चीन में रहकर उसने बौद्ध ग्रन्थों का संस्कृत व पालि से चीनी भाषा में अनुवाद किया। उनका चीन में सन ५८९ ई० में देहान्त हुआ।[136]

(२) गौतम प्रज्ञा रुचि, उपशून्य, गुणभद्र, यशोगुप्त आदि ने बौद्ध ग्रन्थों को अनूदित किया।[137]

(३) सुई वंश का संस्थापक याग चिएन था। वह इतिहास में 'वनती' नाम से विख्यात हुआ। बौद्ध धर्म में उसकी अगाध श्रद्धा थी। वनती का राज्यकाल ५८९ ई० से ६०४ ई० है।[138]

इस प्रकार 'घुमक्कड़राज नरेन्द्रयश' के कथा सम्बन्धी मुख्य तथ्य ऐतिहासिक हैं। इसके अतिरिक्त यात्रा सम्बन्धी विवरण एवं भारत, सिंहल तथा चीन की तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण इसकी ऐतिहासिकता को पुष्ट करते हैं। राहुल जी ने उप-

न्यास में इतिहास, भूगोल, तत्कालीन देश काल एवं मुख्य पात्रों को ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

कल्पना—प्रस्तुत उपन्यास में प्रासंगिक कथा जिसका सम्बन्ध 'नातिल' से है, लेखक की कल्पना है। उपन्यास के नारी पात्र एवं उनके प्रणय प्रसंग कल्पना प्रसूत हैं। नरेन्द्रयश का शैशव-वर्णन लेखक की कल्पना ही प्रतीत होती है। बुद्धिल आदि भिक्षुओं का बलिदान एवं नरेन्द्रयश का बचाव भी काल्पनिक प्रसंग हैं। इस प्रकार इस उपन्यास में बहुत कम स्थल ही काल्पनिक है, लेखक का बौद्ध धर्म-सम्बन्धी प्रकाण्ड ज्ञान, चीनी इतिहास का ज्ञान, बौद्ध प्रदेशों एवं स्थानों सम्बन्धी भौगोलिक ज्ञान इस उपन्यास में मुखरित हो रहा है।

राहुल जी के उपन्यासों में इतिहास और कल्पना के सामंजस्य पर विचार करने के अनन्तर यह सहज कहा जा सकता है कि राहुल जी ने इतिहास और कल्पना को एक साथ गलाकर अपने उपन्यासों को कलात्मक रूप प्रदान किया है। प्रकाशचन्द्र गुप्त के शब्दों में—"ऐतिहासिक उपन्यास की सृष्टि में इतिहास पर पूर्ण अधिकार के साथ ही अपूर्व कला-सृजन का गुण भी आवश्यक है। राहुल जी का पाण्डित्य सुपरिचित है। आश्चर्य उनकी कलात्मक प्रतिभा पर होता है। वे इतिहास और कल्पना इन विरोधी तत्वों का अपूर्व समन्वय करने में सफल हुए हैं।"[१३६] इतिहास और कल्पना के समन्वय में राहुल जी ने कहीं ऐतिहासिक तथ्यों को कल्पना से अभिभूत नहीं होने दिया। ऐतिहासिक तथ्य अधिकृत रूप से उनकी कृतियों में विद्यमान हैं। डा० भगीरथ मिश्र इसीलिए उन्हें *प्रधानतया सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक उपन्यासकार* के रूप में महत्त्व देते हैं।[१४] राहुल जी ने अपने कथानकों के लिए सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अनुसन्धान किये हैं। वस्तुतः राहुल जी ऐतिहासिक उपन्यासकार के *कर्त्तव्य के प्रति सर्वत्र सजग हैं। उनके उपन्यासों में कल्पनातिरेक नहीं है,* इतिहास और कल्पना के सुसामंजस्य का मध्य मार्ग ही उन्हें सर्वत्र अनुकरणीय रहा है।

राहुल जी की उपन्यास कला

कथा शिल्प

राहुल जी के पास ऐतिहासिक सामग्री का अक्षय भाण्डार है, ऐश्वर्यमती कल्पना है, एकान्त स्वच्छ और निभ्रान्त जीवन-दर्शन है और सहस्रों वर्षों के व्यवधान के आर-पार देखने वाली तीव्र दृष्टि है परन्तु कथाशिल्प विशेष नहीं है।[१४१] डॉ० नगेन्द्र के इन शब्दों से स्पष्ट है कि राहुल जी में कथा निर्माण की कलात्मक विशेषताओं का प्राय: अभाव है। स्वयं राहुल जी का कथन है कि उनके ऐतिहासिक उपन्यास उपन्यास न होकर औपन्यासिक इतिहास हैं।[१४२] उनका यह कथन उनकी उपन्यास रचना की ओर सम्यक् संकेत करता है। वास्तव में उनके उपन्यासों में इतिहास अधिक है और कला कम। अतीत के सांस्कृतिक ऐश्वर्य की अभिव्यक्ति ही उनमें प्रमुख है। डा० प्रतापनारायण टण्डन का मत इस विषय में उल्लेख्य है—ऐति

ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा में सांस्कृतिक पक्ष को प्रधानता देकर चलने वाले उपन्यासकारों में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन प्रमुख हैं। इनमें (उपन्यासों में) उन्होंने जिस प्रकार के कथानक का प्रयोग किया है उन पर सांस्कृतिकता की छाप स्पष्ट है परन्तु राहुल सांकृत्यायन के ऐतिहासिक उपन्यासों के सम्बन्ध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कथानक सांस्कृतिक बोझ से इतने आक्रान्त हो गये हैं कि उपन्यास न लगकर सांस्कृतिक इतिहास लगते हैं।[143] निष्कर्ष यह कि राहुल जी के उपन्यास 'औपन्यासिक इतिहास' अथवा 'सांस्कृतिक इतिहास' अधिक हैं—उपन्यास कम। अतः यदि उनके कथाशिल्प में कलात्मकता की न्यूनता हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

कथा का आधार—राहुल जी के उपन्यासों का आधार भारतीय एवं ईरानी इतिहास और समाज है। भारतीय इतिहास में उन्होंने वैदिककाल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास को औपन्यासिक रूप दिया है। 'दिवोदास' ऋग्वेदकालीन आर्यों के सांस्कृतिक जीवन का कथारूप है। 'सिंह सेनापति' और 'जय यौधेय' में क्रमशः ५०० ई० पूर्व तथा ३५०-४०० ई० के गणराज्यों से सम्बन्धित कथानक हैं। 'विस्मृत-यात्री' की कालावधि छठी शती है। 'राजस्थानी रनिवास' में पूर्वार्ध बीसवीं शती की सात पर्दों के भीतर रहने वाली ठकुरानियों की बेबसी और दुख तथा पुरुषों की स्वेच्छाचारिता की कहानी कही गई है।[144] उनके राजनीतिक उपन्यास 'जीने के लिए' में भारतीय स्वतन्त्रता-संघर्ष की कथा है। 'मधुर स्वप्न' में भारतीय जीवन की परिधि को लाँघ कर राहुल जी ने एशियाई जीवन की विस्तृत परिधि में प्रवेश किया है। इस उपन्यास में छठी शती के ईरान का इतिहास प्रस्तुत है। इस प्रकार राहुल जी ने अपने उपन्यासों में भारत के अतीत एवं आधुनिक समाज को अपनी कथा का आधार बनाया है। डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में—'इन उपन्यासों की वास्तविक महिमा अतीत भारत के सजीव चित्र उपस्थित करने में है।'[145]

इतिहास और समाज के साथ-साथ राहुल जी ने अद्भुत वर्णनात्मक तथ्यों को भी कथा का आधार बनाया है। उनके रूपान्तरित उपन्यास 'जादू का मुल्क', 'शैतान की आँख' 'विस्मृति के गर्भ में' तथा 'सोने की ढाल' में अद्भुत वर्णनात्मक तथ्यों को कथा का आधार बनाया गया है। उनकी 'बाईसवीं सदी' के निर्माण का आधार भी वैज्ञानिक तथ्य हैं।

ऐतिहासिक शोध—राहुल जी ने अपने उपन्यासों में जिन ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण किया है उन्हें विश्वसनीय बनाने के लिए आधारभूत ऐतिहासिक घटनाओं का विशद अध्ययन एवं अनुसंधान किया है। उनके कथानकों की आधारशिला उनके ऐतिहासिक अनुसंधान पर टिकी हुई है। [illegible] राहुल ने [illegible] से सम्बद्ध विशेष ऐतिहासिक सामग्री को एकत्र कर विपुल इतिहास को प्रस्तुत किया है। इतिहास के साथ-साथ राहुल जी ने पुरातत्त्व का भी सहारा लिया है। वे जनश्रुतियों एवं किंवदन्तियों में ऐतिहासिक सत्य [illegible] हैं। उनके

उपन्यासों में इतिहास और कल्पना का अद्भुत समन्वय है, जिसे हम पीछे विवेचित कर चुके हैं। उनके सामाजिक उपन्यासों में उनके जीवनगत अनुभव बिखरे हुए हैं।

कथा-संकेत एवं कथा का आरम्भ—राहुल ने अपने उपन्यासों के प्राक्कथनों में (विशेष रूप से ऐतिहासिक उपन्यासों में) तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का उल्लेख कर कथा की पृष्ठभूमि को स्पष्ट कर दिया है। इस स्पष्टीकरण के प्रति वे बड़े सतर्क दिखाई देते हैं। उदाहरणार्थ 'विस्मृत यात्री' के 'दो शब्द' में राहुल जी नायक नरेन्द्रयश का संक्षिप्त जीवन वृत्त प्रस्तुत कर देते हैं। 'जय यौधेय' के प्राक्कथन में वे यौधेयगण विषयक ऐतिहासिक सामग्री का उल्लेख कर कथा सूत्र की ओर भी संकेत कर देते हैं। 'सिंह सेनापति' का विषय प्रवेश तो उपन्यास के कथानक का अंग ही बन गया है। इसमें राहुल जी ने औपन्यासिक तथ्यों की ऐतिहासिक सत्यता प्रमाणित करने के लिए रोचक कथा गढ़ी है जो उनकी मौलिक कल्पना है। 'सिंह सेनापति' की इस शैली का अनुकरण आचार्य द्विवेदी के उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में हुआ है। इस प्रकार इस उपन्यास के विषय प्रवेश द्वारा राहुल जी कथानक का आरम्भ करते हैं। राहुल जी के सभी उपन्यासों में कथा का प्रारम्भ शीर्षकों द्वारा हुआ है। 'जय यौधेय' का आरम्भ 'समुद्रगुप्त और यौधेय' शीर्षक से हुआ है। 'जीने के लिए' का 'बाल्यस्मृति' द्वारा और 'दिवोदास' का 'सात पुरियों का ध्वंस' शीर्षक से। इतना ही नहीं उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में कथा का विभाजन परिच्छेदों के स्थान पर शीर्षकों में किया है। इस विधि से उपन्यासकार कथा की पूर्व ही जानकारी करवा देता है। इससे उपन्यास की कथा समझने में पाठक को सारल्य अवश्य अनुभव होता है पर साथ ही उनका कथानक विषयक औत्सुक्य कम हो जाता है।

कथा विकास—राहुल जी के ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यासों में कथा विकास अपेक्षाकृत सरल ढंग से हुआ है। उनके कथानक जटिल न होकर सरल शिल्प विधान रखते हैं। प्रासंगिक घटनाओं की भरमार वहाँ नहीं है। 'जीने के लिए' उपन्यास में मोहनलाल विषयक एक प्रकरी कथा है। 'सिंह सेनापति' और 'जय यौधेय' में भी एक एक ही प्रासंगिक कथा है। 'विस्मृत यात्री' में बुद्धिल की कथा भी प्रकरी मानी जा सकती है। 'दिवोदास' में प्रासंगिक कथाओं का अभाव ही है। इस प्रकार राहुल जी अत्यंत सरल ढंग से कथा का विकास करते हैं। कथा विकास के लिए वे किसी बंधी-बंधाई परम्परा के अनुगामी नहीं हैं। फिर भी उन्होंने कथा विकास-हेतु कुछ नई विधियों का प्रयोग किया है जिनका विवेचन यहाँ अभीष्ट है।

(क) यायावरी के प्रसंग—राहुल जी के औपन्यासिक वस्तु निर्माण में यायावरी के प्रसंगों का सर्वाधिक प्रयोग है। राहुल जी यात्रा और कथा कहानी में समीप का सम्बन्ध मानते हैं। अपने चरित-नायकों की जीवन-यात्रा-वर्णन में वे उनके यात्रा के प्रसंगों का अवश्य चयन करते हैं। इस चयन में लेखक का अपना व्यक्तित्व उभरा है। 'विस्मृत यात्री' उपन्यास नरेन्द्रयश की यायावरी प्रवृत्ति का आख्यान बन गया

है। डा० सुषमा धवन के शब्दों में—"उपन्यास में नायक का जीवन यात्रा का रूप धारण करता है। उसकी जीवन-यात्रा में अनेक स्थलों, विविध जातियों असंख्य गाँवों एवं नगरों, विभिन्न व्यक्तियों का परिचय प्राप्त होता है जो उसके मन को विकसित करते तथा हृदय को उदार बनाते हैं। वह चलते चलते उन उन स्थलों व्यक्तियों और जातियों के सम्बन्ध में अपने भाव और विचार व्यक्त करता हुआ जीवन की व्याख्या करता जाता है जिसके आधार पर उसके निजी व्यक्तित्व की रूपरेखा बनती है।'[१११] इसी प्रकार 'जीने के लिए' का देवराज यूरोप तथा रूस की यात्रा करता है। इसी उपन्यास में ज्याफरे-दम्पती की कश्मीर-यात्रा का भी वर्णन है। 'रेलयात्रा', 'हिमालय', 'दाखिन्ने' आदि शीर्षक नायक तथा अन्य पात्रों की यात्रा प्रवृत्ति के सूचक हैं। 'जय यौधेय' में नायक जय गान्धार हिमालय, काची, सिंहल आदि की यात्रा करता है। 'सिंह सेनापति' में कपिल को यात्राओं से अत्यधिक प्रेम है। 'मधुर स्वप्न' में शाह क्वाद् अपने मज्दकी साथियों के साथ छद्म-वेश में घूमता है। 'बाईसवीं सदी' की कथा का विकास भी नायक की यात्राओं द्वारा हुआ है। अभिप्राय यह है कि राहुल जी के उपन्यासों के घटनात्मक शिल्पतन्त्र के गढ़ने में यात्रा प्रसंग प्रबल सहायक हैं। वे उपन्यास शिल्प का नियमन करते हैं। राहुल जी चरितनायकों के यात्रा प्रदेशों के भूगोल समाज एवं संस्कृति का वर्णन करते हैं, जिसे वे स्वयं ऐतिहासिक उपन्यासकार के लिए अनिवार्य तत्त्व मानते हैं। राहुल जी ने अपने उपन्यासों में यात्रा शैली का उपयोग कर भूगोल भाषा विज्ञान तथा इतिहास से कथा को आपूरित किया है तथा प्राचीन वातावरण की सजीव सृष्टि की है। कथा विकास में यात्रा प्रसंगों को सम्बद्ध कर राहुल जी ने उपन्यास में यात्रा-साहित्य के तत्त्वों का अद्भुत समन्वय किया है। राहुल जी की यह महत्त्वपूर्ण निजी विशेषता है।

(ख) युद्ध एवं वीरता के प्रसंग—राहुल जी के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक सामाजिक उपन्यासों में कथानक को विकास प्रदान करने वाला दूसरा तत्त्व है—युद्ध एवं वीरता के प्रसंग। नायकों की युद्धवीरता एवं साहस पराक्रम से सम्बद्ध घटनाओं द्वारा कथा को विकास मिला है। 'दिवोदास' में उपन्यास की प्रधान घटना ही दिवोदास एवं शम्बर के युद्ध से सम्बद्ध है जिसमें लेखक ने शम्बर की पराजय एवं आर्य-नायक दिवोदास की विजय का वर्णन किया है। 'जीने के लिए' उपन्यास का नायक देवराज प्रथम महायुद्ध में अपनी युद्धवीरता का परिचय देता है। वह केवल अपनी वीरता का परिचय युद्ध क्षेत्र में ही नहीं अपितु इसके पश्चात भी अपने साहस तथा कृषकों एवं जमींदारों के संघर्ष में भी अपने अदम्य साहस का परिचय देता है। 'सिंह सेनापति' में सिंह के पारसों के साथ युद्ध-वर्णन का प्रसंग है। 'जय यौधेय' में जय के नेतृत्व में यौधेयों का विदेशानियों से युद्ध का वर्णन है। वस्तुतः ये दोनों उपन्यास लिच्छवियों एवं यौधेयों की वीरता के परिचायक हैं। 'मधुर स्वप्न' में शाह क्वाद के सहयोगियों द्वारा उसे पुनः सिंहासनारूढ़ करवाने के लिए संघर्ष का चित्रण है। 'विस्मृत यात्री' में युद्ध के प्रसंगों का अभाव है परन्तु नायक नरेन्द्रयश की यात्रा उस

के साहस और वीरता का प्रकट करती है। इस प्रकार यात्रा प्रसंगों की तरह युद्ध के प्रसंग राहुल जी के उपन्यासों में कथा विकास के सहायक उपादान हैं।

(ग) प्रणय प्रसंग—राहुल जी ने उपन्यासों में कथा विकास के लिए अपने नायकों के प्रणय प्रसंगों के वर्णन से भी सहायता ली है। जय यौधेय का नायक जय वसुनन्दा के सौन्दर्य पर मुग्ध है और वह विधिवत उसकी परिणीता बनती है। इस विवाह से पूर्व देश भ्रमण करते समय जय की शबर कन्या से प्रणय-लीला का प्रसंग भी उपन्यास में मिलता है। नाग कुमारी भी उसके रूप-लावण्य पर मुग्ध है। इसी प्रकार जय के सहयात्री सिंह और वामन्ती का प्रणय प्रसंग भी अत्यन्त रोचक है। नायक के यौधेय साथी सुमन रेवतक आदि का अपनी प्रियाओं से स्वच्छन्द प्रेम का भी लेखक ने वर्णन किया है। सिंह सेनापति में रोहिणी एवं सिंह के विवाह से पूर्व उनके प्रेमांकुर का विकास दर्शाया गया है। विस्मृत यात्री में नायक नरेन्द्रयश के मद्रा से असफल प्रणय का वर्णन है। 'मधुर स्वप्न' में शाह कवात् सामन्त-पुत्री नवानदुख्त से प्रणय करता है और सिंहासनारूढ़ होने पर उसे परिणीता बनाता है। 'जीने के लिए' का नायक देवराज और प्रमुख पात्री जेनी विवाह से पूर्व एक-दूसरे के प्रति आकर्षण रखते हैं। इस प्रकार राहुल ने अपने उपन्यासों में कथा विकास एवं रोचकता के संचार के लिए प्रेमगाथाओं एवं प्रणय प्रसंगों की अवतारणा की है। इन कथाओं द्वारा इतिहास के निर्जीव कलेवर में उपन्यासकार ने रस संचार किया है।

इस प्रकार राहुल जी के उपन्यासों में कथा का विकास सरल रूप में हुआ है। उनमें प्रायः आधिकारिक कथा ही रहती है प्रासंगिक कथाएँ कम ही हैं। कथा विकास के लिए उन्होंने यात्रा युद्ध एवं प्रणय के प्रसंगों की आयोजना की है।

उपसंहार—राहुल जी के उपन्यासों के कथानक सरल गति से चलते हुए सुख अथवा दुःख में पर्यवसिति प्राप्त करते हैं। फलतः उनके कथानक सुखान्त एवं दुखान्त दोनों प्रकार के हैं। 'दिवोदास' सुखान्त है इसमें शंबर पर दिवोदास की विजय से औपन्यासिक संघर्ष की परिसमाप्ति होती है। सिंह सेनापति का कथानक भी सुखमय परिणति प्राप्त करता है। जय यौधेय में यौधेयगण की पराजय से उपन्यास दुःखान्त कहा जायगा। विस्मृत यात्री' नायक नरेन्द्रयश की पूरी जीवन-यात्रा से सम्बद्ध है अतः उसके दिवंगत होने के साथ उपन्यास की कथा समाप्त होती है। मधुर स्वप्न भी दुःखान्त ही माना जायगा क्योंकि उपन्यास में मज्दक एवं उसके अनुयायियों का दारुण अन्त दिखाया गया है। जीने के लिए भी इसी कोटि का है। इसका नायक देवराज आजीवन संघर्ष करता हुआ अपने विरोधियों द्वारा मार दिया जाता है। इस उपन्यास का अन्त बड़ा मार्मिक एवं करुण है जो पाठकों के हृदय पर अवसाद की गहरी रेखाएं अंकित कर जाता है— उसे क्या मालूम था कि करार की आड़ से मृत्यु उसकी ओर झांक रही है। जिस वक्त उसके पैर करार से नीचे की ओर बढ़े, उसी वक्त दोनों तरफ से दो लाठियाँ उसके पैरों पर पड़ीं, वह वहीं मुँह के बल गिर गया।

पैर पर की हड्डी चूर हो चुकी थी। बात की-बात में दस आदमी चारों ओर से उस पर टूट पड़े, और चन्द मिनटों में वहाँ देवराज का निर्जीव शरीर पड़ा था।'[147]

अविकसित कथा शिल्प — कथा शिल्प की दृष्टि से राहुल जी के उपन्यास शिथिल एवं अपरिपक्व हैं। इनके कथानकों में वह शक्ति नहीं जो पाठक को अभिभूत कर उसे अपने साथ बहा ले चले। डॉ० गोपीनाथ तिवारी लिखते हैं — कथानक की दृष्टि से दोष भी बहुत हैं। कथानक में उत्सुकता नहीं कथानक में जैसे मोड़ दिये जाते हैं, वे नहीं हैं। अनावश्यक विस्तार बहुत है।[148] जगदीश गुप्त इन कथानकों में सुसम्बद्धता का अभाव पाते हैं।[149] डॉ० कमलकुमारी जौहरी इनके कथानकों में एकरसता का दोष पाती हैं।[150] डॉ० नगेन्द्र के अनुसार राहुल जी आवश्यक नाटकीय परिस्थितियों की सृष्टि नहीं कर सके।[151] डॉ० टण्डन राहुल जी के उपन्यासों में कथानक एकता की सुरक्षा' न रख सकने की त्रुटि देखते हैं।[152] निष्कर्ष यह कि राहुल जी के कथाशिल्प के विषय में अधिकांश आलोचकों का मत यह है कि वह अप्रौढ़ एवं अविकसित है। उसमें उत्सुकता एवं कुतूहल का अभाव है।

राहुल जी के उपन्यासों में कथाशिल्प की इन न्यूनताओं का सर्वप्रमुख कारण उनकी सोद्देश्यता है। वे कला के सप्रयोजन उपयोग के समर्थक हैं। राहुल जी ने अपने उपन्यासों की रचना मार्क्सवादी जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति के लिए की है। श्री महेन्द्र चतुर्वेदी के शब्दों में — "मानव स्वतन्त्रता की सिद्धि के लिए, आदर्श समाजवादी समाज-व्यवस्था की स्थापना के लिए वैषम्य और रूढ़िजर्जर जीवन पर भरपूर आघात करने के लिए वे उसे साधन रूप में ग्रहण करते हैं।'[153] कला विषयक यही सोद्देश्यता उनके कथाशिल्प का अभिमूल लिए हुए है। डॉ० तिवारी के शब्दों में — 'ये उपन्यास उद्देश्य प्रधान हैं उद्देश्य इनमें हावी है प्रचार के माध्यम हैं।'[154] राहुल जी अपने उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए कथा प्रवाह को विराम लगाकर पात्रों के माध्यम से अपनी विचारधारा को प्रकट करने लगते हैं। ऐसे स्थलों पर उनकी विचारधारा आरोपित लगती है और कथा की स्वाभाविक गति भी अवरुद्ध हो जाती है। विचारों के प्रकाशन एवं तर्क वितर्क की प्रचुरता के कारण कथा की गति मन्द हो जाती है और उनकी विचारधारा को ग्रहण करने के लिए पाठक को रुक रुक कर पढ़ना पड़ता है। उदाहरणार्थ जय यौधेय में बौद्धधर्म को बहुजन हिताय बताकर अन्य धर्मों से उसकी उत्कृष्टता प्रतिपादित करना[155] तथा यौधेयगण के प्रतिनिधियों, निर्वाचित प्रतिनिधियों विषयक विचारों का व्याख्यान[156] कथा के विकास में बाधक हैं। उपन्यास के तेरहवें शीर्षक 'सिंहल' में उन्होंने ब्राह्मण धर्म की आलोचना की है।[157] [illegible] के अन्तिम [illegible] अध्याय [illegible] पर निरन्तर प्रभाव होता है। [illegible] का १३ वाँ तथा १४वाँ अध्याय [illegible] एवं राजतन्त्र के गुण-दोषों की [illegible] प्रस्तुत करते हैं यहाँ कथा में गति नहीं। मधुर स्वप्न में मानव, समता तथा मनुष्य और मनुष्यता [illegible] अध्याय [illegible] के मानव [illegible] धारणाओं को अभिव्यक्त करते हैं कथा यहीं [illegible]

वाद स असहमत शीर्षक अध्याय तथा साम्राज्यवाद सम्बन्धी देवराज की विचार धारा[१८८] कथा की गति म बाधक हैं। दिवोदास राहुल जी की लघु रचना है इसमें लेखक ने सयम स काम लिया है परन्तु 'विस्मृत यात्री' उपन्यास के अनेक पृष्ठों में राहुल जी विचारधारा की अभिव्यक्ति के प्रति जितने सचेष्ट दिखाई देते है उतने कथा विकास की ओर नही। श्री बी० एम० चिन्तामणि लिखते हैं—'उद्देश्य की सिद्धि के लिए एसी ऐसी घटनाओं का इसमें (सिंह सेनापति) सन्निवेश किया गया है जो निष्पक्ष विवेचन करन पर पूणरूपेण अनावश्यक और अप्रासगिक मालूम पडती है। कथानक पूर्णरूपेण सुसगठित नहीं है।'[१८९] इस प्रकार राहुल जी की कला पर उनका दर्शन हावी हो जाता हैं तथा कथाशिल्प अविकसित रह जाता है।

कथा शिल्प में शैथिल्य का दूसरा बडा कारण उपन्यासकार का विवरण मोह प्रतीत होता है। डा० जगदीश गुप्त लिखते हैं— राहुल जी म उपन्यासकार की अपेक्षा इतिहासज्ञ और बहुभाषाविद के तत्त्व अधिक प्रधान एव शक्तिशाली हैं फलत उपन्यास बोझीला ह। ऐतिहासिक तथ्य के समाहित करने के प्रयास में कथा की गति शिथिल हो गई है और कही कही उसकी आनुपातिकता एव स्वाभाविकता को भी आघात पहुचा है।[१९०] मधुर स्वप्न के विषय म प्रकट डा० गुप्त के ये विचार उनके सभी उपन्यासो के विषय मे सत्य प्रतीत होत है। राहुल जी म इतिहास भूगोल एव वस्तु वर्णन के प्रति अत्यधिक आसक्ति प्रतीत होती है। मधुर स्वप्न द्वारा राहुल जी इतिहास के विस्मृत पृष्ठ प्रस्तुत करना चाहते है, अत इस उपन्यास म इतिहास के प्रति लेखक का मोह स्वाभाविक है। लेखक छठी शती के ईरान के इतिहास को साकार रूप देने के लिए वहाँ की सामाजिक आर्थिक आदि स्थितिया जातिगत सकीर्णता दास प्रथा आदि का तो वर्णन करता ही है साथ ही हूणो और कदारियो का अन्तर स्पष्ट करने ईरानियो के राजवश का क्रम विकास समझाने तोरमान की विजयो का उल्लेख करने तोरमान की राजधानी अथवा तम्बुओ की नगरी के वर्णन म लेखक का इतिहास मोह प्रकट है।[१९१] जय यौधेय म समुद्रगुप्त और यौधेयो का पारस्परिक सम्बन्ध[१९२] तथा सिंह सेनापति म तक्षशिला का वर्णन[१९३] भी लेखक के ऐतिहासिक विवरण हैं।

ऐतिहासिक विवरणो के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रसग भी लेखक के विवरण मोह के प्रतीक ही मान जायेंगे। सिंह सेनापति म कृष्णमाता का 'जय यौधेय' म सिंह वर्मा और वासन्ती का तथा मधुर स्वप्न म लोली जाति का प्रसग राहुल जी के विवरण मोह के परिचायक ह। चीन के लिए म कर्नल ज्याफ्रे की हिमालय यात्रा सिंह सेनापति म बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म सम्बन्धी चर्चा 'जय यौधेय' म कालिदास और जय के वार्तालाप आदि प्रसग भी कथागत शिथिलता के लिए उत्तरदायी ह। इस प्रकार राहुल जी का विवरण मोह उनके औपन्यासिक कथाशिल्प के लिए घातक सिद्ध हुआ ह।

राहुल जी के कथाशिल्प म एक अन्य दोष यह भी दृष्टिगोचर होता कि है वे

घटनाओं को चरमसीमा पर पहुंचा कर कथा का विकास आरम्भ करते हैं। 'मधुर स्वप्न' में नाहरवात् के पुन सिंहासनारूढ़ होने के साथ कथानक की परिसमाप्ति होनी चाहिए थी पर तु लेखक का इतिहास मोह कथा को और आगे उठान के लिए विवश करता है। राहुल जी ने इस घटना के अनन्तर नाहरवात के उत्तराधिकारी के चुनाव तथा नाहरवात और मज्दकिया के संघर्ष की कथा भी कही है। 'जय यौधेय' में कथा जय के जीवनान्त के साथ न समाप्त होकर चन्द्रगुप्त द्वारा अन्य राजाओं को पराजित करने के साथ होती है। 'सिंह सेनापति' में लिच्छवियों तथा बिम्बसार में संघर्ष के साथ कथा समाप्त हो जानी चाहिए परन्तु इसके बाद दो अध्यायों में तक्षक बौद्धधर्म तथा रोहिणी आदि स्त्रियों की वीरता का आख्यान करता है। इस प्रकार राहुल जी अपने तीन प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासों में कथा की परिसमाप्ति चरमसीमा पर न करके कथा शिल्प को आघात पहुंचाते हैं। 'दिवोदास', 'विस्मृत यात्री' तथा 'जीने के लिए' इस दोष से मुक्त हैं।

राहुल जी ने अपने उपन्यासों को कथ्य के आधार पर कथा शीर्षकों में विभाजित किया है। परिच्छेदों के शीर्षक देने से भी कथा शिल्प में न्यूनता आ गई है। कथा-विषयक पाठक की जिज्ञासा एवं कौतूहल वृत्ति की शान्ति ये शीर्षक ही कर देते हैं, और कथा को पढ़ने की उत्सुकता समाप्त हो जाती है। जिज्ञासा अथवा कौतूहल औपन्यासिक कथा का प्राण-तत्त्व है, राहुल जी ने इस ओर कम ही ध्यान दिया है। उन के उपन्यासों में संघर्ष-तत्त्व अवश्य है, पर, उस में एक स्वाभाविक क्रम विकास नहीं है। कथा में कौतूहल को जागृत रखने के लिए मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का समावेश होना चाहिए, पर राहुल जी में इनका अभाव ही है। राहुल जी अपने कथ्य एवं तथ्य को सीधे सादे ढंग से स्पष्ट रूप में प्रस्तुत कर देते हैं। वे किसी प्रकार का रहस्य पाठक के सामने नहीं रखते। इसमें कथा के लिए जिस कौतूहल तत्त्व की उपन्यास में अपेक्षा होती है राहुल जी के कथानकों में वह नहीं है। डा० सुबोधचन्द्र के शब्दों में कहा जा सकता है—'राहुल जी के उपन्यासों की कथाएँ सीधी सादी हैं, उनमें कथात्मक मोड़, घटना प्रवाह, उतार चढ़ावों का प्रायः अभाव है, मनोवैज्ञानिक क्षणों और भावपूर्ण या संवेदनात्मक प्रसंगों की भी कमी है।'[११] डा० नगेन्द्र राहुल जी के कथानकों में नाटकीय प्रसंगों के अभाव के विषय में लिखते हैं—'राहुल जी न तो आकर्षक नाटकीय परिस्थितियों की सृष्टि कर सके हैं और न चारित्रिक द्वन्द्वों की उद्भावना ही। यह बात नहीं कि इन घटनाओं में नाटकीय तत्त्व नहीं है अथवा पात्रों के जीवन में संघर्ष नहीं है। उदाहरण के लिए 'जय यौधेय' की कथावस्तु और उसके व्यक्तित्व परिस्थिति और चरित्र वालों के निर्माण का यथेष्ट सम्भावना है। परन्तु राहुल जी इससे यथोचित लाभ नहीं उठा सके और इसका कारण है, वह यह कि राहुल जी की दृष्टि प्रतिपाद्य और इतिहास पर केन्द्रित रही है।'[१२] निष्कर्ष यह कि राहुल जी का कथा शिल्प अप्रौढ़ एवं अविकसित है उसमें घटना विधान की कला त्मकता का अभाव है, कथा की गतिविधि सरल एवं स्पष्ट है।

कथाशिल्प की विशिष्टताएँ कथाशिल्प के प्रौढ विकास के अभाव म भी राहुल जी के कथाशिल्प की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। इनके उपन्यासा म इतिहास और कल्पना का पर्याप्त समन्वय है। प्रकाशचन्द्र गुप्त के अनुसार राहुल जी इतिहास एव कलात्मक प्रतिभा के धनी है और वे इतिहास तथा कल्पना इन विरोधी तत्वा का अपूव समन्वय करने में सफल हुए हैं।[१५] उनकी कल्पना इतिहास के विस्तीण क्षेत्र में जाकर ऐतिहासिक तथ्या का उदघाटन करती है। वे ऐतिहासिक कल्पना स इस विशाल देश के अतीत को निहारते हैं और अनेक जातिया राज्या एव संस्कृतिया को कथा रूप में प्रस्तुत करते है।

राहुल जी के कथानक सरल है परन्तु उनकी विशिष्टता है उनम प्रतिपादित राहुल जी का स्पष्ट जीवन दशन और मानव जीवन का चित्रण। मधुर स्वप्न मानवता का मधुर स्वप्न है। राहुल जी ने जीवन और समाज की विषम स्थितिया का अकन करके साम्य स्थापना एव जन मुक्ति के स्वप्न को चित्रित किया है। विस्मत यात्री में तथागत के दु खवाद और मार्क्स के वगवाद म सामजस्य स्थापित कर राहुल जी ने सन्त्रस्त मानवता को जीवन देने का प्रयास किया है। 'सिंह सेनापति' के कथानक में गणतन्त्रात्मक युग की स्वच्छन्दता, नारी की स्वतन्त्रता श्रम की गरिमा सम्पत्ति पर समानाधिकार का स्वर मुखरित कर राहुल जी मानव की समता चाहते है। अभिप्राय यह है कि राहुल जी के कथानक मानव जीवन एव मानवीय आदर्शों की अभिव्यक्ति के कारण प्रेरणाप्रद है। भदन्त आनन्द कौसल्यायन राहुल जी में भारत की भूखी नगी जनता के लिए असीम वेदना पाते हैं।[१६] यही वेदना उनके उपन्यासा में सवत्र प्रकट है। बाईसवी सदी में राहुल जी ने सन्त्रस्त मानवता की मुक्ति का स्वप्न देखा है। जीने के लिए म इस मुक्ति के लिए सघष है। साथ ही अपने ऐतिहासिक उपन्यासो में वे गणतन्त्रात्मक मानवतावाद की प्रस्थापना करते हैं।

कथाशिल्प के लिए अपेक्षित कौतूहल एव जिज्ञासा के अभाव मे भी राहुल जी के उपन्यास रोचक हैं। यह रोचकता प्रेम प्रसगा युद्ध एव साहस के प्रसगा तथा यात्रा प्रसगा द्वारा राहुल जी अपने उपन्यासा म लाते है। 'जय यौधय' तथा मधुर स्वप्न की कथा अपेक्षाकृत अधिक रोचक है। जय यौधय म चन्द्रगुप्त और कुरुमक की प्रणय कथा[१८] पारिवारिक हास्य विनोद के प्रसग,[१९] हिमालय-यात्रा का प्रसग तथा नन्दा और वसुनन्दा के सवाद[२०] उपन्यास को रोचक बना देत हैं। मधुर स्वप्न की कथा रोचक रूप म प्रस्तुत मानवता का स्वप्न है। इसम विस्मति कारा म शाहरवात को सम्विक द्वारा उद्धार की कथा कौतूहलपूण तथा रोचक है। 'जीने के लिए' का कथानक भी रोचक एव प्रभावपूण है।

राहुल जी के कुछ औपन्यासिक कथानको म यौन भावना का प्रचुर प्रयोग है। वे सामाजिक स्तर पर कामभूलक समस्याओ का अकन करते हैं। उन्होने अपने उपन्यासा म स्वच्छन्द शृगारिक स्थितिया की सामाजिक स्वीकृति की स्थापना मुक्त निबन्ध चुम्बना,

गान पान एव नृत्य गा गाष्ठिया आदि की उपस्थिति द्वारा की है। सिंह सेनापति'
म यौन भावना का अतिरेक है। मगत के म अधिक प्रयोग का डॉ० नगेन्द्र आपत्ति-
जनक मानते हैं। वे लिखते हैं— जिस उदारता से राहुल जी के पात्र एक-दूसरे पर
चुम्बनो की बौछारें करते हैं वह अनतिक न भी मानी जाए परन्तु असद अवश्य है।
वास्तव म रस की उद्भावना करने का यह सस्ता उपाय इतने असयम के साथ
व्यवहृत किया गया है कि उसमे अरुचि होने लगती है।[१०] यौन भावना का असयमित
प्रयोग उक्त उपन्यास म अशोभनकर अवश्य प्रतीत होता है परन्तु 'मधुर स्वप्न',
'जय यौधेय', 'विस्मृत यात्री एव 'जीने के लिए' मे इसका सयमित प्रयोग किया म
रोचकता लाता है साथ ही मानवीय तत्वो का प्रतिष्ठापक है। डॉ० देवराज सक्सेना
के इस उपयोग को वर्तमान युग का प्रभाव स्वीकारते हैं। उनके शब्दो म—"राहुल
जी ने ऐतिहासिक उपन्यासो म जय यौधेय', सिंह सेनापति तथा 'मधुर स्वप्न' म
जिस मुक्त और स्वच्छन्द विलास का महोत्सव मनाया है वह इतिहास की रक्षा मात्र
नही है, उसम इस युग का भी प्रभाव है। इसको द्विवेदी युग की उपदेशात्मक लज्जा
शीलता के बाह्य और झूठे आडम्बर के विरुद्ध प्रतिक्रिया मात्र कह कर ही सन्ताप
नहा किया जा सकता। यह निश्चित रूप स फ्रायड क लिबिडो वाले सिद्धान्त का
परिणाम है जो यह प्रतिपादित करता है कि मनुष्य के अवचेतन की सारी प्रवृत्तियाँ
काममूलक होती हैं। हमारे सारे आन्तरिक सघर्ष क मूल म काममावना है।"[११]

निष्कर्ष यह कि राहुल जी का कथाशिल्प प्रौढ़ औपन्यासिक शिल्प के अनुकूल
नहीं है। फिर भी यात्रा, प्रेम और शौर्य के प्रसगो द्वारा कथा-विकास, मानवीय तत्वो
एव मानवतावाद की प्रतिष्ठा प्राचीन मान्यताओ और धारणाओ क प्रति विद्रोह
का स्वर, इतिहास और कल्पना का मधुर समन्वय कथा आरम्भ की नई शैली एव
स्वस्थ दृष्टिकोण उनके कथा शिल्प के मौलिक गुण हैं। इनके कथानको म इतिहास
और दर्शन, तथ्य और कल्पना का समन्वय दृष्टिगोचर होता है। कथाशिल्प की दृष्टि
से 'जय यौधेय' मधुर स्वप्न एव जीने के लिए' राहुल जी की उत्तम कृतियाँ हैं।
'बाईसवी सदी' राजस्थानी रनिवास तथा भागो नहीं दुनिया को बदलो तो कथाभास
मात्र हैं। 'विस्मृत यात्री इस दृष्टि स सामान्य रचना है और दिवोदास' एक सफल
लघु उपन्यास है।

पात्र और चरित्र चित्रण

उपन्यास मानव जीवन का चित्र है।[१३] उसके अस्तित्व का कारण ही यही है
कि वह जीवन क चित्रण का प्रयास करता है।[१४] उसमे नित्यप्रति क दर्द और जिए
जाने वाले जीवन का आभास होता है।[१५] उक्त उक्तियो स स्पष्ट है कि मानव और
उसका चरित्र ही उपन्यास का मूलाधार है। आधुनिक उपन्यास म घटना एव वस्तु
की अपेक्षा चरित्र चित्रण को अधिक महत्त्व प्राप्त है। रामदीन के शब्दो म चरित्र
चित्रण से अभिप्राय पात्रो का यथार्थ मूर्तिमत्ता एव स्वाभाविकता से चित्रित करना
है। व छायामात्र न होकर व्यक्तित्व-सम्पन्न होकर पुस्तक के पृष्ठो स उभरते

चाहिएँ। [१७६] पाठक कथा उसकी घटनाएँ एवं प्रसंग भूल सकता है परन्तु पात्रों का व्यक्तित्व उसके अन्तःकरण पर ऐसी गहरी छाप अंकित कर देता है कि वे उसे सर्वदा अविस्मरणीय हो जाते हैं। अतः किसी भी उपन्यासकार से सर्वोपरि यह अपेक्षित है कि वह ऐसे सजीव पात्रों की सृष्टि करे जो पाठक पर अमिट प्रभाव अंकित कर सकें। भले ही चरित्र अवतारणा किसी भी क्षेत्र से हो। [१७७] इस प्रकार के पात्र स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाले होते हैं व घटनाओं एवं परिस्थितियों को जन्म देते हैं। ऐसे स्वतन्त्र व्यक्तित्व सम्पन्न पात्रों के बाह्य एवं आन्तरिक पक्ष को उभारना उपन्यासकार का कर्त्तव्य है। राहुल सांकृत्यायन ने अपने ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों में ऐसे पात्रों की अवतारणा की है जो अपने कृत्यों द्वारा समाज एवं इतिहास में मोड़ लाने वाले हैं। ऐतिहासिक पात्रों की सृष्टि द्वारा वे अपने साम्यवादी आदर्शों की प्रतिष्ठा करने में सफल हुए हैं।

पात्र चयन-परिधि—राहुल जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रमुख पात्रों का चयन इतिहास से ही किया है। दिवोदास के दिवोदास, पुरुकुत्स, त्रसदस्यु ऋषि भरद्वाज एवं शम्बर ऋग्वेदकालीन ऐतिहासिक पात्र हैं। 'सिंह सेनापति' का नायक सिंह मगधराज बिम्बसार तथा अजातशत्रु प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं। 'जय यौधेय' के समुद्रगुप्त चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एवं कालिदास भी प्रख्यात हैं। मधुर स्वप्न के शाहकवात खुसरो तथा तोरमान तथा 'विस्मृत यात्री' का नायक नरेन्द्रयश का चयन भी इतिहास से हुआ है। अन्य पात्र प्रायः काल्पनिक हैं। सामाजिक उपन्यास 'जीने के लिए' के सभी पात्र काल्पनिक हैं ही। ऐतिहासिक उपन्यासों में भी लेखक ने उक्त प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त कल्पना से ही पात्र सृष्टि की है पर इनमें ऐतिहासिक वातावरण के अंकन में कहीं बाधा नहीं आई। ये नाम काल्पनिक अवश्य हैं परन्तु इनका इतिहास सत्यमूलक है। डा० प्रभाकर मिश्र राहुल जी के उपन्यासों के पात्रों के चयन क्षेत्र को अत्यन्त सीमित कहते हैं। [१७८] परन्तु उपर्युक्त चयन क्षेत्र से स्पष्ट है कि उनका कथन सत्य नहीं है। राहुल जी ने अपने पात्र इतिहास और समाज दोनों क्षेत्रों से लिए हैं। पुनश्च ऐतिहासिक पात्रों का काल क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। वैदिक युग से लेकर गुप्त-युग तक और भारत से लेकर चीन और ईरान देशों तक फैले हुए पात्रों का चयन कर उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की है। शताब्दियों के अन्तराल को पार कर राहुल जी की पैनी दृष्टि ने जहाँ इतिहास के अनेक युगों का साक्षात्कार करवाया है वहाँ उन युगों के पात्रों का सजीव व्यक्तित्व भी प्रस्तुत किया है। साथ ही उनके पात्र विविध वर्गों से सम्बन्धित हैं। वे शासक और शासित शोषक और शोषित श्रमिक एवं कृषक वर्ग तक ही सीमित नहीं हैं, सामान्य जन भी हैं जो समाज राजनीति एवं धर्म सभी क्षेत्रों में अपना निजी स्थान रखते हैं। हाँ, राहुल जी के पात्रों का सीमित क्षेत्र इस दृष्टि से अवश्य कहा जा सकता है कि वे सभी साम्यवादी विचारों के अनुयायी हैं।

चरित्र निर्माण का स्रोत—चरित्र चित्रण का एक बहुत बड़ा स्रोत लेखक का

निजी व्यक्तित्व भी होता है। जर्मन उपन्यासकार गटे ने अपने जीवन की अनेक समस्याओं एवं विशिष्टताओं को उपन्यास के वर्ण्य विषय के रूप में प्रयुक्त किया है।[१७९] उनके उपन्यास 'विल्हेम मीस्टर्स अप्रेंटिसशिप' के नायक विल्हेम मीस्टर के विषय में जार्ज ल्यूकास का कथन है कि 'उसमें गटे के बहुत से व्यक्तिगत गुण समाविष्ट हैं और उसके विकास में उनके स्रष्टा के जीवन की अनेक घटनाएँ हैं।'[१८०] हेनरी जेम्स भी चरित्र निर्माण का एक बहुत बड़ा स्रोत लेखक को ही मानते हैं।[१८१] विशेष रूप से काल्पनिक पात्र तो लेखक के व्यक्तित्व का मूर्त रूप होते हैं। यही स्थिति राहुल जी के चरितनायकों की है। 'जीने के लिए' का नायक देवराज उनके अपने जीवन का ही प्रतिरूप है। वह जीवनगत परिस्थितियों, स्वभाव एवं विचारों में तो राहुल जी से साम्य रखता ही है, साथ ही उपन्यासकार और उनके नायक के अनेक कार्यों में भी सादृश्य है। वह राहुल जी की तरह ही साम्राज्यवाद से घृणा करता है,[१८२] पूँजीवाद के परिणामों को भयंकर बतलाता है[१८३] और उन्हीं की तरह ही सत्याग्रही बनकर गाँव गाँव में जन जागृति का प्रचार करता है।[१८४] साम्यवाद तो उसका इष्ट है ही। इसी प्रकार 'विस्मृत यात्री' का नायक नरेन्द्रयश राहुल की तरह यायावर है। श्री महेन्द्र चतुर्वेदी के शब्दों में— 'विस्मृत यात्री में एक बौद्ध यात्री नरेन्द्रयश का जीवन चरित्र निरूपित हुआ है और उससे भी आगे उसमें स्वयं लेखक के जीवन का आंशिक प्रतिनिधित्व हुआ है।'[१८५] डॉ० सुषमा धवन 'विस्मृत यात्री' के नायक के विषय में लिखती हैं— 'विस्मृत यात्री का चरित्र लेखक के लिये आकर्षक ही नहीं वह उसके व्यक्तिगत जीवन के तारों को भी झंकृत करता है।'[१८६] इसी प्रकार जय यौधेय का जय, सिंह सेनापति का सिंह, विस्मृत यात्री का बुद्धिल तथा मधुर स्वप्न का शाह कवाद तथा मज्दक राहुल जी के विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। डॉ० सुमन सिन्हा के शब्दों में कहा जा सकता है— 'उनके पात्र समाज की रूढ़ियों एवं जर्जरित परम्पराओं के प्रति विद्रोह करते हैं, उनमें शोषण एवं अन्याय के विरुद्ध क्रांति की जबरदस्त भावना है। इनमें से किसी को भी वर्तमान सामाजिक रूपविधान पसन्द नहीं है और वे इनमें आमूल चूल परिवर्तन के लिए लेखक के संकेत पर कटिबद्ध प्रतीत होते हैं।'[१८७] पुरुषपात्रों की तरह स्त्री पात्रों में जेनी भी लेखक के विचारों का वहन करती है। अभिप्राय यह कि पात्रों के चरित्रांकन में राहुल जी ने अपनी आत्मकथा का सफल प्रयोग किया है। उनका अपना जीवन एवं व्यक्तित्व उनके औपन्यासिक पात्रों का एक बहुत बड़ा स्रोत बन गया है।

स्थिर एवं वर्गगत पात्र—राहुल जी के पात्र स्थिर एवं वर्गगत हैं। वे युग अथवा जन समूह का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों में नायक विशाल जन समूह के महत्त्वपूर्ण आदर्शों का प्रतिनिधि होता है। उसकी इच्छाएँ एवं उद्देश्य विशाल जन समूह की इच्छाओं और उद्देश्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करने वाली होती हैं।'[१८८] जय और सिंह क्रमशः यौधेय गण एवं लिच्छवि-गण के गुण-दोषों का मानदण्ड हैं, वे वर्गगत पात्र कहे जा सकते हैं। डॉ० नगेन्द्र के अनुसार—

इसमें सन्देह नहीं कि इन दोनों उपन्यासों में प्रधानतः एक एक व्यक्ति के जीवन का विवरण है, फिर भी इनमें से कोई व्यक्ति-प्रधान उपन्यास नहीं है। ये दोनों व्यक्ति वास्तव में वर्ग जीवन के प्रतीक हैं।[६६] 'जीने के लिए' उपन्यास का देवराज भी आधुनिक शोषित परन्तु क्रान्तिकारी वर्ग का प्रतिनिधि है। साथ ही अंग्रेजी उपन्यासकार स्काट की तरह[६७] राहुल जी के पात्र गतिशील अथवा विकासशील नहीं हैं। वे अधिकांशतः स्थिर हैं। स्थिर पात्र उन्हें कहा जा सकता है जिन पर परिस्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् जिनके चरित्र में कोई परिवर्तन नहीं आता, वे स्वयं नहीं बदलते, मानो वे आरम्भ से ही स्वतः पूर्ण हों। केवल उनके सम्बन्ध में पाठकों का ज्ञान बढ़ता है।[६८] देवराज, जय, सिंह एवं दिवोदास—ये सभी चरितनायक आद्यन्त समरस हैं। सर्वत्र उनके शौर्य पराक्रम एवं संघर्ष का निदर्शन है। वे विकासशील न होकर पूर्णरूप में हमारे सम्मुख प्रस्तुत हैं। इन पात्रों का कोई-न-कोई गुण पाठक के सामने मूर्तिमान होता है और धीरे धीरे लेखक उसे विस्तार देता जाता है।

पुरुष पात्र—राहुल जी के उपन्यासों संघर्ष प्रधान हैं और संघर्ष के लिए नारी पात्रों की अपेक्षा पुरुष-पात्र ही उपयुक्त हैं। इसीलिए राहुल जी का ध्यान नारी पात्रों की ओर कम गया है। मुख्यतः उनके उपन्यासों में पुरुष-पात्रों का ही चरित्र उभरा है। देवराज सिंह जय, नरेन्द्रयश दिवोदास और शाह कवात उनके नायक हैं। इनके अतिरिक्त मोहनलाल कपिल बुद्धिल मञ्जुक, सियावल्लु, मरद्वाज आदि पात्रों की अवतारणा इन नायकों के सहयोगी एवं मित्र के रूप में हुई है। बिम्बसार अजातशत्रु, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, शम्बर को प्रतिनायक कहा जा सकता है। राहुल जी के नायक पात्र लेखक के निजी आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे साम्यवादी विचारधारा का वहन करने वाले हैं। उनमें शूरवीरता उत्साह, पौरुष क्रान्तिकारिता एवं यायावरिता का गुण प्रायः समान है। सहयोगी पात्र नायकों के सुख दुःख के सहचर हैं। उनकी विशिष्टताएँ नायकों के गुणों से पर्याप्त सादृश्य रखती हैं। प्रतिनायक सभी लेखक के साम्यवादी आदर्शों के विरोधी के रूप में प्रस्तुत हैं। ये पात्र गतिशील हैं और सामान्यवाद की स्थापना (शम्बर को छोड़कर) इनका उद्देश्य है। पराक्रम और साहस में वे भी नायक-पात्रों से कम नहीं। इस प्रकार राहुल जी के पुरुष पात्र नायक सहयोगी पात्र एवं प्रतिनायक तीन वर्गों में विभक्त हैं। प्रथम दो वर्गों के पात्र लेखक की सहानुभूति के पात्र हैं और प्रतिनायकों के प्रति उनकी विरक्ति एवं घृणा व्यक्त है। ये सम्राट पात्र उनकी प्रकृति के विरुद्ध हैं। लेखक ने इनके अवगुणों को अधिक उभारा है। इस दृष्टि से राहुल जी का चरित्र चित्रण समन्वित एवं निरपेक्ष नहीं है।

नारी पात्र राहुल जी के उपन्यासों में सशक्त नारी चरित्रों का अभाव है। वे जय अथवा सिंह के समानान्तर किसी नारी-पात्र की अवतारणा नहीं कर सके। नायिका की सृष्टि तो उपन्यासकार ने की ही नहीं। कोई भी नारी-पात्र पताग्रम की स्थिति को प्राप्त नहीं करता। प्रभाकर माचवे के शब्दों में—'राहुल के सभी

उपन्यास एक प्रकार से नायिका शून्य हैं। जीवन के कर्म पक्ष को प्रधानता देने के कारण पात्रों का भाव-पक्ष कमजोर पड़ जाता है।'[६२] 'विस्मृत यात्री' में तो कोई प्रमुख नारी-पात्र है ही नहीं। 'जीने के लिए' में जेनी ब्राउन का चरित्र अवश्य कुछ उभरा है। जेनी देवराज की तरह राहुल जी की विचारधारा का वहन करने वाली है। वह क्रांतिकारिणी है, साम्यवादी विचारों की समर्थिका है। देवराज की तरह ही वह जन जागृति में विश्वास रखती है और आर्थिक विषमता की कटु आलोचना करती है। वह देवराज के लिए प्रेरणाप्रद है, वह उसके देश सेवा के मार्ग में बाधक नहीं है। इस प्रकार जेनी ब्राउन राहुल जी के नारी पात्रों में सर्वाधिक सशक्त व्यक्तित्व है। इसी उपन्यास की राधा देवराज की माता के रूप में चित्रित है। वह ग्रामीण जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। 'दिवोदास' की पौरवी का चरित्र भी माता के रूप में अंकित किया गया है। अपने पति राजा वध्र्यश्व की मृत्यु होने पर दिवोदास को धैर्य देती है और उसे अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेत करती है। 'मधुर स्वप्न' की सम्बिका शाह कवात की सहोदरा तथा पत्नी है। सम्बिका को कर्त्तव्यपरायणा सहिष्णु, पतिव्रता नारी के रूप में चित्रित किया गया है। 'सिंह सेनापति' की रोहिणी साहस और पराक्रम में पुरुषों के समान है। 'जय यौधेय' की वसुनन्दा जय के अनुकूल युद्ध-वीरता का परिचय देती है। अन्य नारी-पात्र सुनन्दा, भद्रा, नन्दा, वासन्ती (जय यौधेय) भामा, क्षमा (सिंह सेनापति) वदक (मधुर स्वप्न) आदि प्रायः एक से लगते हैं। राहुल जी ने नारीत्व के चित्रण में प्रेयसीत्व रूप का ही अधिक चित्रण किया है। मातृत्व उनमें गौण है। राधा और पौरवी को छोड़कर सभी नारी-पात्र प्रेमिकाएँ, भाभियाँ तथा पत्नियाँ हैं। उनकी नायिकाएँ युद्ध संचालन में भले ही कुशल हों, परन्तु गृहिणी अथवा माँ के दायित्वों का निर्वाह करने में अक्षम प्रतीत होती हैं। गार्हस्थ्य जीवन की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में उनका चित्रण अधूरा ही लगता है। उनके जीवन में प्रेम का ही एकमात्र महत्त्व है। इस प्रकार उनका चरित्र चित्रण एकांगी बन गया है। इस सम्बन्ध में डा० नगेन्द्र का कथन सत्य प्रतीत होता है—'नारी पात्रों में सिंह सेनापति की रोहिणी और क्षेमा, जय यौधेय की वासन्ती और सुनन्दा एक ही साँचे में ढली हुई हैं। भामा और नन्दा में तीखापन और ज्यादा है, उनका चित्रण देखकर अमरीकन सैनिक द्वारा किये हुए स्त्रियों के वर्णन का स्मरण हो आता है।'[६३] राहुल जी के नारी चित्रण में वस्तुतः रूस की स्वच्छन्द-नारी का चित्रण है। 'राजस्थानी रनिवास' के गौरी आदि नारी-पात्र नारी की करुण स्थिति का चित्र अवश्य प्रस्तुत करते हैं।

बहिरंग चित्रण —बहिरंग चित्रण का सम्बन्ध पात्रों की आकृति, वेशभूषा, अवस्था, नाम, क्रिया, अनुभव आदि से होता है।'[६४] राहुल जी के उपन्यासों में पात्रों के बहिरंग चित्रण की प्रवृत्ति अधिक रही है। इस विषय में रणवीर रांग्रा के उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा के विषय में कहे गये ये शब्द राहुल जी की चित्रण विधि पर भी सही प्रतीत होते हैं—'उनके ऐतिहासिक उपन्यासों की लम्बी-लम्बी भूमिकाओं के

अतिरिक्त, जिन म उन्होंने अपनी ऐतिहासिक राजा का उल्लेख किया है उनका पात्रो के बहिरग चरित्र चित्रण की ओर अधिक झुकाव इस बात का परिचायक है कि चरित्र चित्रण म उनका दृष्टिकोण इतिहासकार का अधिक रहा है और उपन्यासकार का कम।'[१६५]

बहिरग चित्रण के अन्तगत राहुल जी को पात्रा की वेशभूषा एव आकृति का वणन अभीष्ट रहा है। ऐसे वणना से उनकी रचनाए भरी पडी हैं। दिवोदास म पुरुकुत्सानी की आकृति का वणन इस प्रकार किया गया है—'दुवापुत्री पुरुकुत्सानी बडी गम्भीर प्रकृति की महिला थी। गुलाबी रग सुनहरी आँखें, भरा चेहरा, पीले-लम्बे केशो क साथ वह असाधारण स्वस्थ सुदरी थी। सारे आयजनो म उसके लावण्य की प्रसिद्धि थी।'[१६६] 'मधुर स्वप्न' म सम्विक के सौन्दय का शब्द चित्र द्रष्टव्य है—'क्षीण कटि उन्नतवक्ष शख सदृश ग्रीवा तनु अग तनु अगुली हिमश्वेत शरीर, आरक्त कपोल बादाम समान लोचन कोमल सुवणरेखा सम भ्रूलता दीघ पक्ष्म नेत्र, श्वेत तथा समान द त कृष्णाभरक्त दीघ केश जूडा के रूप म निबद्ध तथा सामने द्विविधा विभक्त थ।'[१६७] इसी प्रकार म'दर क चरित्राकन में भी उपन्यासकार न उसकी बाह्याकृति का वणन किया है।[१६८]

आकृति क साथ साथ पात्रो की वशभूषा का भी सजीव वणन हुआ है। सिंह सेनापति म सिंह की वेशभूषा सम्बन्धी उसका स्वगत कथन है—'मैं अब भय भाषा म भी त क्षशिलीय बन चुका था। जाडो म वसा ही सुत्थन चमकचुक पहनता, वसे ही अपने लम्बे केशा का जूट बाँध नम चमड क कनटोप से ढाँक रखता।'[१६९] कही कही पात्रो के तुलनात्मक आकृति-वणन भी राहुल जी ने प्रस्तुत किये हैं। दिवोदास तथा शम्बर के युद्धप्रसग म उनके आकृति वणन की तुलनात्मक रूप रखा द्रष्टव्य है—'दिवोदास का शरीर अत्यन्त गौर वण सिर पर अत्यन्त पीले केश, हाथ म अयस का विशाल वज्र उसक विशालकाय पौरुष के अनुरूप था। किरातराज शरीर मे थोडा ही छोटा था और उसके दीप्तिमान मुख को देखत ही बनता था। उस पर मृत्यु की छाया नही पड रही थी बल्कि विजय की उमग नाच रही थी।'[२] इस प्रकार राहुल जी ने चरित्राकन म पात्रा के आकार प्रकार एव वेश भूषा का चित्रात्मक वणन किया है। नारी की आकृति क अकन म उनकी नखशिख वणन की प्रवत्ति का परिचय मिलता है। प्रेमचन्द का विचार था कि 'किसी चरित्र की रूपरेखा करते समय हुलियानवीसी की जरूरत नही। दो चार वाक्यो म मुख्य मुख्य बातें कह देना चाहिएँ।'[२१] लेसिंग के मतानुसार भी प्रत्यक कुशल कलाकार की यह पहचान होती है कि वह कुछ महत्वपूण ब्यौरो का चयन कर उन्हें एकत्रित करके विभिन्न अवसरो पर हल्के सकेतो से पाठक की कल्पना को उद्दीप्त करने की चेष्टा करे।[२२] राहुल जी क आकृतिवणन मे यह विशेषता दशनीय है। व सक्षेप म ही अपने पात्रा क इस रूप स परिचित करवाते हैं।

वस्तु जगत की भाति उपन्यास जगत् क पात्रा का भी कोई-न कोई नाम अवश्य

होता है। यह नाम नायक एवं उसके चरित्र का व्यंजक होता है। पात्रों का नाम रखते समय उपन्यासकार के सामने पात्र का समूचा चरित्र विकास आ जाता है उसके गुणावगुण उस प्रत्यक्ष हो जाते हैं। चरित्र चित्रण में राहुल जी ने पात्रों के नामकरण का भी उपयोग किया है। 'यथा नाम तथा गुण' की उक्ति उनके अनेक पात्रों पर चरितार्थ होती है। 'त्रसदस्यु' 'सिंह' 'जय' आदि नाम उनके चारित्रिक गुणों—शौर्य निर्भयता एवं साहस—आदि की अभिव्यक्ति करते है। देवराज नाम से उसके सशक्त व्यक्तित्व की झलक मिल जाती है। नातिल अपने नाम के अनुसार शान्त प्रकृति का है और बुद्धिल बुद्धिवादी है। वदक (गुलाब) से उसकी सुन्दरता कोमलता आदि का बोध हो जाता है। ग्रामीण पात्रों के नाम लोटू सिंह मैकूसिंह मगरू लक्ष्मी आदि स्वाभाविक नाम हैं और ग्रामीण अशिक्षित वर्ग के प्रतीक हैं। अभिप्राय यह कि राहुल जी ने अपने अधिकांश काल्पनिक पात्रों के नामकरण द्वारा भी उनके चरित्र की ओर संकेत कर दिया है।

उपन्यासों के कुछ शीर्षकों से भी पात्रों के व्यक्तित्व का प्रकाशन हुआ है। दिवोदास', विस्मृत यात्री, मधुर स्वप्न सिंह सेनापति तथा जीने के लिए' के अनेक अध्यायों के शीर्षक पात्रों के चरित्रांकन में सहायक हुए हैं। 'अश्व दमन, दिवोदास राजा तथा अतिथि-गृह दिवोदास की वीरता एवं अतिथि सेवा के गुणों की ओर संकेत करते हैं। जीने के लिए' के नायक देवराज का चरित्र शिकार और उपकार', प्रेम और आनन्द, सत्याग्रही', कोमल की खान', जेल यातना आदि शीर्षकों से व्यक्त हो जाता है। 'महाचीन की ओर, 'व्यस्त जीवन आदि शीर्षक नरेन्द्रयश के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने वाले हैं। चरित्र चित्रण की यह पद्धति प्राय अस्वाभाविक होती है क्योंकि नामकरण अथवा शीर्षक से ही चारित्रिक विशेषताओं की अभिव्यक्ति हो जाने से पाठकों की उत्सुकता मंद पड जाती है।[१]

राहुल जी ने यत्र-तत्र पात्रों के अनुभाव चित्रण के द्वारा भी उनके चरित्रों पर प्रकाश डाला है। देवराज तथा जेनी के मिलन में उनका अनुभाव चित्रण देखिए—जेनी के सुनहले बालों वाले सिर को अपनी गोद में लिए उसकी ठुड्डी पर अपने दाहिने हाथ की उंगली को रखे, उसकी नीली आँखों को गम्भीरता से देखते हुए देवराज कितने ही समय तक अपने हृदय को खाली कर रखता रहा। यद्यपि उनके वार्त्तालाप ने गम्भीरता का रूप धारण किया था, लेकिन मालूम होता था वे दोनों इस धरती को छोड़कर किसी दूसरे लोक में चले गये हैं।[२] राहिणी और सिंह के प्रेम-वर्णन में भी उनका अनुभाव चित्रण द्रष्टव्य है— उसने मुँह फेरकर मेरी ओर ताका। उसकी आँखें सूजी हुई थी। उसके नील तारकों पर स्निग्ध जल की परत पड़ी हुई थी। मैंने हाथ को हिलाना चाहा। उसने सर को पास कर लिया। कितने ही दिनों से उसने केशों को धोया सजाया न था तो भी उनके होने पर भी वह कोपल तन्तु की भाँति कोमल थे। मैंने उनमें अँगुलियों को चलाते हुए कहा—राहिणी। मैं अच्छा हूँ तुम्हें चिन्ता न करनी चाहिए।[२] यहाँ सात्विक एवं कायिक दोनों प्रकार—

के अनुभावों का चित्रण हुआ है। युद्ध-वर्णन के प्रसंगों में भी नायकों के अनुभावों का चित्रण मिलता है।[७१] संक्षेपतः यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि राहुल जी ने पात्रों के चरित्रांकन में उनका अनुभाव चित्रण भी किया है।

अन्तरंग चित्रण —पात्रों के जीवन के स्वरूप को जानने के लिए उसकी *आन्तरिक चेतना को जानना, उसके अन्तर्मन का विश्लेषण करना अनिवार्य है।* अन्तरंग चित्रण में पात्रों के मन में उठने वाले भाव, कार्य का कारण और उद्देश्य, भावों का संघर्ष और उसके कारण तथा परिस्थितियाँ, मन की भीतरी दशा और उसके बाह्य प्रकटीकरण का रूप, कथनी और करनी का अन्तर, स्वप्नों के कारण और उनका विश्लेषण आदि का अंकन आवश्यक है।[७७] डा० देवराज के मत में— *आज कल के उपन्यासों का प्रमाणवाक्य यह है कि जीवन व्यवस्थित रूप से सजी हुई दीप मालिका नहीं है, वह तो ऐसा ज्योतिमण्डल है जो हमारी चेतना को आद्यन्त अपने झीने और अर्ध-पारदर्शक आवरण से आच्छादित किए रहता है।*[७८] इस आवरण को वेधकर पात्र के भीतरी रहस्यों को व्यक्त कराना उपन्यास का उद्देश्य है। एच० ए० मरे के अनुसार पात्र के व्यक्त रूप से अधिक महत्त्वपूर्ण उसका अव्यक्त रूप होता है जो व्यक्त रूप को प्रेरित करता है। मनुष्य के व्यक्त आचार विचार और व्यवहार में उसके चरित्र का एक अंश ही प्रतिबिम्बित हो पाता है। शेष का तो उसकी व्यक्त *चेष्टाओं में आभास तक नहीं मिलता।"*[२६] परन्तु राहुल जी के उपन्यासों में पात्रों के अन्तर्मन का विश्लेषण यदा कदा ही मिलता है। प्रमुखतया वे अपने चरितनायकों की विशेषताओं का ही आख्यान करते चलते हैं। वे देवराज सिंह, जय, दिवोदास एवं नरेन्द्रयश की चरित्रगत विशेषताओं यथा क्रान्तिकारिता, यायावरिता, वीरता, पराक्रम, संघर्षशीलता, राजनीतिज्ञता आदि को अवश्य उभारते हैं, पर उनके अन्तर्द्वन्द्व का *चित्रण नहीं करते। इसका स्पष्ट कारण यह है कि उनके पात्र अपने स्रष्टा की तरह* जीवन और जगत के प्रति सुनिश्चित एवं स्पष्ट विचारधारा रखते हैं, उनमें अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति ही नहीं है। वे अपने निर्धारित जीवन दर्शन के अनुसार कार्य करते हैं। वे साम्यवादी आदर्शों के अनुगामी एवं जीवन और जगत के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण रखते हैं। डा० नगेन्द्र के शब्दों में— *व्यक्तित्व विकास की रेखाएं एकदम* सीधी हैं। *उनका बहिर्मुखी जीवन सर्वथा स्वस्थ है, उसमें प्राणवत्ता है। स्रष्टा के* महाप्राण जीवन की शक्ति और स्वास्थ्य उनमें साफ दिख पड़ता है।[३१] राहुल जी के पात्र दृढ़ इच्छा शक्ति सम्पन्न हैं। वे संघर्षों एवं परिस्थितियों से जूझते हुए अपने मार्ग का निर्माण करते जाते हैं।

राहुल जी की दृष्टि पात्रों के अन्तर्मन के विश्लेषण पर केन्द्रित न होकर अपने प्रतिपाद्य एवं इतिहास की ओर उन्मुख रही है। *उनमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण* का धैर्य नहीं है। चरित्र के अदृश्य, अप्रकाशित अन्तर्मन के चेतन अवचेतन अंशों को पकड़ने का उन्होंने प्रयास ही नहीं किया। ऐतिहासिक चरित्रों के निर्माण में उपन्यासकार के सामने सबसे बड़ी कठिनाई यही होती है कि उसके सामने कोई आदर्श नहीं

होता। सुदूर इतिहास के पात्रों का विकास हमारी आँखों के सामने नहीं होता, वे इतिहास में विकसित रूप में ही हमारे सामने आते हैं अतः उनके चरित्र के विकास क्रम को जानना सहज नहीं।'[३११] आज ल्यू वाक्स के ये शब्द ऐतिहासिक उपन्यासकार की कठिनाई को स्पष्ट करते हैं। वह अपने पात्रों के पूर्व जीवन के विषय में अनुमान मात्र लगा सकता है। राहुल जी के पात्र भी इतिहास सम्मत होने के कारण चारित्रिक द्वंद्वों से रहित हैं। फिर भी यत्र-तत्र पात्रों के स्वभाव वर्णन में उनकी अन्तः प्रवृत्ति का चित्रण हो जाता है। उदाहरण के लिए नरेन्द्रयश के प्रस्तुत शब्द देखिए— 'मेरा ध्यान हृष्ट-पुष्ट सुभूषित और सुपरिधानित गुलाबी मुखों की तरफ नहीं जाता था बल्कि बाल्य और तारुण्य में ही वृद्ध हो गये, चर्म और अस्थि-कंकाल मात्र रह गये नंगे भूखे जीर्ण शीर्ण लोगों की ओर अधिक जाता। मैं बिल्कुल स्वार्थशून्य रहा, यह नहीं मानता और जिन धर्मव्रतों को मैंने स्वीकार किया उनका सदा अनुपालन किया, यह भी बात नहीं है। परन्तु मेरा हृदय सदा किसी के दुःख को सहने में असमर्थ रहा इसे मेरा गुण समझें या निर्बलता।'[३१२] यहाँ नरेन्द्रयश के दयालु एवं करुण स्वभाव का अंकन हुआ है। 'राधा' के गम्भीर स्वभाव का निरूपण इन पंक्तियों में देखिए— 'गरीबी और संसार के जीवन-संघर्ष ने उसे बहुत गम्भीर और चिन्ताकुल बना दिया था। उसके चेहरे पर जवानी की बेपरवाही और प्रफुल्लता की जगह संजीदगी अधिक दिखाई पड़ती थी।'[३१३] अभिप्राय यह कि राहुल जी की दृष्टि पात्रों को उनके ऐतिहासिक रूप में चित्रित करने की ओर अधिक रही है वे मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों की तरह पात्रों के अन्तर्द्वन्द्वों को उभार नहीं पाये। संक्षेप में कहा जा सकता है कि राहुल जी की चरित्र चित्रण की पद्धति उपन्यासकार की अपेक्षा इतिहासकार की अधिक है। इतिहासकार की पहुँच पात्र के व्यक्त अंश तक ही होती है अव्यक्त से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसी प्रकार राहुल जी की उपन्यास कला की शक्ति पात्रों के व्यक्त रूप अर्थात् उनके आचार-व्यवहार को चित्रित करने में लगी रही है। अतः औपन्यासिक चरित्र चित्रण की दृष्टि से राहुल जी को असफल ही कहा जाएगा। उनका चरित्र चित्रण सतही ढंग का है वह बहिरंग मात्र है अन्तरंग, व्यक्तिगत अथवा मनोवैज्ञानिक नहीं।

नाटकीय चित्रण—राहुल जी ने यद्यपि पात्रों के बाह्य रूप का ही वर्णन अधिक किया है तथापि उन्होंने प्रत्यक्ष चित्रण-पद्धति अथवा वर्णनात्मक पद्धति के साथ-साथ चरित्रांकन के लिए नाटकीय पद्धति का भी आश्रय लिया है। इसके अन्तर्गत वे घटनाओं, पात्रों की क्रियाओं प्रतिक्रियाओं, कथोपकथनों एवं अन्य पात्रों के माध्यम से चरित्र चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

(क) घटनाओं द्वारा चरित्र चित्रण—पात्रों की परिस्थितियों से उनके चरित्र में अन्योन्याश्रयी सम्बन्ध होता है। कभी उनका चरित्र घटनाओं को उभारता है और कभी उनके जीवन में घटित होने वाली घटनाएँ उस चरित्र को निखारती हैं।'' राहुल जी के उपन्यासों की घटनाएँ उनके पात्रों के चरित्र को उभारने में सहायक हैं।

'जीन के लिए' उपन्यास में मोहनलाल की मृत्यु देवराज के जीवन क्रम को बदल देती है। वह देश सेवा और कर्त्तव्य के मार्ग पर आरूढ हो जाता है। 'जय यौधेय' में जय और उसके साथी सिंह के पोत भग्न से जय को एक नये जीवन का साक्षात्कार होता है।[२१८] 'विस्मृत यात्री' में बुद्धिल की मृत्यु नरेन्द्रयश के जीवन में परिवर्तन ला देती है।[२१९] 'मधुर स्वप्न' में शाह कवात दुर्भिक्ष की घटना से प्रभावित हो मज्दक के मार्ग को अपना लेता है। अभिप्राय यह कि राहुल के पात्र जहाँ घटनाओं का निर्माण करते हैं वहाँ घटनाएं भी पात्रों के चरित्र को प्रकाशित करती हैं।

(ख) कथोपकथन द्वारा चरित्र चित्रण—घटनाओं का सम्बन्ध तो उपन्यास के कथानक एवं पात्र दोनों से होता है परन्तु उपन्यास में कथोपकथन का प्रयोग अधिकांशतः चरित्रोद्‌घाटन के लिए ही रहता है। राहुल जी ने आत्मकथात्मक ('सिंह सेनापति' 'जय यौधेय' एवं 'विस्मृत यात्री') तथा ऐतिहासिक ('जीन के लिए', 'मधुर स्वप्न') शैली में लिखे अपने उपन्यासों में संवादों की प्रचुर योजना की है। इनसे पात्रों के चरित्रोद्‌घाटन में विशेष सफलता मिली है। रोहिणी और सिंह के निम्न उद्धृत संवाद उनके मधुर एवं आशामय भावी जीवन की ओर संकेत करते हैं।

'और तुम रोहिणी ?'

'मैं भी तभी तो फूली नहीं समाती थी।

मैंने उस राक्षस को परास्त करके छोड़ा किन्तु उठकर देखता हूँ तो तुम वहाँ नहीं हो। मेरे प्राण निकलने से लगे। किन्तु उसी समय नींद खुल गई।

'स्वप्न में तुम विश्वास करते हो प्रियतम ?

'नहीं मैं विश्वास नहीं करता हूँ रोहिणी।

तात भी विश्वास नहीं करते, किन्तु माँ करती हैं स्वप्न का विपाक उल्टा होता है अच्छे का बुरा बुरे का अच्छा।

यदि विश्वास करना होगा तो अम्मा के विचार के अनुसार मैं विश्वास करूँगा।[२१]

'जीन के लिए' उपन्यास में देवराज और जनी के संवाद उनके प्रेम और कर्त्तव्य सम्बन्धी आदर्शों की अभिव्यक्ति करते हैं।[२८] श्रीमती ज्याफरे के संवादों में माँ का वात्सल्यपूर्ण हृदय झाँकता है।[११] 'जय यौधेय' में जय और नाग कुमारी के संवाद जय के संयमित प्रेम की ओर संकेत करते हैं।[२२०] निष्कर्ष यह कि पात्रों के स्वरूप को प्रकट करने में राहुल जी के संवादों का सर्वाधिक श्रेय है।

(ग) पत्रात्मक शैली—राहुल जी पात्रों के चरित्र को उद्‌घाटित करने के लिए 'जीने के लिए' उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। जेनी के देवराज के नाम लिख गए पत्रों में जेनी का चरित्र उद्‌घाटित होता है। जेनी का अधूरा पत्र जिसे एनी ब्लण्ट पूरा करती है वह जेनी के आदर्शों एवं कार्यों को प्रकाशित करता है।[२२१]

(घ) उद्धरण शैली—राहुल जी में इस शैली का अभाव है। फिर भी

पुरुरवा और उर्वशी विषयक गीत की टीका टिप्पणी में पोखी का चरित्रांकन सफलता-पूर्वक हुआ है।[१२२]

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि राहुल ने पात्रों के चरित्रांकन में उनके बाह्य रूप का ही अंकन अधिक किया है, अन्तरंग चित्रण का उनमें अभाव है। जहाँ तक चित्रण की प्रणालियों का प्रश्न है, राहुल जी ने आकृति-वेशभूषा वर्णन, स्वभाव-वर्णन अनुभाव-वर्णन, नामकरण द्वारा चरित्रांकन, कथोपकथन पत्रात्मक शैली एवं घटनाओं के माध्यम से चरित्रांकन की पद्धति का उपयोग किया है।

राहुल जी का चरित्र चित्रण इस प्रकार उत्कृष्ट कोटि का नहीं है वह बहिरंग चित्रण तक ही सीमित है और यदि डॉ० राय का रूपक ग्रहण किया जाये तो हम कह सकते हैं कि उनके पात्रों का चरित्र जलमग्न हिमनग के समान है जिसका अल्पांश ही व्यक्त क्रिया प्रतिक्रियाओं में प्रतिबिम्बित हुआ है।[१२३] राहुल जी के पात्रों के चरित्रांकन का महत्व इस बात में है कि वे ऐतिहासिक पात्रों की सृष्टि द्वारा सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान कर सके हैं। इस सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें पात्रों के अन्तरंग चित्रण की आवश्यकता ही नहीं थी। डॉ० प्रभाकर माचवे के शब्दों में—'सर्वत्र राहुल जी अपने जिस उद्देश्य को लेकर चले हैं उस दृष्टि से पात्रों को उभारने-सवारने में उन्होंने कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ी।'[१२४] अतः हम कह सकते हैं कि चरित्र चित्रण की दृष्टि से जीने के लिए, 'मधुर स्वप्न एवं जय यौधेय' अपेक्षया राहुल जी के उपन्यासों में उत्कृष्ट बन पड़े हैं।

संवाद

प्रेमचन्द उपन्यासगत संवादों के महत्त्व के विषय में लिखते हैं—'उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा जाए, उतना ही अच्छा है। इस सम्बन्ध में इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि वार्तालाप केवल रस्मी नहीं होना चाहिए। किसी भी चरित्र के मुँह से निकले हुए प्रत्येक वाक्य को उसके मनोभावों और चरित्र पर कुछ प्रकाश डालना चाहिए। बातचीत का स्वाभाविक, परिस्थितियों के अनुकूल और सूक्ष्म होना आवश्यक है।'[१२५] इस प्रकार उपन्यास में कथोपकथन का समावेश वस्तु के विकास एवं चरित्र तथा उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है। अच्छे कथोपकथन में रोचकता, स्वाभाविकता और नाटकीयता का गुण अनिवार्य है।

राहुल जी ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में संवादों का प्रचुर प्रयोग किया है। भागो नहीं दुनिया को बदलो उपन्यास तो संवादात्मक रचना है ही अन्य उपन्यासों में भी संवादों का प्रभूत प्रयोग है। उनके 'जीने के लिए' तथा सिंह सेनापति का आरम्भ संवादात्मक शैली में हुआ है। राहुल जी के संवाद कहीं संवाद पात्रों के बिना ही है। उन्होंने संवादों द्वारा कथा का विकास करने व प्रतिनिधित्व पात्रों के लिए नहीं है।

व्यक्तित्व का उदघाटन भी किया है। सर्वोपरि सवाद राहुल जी की विचार धारा की मुखरित अभिव्यक्ति हैं। राहुल जी के सवाद संक्षिप्त एव दीर्घ दोनो प्रकार के हैं। उनके लघु सवाद कथा विकास एव चरित्र अभिव्यक्ति म सहायक हैं। लम्बे सवादो द्वारा लेखक के विचारों को मूतरूप मिला है, यद्यपि उनम कलात्मक उत्कर्ष का अभाव है।

सक्षिप्त-सवाद—राहुल जी के उपन्यासो म सक्षिप्त सवादो की योजना उनकी सवादगत कलात्मकता की उत्कृष्टता का परिचायक है। छोटे छोटे सवादो की योजना स वे कथा विकास और पात्रो के चरित्र विकास म सफल हुए हैं। 'सिंह सेनापति' इस दृष्टि से उनकी उत्कृष्ट रचना है। इस उपन्यास के प्रारम्भिक सवाद उदाहरणार्थ प्रस्तुत है—

(दूसरे साथियो के) बाद मुझे आचार्य के सामने जाना पडा। आचार्य बहुलाश्व न पूछा—'तुम्हारा नाम गोत्र, तात!' 'गोत्र काश्यप और नाम सिंह' कहते मैंन गडे की ढाल आचार्य के सामने रखी।

आचार्य ने जहाँ-तहाँ लोहे की कीलो से जटित उस ढाल को हाथ म लेकर कहा—'बडी सुन्दर है यह ढाल और साथ ही बहुत मजबूत भी।'

'मेरे पिता न गडे को अपने हाथ स मारा था और उसी स बनी ढालो म से एक है।'

'तो वत्स सिंह! तुम्हारे पिता को तक्षशिला वालो की प्रिय वस्तु मालूम है तभी तो उन्होंने खास तौर स इसे सम्पादन करके भेजा।'

'लेकिन, आचार्य! मेरे पिता तेरह वर्ष पहले मर चुके। उस वक्त मैं पाच वर्ष का था।'

'आह वत्स! बिना पिता के पुत्र का कष्ट मुझे खूब मालूम है। मैं आठ वर्ष का था, जब मेरे पिता मरे थे। किन्तु मेरे तीन बडे भाई और मा थी। तुम्हारी माँ तो होगी?'

'हाँ मेरे पुत्र प्राण जननी जीवित है। उनकी मैं पहली सन्तान था। माँ न दूसरा ब्याह किया किन्तु सौभाग्य से उनके नय पति मेरे द्वितीय पिता साबित हुए। उन्ही की कृपा स मैं अब तक कुछ सीख-पढ सका हूँ।'

'तो वत्स! मैं समझता हू, तुम शुल्क देकर नही पढ सकोगे, किन्तु उसकी परवाह न करो। तुम्हारे जैसे धर्म निशुल्क—अन्तेवासी (शिष्य) के लिए बहुलाश्व का घर खुला हुआ है।'

'आचार्य की इस असीम कृपा के लिए मैं मुह से क्या कह सकता हू?'

'कुछ कहने की जरूरत नही। तुम अपने को मेरी विद्या का अच्छा पात्र साबित करना।'[२२१]

आचार्य बहुलाश्व और नायक सिंह के उक्त सवाद सक्षिप्त हैं। लघु प्रश्नो और लघु उत्तरो के रूप म इन सवादो का सयोजन हुआ है। सवाद स्वाभाविक बातचीत

से हैं। कथावस्तु के विकास में सहायक हैं तथा पात्रों के आरम्भिक रूप की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। आचार्य बहुलाक्ष की उदारता एवं शिष्या के प्रति सहानुभूति इन सवादों से व्यक्त है। नायक सिंह के सवाद उसकी पारिवारिक स्थिति का अकन करते हैं। सवादों की सक्षिप्तता एवं उनकी गत्यात्मकता का एक और उदाहरण इसी उपन्यास से द्रष्टव्य है —

'और मिठास है ?'

'कहने से तुम्हें विश्वास नहीं होगा, भया। मैं खिलाकर दिखलाऊँगी।'

'किन्तु सूखी द्राक्षा उतनी स्वादु थोड़े ही होगी।'

'सूखी नहीं, ताजी जैसी।'

'पाँच महीने पहले की टूटी द्राक्षा ताजी-जैसी कैसे रहेगी ?'

'कैसे होगी। और कपिशा के द्राक्षा की सुरा तो तुमने न पी होगी भया ?'

'नहीं सिर्फ उपमा सुनी है।'[२२७]

रोहिणी एवं सिंह का उक्त सवाद सक्षिप्त, मधुर स्वाभाविक बातचीत का रूप है और इस प्रकार के अनेक सवाद 'सिंह सेनापति' की विशिष्टता है। सारे उपन्यास में वर्णनात्मक शैली के स्थान पर सवादात्मक शैली का प्रयोग निखरा है। 'सिंह सेनापति' की तरह 'दिवोदास' के सवाद भी सक्षिप्त एवं कलात्मक हैं। इस उपन्यास में उपन्यासकार का विचाराभिव्यक्ति के प्रति आग्रह कम है एवं तर्क वितर्क-पूर्ण सवाद भी नहीं हैं। इस लघु उपन्यास में सवाद सरल, प्रवाहपूर्ण एवं कथा विकास में सहायक हैं। उदाहरणार्थ पुरुकुत्सानी तथा पौरवी के सवाद द्रष्टव्य हैं।[२२८]

मामा और भी स्नेह प्रतिदान करती हुई कहती है—'ननद, तू कितनी सुन्दर है ?'

(ननद पौरवी)—'भाभी तुम किससे कम हो ? तुम्हारे लावण्य का बखान तो सारे सप्तसिंधु में हो रहा है।'

(भाभी-पुरुकुत्सानी)—'पर मैं तो पुत्रवती हो चुकी हूँ, तू तो अभी कुमार है।'

(ननद-पौरवी)—'पुत्रवती होना तो बड़े सौभाग्य की बात है, फिर तुम्हें त्रसदस्यु जैसा पुत्र मिला है।'

'हाँ ननद, तू भी पुत्रवती होने ही वाली है।'

'तब मैं भी पुरानी हो जाऊँगी।'

'तेरी जैसी का सौन्दर्य इतनी जल्दी पुराना नहीं हो सकता। पजवन बध्र्यश्व सचमुच बड़ा भाग्यशाली है जो उनको जैसी पत्नी उसे मिली।'

'दिवोदास' के उक्त सवाद स्वाभाविक मधुर एवं सरस हैं इसमें सन्देह नहीं। जीने के लिए' उपन्यास के सवादों में भी उक्त गुण विद्यमान हैं। देवराज और जेनी के सवाद उनके पारस्परिक प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं। 'मधुर स्वप्न' में कथा विकास के लिए सवादों का सफल प्रयोग हुआ है। मन्दकिया के विनाश के लिए मुसरा जिस

छल नीति के प्रयोग के पक्ष म है, उस वह अत्यन्त सक्षिप्त रूप म अपने सवादो द्वारा प्रकट करता है।[23] उसके सवाद उपन्यास की भावी कथा की सूचना के साथ उसकी स्वार्थलोलुपता एव अत्याचारो की ओर सकेत करते हैं। इस प्रकार के सवाद जय यौधेय म भी विद्यमान हैं।[231]

लम्बे सवाद—सक्षिप्त एव सजीव सवादो क विपरीत राहुल जी के उपन्यासो म लम्बे सवाद भी कम नही है। जहाँ राहुल जी अपनी विचारधारा को अभिव्यक्ति देना चाहते हैं अथवा समाज धम एव राजनीति के किसी पक्ष की आलोचना करते हैं, वहाँ सवाद लम्बे लम्बे सम्भाषण अथवा प्रवचन बन गये है। इन सवादो मे नाटकीयता का प्राय अभाव है कथा यहा अवरुद्ध हो जाती है और कही कही तो पात्रो की दीर्घ कालीन वार्ताओ म विषय परिवतन के अभाव के कारण एकरसता एव नीरसता प्रतीत होने लगती है। विचारो की पुनरुक्ति सवाद-कला को क्षति पहुचाती है। राहुल जी के लम्बे सवाद तीनो रूपो म द्रष्टव्य हैं।

(क) **युक्तिपूर्ण लम्बे-सवाद**—राहुल जी के पात्रो के सम्भाषणो म मार्क्स वादी दार्शनिक युक्तियो एव सिद्धान्तो की प्रचुरता है। ऐसे स्थलो पर सवाद दीर्घ हो गये हैं। जीने के लिए म प्रमोद और मोहनलाल क सवाद इसी प्रकार के हैं। मोहनलाल देश की स्वतन्त्रता के लिए सार्वत्रिक क्रान्ति को अनिवार्य मानता है। उसका आग्रह है—'हम चाहते है क्रान्ति को आध्यात्मिक रूप देना। इस मनोवृत्ति स मुझे सबसे ज्यादा चिढ है। क्रान्ति सार्वत्रिक उथल पुथल है। उसे राजनीति क्षेत्र तक सीमित नही रखा जा सकता। सार्वत्रिक न करने पर वह कभी सफल नही हो सकती। इसका हमको पहले ही निर्णय कर लेना है कि हमारे क्रान्ति पथ का प्रदीप विज्ञान होने जा रहा है या धर्म। धर्म को मानने पर निश्चय ही हम सारे देश म एक क्रान्तिकारी दल कायम नही कर सकते भारत की राष्ट्रीय एकता जात-पात और मजहबो की चिता पर होगी'[232] इसी उपन्यास म साम्राज्यवाद एव पूँजीवाद के परिणामो की ओर सकेत करता हुआ नायक देवराज शोषितो की एक जाति मानता है—'मुझे मालूम होता है, हिन्दुस्तान और इग्लैंड के श्रमजीवियो का भाग्य एक सूत्र म बध गया है। एक की परतन्त्रता से दूसरे की परतन्त्रता स्थायी होती है। एक की स्वतन्त्रता से दूसरे की स्वतन्त्रता म बडी मदद मिलती है। दुनिया के शोषितो की जाति एक है मेरी समझ म इग्लैंड के मजदूरो को हिन्दुस्तानी मजदूरो के सगठन और आदोलन म उतनी ही दिलचस्पी लेनी चाहिये जितनी कि अपने यहा व लेते रहे हैं।'[233] 'मधुर स्वप्न' म साम्यवादी कार्यप्रणाली क विषय म अजगर मज्दक का सवाद भी इसी प्रकार का है।[234]

(ख) **विचार प्रधान लम्बे सवाद**—राहुल जी न युक्तियुक्त व लम्बे तर्क वितर्कों द्वारा साम्यवाद एव बौद्ध दर्शन सम्बन्धी विचारो क प्रचार की ओर विशेष ध्यान दिया है। साथ ही समाज व जीवन के विविध पहलुओ के बारे म अपने विचारो को अभिव्यक्ति प्रदान की है। जय यौधेय म परलोकवाद के विषय म जय का कथन

है—'पुत्र पिता का परलोक है पुत्र पिता का पुनर्जन्म है। पिता मरने से पहले अपने शरीर, अपने मानसिक और शारीरिक संस्कार का एक अंश माता के शरीर में स्थापित करता है। माता उसमें अपना अंश मिलाती है और नौ मास गर्भ में रखकर उस शिशु के रूप में अगले लोक, अगली पीढ़ी के लिए देती है। इस मैं परलोक मानता हूँ। इस परलोक का मैं पक्षपाती हूँ।'[२३४] जय के द्वारा लेखक ने साम्राज्यवाद, पुनर्जन्म, निर्वाण[२६] आदि के विषय में भी विचार प्रकट किये हैं। मधुर स्वप्न में कवात के अन्तःपुर की भोजनशाला में कवात और मज्दकी नेताओं का वार्तालाप है।[१३७] मज्दक बुद्ध, मानी आदि साम्यवादी विचारकों के विचारों को अपने संवादों में उद्धृत करता है। ये संवाद पात्रों के स्वतन्त्र संवाद न होकर लेखक के निजी विचार हैं। इस प्रकार राहुल जी ने संवादों के माध्यम से निजी विचारों की अभिव्यक्ति दी है।

आलोचनात्मक संवाद—राहुल जी जब मार्क्सवादी विचारधारा एवं सौन्दर्य का समर्थन करते हैं तो अन्य राजनीतिक विचारधाराओं एवं धर्मों की तीव्र आलोचना एवं खण्डन करने लगते हैं। उनके पात्रों के आलोचनात्मक एवं खण्डनात्मक संवाद यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। चार्वाक दर्शन के विषय में जय का कथन है—"मेरा मतलब है, चार्वाक के नाम से आप जिस जीवन-दर्शन को हमारे सामने रख रहे हैं वह सामन्तों, सेठों का दर्शन है। बिना अपवाद के वे सभी इसी पर चलते आये हैं। किसी की परवाह मत करो, बाप और भाई को भी तलवार के घाट उतारकर, विष पिलाकर सुलाने में जरा भी आना-कानी न करो, यदि तुम्हारे खाने पीने मौज करने में बाधा होवे।'[२३८] इसी प्रकार जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के विषय में कांग्रेस की नीति की आलोचना करते हुए कुमार कहता है—'जी हाँ, उठाने का अधिकार नहीं, लेकिन सारी शक्ति लगाकर उसकी रक्षा करने का काम तो कांग्रेस ने आपके जिम्मे सौंपा है न।'[१२६] इस प्रकार राहुल जी धर्मगत संकीर्णताओं एवं राजनीतिक क्षेत्र में स्वार्थ लोलुपता आदि के वर्णन में आलोचनात्मक संवादों की सहायता लेते हैं।

निष्कर्ष यह है कि राहुल जी के लम्बे कथोपकथन उनकी मार्क्सवादी विचारधारा के प्रभाव से अस्पष्ट नहीं हैं और उन पर प्रचारात्मकता का गहरा रंग चढ़ा हुआ है। अतीत एवं वर्तमान की घटनाओं का मार्क्सवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण करने के कारण उनके पात्रों के संवाद उनके अपने लक्ष्य के अनुकूल हैं।

राहुल जी के उपन्यासों के संवादों में भावानुरूपता एवं आत्मीयता का अभाव ही दृष्टिगोचर होता है। उनमें वांछनीय गुण संक्षिप्तता, पैनापन और कार्य के अनुसार गति नहीं है। गूढ़ विषयों के विवेचन से सम्बद्ध होने के कारण उनमें रोचकता, चुस्ती एवं हाजिरजवाबी का अभाव है। देवराज और उसके साथियों में अंग्रेजी साम्राज्यवादी नीति विषयक वार्ता[२४] तथा जय और प्रसेन के बौद्धधर्म एवं दर्शन विषयक संवादों में[११] ये त्रुटियाँ पाई जाती हैं। राहुल जी के कथोपकथन बौद्धिक अधिक हैं। उनके पात्र गणतन्त्र साम्यवाद एवं बौद्ध-दर्शन जैसे गम्भीर विषयों पर तर्क वितर्क

करते है । इस स्थलो पर विषय प्रतिपादन की ओर अधिक ध्यान देने के कारण राहुल जी पात्रो के सवादो मे प्रसगानुसार माधुर्य कोमलता एव ओज आदि की सृष्टि नही कर सके हैं । कई स्थलो पर तो प्रणय वार्ताएँ भी आकर्षक नही हैं । विस्मृत यात्री' मे नरेन्द्र और उसकी प्रेमिका भद्रा की प्रणयवार्त्ता मे प्रणय सम्बन्धी उल्लास एव आवेग का अभाव है ।[२४२] राहुल जी के इन गम्भीर विषयो से सम्बन्धित सवादो के विषय मे यह सहज ही कहा जा सकता है कि ये सवाद प्राय वाद विवाद के रूप मे प्रस्तुत है । उपन्यास का मुख्य पात्र अथवा नायक विचारो का प्रतिपादन करता है और अन्य पात्र उसका समर्थन करते जाते हैं । अन्त मे नायक के विचारो से सभी पात्र प्रभावित हो उसका अनुगमन करते हैं ।

सवादों की भाषा राहुल जी के उपन्यासो के सवादो की भाषा पात्रानुकूल एव वातावरणानुरूप है । दिवोदास जय यौधेय तथा 'सिंह सेनापति के प्रमुख पात्रों के कथनो मे सस्कृत के तत्सम शब्दो की प्रधानता है फलत उनसे देशकाल को साकार रूप प्रदान करने मे लेखक को सफलता मिली है । 'मधुर स्वप्न मे भी पात्रानुकूलता की विशिष्टता विद्यमान है । ईरानी वातावरण वहा सुचारु रूप मे अकित हुआ है । कही-कही तत्सम शब्दो की प्रचुरता से सवादो मे दुर्बोधता भी आ गई है । परन्तु अन्यत्र भाषा सरल एव प्रवाहमयी है । राहुल जी ने अपने ग्रामीण पात्रो के सवादो की भाषा मे लोक भाषा का पुट दिया है । इससे कथानक की एकरूपता मे वचित्र्य और सजीवता आ गई है । जाने के लिए' मे दवराज और लक्ष्मी के सवादो मे लोक भाषा का प्रयोग हुआ है ।[२४३]

राहुल जी के सवादो की अपनी विशेषताएँ एव दुर्बलताए है । जहा उन्होने सवादो का विचाराभिव्यक्ति का माध्यम न बनाकर वस्तु विकास एव चरित्राकन के लिए उनका उपयोग किया है वहा उनके सवाद सक्षिप्त, सजीव एव गतिशील है परतु अधिकाशत राहुल जी के सवाद दीर्घ, आलोचनात्मक एव वाद विवाद का रूप धारण किये हुए है । सवाद-कला की दृष्टि से सिंह सेनापति तथा दिवोदास उत्तम रचनाएँ हैं ।

देशकाल और वातावरण

वातावरण पात्रो का ससार है, जिसमे रहकर पात्र अपने व्यक्तित्व का उद घाटन एव विकसित करते है । आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र स्थान और समय के औचित्यपूर्ण नियोजन को देशकाल की सज्ञा देते हैं और ऐतिहासिक उपन्यासो मे इसकी अनिवार्यता इन शब्दो मे व्यक्त करते हैं— ऐतिहासिक उपन्यासो को सामने रखने से इस तत्त्व के समाजगत वशिष्ट्य का भली भाँति पता चल जाता है । क्योकि यदि इन उपन्यासो मे तत्सामयिक समाज के आचार-व्यवहार का ठीक ठीक निरूपण न किया जाय तो उनका उद्देश्य ही नष्ट हो जाता है । [२४४] डा० रमेश कुन्तल मेघ के शब्दो मे 'विशिष्ट का ऐतिहासिक बोध वातावरण सृष्टि द्वारा बडी गहराई से होता है । वेश भूषा शृगार आचार-व्यवहार धर्म कलाए सामाजिक जीवन नगर आदि

इसके उपादान हैं।[२५४] वस्तुत एतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक घटनाओं की अपेक्षा तत्कालीन जीवन चित्रण का महत्व अधिक है। श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का मत उल्लेखनीय है—'इनमें ऐतिहासिक घटनाओं का इतना महत्व नहीं होता, जितना तत्कालीन जीवन के चित्रण का। उसी से हम कौतूहल होता है विस्मय होता है, आतंक होता है, श्रद्धा होती है और मानव जीवन की चिरन्तन गरिमा पर दृढ विश्वास भी होता है।'[२५५] वातावरण के मुख्य दो रूप हैं—समाजगत एवं प्रकृतिगत। समाजगत वातावरण के अन्तर्गत समाज की विविध राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि परिस्थितियाँ एवं पात्रों की वेश भूषा, शृंगार आचार-व्यवहार, खान-पान आदि आते हैं। प्राकृतिक वातावरण में प्रकृति के विविध रूपों, पशु, पक्षी, सरिता सरोवर, पर्वत निर्झर कानन, उपवन आदि की गणना की जाती है।

राहुल जी के उपन्यासों में वातावरण-सृष्टि का तत्व सर्वाधिक उभरा है। वातावरण सृजना के लिए लेखक ने पर्याप्त उद्योग किया है और उसे सफलता भी मिली है। देश और काल दोनों ही उनके उपन्यासों में सजीव रूप से अंकित हैं। उनकी ऐतिहासिक कल्पना युग-परिस्थितियों को पूर्ण रूप से मूर्त कर सकी है। वातावरण निर्माण के लिए राहुल जी ने कल्पित कथा एवं ऐतिहासिक वस्तु वर्णन से साहाय्य लिया है साथ ही एतिहासिक शब्दावली का प्रयोग भी वातावरण निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ है। राहुल जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में जिस शब्दावली का प्रयोग किया है, वह प्राचीन भारत एवं प्राचीन ईरान के सांस्कृतिक ऐश्वर्य की अभिव्यक्ति में समर्थ है। डा० गोपीनाथ तिवारी लिखते हैं—'राहुल जी ने ऐतिहासिक वातावरण के निर्माण के लिए विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया है। सिंह सेनापति एवं जय यौधेय में यह कौशल मिलता है। वहाँ वह बहुत उचित और सौंदर्य का साधक है।'[२५६] डॉ० नगेन्द्र को राहुल जी इस क्षेत्र में प्रसाद जी से भी बढ़े हुए दृष्टिगोचर होते हैं—'अतीत के सांस्कृतिक ऐश्वर्य को अभिव्यक्त करने के लिए जिस समृद्ध और समर्थ शब्दावली का प्रयोग प्रसाद जी ने अपने नाटकों में आरम्भ किया था राहुल जी ने उसकी और भी अधिक श्रीवृद्धि की है। वास्तव में इस क्षेत्र पर उनका अधिकार प्रसाद जी की अपेक्षा अधिक व्यापक है।'[२५७] निस्सन्देह राहुल जी के उपन्यासों में अन्य तत्वों की अपेक्षा देशकाल और वातावरण का तत्व अधिक सफल रहा है।

देश चित्रण—राहुल जी के उपन्यास विविध घटनाओं एवं देशों से सम्बद्ध हैं। मुख्यत उनकी रंगस्थली भारत तथा ईरान है। 'विस्मृत' का मुख्य घटनास्थल सप्त सिन्धु 'सिंह सेनापति' का वैशाली और तक्षशिला 'जय यौधेय' का यौधेय प्रदेश 'विस्मृत यात्री' का उद्यान प्रदेश तथा 'जीने के लिए' बाईसवीं सदी और राजस्थानी रनिवास का क्रमश छपरा पटना और राजस्थान है। 'मधुर स्वप्न' का मुख्य घटना स्थल ईरान देश की राजधानी तैसीफोन है। राहुल के नायक यायावर हैं और उनकी यात्राएं भारत के बौद्ध तीर्थस्थानों से आरम्भ होकर सिंहलद्वीप तथा महाचीन तक की

भूमि तक हैं। उपन्यासान्तगत ये यात्रा विवरण उपन्यास शिल्प का अंग बन गये हैं और उसका नियमन करते हैं। इसलिए मुख्य केन्द्रस्थलों के अतिरिक्त समूचे भारत तथा ईरान को घटनास्थल के रूप में उपन्यासकार ने ग्रहण किया है। राहुल जी ने देश अथवा भूगोल वणन म पर्याप्त सतकता से काम लिया है। ऐतिहासिक उपन्यासों में भौगोलिक वणनों की ओर जितना ध्यान राहुल ने दिया है उतना किसी अन्य उपन्यासकार ने नहीं। राहुल जी के उपन्यासों में भूगोल के अनेक मानचित्र हैं। भौगोलिक यथार्थता एव सजीवता राहुल जी की महती विशिष्टता है।

राहुल जी के उपन्यास ऐतिहासिक हैं आचलिक नहीं। फिर भी वे जब किसी प्रदेश विशेष का भौगोलिक विवरण प्रस्तुत करते हैं अथवा यात्रा प्रदेशों का वणन करते हैं तो उस अचल विशेष का पूरा बिम्ब प्रस्तुत हो जाता है। इसीलिए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी उनके उपन्यासों में स्थानीय रंग की महत्ता स्वीकारते हैं।[२४६] उपन्यासान्तगत नगर वणन और यात्रा वणन राहुल के भौगोलिक ज्ञान के प्रतीक हैं। उन्होंने अपने नायकों की यात्रा में अन्य नगरों का विशद वणन किया है। 'विस्मृत यात्री' के नायक की जन्मभूमि उद्यान प्रदेश का वणन उदाहरणार्थ प्रस्तुत है— अपनी अपनी मातृभूमि सबको अच्छी लगती है इसलिए मैं किसी के कुरूप और असुन्दर होने की बात नहीं करता पर उद्यान तो सचमुच ही स्वग का उद्यान है। उत्तर की ओर कपूर श्वेत हिमों से आच्छादित उत्तुंग शिखरों की पंक्तियाँ कितनी सुन्दर मालूम होती है? बाल्य नेत्रों से मैंने पहले-पहल इन श्वेत शिखर पंक्तियों को देखा था

उद्यान की भूमि वही है जिसे कभी सुवास्तु कहा जाता था। अब भी हमारी एक नदी का नाम सुवास्तु (स्वात) है। हमारी नदियों का पानी, पानी नहीं दूध है। सुवास्तु उसे अपने सुन्दर वास्तुओं (गृहों) के कारण कहा जाता था और अब अपने मधुर फलों व उद्यानों के कारण वही उद्यान के नाम से प्रख्यात है। हमारे उद्यान की द्राक्षा उदुम्बर (अजीर) और दूसरे भी फल कितने मधुर होते हैं।[२५०] इसी प्रकार उद्यान की भूमि वहाँ की ऋतुओं निवासियों लोगों के रहन-सहन पशुचारण कृषि आदि का वणन लेखक ने बड़े विस्तार और तन्मयता से किया है।[२५१] 'जय यौधेय' म हिमालय के पवतीय सौन्दय ग्रामों एव ग्रामीणों तथा उनके रीति रिवाजों आदि का भी वणन हुआ है।[२५२] इसके अतिरिक्त गान्धार, काची सिंहल यौधेय भूमि का वणन भी 'जय यौधेय' में आया है। इस प्रकार राहुल के भौगोलिक वणन उनके ऐतिहासिक उपन्यासों को यथार्थता प्रदान करते हैं एव तत्कालीन वातावरण को मूत्त कर देते हैं। वे भौगोलिक मानचित्र प्रस्तुत कर ऐतिहासिक उपन्यासकार के कत्तव्य की रक्षा करते हैं। परन्तु लम्बे-लम्बे भौगोलिक वणनों एव विवरणों को प्रस्तुत करते समय लेखक यह विस्मृत कर बैठता है कि वातावरण निर्माण उपन्यास के लिए साधन मात्र है साध्य नहीं। राहुल जी का भूगोल वणन का मोह औपन्यासिक कथा को क्षति पहुँचाता है। विशेष रूप से विस्मृत यात्री में भौगोलिक वर्णन ही कथा का ढाँचा निर्मित करते हैं। परन्तु सवत्र ऐसा नहीं। सिंह सेनापति, मधुर

स्वप्न, 'जीने के लिए' तथा 'दिवोदास' में यह भूगोल वर्णन साधन-मात्र ही है। अभिप्राय यह है कि नगर-वर्णन एवं यात्रा विवरण 'विस्मृत यात्री' में बाधक हैं, पर अन्य उपन्यासों में उनका आनुपातिक समावेश ही है।

समाजगत वातावरण—राहुल जी की कला सर्जना की चरम परिणति जीवनगत यथार्थ के अंकन एवं प्राचीन भारतीय समाजगत वातावरण के सजीव चित्रण में प्रकट हुई है। शचीरानी गुर्टू लिखती हैं—"तत्कालिक पारिवारिक जीवन, उसकी जटिल समस्याएँ और मधुर रम्य प्रसंग, नाना की संकीर्ण मनोवृत्ति एवं आन्दर्शवादिता आदि को राहुल जी ने अपने उपन्यासों में अतुल क्षमता एवं आत्मप्रतीति के साथ अंकित किया है। प्राच्य और पाश्चात्य इतिहास का गम्भीरतम अध्ययन होने के कारण देश विदेश के प्रमुख प्रमुख आदर्शों और बौद्ध-संस्कृति का प्रभाव भी उनके ऐतिहासिक निरूपण में द्रष्टव्य है।'[१५३]

(क) राजनीतिक अवस्था—'दिवोदास से लेकर राजस्थानी रनिवास' तक के राहुल जी के ऐतिहासिक, सामाजिक राजनीतिक उपन्यासों की कालावधि अत्यन्त विस्तृत है। आर्य-युग से लेकर अधुनातन समाज को उन्होंने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। आर्य-जाति के इतिहास अंकन में वे विशेष सफल रहे हैं। श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त के शब्दों में—"आर्यों के प्राचीन इतिहास को कथा के साँचे में ढालने में राहुल की प्रतिभा विशेष रूप से चमकती है।"[१५४]

'दिवोदास' में दिवोदास शासित सप्तसिंधु के आर्यों की राजनीतिक दशा का सुन्दर चित्र प्रस्तुत है। यह युग जनों का युग है। जनों की संख्या अनेक है जिनमें मुख्य पाँच जन हैं—"पुरु, यदु, द्रुह्यु, तुर्वश और अनु।"[१५५] जनों की आगे कई शाखाएँ हैं जैसे पुरु-जन कुशिक, भरत, तृत्सु आदि शाखाओं में विभक्त था।[१५६] पुरु जन का सम्मान सर्वाधिक था और यह राजवंश वीरता एवं निर्भीकता में अग्रणी था। पुरुकुत्स इस जन के राजा थे। आर्य-जनों में परस्पर फूट थी, इसी कारण वे जर्जरित हो रहे थे। बध्र्यश्व और उनके पुत्र दिवोदास ने आर्यों को एकसूत्र में बाँधने का भरसक प्रयत्न किया तथा आर्य राज्य का पूर्व में विस्तार किया। राज्यविस्तार के लिए आर्य पणियों और किरातों से संघर्षरत थे। दिवोदास ने शम्बर वध करके असुरों की सौ पुरियों पर अधिकार स्थापित कर लिया। इस प्रकार यह युग आर्यों और किरातों का संघर्षयुग था जिसमें आर्यों ने किरातों पर अपनी प्रभसत्ता स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। दिवोदास के राज्यकाल में आर्य जन प्रथा से निकल कर सामन्ती शासन-व्यवस्था में आ चुके थे और पितृ-सत्ता के स्वच्छन्द वातावरण से निकल राजा की निरंकुशता की ओर बढ़ रहे थे। पर वे जनतन्त्र के नियमों की अवहेलना नहीं करते थे।

दिवोदासकालीन शासन नीति में पुरोहित का महत्त्वपूर्ण स्थान था। पुरोहित केवल राजा को यज्ञ और धार्मिक कृत्यों में ही सलाह नहीं देते थे वरन् राजनीति में भी उनका सक्रिय सहयोग था। दिवोदास के शिक्षक एवं पुरोहित भरद्वाज ऋषि

पुरोहित मात्र नही थे बल्कि युद्ध की कला म निपुण थे। साथ ही आर्यों की महत्वा काक्षा क प्रतीक थे।[२४७]

सिंह सेनापति म ५०० ई० पू० की साम्राज्यवादी शासन प्रणाली एव गण तन्त्रीय शासन व्यवस्था का तुलनात्मक चित्र है। मगध म पहली प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था थी जिसके सूत्रधार बिम्बसार और अजातशत्रु थे और गान्धार तथा वैशाली म दूसरे प्रकार का शासन प्रबन्ध था जिसके स्वरूप की विशद व्याख्या राहुल जी को अभीष्ट है। प्रथम शासन प्रणाली के प्रति उनकी घृणा व्यक्त है और दूसरी के प्रति अनुरक्ति। राजाओ एव सम्राटो के लिए लेखक न 'रजुल्ला' शब्द का प्रयोग किया है। राजतन्त्र शासन प्रणाली राहुल जी की दृष्टि म जनहिताय की विरोधिनी है।[२४८] इसके विपरीत गणशासित प्रदेशो की राजनीतिक अवस्था अधिक व्यवस्थित एव जन हिताय है। तक्षशिला एव वैशाली मे इसी गणतन्त्र शासन प्रणाली का निदर्शन है। गणतन्त्र म कोई किसी का स्वामी नही, वहा दास और स्वामी का भेद नही। इन प्रदेशो की शासन-व्यवस्था गण-सस्था द्वारा सचालित होती है। गणसस्था के प्रधान को गणपति कहते है। गणसस्था के सभी सदस्य गणतन्त्र की सभी मर्यादाओ का पालन करने की शपथ लेत हैं। गणसस्था म निर्णय बहुमत से होता है और निर्णय से पूर्व छन्द शलाका द्वारा मत जाना जाता हैं। इस प्रकार 'सिंह सेनापति' मे दो विरोधी राज्य व्यवस्थाओ के सघर्ष क चित्रण द्वारा राहुल जी ने तत्कालीन वातावरण का साकार रूप प्रदान किया है।

'जय यौधेय' गुप्तकालीन राजनीतिक रगमच को प्रस्तुत करता है। इस समय भारत म साम्राज्यवादी शासन-व्यवस्था अपनी नीवा को सुदृढ कर चुकी थी। समुद्र गुप्त एव चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य चक्रवर्ती सम्राट् थे। इस काल म भी गणराज्यो का सर्वथा उच्छेद नही हुआ था। यौधेय आदि गणो की स्थिति पर्याप्त सुदृढ थी। इस उपन्यास म भी दो विरोधी शासन व्यवस्थाओ के सघर्ष को दर्शाया गया है। यहाँ भी साम्राज्यवाद के दूषणो एव गणतन्त्र प्रणाली के गुणो का वर्णन है। साम्राज्यवादी शासन व्यवस्था म पुत्र इसी ताक म रहता है कि बाप कब मरेगा। बाप की चिता भी ठण्डी नही होन पाती कि भाई एक दूसरे का सिर काटने लगत है।[२४९] इसके विपरीत गणराज्य म सारी भूमि सारे वन की समझी जाती है यौधेय अपने को एक घर का सगा भाई समझत हैं।'[२५] साम्राज्यवाद म सम्राट सारी भूमि का स्वामी है जनता उसक लिए दास स बढकर कुछ नही उसका राजप्रासाद सुन्दरियो से भरा रहता है पुरोहित उसकी प्रशस्ति गात है कवि उसकी यशोगरिमा की कविताए लिखत हैं—वह सर्वोपरि है सब उसकी इच्छा के क्रीडाकन्दुक हैं। गणतन्त्रीय यौधयगण गणशासन म आस्था रखता है। वहा किसी को कोई बन्धन नही वहा प्रेम स्वच्छन्द वातावरण म विकसित होता है वहाँ कोई स्वामी नहीं कोई दास नहीं सभी समविभूत समान है। उपन्यास के अन्त म आजीवन विरोध करते रहन पर भी यौधेयगण चन्द्र गुप्त की तीव्र राज्य लिप्सा के सम्मुख विनष्ट हो जाता है। शचीरानी गुर्टू लिखती

हैं— राहुल जी के प्रख्यात 'सिंह सेनापति और जय यौधेय' उपन्यास उनकी समृद्ध कल्पना की सहज उद्भूति है जिनमें लिच्छवि और यौधेयों के गणजीवन की अनेकरूपता उनके विरोधी राजकुलों का वर्णन और समकालीन परिस्थितियों के विभिन्न पहलुओं का सम्यक् चित्रण हुआ है।'[१६१]

'मधुर स्वप्न' में राहुल प्राचीन ईरान के इतिहास को कथा के रूप में उठाते हैं। एक ईरानी परम्परा के अनुसार सासानी वंश में उत्पन्न व्यक्ति ही ईरान के राजसिंहासन का अधिकारी हो सकता है। कवात इसी वंश का स्वेच्छाचारी शासक है। ईरानी राजाओं का जीवन भारतीय शासकों की तरह ही संकट का जीवन है उनके सबसे नजदीक के सम्बन्धी उनके जीवन के ग्राहक होते हैं। राजाओं एवं उनके सामन्तों को जनता के दुःख दर्द सुनने का अवकाश नहीं है। ईरान की राजनीति में यह युग सामन्तवादी युग था। राज्य में सभी ऊँचे ऊँचे पद भिन्न भिन्न सामन्तीय वंशों के लिए निश्चित थे। सामन्ती जीवन की विलासिता तथा उसकी देन—नारकीय जनजीवन—का चित्रण राहुल जी ने सजीव रूप में प्रस्तुत किया है।[१६२]

विस्मृत यात्री में उद्यान प्रदेश की स्थिति का वर्णन है। उद्यान प्रदेश कश्मीर के राजा मिहिरकुल के अधीन था। सन ५४७ में मिहिरकुल की मृत्यु पर उद्यान स्वतन्त्र हो गया। कम्बोज आदि में सामन्तों ने छोटे छोटे राज्य कायम कर लिए थे, परन्तु उद्यान में स्थानीय राजवंश ने फिर से प्रभुता स्थापित कर ली थी।[१६३] विस्मृत यात्री' में कथानक भारत से बाहर अपनी यात्रा चीन तक करता है। उपन्यासकार ने चीन की राजनीतिक स्थिति की ओर भी संकेत किया है। महाचीन उत्तर तथा दक्षिण दो राज्यों में विभक्त था। इन राज्यों में राजनीतिक परिवर्तन थोड़े-थोड़े समय के बाद होते रहते थे।[१६४]

जीने के लिए' आदि राजनीतिक सामाजिक उपन्यासों में बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध के भारतीय समाज का अंकन है। जीने के लिए में अंग्रेजी प्रभुसत्ता से मुक्ति प्राप्त करने के लिए भारतीयों द्वारा किये गए प्रयत्नों की झांकी मिलती है। अंग्रेजी राज्य के उच्छेद के लिए आतंकवादी क्रान्तिकारिता, प्रथम विश्वयुद्ध अंग्रेजी साम्राज्य वाद के अत्याचार, रौलट एक्ट जलियाँवाला-बाग काण्ड तिलक स्वराज्य फण्ड असहयोग की तैयारी सत्याग्रहियों एवं स्वयं सेवकों को कारावास का दण्ड आदि का उपन्यास में वर्णन बीसवीं शती में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भारतीयों के संघर्षों की कहानी है।[१६५] स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन और अंग्रेजों द्वारा उनका नृशंसतापूर्ण दमन—यही इस समय की राजनीतिक अवस्था का रहस्य है। 'भागो नहीं दुनिया को बदलो' उपन्यास में समाजवादी प्रजातन्त्र की स्थापना राहुल जी का उद्देश्य है। स्वतन्त्र भारत को मार्क्सवादी मार्ग-दर्शन लेखक को अभीष्ट है। अन्नवृद्धि, कल कारखानों का प्रसार आदि समस्याओं पर उपन्यास में विचार किया गया है, जिससे तत्कालीन वातावरण की झांकी भी मिल जाती है।[१६६]

(ख) सामाजिक अवस्था—सामाजिक अवस्था के अन्तर्गत

समाज के रीति रिवाजो तथा उसके आहार, वेशभूषा, रहन सहन आदि का समावेश होता है। राहुल जी के उपन्यास विविध कालो एव देशो से सम्बद्ध हैं। अतएव समाज चित्रण के विविध रूप उनके उपन्यासो मे द्रष्टव्य हैं। दिवोदास मे ऋग्वेद के अनुकूल आर्य जनजीवन उसके आहार विहार वेशभूषा रहन सहन आदि का उल्लेख है। प्राचीन भारत के लोगो का रहन-सहन सरल एव आडम्बर रहित था। आर्य नदियो के समीप गाव मे झोपडियो मे रहते थे। उनके ग्राम स्थायी नही थे। उनकी पुरिया लकडियो की बाटो वाली मोर्चाबन्दी से घिरी रहती थी।[१६७] आर्यों के भोजन मे पौष्टिक पदार्थों की प्रचुरता थी। मास, सोम सत्तू दूध उनके भोजन की मुख्य वस्तुएँ थी।[१६८] आर्यों की वेशभूषा सीधी-सादी थी। आर्य पुरुष चमडे या ऊन की द्रापी पहनते थे। उनकी पोशाक मे उष्णीष का भी प्रयोग होता था।[१६९] आर्य पुरुष और स्त्रिया शारीरिक सज्जा की ओर विशेष ध्यान देते थे। पुरुष स्त्रियो की तरह लम्बे केश रखते थे। बालो को इकट्ठा करके वे जूडे का रूप दे देते थे जिसे कपर्द कहा जाता था। आर्य स्त्रिया मणि मुक्ता और सुवर्ण के शोभन (मणटीका) बहुत पसन्द करती थी। पुरुषो की द्रापिया सोने के तारो से खचित रहती थी।[२] इस प्रकार दिवोदास मे आर्यों के रहन-सहन भोजन, वेश भूषा और सज्जा का यथार्थ चित्रण हुआ है।

सिंह सेनापति मे गणराज्यो के सामाजिक जीवन का चित्रण राहुल जी को अभीष्ट है। तक्षशिला और वैशाली के वर्णन मे लेखक ने वहा के लोगो के निवास, भोजन आदि का उल्लेख किया है। तक्षशिला और वैशाली दोनो के आवास स्थान प्राय एक से हैं। वे आडम्बर रहित परन्तु सुरुचिपूर्ण हैं।[२७१] लिच्छवियो का भोजन पूरा आर्यों से साम्य रखता है। दूध घी सुरा तथा नाना प्रकार का मास उनके खान पान के विषय अग है। दधि मधु और सत्तुओ का घोल भी उन्हे अत्यन्त प्रिय था। आवास एव भोजन के अतिरिक्त उपन्यास मे उनकी वेश भूषा-सज्जा का भी उल्लेख है। पुरुष अन्तर्वासक (धोती) और उत्तरीय (चद्दर) पहनते थे और स्त्रिया उत्तरीय अन्तर्वासक के अतिरिक्त छोटे कचुक पहनती थी। जूता पहनने का भी रिवाज था। स्त्रियो को आभूषणो से अधिक प्रेम नही था। धातु के आभूषणो की जगह वे लता के पत्र फूल आदि को आभूषणो के रूप मे प्रयोग करती थी।[२७२] गण राज्य की स्त्रियो और राजप्रासादो की राजकुमारियो की वेश भूषा मे बहुत अन्तर था। राजकन्याएँ भार शरीर में आभूषणो मे लदी रहती थी। राजकुमारी विद्या की भूषा सज्जा राजकन्याओ की आभूषणप्रियता का प्रतीक है।[२ १] जय यौधेय मे भी अन्त पुर की रानियो के वस्त्राभूषण इसी प्रकार के दिखाए गय हैं। आभूषणो के अतिरिक्त शारीरिक सज्जा मे स्त्रिया आँखो को पतली सी अजन रेखा से अजित करती थी पैरो मे अलक्तक और अगो मे अगराग और मुख पर मुखचूर्ण का भी प्रयोग करती थी।[२७४] यौधेयो और लिच्छवियो के भोजन आदि मे भी पर्याप्त साम्य है। जय और चन्द्र को लकडी की आग पर भुने पूरे सूअर का मास बहुत पसन्द है। 'जय यौधेय' मे जय की विविध

यात्राओ के प्रसग हैं। इन यात्राओ म आए विविध स्थानो के स्त्री पुरुषो की वेश भूषा का लेखक ने बारीकी से अन्तर स्पष्ट किया है। गाधार की पोशाक यौधेयों म भिन्न थी। "उनका सुत्थन बहुत घिरावेदार और ऐसा टढा मेल सिला होना कि कपडे की ऐंठन बहुत-सी तिरछी रेखाएँ बनाती है। गाधारियो का सुत्थन भी उसी तरह का होता है। स्त्री-पुरुष दानो कचुक पहनते हैं। सिर पर गाधारियो उत्तरीय और गाधार उष्णीष (पगडी) रखते ह। पैरो म गोला क तलीदार जूते हैं।[३४] 'विस्मृत यात्री' म उद्यान निवासी ऋतु अनुकूल गाँवो को बदलते रहते थ। जाडा म वडी नदियो के निचले भागो म वसन्त म पहाडो के ऊपरी गाँवो म वर्षा म पयारो (अधित्यकाओ) म रहते थे।[३५] उद्यान निवासी घनी दाढी मूछ रखते थे। यहाँ के लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी थे परन्तु मास उनका प्रिय भोजन था।[३६] इसके अतिरिक्त द्राक्षा तथा दूसरे सूखे फल, गेहू की रोटी तथा शाली (धान) भी उनके भोजन के अग थे।[३७]

प्राचीन ईरान ('मधुर स्वप्न') म वग-वषम्य के कारण धनी और निधन के भोजन, आवास आदि मे पर्याप्त अन्तर था। अमीर (जिनम राजा पुरोहित तथा सामन्त सम्मिलित हैं) भव्य प्रासादो म रहते थे गरीब तग तथा अधेरी कोठरियो म। नगरी के राजपथो और वाथियो म मृत्यु नग्न ताण्डव कर रही है और इधर वचुक और विम्पोह भोज उडा रहे हैं।[३८] अत पुर की भोजनशाला का एक दृश्य अमीरो के भोजन, रहन-सहन का चित्र प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त है—'अत पुर की भोजनशाला म नाना व्यजनो की मधुर गध आ रही थी। गर्म मास शीतल मास, पक्षिमास मेष मास दो मास के बतमर का मास जतून के तेल म पका श्वेत पाक सिरके के साथ भिगो कबूतर, हस चकोर और तीतर का तला मास घोडे की छाती का मास, नाना भाति के मास सोने की थालियों म अलग अलग सजा के रखे जा रहे थे। भोजन के अतिरिक्त पान भी भिन्न भिन्न प्रकार के सजा के रखे जा रहे थे।[३९] सामन्ती जीवन की झाँकी के कई चित्र उपन्यास म वातावरण को सजीव रूप म प्रस्तुत करते हैं। उनकी वेशभूषा साज सज्जा आदि का अलकृत भाषा म राहुल जी ने अकन किया है। इसके विपरीत सामान्य जन जीवन की मामूली आवश्यकताओ स भी वचित था।[४०] 'मधुर स्वप्न' मे पूमतुआ के जीवन की भी झाकी है।[४१]

जीने के लिए उपन्यास मे आधुनिक भारत के नागरिक एव ग्रामीण वातावरण का अकन है। भारत क धनिक नगरो म पक्के मकानो म ठाट-बाट से रहते हैं।[४२] ग्रामो म रहने वाले किसान और कमकरो का रहन सहन उनकी निर्धनता का प्रतीक है। गाव के मकान कच्चे, घास फूस की छतो वाले तग और सील-युक्त हैं। ग्रामीणो का खान पान दाल रोटी तक सीमित है, जौ की रोटी नून मिरच कडवा तेल मजदूरो का खाद्य है। सोने क लिए चारपाई नही, पुआल ही उनकी शय्या है।[४३] खान पान में पौष्टिक पदार्थों के अभाव क कारण य लोग अस्वस्थ रहते हैं। बीमारी की अवस्था में इलाज करवाने में भी असमर्थ हैं।[४४] इस उपन्यास में कारा

गहा के भोजन का वणन स्त्रियों के रहन-सहन का चित्र प्रस्तुत करता है।[१८६] राजस्थानी रनिवास में अन्तःपुर की नारियों की करुण दशा के अकन के साथ-साथ उनकी वेश भूषा आदि का भी यथार्थ चित्र प्रस्तुत हैं। इस प्रकार राहुल जी ने अपने उपन्यासों में विविध युगों के सामाजिक जीवन के चित्र अंकित करते हुए उनके खान पान वेश भूषा सज्जा रहन सहन आदि के वर्णन द्वारा वातावरण को सजीव बना दिया है।

(ग) आर्थिक अवस्था—राहुल के उपन्यासों में प्राचीन तथा आधुनिक भारत की एवं प्राचीन ईरान की आर्थिक स्थिति का भी सफल अंकन हुआ है। आर्थिक दृष्टि से सप्तसिन्धु के आर्यों का जीवन सम्पन्न था। आर्यों का मुख्य धन गाय घोडे और भेड बकरियाँ थी।[१८७] वे कृषि भी करते थे क्योंकि जौ के सत्तू और अपूप उनके आहार में सम्मिलित थे। अधिक धनी और प्रभुताशाली आर्य पशुपालन और कृषि में दास दासियों की सहायता लेते थे पर साधारण आर्य स्वयं ही कृषि और पशु-पालन का काम करते थे। आर्यों के समकालीन पणि वाणिज्य-व्यापार करते थे और वे पर्याप्त धनी थे।[१८८]

सिंह सेनापति और जय यौधेय में गान्धार वैशाली तथा अग्रोदका के गण राज्यों के वैभव का वर्णन है। वैशाली की समृद्धि तथा तक्षशिला के गौरव के वर्णन में राहुल जी ने गणशासित प्रदेशों की आर्थिक अवस्था का सजीव वर्णन किया है। वैशाली की समृद्धि का वर्णन राहुल सिंह के शब्दों में करते हैं—'वैशाली स्फीत समृद्ध है। उसकी क्यारियाँ गन्धशाली पैदा करती हैं उसकी गायों का दूध घी, मांस लिच्छवियों के शरीर को हृष्ट पुष्ट करते है।[१८६] तक्षशिला के व्यवसाय का वर्णन राहुल जी इस प्रकार करते हैं— कर्मान्तों और उद्यानों की सम्पत्ति के अतिरिक्त वाणिज्य तक्षशिला के नागरिकों की आजीविका का बडा साधन है। स्थल मार्ग से प्राची की वस्तुओं को पार्श्वों बवरुओं और यवनों के देशों में पहुँचाने में सहायता पहुँचाना तक्षशिला के स्थल सार्थों का मुख्य काम है। तक्षशिला यदि श्रावस्ती राजगृह कौशाम्बी, उज्जयिनी से भी अधिक समृद्ध है तो उसका प्रधान कारण यही है।[१६०] जय यौधेय में गुप्त साम्राज्य और यौधेय गण की सम्पन्न आर्थिक स्थिति के संकेत है। जय चन्द्रगुप्त के विषय में कहता है — अपने राज्यकोष को वह भरता जा रहा था, लेकिन साथ ही प्रजा को भी सन्तुष्ट रखना चाहता था। रास्तों को अब उसने चोरों और डाकुओं से अकटक कर दिया था। पान्थों और सार्थों के ठहरने के लिए जगह जगह पान्थशालायें, कूप और वापी बनवाई थी उसके दीनारो में बहुत शुद्ध सोना था और वह तरह तरह के थे।[१६१]

मधुर स्वप्न में प्राचीन ईरान की जिस आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया है वह अत्यन्त वैषम्यपूर्ण है। अमीर अत्यन्त अमीर हैं और गरीब अत्यन्त गरीब। दुर्भिक्ष की अवस्था में कमकरो कृषकों आदि के पास खाद्यान्न नहीं है और सामन्त सोना चान्दी बटोरने का उपक्रम कर रहे हैं।[१६२] सामाजिक विषमता के अत्यन्त करुण

चित्र उपन्यास के आरम्भिक पृष्ठों में द्रष्टव्य हैं। 'विस्मृत यात्री' में महाचीन की आर्थिक स्थिति का विवरण है। महाचीन में भी कुछ लोग ही धन-सम्पन्न हैं अधिकांशत अर्थ-संकट से ग्रस्त हैं।[२६३]

जीने के लिए उपन्यास में भारत (२०वी शती पूर्वार्द्ध) की आर्थिक स्थिति को राहुल ने अंकित किया है जो अत्यन्त यथार्थ है। भारतीय ग्रामीण जनता की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। अधिकांश कृषक ऋण ग्रस्त हैं और ब्याज की दर अधिक होने से वे आजीवन अधमर्ण ही रहते हैं। आजीविका के लिए लोग ग्रामों को छोड़कर दूर नगरों में नौकरी करते हैं, वहाँ भी मजदूरी बहुत थोड़ी है। देवराज के परिवार की आर्थिक स्थिति के अंकन में लेखक ने भारतीय ग्रामीण जनता की आर्थिक स्थिति का चित्र प्रस्तुत किया है।[२६४] सामाजिक वैषम्य शहरी जीवन में अधिक स्पष्ट है।[२६५] यही स्थिति मागो नहीं दुनिया को बदलो में भी अंकित है।

प्रकृतिगत-वातावरण—वातावरण-सृजन में राहुल के उपन्यासों के प्राकृतिक दृश्य भी सहायक हुए हैं। राहुल स्वयं महान यायावर थे और उनके कथा-नायक नरदेवदत्त, जय सिंह आदि भी घुमक्कड़ हैं। इन नायकों की यात्राओं में विविध प्राकृतिक दृश्यों एवं स्थानों का जहाँ भी आगमन हुआ है, राहुल ने वहाँ की प्राकृतिक छटा का अवश्य ही अंकन किया है। राहुल बाह्य प्रकृति को जीवन सौन्दर्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग स्वीकारते हैं।[२६६]

राहुल तथा उनके कथानायक दोनों ही पर्वतीय सौन्दर्य पर अनुरक्त हैं। हिमालय के प्रति उनका सर्वाधिक आकर्षण है। गिरिराज हिमालय तथा अन्य पर्वतों और उन पर उगी हुई वनस्पति के सजीव चित्र उनके उपन्यासों में अंकित हैं। हिमालय के तुषारमण्डित उत्तुंग शिखरों एवं गगनस्पर्शी देवदारुओं का वर्णन मनोमुग्धकारी है।[२६७] फलदार वृक्षों के भी आकर्षक चित्र राहुल ने प्रस्तुत किए हैं।[२६८] सजे सजाए वृक्षों से युक्त उद्यान का सौन्दर्यांकन तो लेखक को और भी प्रिय है।[२६९]

राहुल के उपन्यासों में प्रकृति चित्रण ऋतु वर्णन के रूप में अधिक हुआ है। षड्ऋतु वर्णन उनके प्रकृति चित्रण की प्रमुख विशेषता है। वसंत, ग्रीष्म वर्षा, शरद हेमन्त तथा शिशिर—सभी का वर्णन अल्पाधिक रूप में उनके उपन्यासों में बिखरा हुआ है। वसन्तागमन और वसन्तावसान के चित्र मधुर स्वप्न में हैं। वसन्त ऋतु का एक चित्र द्रष्टव्य है—"तिग्रा और दुपरात की उपत्यका में प्रकृति नव जागृत हुई थी। वसन्त ने जाड़े की मृत्युच्छाया को हटाकर सभी जगह आनन्द का जीवन सचारित किया था। वृक्षों की पत्तियाँ कुड्मलित हो रही थीं या कोमल किसलय निकल आये थे। पुष्पवाटिकाएँ सर्वत्र हरित तृण और उत्फुल्ल पुष्पों से आच्छादित थीं।"[३] वसन्तावसान अथवा ग्रीष्मागमन के वर्णन में ऋतु अनुकूल पुष्पों, फलों एवं मदमाती दूबा का वर्णन मधुर स्वप्न में सजीव बन पड़ा है।[१]

वर्षा ऋतु का वर्णन 'जय यौधेय' में प्रस्तुत है। जय को प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यन्त प्रभावमय प्रतीत होता है। वह कहता है—"आज यह घने बादल छाये हुए हैं।

एक ओर गुजरात सागर की जलराशि की विशाल दर्पन चादर तनी हुई है और दूसरी ओर यह हरितशाली की घाटी। वन नत्य के साथ मयूर-ध्वनि मिश्रित हो रही है। ऊपर शरीर में शीतल मन्द पुरवा लग रही है। किस प्रकृति का यह रूप पुर्नजित न करेगा।[३२] यहाँ राहुल ने प्रकृति के मानव पर पड़े प्रभाव का संक्षिप्त अंकन किया है। विस्मृत यात्री में वर्षा ऋतु में सुवास्तु तट की छवि साकार हो उठती है।[३३] अन्य तीन ऋतुओं—शरद, हेमन्त और शिशिर को—पृथक रूप में न लेकर राहुल ने सभी को शीतकाल के रूप में ही प्रस्तुत किया है। हेमन्त के एकाध स्वतन्त्र चित्र भी हैं, परन्तु ये वसन्त और वर्षा के चित्रों की तरह सरस नहीं।[३]

ऋतु-वर्णन के अतिरिक्त राहुल ने नदियों, पर्वतीय उपत्यकाओं, सन्ध्या एवं रात्रि आदि का भी प्राकृतिक सौंदर्य अंकित किया है। 'वोल्गा' में परुष्णी (रावी) और विपाशा (व्यास) आदि सात सिन्धुओं का वर्णन है।[३४] मधुर स्वप्न में तिग्रा का वर्णन भावाक्षिप्त रूप में हुआ है। यहाँ नदी और उसके तट पर स्थित राजभवन का सजीव वर्णन हुआ है।[३५] तिग्रा की निम्नगामिता का प्रभावशाली चित्र भी उपन्यास में है।[३७]

राहुल के प्रकृति चित्र कई स्थलों पर औपन्यासिक कथा के अंग बन गये हैं। उनके पात्र अपनी यात्राओं में प्राकृतिक सौन्दर्य को आप्यायित करते हुए अग्रसर होते हैं। 'मधुर स्वप्न' में प्रकृति का एक ऐसा ही चित्र प्रस्तुत है— चौथे दिन सूर्यास्त से कुछ पहले सवार नदी के एक भाग को पार करते ही खुली उपत्यका में पहुँचे। यह जगह काफी खुली तो थी ही साथ ही यहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य की अपार राशि एकत्रित थी, जिसे देखकर सवारों को मालूम हुआ कि वह किसी दूसरे लोक में आ गए हैं। यहाँ पहाड़ों के चारों ओर वृक्षों की हरियाली दीख पड़ती थी। जगह-जगह झरने बह रहे थे जहाँ-तहाँ कुछ नग्न पाषाणों को छोड़कर सभी जगह घास, जंगली फूल लगे हुए थे। नदी कुछ समतल सी भूमि में चलने की वजह से पत्थरों पर सतरंगित हो चलती थी इतनी घर्घर ध्वनि नहीं कर रही थी।[१८]

प्राकृतिक वातावरण अंकित करते हुए राहुल ने सन्ध्या और रात्रि के अलंकृत एवं रोचक चित्र प्रस्तुत किये हैं। 'मधुर स्वप्न' से सन्ध्या का एक चित्र द्रष्टव्य है— 'सन्ध्या के समय प्रतीची को अरुण राग से रंजित कर एक ओर सूर्य का लोहित मण्डल लुप्त होने को था और दूसरी ओर पूर्ण चन्द्र के प्राची के क्षितिज पर आगमन की प्रतीक्षा के सारे लक्षण दिखलाई पड़ रहे थे। पक्षिगण अपनी कुलायों पर पहुँच कर रात्रि के मौन और विश्राम के पहले कलरव कर रहे थे।[३६] रात्रि की नीरवता का चित्र भी इसी उपन्यास में है।[३१]

राहुल जी के प्रकृति चित्र स्थिर एवं गत्यात्मक दोनों प्रकार के हैं। 'विस्मृत यात्री' में अस्त होते हुए सूर्य का अंकन प्रकृति के शान्त रूप का स्थिर चित्र प्रस्तुत करता है।[३११] इसके विपरीत जय यौधेय में हिमालय की चंचल चपल नदियों का चित्र गत्यात्मक कहा जाएगा। इस चित्र में नदियों एवं नारियों का तुलनात्मक रूप

अत्यन्त आकर्षक बन पड़ा है।[३१२] यात्रा प्रसंगों में विभिन्न स्थानों की प्रकृति के तुलनात्मक चित्र 'सिंह सेनापति' में भी मिलते हैं।[३१३]

इस प्रकार राहुल के उपन्यासों में प्राकृतिक वातावरण के विविध रूप प्रस्तुत हैं। स्थान विशेष के प्राकृतिक सौन्दर्य को अंकित कर उन्होंने वातावरण को सजीवता एवं मनोहारिता प्रदान की है। राहुल के प्रकृति चित्र विविध हैं—आलम्बन रूप में प्रकृति इतिवृत्तात्मक एवं परिगणनात्मक रूप में भी प्रस्तुत हुई है और उसके संश्लिष्ट एवं आकर्षक रूप भी हैं। आलम्बन चित्रों में राहुल ने प्रकृति के भव्य एवं रम्य[३१४] सरल और शुष्क[३१५] स्वतन्त्र एवं तुलनात्मक चित्र अंकित किये हैं। उद्दीपन एवं भावाक्षिप्त रूप में भी प्रकृति प्रस्तुत हुई है और साथ ही उसके अलंकृत रूप की साज सज्जा भी विद्यमान है। राहुल के इन विविध प्रकृति चित्रों की उपयोगिता भी है। ये चित्र वातावरण निर्माण के अंग तो हैं ही कथा विकास के भी अंग बन गये हैं और पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उभारने में भी सहायक हुए हैं। हमारे इस विवेचन से स्पष्ट है कि राहुल के प्रकृति चित्र इतिवृत्तात्मक और मात्र चलते हुए नहीं हैं जैसा कि डा० प्रभाकर मिश्र ने माना है।[३१६] राहुल जी के बहुत से चित्र इतिवृत्तात्मक अथवा परिगणनात्मक मात्र न होकर रसात्मक भी हैं।

समग्रतः राहुल जी अपने ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों में वातावरण सृजना के प्रति विशेष सजग प्रतीत होते हैं तथा समाजगत एवं प्रकृतिगत—दोनों प्रकार के वातावरण अंकन में वे सफल रहे हैं।

जीवन दर्शन एवं उद्देश्य

उपन्यास का लक्ष्य मानव-जीवन की व्याख्या है। प्रायः सभी उपन्यासकार एवं साहित्याचार्य अपनी अपनी शब्दावली में मानव-जीवन की अभिव्यक्ति को ही उपन्यास का उद्देश्य मानते हैं। हेनरी जेम्स लिखते हैं— उपन्यास के अस्तित्व का एक ही कारण है कि वह मानव जीवन की अभिव्यक्ति का प्रयत्न करता है। यदि उपन्यास इस प्रयत्न को छोड़ दे, तो चित्रकला के समान इसकी विचित्र दशा हो जाएगी।[३१७] रल्फ फॉक्स उपन्यास को मानव जीवन का गद्य स्वीकारते हैं। उनकी दृष्टि में यह ऐसी पहली कला है जो सम्पूर्ण मानव को लेकर उसे अभिव्यक्ति प्रदान करने की चेष्टा करती है।[३१८] जनेन्द्र भी उपन्यास को मानव जीवन को गति देने वाला साहित्य मानते हैं।[३१९] वस्तुतः उपन्यास-साहित्य परिवर्तित होते हुए मानव समाज का इतिहास है और यही उसका महत्त्व है।[३२०] इस प्रकार मानव जीवन की विविध समस्याओं का विवेचन उपन्यासकार का अभीष्ट है। वह जीवन के प्रति अपने विशिष्ट दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति के लिए इस कथा रूप का आश्रय लेता है। जीवन के प्रति यह विशिष्ट दृष्टिकोण उपन्यासकार का जीवन दर्शन कहा जा सकता है।

राहुल सांकृत्यायन कला के उपयोगितावादी सिद्धान्त के अनुगामी हैं। वे आस्था धारणा या चिरस्थायी विश्वास के अच्छे-बुरे होने की कसौटी बहुजनहित

और बहुजन अनहित को स्वीकारत हैं[३२१] तथा साहित्य म वे शिव तत्त्व को 'सुन्दरम्' की अपेक्षा अधिक महत्त्व दत है। इसी कारण उनके औपन्यासिक कथारूपा म कला त्मकता का क्षति पहुची है परन्तु जिस स्पष्ट एव स्वस्थ रूप स उन्होने अपनी विचार धारा एव जीवन दर्शन को अभिव्यक्त किया है वह असदिग्ध रूप म प्रशसनीय है। वस्तुत राहुल जी का स्पष्ट जीवन-दर्शन था। अतीत की ओर जाने का उनका उद्देश्य था, अपन उस जीवन दर्शन को गहनता स प्रभावित करना तथा सामाजिक परम्परा को समझने म मन्द देना।[३२२] शचीरानी गुर्टू इस विषय म लिखती हैं—'सामयिक जनजीवन के प्रति न केवल जागरूकता ही प्रत्युत एक मीमासक का दृष्टिकोण उनमे दीख पड़ता है। एक ओर तो वे भावनाओ के स्थान म बढ़कर चित्र विचित्र अनुभवो म कल्पना का रग भरते है दूसरी ओर एक स्वस्थ जीवन उपभावता की भाँति आध्यात्मिक तत्त्वो की अवहेलना करके बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अनात्मवाद और परिवर्तनवाद स खिचे रहते हैं।[३२३] डा० जगदीश गुप्त राहुल की पात्र सयोजना म उनके जीवन दर्शन की निहिति की ओर सकेत करत हैं—'जिन ऐतिहासिक पात्रो की ओर लखक ने सकेत किया है तथा जिनसे प्ररणा ग्रहण की है वे उनक जीवन दर्शन के प्रतीक हैं।[३२४] डा० नगेन्द्र स्पष्टत राहुल जी की औपन्यासिक कृतियो म द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के रूप मे उनका जीवन दर्शन देखते हैं।[३२५] डॉ० चण्डीप्रसाद जोशी राहुल जी की ऐतिहासिक एव सामाजिक राजनीतिक कृतियो म उनके इतिहास प्रेम का कारण उनका मार्क्स वादी दर्शन मानते हैं।[३२६] वस्तुत राहुल साकृत्यायन क ऐतिहासिक एव सामाजिक उपन्यासो का मूलभूत उद्देश्य मार्क्सवादी सिद्धान्तो के प्रचार एव प्रसार द्वारा आदर्श समाज के निर्माण को प्रोत्साहित करना है और इसी रूप म उनके जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है। श्री रत्नाकर पाण्डेय के शब्दो म—'राहुल का कृतित्व मायापुत्र गौतम के उपदेश से रूढ़ियो के बन्धन को काटता है। राहुल का दर्शन जीवन है समाज के लिए उपादेयतापूर्ण स्थिरता म इसी म उनको विश्वास है मिट्टी की ममता ने राहुल को भौतिकता का दर्शन दिया।'[३२७] राहुल जी क उपन्यासो म इस प्रकार मार्क्सवादी एव बौद्ध दर्शन की व्याख्या एव इन दोनो का समन्वय प्राप्त होता है, साथ ही व सवत्र एक प्रगतिशील साहित्यकार की तरह जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करत हैं। मक्सिम गोर्की की तरह[३२८] राहुल ने साहित्य क माध्यम से मार्क्सवाद को अकित किया है। यही कारण है कि अपने ऐतिहासिक उपन्यासो म प्राचीन काल से सम्बद्ध कथाओ के भीतर उन्होंने मार्क्सवाद की आधुनिक विचारधारा का सन्निवेश किया है।

मार्क्सवाद क आलोक मे उपन्यास—मार्क्सवाद एक बुद्धिग्राह्य वैज्ञानिक दर्शन-पद्धति है। वहा मनुष्य की सभी समस्याओ क विश्लेषण का प्रयत्न विवेकयुक्त होता है। वहाँ किसी अदृश्य अज्ञेय अपरोक्ष सत्ता या रहस्यात्मक शक्ति पर अव लम्बित नही रहा जाता। जो है प्रत्यक्ष प्रयोज्य और तर्क की सीमा म है।[३२९] राहुल जी मार्क्सवादी उपन्यासकारो म प्रतिष्ठित लखक हैं। उन्होंने ऐतिहासिक यथार्थवाद

की व्याख्या मार्क्सवादी सिद्धांतों द्वारा करने की परम्परा का आरम्भ किया है। उनके उपन्यासों का मूलभूत उद्देश्य मार्क्सवादी सिद्धान्तों के आख्यान द्वारा आदर्श समाज का निर्माण करना है। उनके औपन्यासिक कथानक मात्र माध्यम हैं और साध्य है जीवन। वे जीवन को अधिक समृद्ध बनाने के लिए लिखते हैं और इसी दृष्टि से अतीत की कथा भी कहते हैं।[33] राहुल जी का इतिहास की ओर झुकाव भी इसी कारण था कि वे अपने समाजवादी विचारों को अतीत के पृष्ठों में उद्धृत करना चाहते थे। राहुल ने अपने उपन्यासों में प्राचीन सामाजिक जीवन से नवीन साम्यवादी तत्वों को खोज निकाला है और यह प्रमाणित किया है कि जब कभी समाज में वर्ण सम्पत्ति आदि के आधार पर विषमता का समावेश हुआ है तब मानव जीवन ह्रासोन्मुख एवं पतनशील हुआ है।[111] राहुल जी की सभी औपन्यासिक कृतियाँ मार्क्सवादी विचारों की अभिव्यक्ति करती है। डा० गणपतिचन्द्र गुप्त राहुल के उपन्यासों में भौतिकतावादी जीवन दृष्टि का मुखरित देखते हैं— उन्होंने अतीत की विभिन्न घटनाओं एवं परिस्थितियों का अंकन करते हुए एसे तत्वों का उद्घाटन किया है, जिससे भौतिकवादी जीवन-दृष्टि वर्ग संघर्ष की भावना, रूढ़िवादिता की निस्सारता तथा साम्यवादी सिद्धांतों की पुष्टि हो सके।'[332] राहुल जी ने मार्क्सवादी विचारों के दिग्दर्शन के लिए इतिहास का सिंहावलोकन किया है। वे आर्यों के जीवन में भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में समाजवादी विचारधारा का सिंहावलोकन करते हैं। सप्तसिन्धु-काल के आर्यों में यद्यपि राजा का विकास हो रहा था फिर भी उनका सामाजिक जीवन साम्य के आधार पर था उनमें विषमता न थी—'अपनी जीविका के लिए उनके अपने गौ, अश्व, अजा अवि पर्याप्त थे। पर उनकी तो मान्यता थी— केवलाघो भवति केवलादी —केवल अपने आप खाने वाला केवल पाप खाने वाला होता है।'[333] एक अन्य स्थल पर भरद्वाज खानपान के पदार्थों को सभी के लिए समान कहते हैं।[334] 'दिवोदास' में यद्यपि स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष मार्क्सवाद के उद्धरण नहीं है तथापि राहुल ने आम लोगों की आजीविका और खाद्य-पेय पदार्थों पर समाधिकार को इंगित किया है। 'सिंह सेनापति', 'जय यौधेय', 'मधुर स्वप्न', 'विस्मृत यात्री' एतिहासिक उपन्यासों में तथा 'जीने के लिए', 'भागो नहीं दुनिया को बदलो' और 'बाईसवीं सदी' राजनीतिक उपन्यासों में तो साम्यवादी सिद्धान्तों का विशद प्रतिपादन है। इन उपन्यासों में प्राचीन काल के महान दार्शनिक प्रचारकों की भाँति राहुल कथाओं और उपाख्यानों के माध्यम से अपने सिद्धान्तों और विचारों का प्रतिपादन करते है। वह इतिहास का हमें दर्शन दिग्दर्शन कराते हैं सामाजिक न्याय की भावना जागृत करते है और समाज की अग्रगामी शक्तियों को बल देते है।[335] राहुल जी ने 'मधुर स्वप्न' में समाजवादी समाज का स्वप्न देखा है— पराये श्रम को लूटने वाला संसार ध्वस्त हो जाता है। लेकिन उनका संसार ध्वस्त होकर रहेगा आज नहीं तो कल, इस वर्ष नहीं तो सौ वर्ष, हजार पन्द्रह सौ वर्ष यह तुम्हारा माया-जाल टूट कर रहेगा। दो बाहु और एक मस्तक वाले तुम अकर्म निनानवे मस्तक और निनानवें जोड़े हाथों वाले अपार जन

समूह का धोखे म डालकर सदा लूटत नही रह सकते ।'[३३६] सामाजिक साम्य का यह स्वप्न आधुनिक युग का स्वप्न है ।

राहुल जी न मावसवादी सिद्धान्तो का प्रतिपादन करते हुए अपने उपन्यासो म शोषक और शोषित का सम्बन्ध आर्थिक विषमता वयक्तिकता की भावना का निषेध, जनशक्ति म विश्वास द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की मान्यता, ईश्वर और धम म अविश्वास बौद्ध एव चार्वाक दशन की मावसवादी व्याख्या को प्रस्तुत किया है ।

राहुल जी न मावसवादी लखको की भांति पूँजीवाद को समाज के लिए सबसे बडा अभिशाप माना है । यह पूँजीवादी व्यवस्था सवहारा क जीवन को असहनीय दुख दुदशा के निम्नतम स्तर की ओर धकेलती है ।[३३७] पूजीवादियो एव शोषको के प्रति राहुल क मन म अपार घृणा है । इनके विपरीत शोषित श्रमिक एव कृषको के प्रति उनम अपरिमित सहानुभूति है । शोषित वग अनवरत श्रम करता है परतु वह अपने श्रम का भोक्ता नही उस तो केवल जीवित रहन के लिए श्रम का कुछ भाग प्राप्त होता है परन्तु शोषक वग उसक धन को हडप कर विलासिता का जीवन व्यतीत करता है । शोषक और शोषित का सम्बन्ध मार्जार मूषक का सम्बन्ध है । जय वासन्ती स कहना है— माजार हैं यह दुनिया के ठगने वाले जिनके फदा का काई ठिकाना नहा है । इनकी पण्यशालाएँ सब जगह सब रूप म खुली हुई है । शिवालय जिनालय सुगतालय, नपालय वणिकालय कहाँ कहाँ तक गिनाऊ और बचारा बहुजन साधारण जनता मूसा है ।[३३८] विस्मृत यात्री का यायावर नायक नरेन्द्रयश दुखवाद की व्याख्या करता हुआ सामाजिक विषमता को प्रत्यक्ष दुख मानता है ।[३३९] पूजीवादियो एव साम्राज्यवादियो की लोलुपता सामाजिक विषमता का कारण है । यही विषमता दुख का कारण है – मनुष्यो मे सम्पत्ति की जो विषमता है वही सबस अधिक दुखो का कारण है । सम्राटो या सामन्तो को वभव म इतना डूब रहने का क्या अधिकार है? यह वभव तथा धन उनके प्रासादो म आकाश स नही टपकता । परिश्रम करते करत लोगो की कमर टूट जाती है तब यह बहुमूल्य धातुओ और रत्नो के जेवर प्राप्त होते हैं

इस सबको जो हाथ तयार करत हैं वह दुनिया म सबसे गरीब हैं । जो अपन हाथ स एक तण भी न हटाने की शपथ खाय हुए है वह मौज म रहत है ।[३४] सम्पत्ति का समविभाजन ही समूचे समाज को सुखी बना सकता है । अन्जगर मज्दक इसी समानता का अनुमोदन करता है— भगवान न पथ्वी पर अन्न पदा किया कि मनुष्य उस अपने म समान विभाजित करे और कोई एक दूसरे से अधिक न ल जाये । किन्तु मनुष्य एक दूसर पर अत्याचार करते हैं और हर एक व्यक्ति अपने को अपन भाई स पहले रखना चाहता है । इसम सुधार तभी हो सकता है यदि गरीबो के लिए धनियो के धन को न लिया जाये । जिनके पास अधिक है उनस धन लकर निधनो को दे दिया जाय । माल असबाब या कोई सम्पत्ति जो अधिक हो उसे लेकर दूसरो मे बराबर बाट दिया जाय जिससे व्यक्ति व्यक्ति म अन्तर न हो ।'[३४१] मज्दक मधुर स्वप्न म अनक स्थलो पर सामाजिक साम्य व भ्रातत्व भावना के लिए धन की समानता को अनिवाय

कहता है। बहुजन के हित के लिए कुछ लोगों (पूँजीपतियों) को कष्ट होना भी स्वाभाविक है, परन्तु इस विषाद दुख के लिए उन्हें कष्ट भी सहन कर लेना चाहिए।[३४२]

राहुल जी का विचार है कि आर्थिक विषमता के लिए किसी एक व्यक्ति को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। जब तक परिस्थितियों को नहीं बदला जाता, शोषित लोगों को सचेत नहीं किया जाता तब तक सामाजिक सामंजस्य स्थापित नहीं हो सकता। इसके लिए बहुजन को उदबुद्ध करना होगा उनमें ऐक्य स्थापित करना होगा फिर शोषकों का अन्त अवश्यम्भावी हो जायगा और भूमि पर वस्तुतः स्वर्ग उतरेगा। फिर कोई भूखा न होगा न कोई धन वैभव में डूबा।[३४३]

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की व्याख्या 'मधुर स्वप्न' में बड़े विशद रूप में राहुल जी ने प्रस्तुत की है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार ईश्वर झूठी कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं।[३४४] अत यदि कोई देवता है तो वह मनुष्य ही है, मनुष्येतर कोई नहीं। मनुष्य में सिर्फ संहार की ही अद्भुत शक्ति नहीं है वह निर्माण करने की भी अदभुत क्षमता रखता है। मनुष्य के मस्तिष्क और भूमि के गर्भ में क्या-क्या छिपा है, इसका अनुमान करना भी मुश्किल है तुम्हें शायद यह पसंद न लगे लेकिन मुझे तो मनुष्य की शक्ति देखकर विश्वास हो गया है कि जगत का यही ढंग है, बाकी अनेक ढंग अथवा एक ढंगानढंग झूठी कल्पना है।[३४५] ईश्वर का अस्तित्व राहुल जी को स्वीकार्य नहीं। वह न तो सृष्टि का उपादान कारण है और न ही निमित्त कारण, कोई कार्य केवल एक कारण से नहीं होता अपितु कारण समुदाय से होता है। ऐसी अवस्था में अकेला ईश्वर संसार का निर्माता नहीं हो सकता।[३४६] परिवर्तन विश्व का स्वाभाविक गुण है अतः इसके कर्त्ता के रूप में ईश्वर की आवश्यकता नहीं है।[३४७] और यदि कहीं भगवान है तो उसी ने दुनिया के कोने कोने में अन्याय अत्याचार, खूनी संघर्ष और अव्यवस्था का भर रखा है।[३४८] ईश्वर का विचार राहुल जी की दृष्टि में मनुष्य को पराश्रित बनाने वाला है।[३४९] इस प्रकार मार्क्सवादी राहुल ईश्वर की कल्पना पूँजीपतियों तथा राजाओं महाराजाओं के स्वार्थ के लिए मानते हैं। ईश्वर की निरंकुशता की आड़ में वे अपनी निरंकुशता को उचित ठहराना चाहते हैं।[३५०] ईश्वर की तरह राहुल जी धर्म, परलोकवाद, पुनर्जन्म आदि में भी विश्वास नहीं रखते।[३५१] राहुल के लिए ईश्वर एक मिथ्या धारणा मात्र है और धर्म हलाहल विष, विशेषत ब्राह्मण धर्म।[३५२] ब्राह्मण धर्म ही नहीं चार्वाक दर्शन भी राहुल की दृष्टि में सामन्ता और सेठों का दर्शन है।[३५३] प्रगतिवादी लेखक की तरह सामाजिक रूढ़ियों एवं अन्ध विश्वासों का राहुल जी ने सर्वत्र विरोध किया है। डा० नगेन्द्र राहुल के उपन्यासों में प्रतिपादित दर्शन को द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद स्वीकारते हैं—"इन उपन्यासों का प्रतिपाद्य जीवन-दर्शन स्पष्ट रूप से द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है उसमें आत्मा, परलोक ब्रह्म आदि आध्यात्मिक तत्वों का तीव्र निषेध करते हुए भौतिकवाद की प्रतिष्ठा है। त्याग वैराग्य आदि का पतिरोध सुख-साधना का तिरस्कार करते हुए स्वस्थ जीवन-उपभोग की स्वीकृति है। व्यक्तिगत जीवन के ऊपर सामूहिक जीवन की सफलता का दिग्दर्शन

है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार राहुल जी राजतन्त्र और अध्यात्मवाद दोनों को एक ही सिद्धान्त की दो अभिव्यक्तियां मानते हैं और स्पष्ट शब्दों में उनकी धारणा है कि अध्यात्म की कल्पना राजसत्ता को स्थिर करने के लिए ही की गई है।[३४४]

राहुल जी ने अपने उपन्यासों में अनेक स्थलों पर साम्यवादी समाज का सृजन किया है। 'बाईसवीं सदी' उनके साम्यवादी समाज का स्वप्न है। जिसमें मनुष्य को जीवनयापन की सभी सुविधाएँ सवसुलभ होंगी किसी भी प्रकार की वैयक्तिक सम्पत्ति मनुष्य के पास नहीं होगी, सभी कुछ राष्ट्र का होगा अपने-पराये का भेद भाव न होगा।[३४५] सामूहिक श्रम सामूहिक भोजन, सामूहिक फल प्राप्ति, रोगों से मुक्ति जात पाँत के भेद भाव की समाप्ति नारी स्वतन्त्रता मादक द्रव्यों का त्याग, वैयक्तिक सम्पत्ति न होने के कारण तत्सम्बन्धी अनेक कानूनों की समाप्ति, स्वस्थ पुरुष और स्त्रियाँ शिक्षित नागरिक वर्गहीन समाज—यह बाईसवीं सदी का स्वप्न है।[३४६] नारी और पुरुष का पारस्परिक सम्बन्ध प्रेम के तन्तुओं से है और किसी प्रकार का बन्धन उन्हें नहीं।[३४७]

'सिंह सेनापति' में तक्षशिला उत्तरकुरु तथा वैशाली के जन समाज के वर्णन में राहुल का मार्क्सवादी स्वर है। तक्षशिला में दासों और भिखारियों का अभाव है प्रत्येक व्यक्ति जीविका के लिए श्रम करता है और उसके फल का भोक्ता भी है।[३४८] तक्षशिला के लोगों का जीवन आनन्दमय है। उत्सवों का उनके जीवन में विशेष स्थान है।[३४९] प्रेम विवाह अथवा उन्मुक्त प्रेम उनके जीवन का अधिकार है। कोई भी स्त्री स्वेच्छापूर्वक किसी भी पुरुष से प्रेम और विवाह करने के लिए स्वच्छन्द है।[३५०] उपन्यास में उत्तर कुरु के रूप में देवभूमि का अंकन है और यह देवभूमि साम्यवादी भूमि के अतिरिक्त और कुछ नहीं। इस भूमि में गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था है। रजुल्ला के अत्याचार यहाँ नहीं हैं। सभी उन्मुक्त स्वच्छन्द वातावरण में जीवन जीते हैं उनका जीवन आनन्दमय है।[३५१] स्त्री किसी एक पुरुष के साथ बंधकर नहीं रहती, उसे किसी भी पुरुष के साथ प्रेम करने का अधिकार है। संतान सम्बन्धी 'मेरे तेरे' का भाव वहाँ नहीं, किसी दंपति का अपना पुत्र नहीं है, सब राष्ट्र के हैं—सभी देवों के हैं।[३५२] वैशाली भी गणतन्त्रीय नगरी है—यहाँ भी जीवन में श्रम को ही सर्वाधिक महत्त्व प्राप्त है। स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर खेतों में काम करते हैं युद्धों में भाग लेते हैं। उनके प्रेम की स्वतन्त्रता और स्वच्छता उनके नृत्य उत्सवों और चुम्बन उत्सवों में दर्शनीय है।[३५३] दास प्रथा का यहाँ भी अभाव है।[३५४]

'जय यौधेय' में यौधेय संघ का रूप सोवियत संघ से साम्य रखता है। यौधेय जय गणतन्त्र का नायक बनकर भूमि पर जनता का अधिकार प्रस्थापित करता है तथा जनहित के लिए सामूहिक योजनाएँ बनाता है। वह पलायनवाद एवं कर्मोनवाद का विरोधी है। वह अग्रोदका में युवक युवतियों का एक संगठन तैयार करता है जो साम्यवादी दल से भिन्न नहीं है। यह साम्यवादी दल जो कुछ जैसे पूँजीपतियों का

जीना दूभर कर देता है। 'जय यौधेय' में सम्मिलित खेती का भी भी उदाहरण प्रस्तुत है।[३६४] साम्यवादी खेती का यह रूप रूसी कलखोज से साम्य रखता है।[३६५]

'मधुर स्वप्न' में 'दिहवगान' का चित्रण लेखक की साम्यवादी कल्पना के अनुकूल है। डा० कमलकुमारी जौहरी के शब्दों में— सिंह सेनापति के तक्षशिला और वैशाली के गणतन्त्र तथा 'मधुर स्वप्न' के दिहवगान इन सभी का राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन एक सा है और यह जीवन लेखक की रुचि और कल्पना का साम्यवादी जीवन है।[३६७] राहुल ने मज्दजगर मज्दक को उपन्यास में साम्यवाद के स्वप्न-द्रष्टा के रूप में प्रस्तुत किया है। वह 'दिहवगान' नामक ग्राम की सृष्टि करता है जो उसके मधुर स्वप्न का साकार रूप है। इसमें वह अपने ममता के सारे सिद्धान्तों को प्रत्यक्ष करता है। 'दिहवगान' में श्रम और काम की सारी व्यवस्था साम्यवादी है। स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध में मज्दक का कथन है—"पवन विचारक फलातोन ने बतलाया कि महान उद्देश्य को लेकर चलने वाले नर नारियों को सम्पत्ति से ही मेरा-तेरा का सम्बन्ध नहीं हटाना चाहिए, बल्कि उनके लिए स्त्री में मेरा-तेरा का भाव होना भी हानिकारक है क्योंकि स्त्री में केन्द्रित वह मेरा-तेरा का भाव फिर पुत्र पुत्रियों मे केन्द्रित हो जाएगा, फिर उनकी सन्तानों में।'[३६८] दिहवगान' में 'बाईसवीं सदी' की तरह सम्मिलित भोजनशालाओं का वर्णन है।[३६९] दिहवगान में राहुल का मधुर स्वप्न साकार हुआ है— यहाँ किसी की कोई वैयक्तिक सम्पत्ति नहीं सारे फलोद्यान सारे खेत, सारी जंगम-स्थावर सम्पत्ति ग्राम के सारे व्यक्तियों की सम्मिलित सम्पत्ति है। जिससे जितना काम हो सकता है उतना कोई न कोई उपयोगी कार्य करता है, और लोग शक्ति से अधिक काम करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं और जैसी जिसके लिए आवश्यकता होती है उस परिमाण में लोगों को चीज दी जाती हैं।[३७०] दिहवगान का लक्ष्य है समस्त मानवों की समता, परस्पर प्रेम और सार्वत्रिक सुख-समृद्धि।[३७१] मज्दजगर भोग-साम्य को श्रम साम्य के बिना अधूरा समझता है।[३७२] प्रेम उसकी दृष्टि में जीवन का स्वाभाविक रस है।[३७३] मनुष्य का सुख समता में ही मिल सकता है।[३७४] इस प्रकार 'मधुर स्वप्न' में दिहवगान साम्यवादी स्वप्न के अनुकूल है। 'जीने के लिए' में देवराज तथा जेनी के माध्यम से राहुल जी ने अनेकत्र अपनी मार्क्सवादी विचार धारा की अभिव्यक्ति दी है। साम्राज्यवादी निरंकुशता स्वच्छन्द प्रेम, पूँजीवाद के अत्याचार आदि के वर्णन में उन्होंने मार्क्सवादी विचारों को ही प्रकट किया है।[३७५] 'भागो नहीं दुनिया को बदलो' में समाज एवं विश्व को परिवर्तित करने के लिए राहुल जी मार्क्सवादी क्रांति का समर्थन करते हैं।[३७६]

निष्कर्ष यह कि लेखक के सभी उपन्यास उनके मार्क्सवादी जीवन दर्शन के प्रतिबिम्ब हैं। पूँजी का समवितरण, पुरुष और नारी के समाधिकार, सहकारी जीवन गणतन्त्रात्मक व्यवस्था मुक्त प्रेम आदि में सम्बन्धित विचार उनके मार्क्सवादी जीवन-दर्शन से प्रेरित हैं। कहीं कहीं तो ये विचार आरोपित से प्रतीत होते हैं और कथानक से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते। राहुल जी स्वयं अपने औपन्यासिक

कथाशिल्प के प्रभावों से परिचित थे और उन्होंने अपने उपन्यासों की सोद्देश्यता की स्पष्ट घोषणा भी की है— मेरे उपन्यासों या कहानियों में प्रोपेगेण्डा के तत्त्व को ढूँढने के लिए बहुत प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनके लिखने में मेरा उद्देश्य ही है कुछ आदर्शों की ओर पाठकों को प्रेरित करना। अगर यह उद्देश्य मेरे सामने न रहता, तो शायद मैं कहानी या उपन्यास लिखता ही नहीं। इसलिए जिसे मेरे दोस्त प्रोपेगण्डा कहते हैं उसे मैं अपनी मजबूरी मानता हूँ।[३३७] अतः हमारी धारणा है कि राहुल चिन्तक पहले हैं, उपन्यासकार बाद में।

बौद्ध दर्शन के आलोक में उपन्यास— राहुल जी ने अपने जीवन में बौद्ध-दर्शन का अध्ययन ही नहीं किया प्रत्युत जीवन में उसका आचरण भी किया है। बौद्धधर्म में दीक्षित होकर उन्होंने इसके प्रचार एवं प्रसार के लिए अनथक प्रयत्न किया है। राहुल जी की अनुसन्धानात्मक उपलब्धियाँ बौद्ध जगत् के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति मानी जा सकती है। अपनी औपन्यासिक कृतियों में राहुल जी ने मार्क्सवाद के अनन्तर बौद्ध-दर्शन को ही अभिव्यक्ति दी है। उनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासों 'सिंह सेनापति' 'जय यौधेय' एवं 'विस्मृत यात्री' के नायक बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। 'मधुर स्वप्न' तथा 'भागो नहीं दुनिया को बदलो' में भी अनेक स्थलों पर उपन्यासकार बौद्ध धर्म का स्मरण करता है। 'विस्मृत यात्री' का नायक नरेन्द्रयश तो बौद्ध धर्म के भिक्षु-यात्री के रूप में चित्रित है। 'जय यौधेय' का जय भी आचार्य असंग और वसुबन्धु से बौद्ध दर्शन की शिक्षा प्राप्त करता है और 'सिंह सेनापति' में महात्मा बुद्ध स्वयं एक पात्र के रूप में विद्यमान हैं जिनसे उपन्यास का नायक सिंह प्रभावित होता है। इन उपन्यासों में राहुल जी की बौद्ध दर्शन विषयक विचारधारा अनेकत्र मुखरित हुई है।

बौद्ध दर्शन के चार आधार स्तम्भ हैं—(१) प्रतीत्य समुत्पाद (२) अनित्यवाद, (३) अनात्मवाद तथा (४) निर्वाण। राहुल जी के उपन्यासों में इन चारों सिद्धान्तों का निरूपण एवं व्याख्या मिलती है। 'प्रतीत्य समुत्पाद' मध्यमार्ग का सिद्धान्त है। भगवान बुद्ध प्रतीत्य समुत्पाद एवं धर्म में एकत्व स्वीकारते हैं।[३३८] श्री वाचस्पति गरोला के शब्दों में— इस मध्यमत के अनुसार एक ओर तो वस्तुओं के अस्तित्व में कोई सन्देह नहीं है किन्तु उनको नित्य नहीं कहा जा सकता। उनकी उत्पत्ति दूसरी वस्तुओं से होती है। दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार वस्तुओं का पूर्ण विनाश भी नहीं होता बल्कि उनका अस्तित्व बना रहता है। इसलिए वस्तुएँ न तो पूर्ण नित्य हैं और न पूर्ण विनाशशील ही।—एक वस्तु के बाद दूसरी वस्तु की उत्पत्ति होती है इसी सनातन नियम को बुद्ध ने 'प्रतीत्य समुत्पाद' नाम दिया है।—प्रतीत्य समुत्पाद के अनुसार कार्य कारण सम्बन्ध को विच्छिन्न माना जाता है।[३३९] राहुल जी भी प्रतीत्य समुत्पाद की इसी रूप में व्याख्या करते है।[३४०] प्रतीत्य समुत्पाद के इस सिद्धान्त के विषय में 'विस्मृत यात्री' का नायक अपने अतीत के जीवन पर विचार करता हुआ

नहीं है जैसा कि नयायिक तथा दूसरे स्थिरतावादी कहते हैं। वह सपगति से नहीं—बल्कि मण्डुकप्लुति (मण्क कुदान) म होता है, प्रतीत्यसमुत्पाद—इसके बाद यह होना है—का नियम सवत्र व्यापक है।'[३८१]

अनित्यवाद अथवा क्षणिकवाद बौद्ध-दशन का दूसरा महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। अनित्यवाद के अनुसार दुनिया की सभी वस्तुएँ अनित्य धर्मों के सघात पर टिकी होने के कारण अनित्य हैं। क्षणिकवाद प्रत्येक वस्तु को अनित्य तो मानता है, साथ ही वह उसे क्षणिक भी कहता है—विकास की क्रिया म कोई भी दो क्षण एक नहीं हैं। कोई भी मनुष्य किन्हीं दो क्षणो म एक जसा नहीं रहता। यह क्षणिकवाद का सिद्धान्त है।[३८२] राहुल भी इस विषय म लिखते हैं—'बुद्ध के दशन म अनित्यता एक ऐसा नियम है जिसका कोई अपवाद नहीं है।'[३८३] राहुल के उपन्यासो मे अनित्यतावाद के स्वरूप की विस्तृत व्याख्या मिलती है। आत्मा की अनित्यता के विषय म महात्मा बुद्ध का कथन है—मैं किसी ऐसी आत्मा को नहीं मानता जो दो पल भी वही हो एक सारे जन्म या एक शरीर से दूसरे शरीर मे जाने वाले नित्य ध्रुव आत्मा की तो बात ही क्या है।[३८४] इसी प्रसग में वे आगे कहते हैं—मैं किसी वस्तु जड चेतन देव ब्राह्मण को नित्य ध्रुव नहीं मानता। जो है वह पदा हुआ है वह मरने वाला, नष्ट होने वाला है—जीवन नदी का प्रवाह है जो हर क्षण नया होता है। यदि नया होने की गुजाइश न होती तो हमारे सारे सुकम हमारे सारे सुविचार हमारे सारे सुवचन निष्फल होते।[३८५] 'विस्मृत यात्री' का नायक इस अनित्यतावाद में जीवन की साथकता देखता है—पुराने को जीण होना ही पडता है, उसे नवीन के लिए अपना स्थान खाली करना ही पडता है।'[३८६] अनित्यतावाद म इश्वर के अस्तित्व को भी नकारा गया है।[३८७] आचाय नरेन्द्रदेव अनीश्वरवाद के विषय म लिखते हैं—समस्त कायकारणात्मक जगत प्रतीत्य समुत्पन्न है। हेतु और प्रत्ययो की अपेक्षा करके ही समस्त धर्मों की धमता स्थित है। इसलिए इस नय मे ईश्वर ब्रह्मा आदि कल्पित कारको का प्रतिषेध है।'[३८८] जय यौधेय म जय का अनीश्वरवाद के विषय म इसी प्रकार का कथन है—'बदलना विश्व का स्वाभाविक गुण है इसलिए किसी बदल देने वाले कत्ता या ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं है।'[३८९]

बौद्ध दशन अनात्मवाद का अनुयायी है। अनात्मवाद का पुदगल प्रतिषेधवाद भी कहते हैं। बौद्ध आत्मा या पुदगल को वस्तुसत् नहीं मानते। आत्मा नाम का कोई पदाथ स्वभावत नहीं है। अनात्मवाद के अनुसार—जीवन के भीतर कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसको हम आत्मा कह सकें। रूप वेदना, सज्ञा, सस्कार और विज्ञान—इन पाँचो का सघात हमारा जीवन है और ये वस्तुएँ अनित्य हैं।[३९०] आचाय वसुबन्धु 'जय यौधेय' म आत्मा की नित्यता का खण्डन करते हैं—आत्मा के नित्य होने की लालसा मत्यु से डरने का भय बहुत ही तुच्छ स्वार्थपरता और कायरता है।[३९१]

निर्वाण का शाब्दिक अथ है अग्नि की लौ के समान बुझ जाना।[३९२] **बौद्ध**

दशन के निर्वाण के विषय म श्री गरोला लिखत हैं—शुभ ज्ञान को निर्वाण कहत हैं। विच्छिन्न प्रवाह के रूप स उत्पन्न नाम रूप-तृष्णा के वशीभूत होकर जो एक जीवन प्रवाह का रूप धारण कर सतत गतिशील है इस प्रवाह का सवथा विच्छेद हो जाना ही निवाण है।[३६३] मरतसिंह उपाध्याय जीवन की विशुद्धि को विमुक्ति कहते हैं।[३६४] निर्वाण किसी पथक लोक का नाम न होकर उस अवस्था का नाम है जिसम ज्ञान द्वारा अविद्यारूपी अधकार दूर हो जाता है।[३६५] वसुबधु जय यौधेय म जीवन निवाण को दीप निर्वाण की तरह बुझ जान के रूप म ग्रहण करत हैं।[३६६] उपन्यास का नायक जय परलोकवाद को धोखे की टट्टी कहता है।[३६७] इसी उपन्यास म एक बौद्ध उपासिका के निर्वाण सम्बन्धी विचार द्रष्टव्य हैं— आत्मा नही बल्कि चेतना का एक प्रवाह है जो सदा नष्ट होते तथा नया पदा हात चतना विदुओ की धारा मात्र है धारा म एकत्व का ख्याल हो सकता है लेकिन निवाण तो उस अवस्था को कहते हैं, जबकि यह चतना प्रवाह निरुद्ध हो जाता है।[३६८]

उपयुक्त दाशनिक सिद्धाता के अतिरिक्त बौद्ध धम एव दशन की अय मान्यताओ एव उपलब्धियो का भी यत्र-तत्र उल्लेख राहुल जी ने किया है। राहुल जी बौद्ध धम का बहुजनहिताय धम स्वीकारत हैं। इसके बहुजनहिताय रूप के विषय म आचाय असग का कथन है—'उसके भीतर प्राणिमात्र के लिए प्रम था ज्ञान प्रकाश फलान की लगन थी और बहुजन के उपकार की भावना थी।'[३६९] बोधिसत्वो के माग के विषय म वे आगे कहत है—मनुष्य को अपन सुख अपने निर्वाण के लिए नही दौडना चाहिए उसका जीवन प्राण बहुजन हिताय होना चाहिए। जब तक एक भी मानव दुख म है बधन म है तब तक हम निर्वाण नही चाहिए।'[४०] विस्मत यात्री म बुद्धिल भी बौद्धधम को बहुजनहिताय तथा बहुजन सुखाय कहता है।[४१]

बुद्ध क चार आय सत्या—दुख दुख हतु दुख विनाश तथा दुखविनाश के माग की व्याख्या विस्मृत यात्री म बुद्धिल करता है।[४२] बौद्ध दशन के य चार आय सत्य बौद्ध दशन के माग स जीवन की अनुभूति तथा निर्वाण प्राप्ति क चार सिद्धात हैं।[४३] बुद्ध के साधना विषयक विचार कि दो अतियो का त्याग हाना चाहिए [४] सिंह सेनापति म बुद्ध द्वारा इस प्रकार व्यक्त हैं— मैं सनापति' दोनो प्रकार के चरम पथा पर जाने को बुरा कहता हू। आदमी को न एकाततया शरीर का सवारन ही म लगना चाहिए न शरीर को सुखाकर उस अकमण्य बनान म ही लग जाना चाहिए।[४५] इस बुद्ध द्वारा प्रतिपादित मज्झिमा-परिपदा (मध्यम माग) कहा जा सकता है। न भोग विलास म ही सवथा आसक्त रहना और न कठोर अनिद्रा उपवासादि स आत्मा ही को वनश दना[४६] बुद्ध की यह मज्झिमा-परिपदा स्वय बुद्ध द्वारा सिंह सनापति म स्पष्ट की गयी है।

बौद्ध धम जाति भेद का कट्टर विरोधी है। बुद्ध की दृष्टि म कोइ अस्पृश्य नही है। जाति भेद काई वस्तु नही है मनुष्य क गुण उसके काय स है जाति स नही।[४७]

राहुल जी अपने उपन्यासों में सर्वत्र जातिभेद पर प्रहार करते हैं। जय यौधेय का नायक जाति भेद ब्राह्मण धर्म की उपज मानता है और बौद्ध धर्म द्वारा इसका निवारण सम्भव कहता है।[४८] बुद्धिल भी बौद्ध धर्म में जाति भेद का अभाव देखता है।[४९] इस प्रकार राहुल जी जाति भेद के कटु आलोचक बन गये हैं। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म के विचार-स्वातन्त्र्य[५०] एवं आचरण विषयक सिद्धान्तों[५१] का भी उनके उपन्यासों में यत्र-तत्र उल्लेख है। निष्कर्ष यह कि राहुल जी के मन में बौद्ध धर्म के प्रति असीम आस्था थी। वे इसे बहुजन हिताय धर्म मानते थे और बुद्ध तथा मार्क्स में उन्हें साम्य दृष्टिगोचर होता था। बौद्ध धर्म के दार्शनिक एवं व्यावहारिक सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में विशेष रूप से हुई है।

बौद्ध दर्शन एवं मार्क्सवादी दर्शन का समन्वय—भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध-दर्शन के प्रतीत्य-समुत्पाद तथा वैज्ञानिक भौतिकवाद में प्रायः साम्य स्वीकारते हैं। यद्यपि बौद्ध दर्शन को भूत के साथ मन की स्थिति भी ग्राह्य है परन्तु सार्वत्रिक अनित्यता के कारण वैज्ञानिक भौतिकवाद एवं बौद्ध दर्शन में अपने व्यापक रूप में विशेष अन्तर नहीं। वे लिखते हैं—'दोनों दर्शनों को गति का निरन्तर अस्तित्व न केवल मान्य ही है, किन्तु दोनों को उसका आग्रह है। वैज्ञानिक भौतिकवाद परिमाणात्मक परिवर्तन होते होते गुणात्मक परिवर्तन की बात करता है तो बौद्ध दर्शन प्रतीत्य समुत्पाद की। दोनों विचार यदि एकदम एक नहीं हैं तो दोनों परस्पर अविरोधी हैं।[५१२] राहुल जी बौद्ध-दार्शनिक एवं मार्क्सवादी विचारक हैं। उनकी कृतियों में बौद्ध-दर्शन एवं द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचारधारा का समन्वय प्राप्त होता है। वे बुद्ध और मार्क्स की विचारधारा में पर्याप्त साम्य देखते हैं और दोनों विचारकों की विचारधारा के समन्वय-सामंजस्य को अपनी कृतियों में प्रस्तुत करते हैं। उनकी दृष्टि में बौद्ध दर्शन मार्क्सीय दर्शन को समझने के लिए प्रथम सोपान है।[५१३] इस प्रकार बौद्ध दर्शन और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में तारतम्य एवं सामंजस्य दार्शनिक उपन्यासकार राहुल जी की मौलिकता कही जा सकती है। राहुल ने देश विदेश का पर्यटन किया, विविध आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों का चिन्तन और मनन किया तथा उनके समन्वय-सामंजस्य द्वारा मौलिक विचारों की उद्भावनाएं अपनी सर्जनात्मक कृतियों को प्रदान की। राहुल जी की इस मौलिकता को डा० जगदीश गुप्त 'राहुलवाद' की संज्ञा देते हैं।[५१४] श्री महेन्द्र चतुर्वेदी लिखते हैं—'लेखक की दृष्टि में प्राचीन ब्राह्मण-संस्कृति तथा पूंजीवादी संस्कृति परिस्थिति भेद के अनुसार प्रायः परस्पर समकक्ष हैं—दोनों ने वैषम्य का पोषण किया है मानवीय समता का निषेध किया है। उसके अनुसार मार्क्स अमिताभ बुद्ध है—दोनों की चिन्ताधारा की तात्विक समानता को लेखक ने रेखांकित किया है।[५१५] राहुल जी के कथानायक दोनों विचारधाराओं के समन्वय के वाहक हैं। विस्मृत यात्री में बौद्ध धर्मानुयायी नरेन्द्र यश के जीवन द्वारा मार्क्सवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति हुई है। बौद्ध यात्री नरेन्द्रयश में जन सेवा तथा समाज-कल्याण की अदम्य भावना है उसकी बहुजन हिताय

की चेतना समाजवादी चेतना के रूप म परिणत हो जाती है। सिंह सेनापति के अन्त म सिंह और तथागत क परस्पर विचार विनिमय द्वारा बौद्धमत तथा मार्क्सवाद म सामजस्य स्थापित किया गया है। डा० सुषमा धवन लिखती हैं— उनकी दृष्टि म मार्क्स आधुनिक परिस्थिति म बुद्ध का रूप है। तथागत की विचार पद्धति और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद म तात्त्विक साम्य है। बुद्ध और मार्क्स मानव की बुद्धि तथा अनुभति की कसौटी पर जीवन के स्वरूप को निर्णीत करन के पक्ष म हैं, दोना परम्परा के अ धानुसरण म विश्वास नहीं रखत दोना पर नास्तिकता का आरोप लगाया जाता है, दोना की जीवन तथा समाज की अनित्यता एव परिवतनशीलता म आस्था है। दोना सामाजिक वषम्य और मानवीय भेद भाव के विरोधी है।'[४१५] 'जय यौधेय' का नायक जय भी तथागत के विचारा एव सिद्धा ता को मार्क्सवादी विचारधारा मे ढाल कर उन्ह नवीन रूप प्रदान करन का प्रयत्न करता है। 'मधुर स्वप्न म मज्दकी धर्म और साम्यवादी जीवन दशन म राहुल जी न साम्य दिखलाया है। राहुल जी के इस मौलिक समन्वयवादी चिन्तन को निम्नाकित रूप म देखा जा सकता है।

परलोकवाद व पुनर्जन्मवाद की मौलिक व्याख्या—राहुल जी न परलोकवाद एव पुनर्जन्मवाद की मौलिक व्याख्या की है। हिन्दुओं के आत्मवादी दशन को धोखे की टट्टी कहकर राहुल जी उसकी आलोचना करते हैं और बौद्ध दशन के अनात्मवाद एव क्षणिकवाद म अपनी आस्था प्रदर्शित करते है। परलोकवाद के लिए जीवन के एक क्षण का व्यय व जीवन का अपव्यय समझते हैं। परलोकवाद उन्हें एक रूप मे मान्य है जिसकी व्याख्या वे जय के शब्दा म करते हैं— पुत्र पिता का परलोक है पुत्र पिता का पुनर्जन्म है। पिता मरने से पहले अपने शरीर अपने मानसिक और शारीरिक सस्कार का एक अश माता के शरीर म स्थापित करता है। माता उसम अपना अश मिलाती है और नौ मास गर्भ मे रख उस शिशु के रूप म अगले लोक, अगली पीढ़ी के लिए देती है। इसे मैं परलोक मानता हूँ।[४१७] परलोकवाद एव पुनर्जन्मवाद की प्रस्तुत व्याख्या आधुनिक युग मे ग्राह्य है। इस विषय मे डा० नगेन्द्र लिखत हैं— इसम एक विशेष सगति है। यह अस्वीकृत नहीं किया जा सकता, यह व्याख्यान भी अपन ढग से सटीक और मनोग्राही है और आज के वैज्ञानिक युग म अधिक ग्राह्य भी हो सकता है।'[४१८] जय परलोकवाद एव पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वार्थान्धता एव कायरता का सिद्धान्त समझता है और उसे पूजीवाद की समर्थिका ब्राह्मण-सस्कृति का अस्त्र समझता है —'यदि पुनर्जन्म का विश्वास हाथ पर और मन को न बाँध होता तो हजार म नौ सौ निन्यानवे जनता अपन सामन परोसी थाली एक आदमी के सामन रखकर भूखो न मरती और न भूखे और नगे रहन वाला की कमाई स, उनके खून और हड्डिया स बडे-बडे प्रासाद तयार होते।'[४१९] 'सिंह सेनापति' म आचाय बहुलाश्व पुनर्जन्मवाद को रजुला की कल्पना मानत हैं जिसस वे अपनी प्रजा का अपहार म रख सकत हैं।[४२] इस प्रकार राहुल जी की परलोकवाद एव पुनर्जन्मवाद विषयक व्याख्या भौतिकवादी है। परलोकवाद की यह व्याख्या इस लोक से आँखें

मूँदकर किसी कल्पित लोक को बेहतर बनाने की प्रेरणा नहीं देती।[४२१] अतः राहुल जी परलोकवाद की व्याख्या लोक की धरती पर करते हैं। वे परलोकवाद के स्थान पर लोकवाद की स्थापना करते हैं।

(ख) दुःखवाद की मार्क्सवादी व्याख्या—राहुल जी ने बौद्ध दर्शन के दुःखवाद की व्याख्या मार्क्सवादी दृष्टि से की है। डा० सुषमा धवन के शब्दों में—"राहुल ने तथागत के दुःखवाद तथा मार्क्स के वर्गवाद में सामंजस्य स्थापित किया है। बुद्ध जहाँ दुःखों के कारणों का विश्लेषण और उनके निवारण का उपचार धार्मिक दृष्टि से करते हैं वहाँ मार्क्स का विवेचन तथा उपादान आर्थिक तथा वर्गवाद पर आधारित है।"[४२२] 'विस्मृत यात्री' में नरेन्द्रयश बौद्ध सिद्धांतों की मार्क्सवादी विवेचना प्रस्तुत करता है। दुःख-हेतु के विषय में वह कहता है—मनुष्यों में सम्पत्ति की जो विषमता है, वह सबसे अधिक दुःखों का कारण है।"[४२३] दुःख निवारण के उपाय के विषय में उसका कथन है—'धनी गरीब का भेद मिटाकर ही संसार में मनुष्य-जाति को दुःख-सागर से उबारा जा सकता है।'[४२४] इस प्रकार नरेन्द्रयश बौद्ध विचारों को मार्क्सवादी शब्दावली में व्यक्त करता हुआ इस मत पर बल देता है कि 'अभाव के कारण होने वाले दुःख की जड़ को मैं अकेला नहीं काट सकता और समाज में आर्थिक विषमता ही दुःख का मूल कारण है।'[४२५] वह अहिंसावादी होते हुए भी सम्राटों एवं आततायियों के प्रति सहानुभूति दिखलाना उचित नहीं समझता। यह कहना कि निर्धन व्यक्ति अपने पूर्वजन्मों के कारण दुःखी है उसे मान्य नहीं। इसे वह विषमता को स्थिर रखने का उपाय मानता है। वह अनुभव करता है कि शोषक अल्प हैं, शोषित बहुसंख्यक हैं। तथागत ने बहुजन हिताय का उपदेश दिया था इस उद्देश्य की पूर्ति बहुजन (शोषित) को उदबुद्ध करने से ही हो सकता है।[४२६] इस प्रकार नरेन्द्रयश के द्वारा राहुल ने चार आर्य सत्यों की मार्क्सवादी व्याख्या प्रस्तुत की है। इस उपन्यास में बुद्धिल द्वारा भी दुःखवाद की व्याख्या इसी रूप में की गई है।[४२७] 'जय यौधेय' का नायक जय भी दुःखवाद की आर्थिक दृष्टि से व्याख्या करता है।[४२८] जय की कुशाग्र बुद्धि एवं संवेदनशील हृदय सामाजिक विसंगतियों से पूर्णरूपेण अभिज्ञ है और उसका प्रबुद्ध-विवेक दुःख के मूल कारणों को समझने की क्षमता रखता है। इस प्रकार दुःखवाद एवं वर्गवाद का सामंजस्य राहुल की नई उदभावना है।

(ग) भोगवाद का सिद्धान्त—डॉ० गोपीनाथ तिवारी के अनुसार राहुल जी 'खाओ पियो और मौज करो' के भोगवादी सिद्धांत के समर्थक हैं।[४२९] वे चाहते हैं कि मनुष्य संसार के सभी उपभोगों का आस्वादन करे क्योंकि संसार के सभी पदार्थ उसके उपभोग के लिए ही निर्मित हुए हैं। राहुल जी खाद्य-पदार्थों में पकवान में अधिक मांस भक्षण का समर्थन करते हैं। 'सिंह सेनापति' में संस्थागार का सामूहिक भोजन करमतरी के भुने मांस और गर्मागर्म शूकर मार्दव में होता है।[४३०] 'जय यौधेय' का नायक अपनी रुचि के विषय में कहता है—लकड़ी की आग पर पूरे सूअर के मांस को हम बहुत पसंद करते थे।[४३१] 'राजस्थानी रनिवास' में राजपूत ठाकुरों एवं

ठाकुरानियो का प्रिय खाद्य भी मास ह।[४३२] इस प्रकार राहुल जी के उपन्यासो म सभी पात्रो का प्रिय खाद्य मास है।

पय-पदार्थों म राहुल जी ने दूध क साथ मदिरा का अधिक उल्लेख किया है। अग्रोल्का में काई घर ऐसा नही जहा मदिरा-पान न होता हो। लोग द्राक्षा और कापिशयी सुरा का पान करत है। नत्य उत्सवा पर यौधेया में सुरापान एक आवश्यक अग था।[३३] सिंह सेनापति में आचाय बहुलाश्व मदिरा प्रेमी हैं। रोहिणी मया सिंह का स्वागत कापिशायिनी सुरा से करती है।[४३४] अतिथि-सत्कार मन्दिरा के बिना अधरा है। विभिन्न समारोहा पर तो मदिरा पान म स्त्री पुरुषा में प्राय होड लग जाती है।[३५] 'राजस्थानी रनिवास म अधिकाश राजपूत ठाकुर एव सामन्त मदिरा एव मदिरेक्षणा के उपासक हैं। राहुल जी लिखत हैं— राजस्थान के राजपूता में—विशेषकर पसे वाला में—शराब पानी से अधिक महत्त्व नही रखती और स्त्री पुरुष दोना बेरोक टोक उसे पीते हैं।'[४३६]

राहुल जी ने यौन सम्बन्धा का भी स्वच्छन्द चित्रण किया है। उनकी दृष्टि म स्त्री पुरुष स्वाभाविक यौन आकर्षणा से मुक्त नही हो सकता।[३७] वे प्रेम को जीवन का स्वाभाविक रस मानते हैं।[४३८] मुक्त प्रेम के प्रसगा का वणन वे निस्सकोच करत हैं। सिंह सेनापति म आचाय बहुलाश्व के शिष्य शिष्याए दिगम्बर तरते है।[३९] जय यौधय म कुटिया के भीतर लडके और लडकियाँ नग्न सोते हैं। 'मधुर स्वप्न' म नग्नदेवी अनाहिता के मन्दिर की परिचारिकाए नग्न रहती है।[४४१] राहुल जी के पात्र चुम्बन और आलिंगन का निस्सकोच आदान प्रदान करते हैं। सिंह सेनापति मे चुम्बन महोत्सव मनाया जाता है।[४४२] मधुर स्वप्न म राहुल जी ने भोग साम्य अथवा सम्मिलित पत्नी प्रथा की ओर सकेत किया है। अजदगर मज्दक का कथन है—'महान उद्देश्य का लेकर चलने वाले नर नारियो को सम्पत्ति से ही मेरा तेरा का सम्बन्ध नही हटाना होगा बल्कि उनके लिए स्त्री म मेरा तेरा का भाव होना भी हानिकारक है क्योकि स्त्री मे केन्द्रित वह मेरा-तेरा का भाव फिर पुत्र पुत्रियो म केन्द्रित हो जाएगा, फिर उनकी सन्ताना मे।'[३] सम्मिलित-पत्नी के इस सिद्धान्त की व्याख्या राहुल जी की अपनी कल्पना है। इस मत का समथन लेनिन आदि मार्क्सवादिया न भी नही किया। इस विचारधारा म राहुल जी का निजी स्वर अनुगुजित हो रहा है। उपन्यासकार का विद्रोही व्यक्तित्व मार्क्सवाद की सीमाओ को लाघ गया है। मधुर स्वप्न' क ये शब्द द्रष्टव्य हैं—'इसी तरह इस दुनिया स दु खो को दूर करने क लिए मनुष्य मात्र म समता, भोगा की समता, कामा की समता स्थापित करन का एक ही ाग है—मैं और मरा का ख्याल छोडकर विश्व का एक कुटुम्ब बना उसम समता की स्थापना ही सारे रोगा की दवा है।[४४४]

राहुल जी क इस भोगवादी सिद्धान्त की समालोचका न कटु आलोचना की ह। डा० नगेन्द्र उनके पात्रा के परस्पर चुम्बना के आदान प्रदान को आपत्तिजनक ...त है।[४६] गोपानाथ तिवारी का आरोप ह कि चुम्बन आलिगन द्वारा पाठका की

सस्ती मानसिकता उभारकर लेखक पाठकों की संख्या बढ़ाने की धुन में हैं।[५५] राहुल जी द्वारा निर्देशित सम्मिलित-पत्नी का सिद्धान्त भी ठीक नहीं जंचता। 'मानवता के विकास और सभ्यता के इतिहास का सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने पर ज्ञात होता है कि जिज्ञासा, ज्ञान और एकनिष्ठा मनुष्य के उच्चतर स्वभाव के द्योतक हैं। सम्मिलित पत्नी का सिद्धान्त इन तीनों के विरुद्ध है अतएव वह मानवीय चेतना में विकास का चरम आदर्श नहीं हो सकता।[५७] इन आक्षेपों का उत्तर स्वयं राहुल जी ने इन शब्दों में दिया है—'मैं आज की संकीर्ण हिन्दू प्रवृत्ति की परवाह नहीं करता, मैं परवाह करता हूं सत्य की।'[५८]

राहुल जी ने मानव जीवन की स्वाभाविक आवश्यकताओं को सत्य माना है। वे खान-पान तथा यौन-सम्बन्धों के विषय में अध्यात्मवादी अथवा परम्परावादी संकीर्ण धारणाओं से मुक्त हैं। राहुल जी का यह भौतिकवादी दृष्टिकोण पाश्चात्य देशों के खान-पान एवं भोग सम्बन्धी दृष्टिकोण से प्रेरित तथा भारतीय परम्परा एवं इतिहास से अनुमोदित है। साथ ही यह भौतिकवादी चार्वाक-दर्शन से भिन्न है क्योंकि उपन्यासकार की दृष्टि में चार्वाक दर्शन का भोगवादी दृष्टिकोण व्यष्टिवादी है और लेखक समष्टिवादी दृष्टिकोण से भोगवाद की व्याख्या करता है—'भोग सबके सम्मिलित प्रयत्न का फल है इसलिए अकेले भोगने का हम कोई हक नहीं है। दुनिया को सारे भोगों में समृद्ध तभी करना सम्भव है जबकि सभी सम्मिलित प्रयत्न करें।'[५९] इस प्रकार राहुल जी का भोगवादी दृष्टिकोण चार्वाक दर्शन से भिन्न एवं मौलिक है एवं मार्क्सवाद से प्रभावित है। वे उस भोगवाद का समर्थन करते हैं जो मानव हृदय के अनुकूल है एवं मानव-बुद्धि द्वारा अनुमोदित है तथा जिस भोगवाद में सारे मानव सम्मिलित हों।[६०]

उपर्युक्त विवेचन के अनन्तर यह सहज कहा जा सकता है कि राहुल जी ने बौद्ध-दर्शन एवं मार्क्सवाद प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन में समन्वय एवं तारतम्य निर्देशित करके एक क्रांतिकारी कार्य किया है। बौद्ध दर्शन की मार्क्सवादी व्याख्याओं द्वारा उन्होंने पाठक को आधुनिक दिव्य दृष्टि प्रदान की है। मार्क्सवाद विश्व की व्याख्या के साथ विश्व को बदलना चाहता है बौद्ध दर्शन ने भी संसार के दुःख की व्याख्या और उसके नाश के उपाय भी बताये हैं। ईश्वर तथा आत्मा की अस्वीकृति एवं सृष्टि की परिवर्तनशीलता के विषय में प्रतीत्य समुत्पाद एवं द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में विशेष अन्तर नहीं। मार्क्सवाद व्यक्तिगत सम्पत्ति के नाश और व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने के सिद्धान्त के समर्थकों के विनाश को मानवी कल्याण के लिए आवश्यक मानता है बौद्ध-दर्शन में इस दृष्टि से भी मार्क्सवाद के निकट होने की विशेषता है। यदि एक दर्शन लाभ के विरुद्ध लड़ाई ठानता है तो दूसरा लोभ के विरुद्ध।[६१] इस प्रकार बौद्धदर्शन और मार्क्सवादी द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में सिद्धान्त और व्यवहार—दोनों पक्षों में राहुल जी ने जिस साम्य का रेखांकन किया है वह निस्सन्देह हिन्दी में उनकी मौलिक सूझ-बूझ है। उनके उपन्यासों में दोनों ही दर्शन

बहुजनहिताय के साधक हैं। मानवता का हित ही उनका साध्य है। कहीं-कहीं राहुल जी ने दोनो दर्शनो मे साम्य दर्शाते हुए अपने मौलिक विचारो की भी अभिव्यक्ति की है यथा परलोकवाद की लौकिक व्याख्या, भोग साम्य में सम्पत्ति के साथ साथ नारी को भी सामूहिक सम्पत्ति मानना आदि। इस मौलिकता को 'राहुलवाद' की सज्ञा दी जा सकती है।

राहुल जी की प्रगतिशीलता— औपन्यासिक कृतियो में प्रतिपादित राहुल जी के जीवन दर्शन एव विचारधारा के अनन्तर उनके विचारो की प्रगतिशीलता दर्शनीय है। राहुल जी प्रगतिशील विचारक एव प्रगतिवादी विचारधारा के प्रौढ विद्वान हैं। वे अपनी कृतियो द्वारा सामन्ती शोषणचक्र हटाकर जन जागरण जन स्वातन्त्र्य नारी स्वातन्त्र्य एव आर्थिक सामाजिक, धार्मिक एव राजनीतिक रूढियो से मुक्त होने और प्रजातान्त्रिक मानवतावाद की प्रतिष्ठा करने[४१] की प्रेरणा देते है। प्रगतिशील साहित्यकार के विषय म राहुल अपने एक निब ध म लिखते है— प्रगतिशीलता जीवन के हर एक अग ज्ञान और कर्म दोनो से सम्बन्ध रखती है और जरूरी है कि उनके प्रति प्रगतिशील साहित्यिक अपना दष्टिकोण का साफ साफ समझे। प्रगतिशीलता कभी अपने को अपनी पूर्वगामी सस्कृति धारा की विरासत स महरूम नही कर सकती— प्रगतिशील लेखको के बारे म कभी-कभी आक्षेप सुना जाता है कि वह नग्नता अश्लीलता और यौन-दुराचार को अपनी लेखनी का विषय बनाते हैं। दरअसल यदि कोई प्रगतिशील लेखक ऐसा करता है तो वह भारी गर जिम्मेवारी दिखलाता है और प्रगतिशील कहे जाने का अधिकारी नही हो सकता।'[४३] इस प्रकार राहुल जी प्रगतिशील साहित्यकार के लिए आवश्यक मानते हैं कि वह परम्परागत सस्कृति और साहित्य की अवहेलना न करे और साहित्य म अश्लीलता को स्थान न दे। परन्तु स्वय राहुल जी ने अनेक स्थलो पर पूर्वगामी भारतीय सस्कृति के उत्तराधिकार को झुठलाया है और प्राचीन साहित्यकारो यथा कालिदास आदि को चाटुकार बतलाया है।'[४४] कालिदास के प्रति उनका यह मत उनकी अप्रगतिशीलता का ही प्रतीक माना जायगा। इसी प्रकार 'जीने के लिए' उपन्यास म मोहनलाल प्राचीन सस्कृति को विशेष महत्त्व नही देता— देश की सस्कृति सभ्यता इतिहास की मौके बे मौके जिस प्रकार दुहाई दी जाती है, वह भी हमारे काम म बाधा डालने वाली है।'[४५]

राहुल जी के उपन्यासो म फ्रायड के यौनवाद से प्रभावित सेक्स का चित्रण भी अतिरेक से हुआ है। 'सिंह सेनापति' 'जय यौधेय' तथा 'मधुर स्वप्न' म अनेक स्थलो पर राहुल जी ने नग्न, अश्लील एव अशोभन चित्र प्रस्तुत कर पाठक की वासना को उभारा है। साहित्य म नारी की स्वतन्त्रता के स्थान पर उसके नग्न चित्रो को प्रस्तुत करना प्रगतिशीलता के अनुकूल नही है। इन त्रुटियो को होने पर भी राहुल जी प्रगतिशील साहित्यकार है। उनके उपन्यासो म प्रगतिशील तत्त्वो का सामजस्य एव सगति प्राप्त होती है।

राहुल जी प्रगतिशील साहित्यकार की जनशक्ति में अडिग विश्वास मानते हैं[४६] और उन्होंने अपने उपन्यासों में भी जनशक्ति का आह्वान एवं उपयोग किया है। 'जीने के लिए' में मोहनलाल शस्त्र प्रयोग की उपयोगिता जनहित की दृष्टि से ही स्वीकार करता है। शस्त्र प्रयोग एक विज्ञान है। उसकी एक खास व्यवस्था है। उसके प्रयोग में देश की जनता की सहानुभूति और सहायता भी आवश्यक है और यह तभी हो सकता है जबकि जनता समझे कि इस सफलता से उसे कुछ मिलेगा, उसके जीवन की कटुता कुछ कम होगी उसके सामने का निविड़ अन्धकार कुछ क्षीण होगा।[४७] जनशक्ति का आह्वान एवं उसका उपयोग राहुल के सभी उपन्यासों में है। 'सिंह सेनापति', 'जय यौधेय' तथा 'बाईसवीं सदी' में जनशक्ति का महत्त्वांकन राहुल की प्रगतिशीलता का प्रतीक है।

राहुल जी जनतन्त्रवाद के समर्थक हैं। उनके उपन्यासों में सामन्तवाद, पूँजीवाद एवं साम्राज्यवाद के दोषों का उल्लेख है, जिससे वे पाठकों की जनतन्त्रवाद एवं मार्क्सवाद में आस्था बनाना चाहते हैं। 'सिंह सेनापति' 'जय यौधेय' 'जीने के लिए' 'मधुर स्वप्न' आदि में राहुल की प्रगतिशीलता का यह रूप दर्शनीय है।[४८]

राहुल जी प्राचीन भारतीय परम्परा से वर्तमान काल में दिशा निर्देश भी करते हैं। राहुल जी ब्राह्मण संस्कृति के विरोधी हैं, परन्तु प्राचीन भारत की स्वस्थ परम्पराओं के नहीं। लिच्छवियों और यौधेयों की गणराज्य प्रणाली की उपयोगिता के वर्णन द्वारा राहुल जी उनके आदर्शों को वर्तमान प्रजातन्त्र में अपनाने के पक्ष में हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने 'जय यौधेय' एवं 'सिंह सेनापति' में गणतान्त्रिक प्रणाली के गुण-गाथा का सिंहावलोकन किया है। वे साम्राज्यवाद की अपेक्षा गणतन्त्र शासन प्रणाली के प्रबल समर्थक हैं।[४९]

राहुल जी प्रगतिशील साहित्यकार की तरह मनुष्य और उसकी सभ्यता-संस्कृति के विकासशील रूप का ग्रहण करने के पक्ष में हैं। वे ह्रासवादियों की तरह वर्तमान प्रौढ़ावस्था से लौटकर अबोधता एवं असहायावस्था के प्रतीक अतीत की ओर उन्मुख नहीं होना चाहते।[५०] वे अतीत और वर्तमान के अविच्छिन्न सम्बन्ध को मानते हुए भी वर्तमान में आस्था रखते हैं।[५१] आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति को वह देश की उन्नति का सबसे बड़ा चिह्न मानते हैं।[५२] इस प्रकार राहुल जी की वर्तमान वैज्ञानिक युग में आस्था उनकी प्रगतिशीलता की परिचायिका है।

राहुल जी वर्तमान भारतीय समाज के अप्रगतिशील तत्वों---वर्ग विषमता, वर्ण व्यवस्था, अन्ध रूढ़ियों का अनुसरण आदि---का भी विरोध करते हैं। सामाजिक विषमता उनकी दृष्टि में समाज के लिए अभिशाप है।[५३] जाति भेद राष्ट्रीय एकता में बाधक है।[५४] अतः उनका एक प्रमुख पात्र मोहनलाल देश की स्वतन्त्रता के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर निर्देश करता है---'वह ठोस काम यही है कि देश के भीतर धर्म और जाति भेद ने जितनी दीवारें खड़ी की हैं, उन्हें गिरा देना।'[५५] एक अन्य

स्थल पर वह कहता है—'भारत की राष्ट्रीय एकता जात-पाँत और मजहबों की चिता पर होगी।'[११]

राहुल अपने उपन्यासों में नारी-स्वातन्त्र्य के प्रबल समर्थक हैं और साथ ही नारी को उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देते हैं। साम्राज्यवादी एवं सामन्तवादी सभ्यता में नारी की स्वतन्त्रता का अपहरण हुआ और राहुल जी इसलिए साम्राज्यवाद के प्रति घृणा की भावना प्रकट करते हैं। अन्तःपुरों को वे कामशास्त्र की खुली पाठशाला बतलाते हैं[१४] जिसमें नारियों का जीवन अमानुषिक एवं नारकीय बना हुआ है।[१५] 'राजस्थानी रनिवास' में घुट घुट कर मरती सामन्ती समाज की नारी के दयनीय चित्र राहुल जी ने प्रस्तुत किये हैं—सभी अन्तःपुरों में एक ही तरह की हवा, एक ही तरह की आह और कराह है। सभी अन्तःपुरिकाओं का एक ही सा दम घुटना, अमानुषिक, अप्राकृतिक अत्याचार और दुर्व्यवहारों का शिकार होना देखा जाता है। इसीलिए तो सदियों तक वह चुपचाप सारे अत्याचारों को बर्दाश्त करती आ रही है।'[१६] इसके विपरीत वे गणराज्यों में नारी जीवन की स्वतन्त्रता एवं स्वच्छन्दता को देखते हैं। यौधेयगण में नर और नारी का भेद नहीं। पुरुष की तरह वह स्वच्छन्द है, उसका अपना व्यक्तित्व एवं अस्तित्व है। 'सिंह सेनापति' में कपिल नारी को उन्मुक्त देवी कहता है।' नारी स्वातन्त्र्य के साथ नारी के उत्तरदायित्वों की ओर भी राहुल संकेत करते हैं। 'जीने के लिए' में जेनी तथा 'सिंह सेनापति' की रोहिणी कर्त्तव्यपरायणा स्त्रियाँ हैं, केवल स्वच्छन्द रमणियाँ नहीं। जेनी देवराज से अपने प्रेम के विषय में कहती है—'हम वह हलाहल प्रेम नहीं चाहते। हम उस प्रेम को चाहते हैं जो दुरारोह घाटियों पर चढ़ने वाले दो साथियों को हिम्मत न हारने दे, थकावट से चूर चूर हुए उनके शरीर में स्फूर्ति पैदा करे, भारी से भारी खतरे और अन्तिम उत्सर्ग के लिए उनके दिलों को मजबूत करे। यदि तुम्हें श्रमजीवियों के स्वतन्त्र युद्ध में जाना होगा तो जेनी रायफल हाथ में लिए कन्धे से कन्धा मिलाकर तुम्हारे साथ जायगी।'[३१] उपन्यास में वर्णित जेनी का देवराज से स्वच्छन्द प्रेम केवल वासना नहीं, वह कर्त्तव्य और दायित्वों का भी प्रतीक है।

राहुल के उपन्यासों में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष एवं आदर्शों के लिए बलिदान का चित्रण है। 'जीने के लिए' में देवराज और जेनी इसी संघर्ष एवं बलिदान के प्रतीक हैं। जेनी अपने अन्तिम पत्र में देवराज को लिखती है—'मृत्यु! कितना भयंकर और अवांछनीय शब्द है। लेकिन मेरे लिए उसमें वह भयंकरता नहीं। जीने के लिए हम मृत्यु का आलिंगन करते हैं। मृत्यु के लिए तैयार हुए बिना जीना असम्भव है। जो जीना मृत्यु के मोल न बिकता हो वह जीना किस काम का?'[४२] इसी जीने के लिए अथवा आदर्शों एवं कर्त्तव्यों के पालन के लिए मोहनलाल, देवराज तथा जेनी संघर्ष एवं बलिदान का मार्ग अपनाते हैं। 'मधुर स्वप्न' में साम्य स्थापना के लिए मज्दकियों को संघर्ष करना पड़ता है। 'जय यौधेय' में गणराज्य एवं साम्राज्यवादी शासन-पद्धति का संघर्ष है और इस संघर्ष का नायक जय अपने प्राणों की

आहुति देता है। इस प्रकार राहुल जी के उपन्यासों के पात्र कर्तव्यों के लिए संघर्ष शील हैं।

राहुल जी के उपन्यासों में प्रतिपादित विचारधारा—पूँजीवाद के स्थान पर साम्यवाद तथा साम्राज्यवाद के स्थान पर गणतन्त्रवाद की स्थापना, धार्मिक अन्धविश्वासों एवं परम्पराओं का विरोध, वर्तमान में आस्था वैज्ञानिक प्रगति में विश्वास, नारी की स्वच्छन्दता एवं कर्तव्यपरायणता, सामाजिक विषमता पर प्रहार एवं स्वस्थ प्राचीन भारतीय परम्पराओं का समर्थन—राहुल जी को प्रगतिशील उपन्यासकार बना देती है। मार्क्सवादी उपन्यासकार सामाजिक क्रांति की प्रेरणा देना और उसका दिग्दर्शक बनना अपना धर्म स्वीकारता है। हावर्ड फास्ट ने जन विप्लव में सहयोग देना उपन्यासकार का अनिवार्य कर्तव्य माना है।[१९३] राहुल भी इस क्रांति के समर्थक प्रगतिशील कलाकार हैं।

भाषा-शैली

राहुल जी की भाषा शैली मूलतः वर्णनात्मक है। 'जय यौधेय' तथा 'सिंह सेनापति' आत्मकथात्मक शैली में रचित उपन्यास हैं, जिनमें संवादात्मक शैली का भी प्रचुर प्रयोग हुआ है पर अधिकांशतः उन्होंने वर्णनात्मक शैली का ही प्रयोग किया है। डॉ० गणेशन के शब्दों में—'राहुल जी की विकास शैली मूल रूप में सर्वत्र विवरणात्मक ही रही है, यद्यपि उसके अन्तर्गत उन्होंने फ्लैश बैक, दृश्य विधान आदि पर भी प्रयोग किये हैं।[१९७] राहुल की वर्णनात्मक शैली प्रकृति-वर्णन भाव-वर्णन, वस्तु-वर्णन आदि में दर्शनीय है। 'जीने के लिए' उपन्यास की वर्णनात्मक शैली सरल, रोचक, प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक है। सामान्यतः वर्णनात्मक शैली में प्रभाव और चमत्कार का अभाव होता है परन्तु इस उपन्यास की शैली में यह न्यूनता नहीं। सजीव कथोपकथनों, देश एवं पात्रानुकूल भाषा, मार्मिक प्रसंगों एवं रोचक वर्णनों से 'जीने के लिए' की शैली सुन्दर बन पड़ी है। वर्णनात्मक शैली के बीच आलंकारिक एवं हास्य-व्यंग्यात्मक शैली के भी सुन्दर उदाहरण इस उपन्यास में प्राप्त होते हैं।[१९८] समग्रतः राहुल की लेखन शैली वर्णनात्मक है। घटना, पात्र, वातावरण सर्वत्र इतिवृत्तात्मकता एवं वर्णना की प्रधानता है।

राहुल जी की भाषा में एकरसता नहीं है। कहीं-कहीं वह संस्कृतनिष्ठ रूप धारण कर लेती है तो कहीं अपने सहज एवं सरल रूप में प्रस्तुत है। हिन्दी मुहावरों, लोकोक्तियों एवं सूक्तियों का उसमें प्रचुर प्रयोग है। डा० सरोजिनी शर्मा उनके ऐतिहासिक उपन्यासों की भाषा के विषय में लिखती हैं—'राहुल सांकृत्यायन ने ऐतिहासिक उपन्यासों में विशिष्ट भाषा-शैली का परिचय दिया है। उन्होंने उपन्यासों में स्थानीय रंग की सृष्टि के हेतु भारत की ही संस्कृति नहीं भारतवर्ष के बाहर की संस्कृति जन-जीवन की भाषा के शब्द ग्रहण किये हैं जिससे स्थानीय वातावरण मुखर हो उठता है।'[१९९] संक्षेपतः राहुल की शैली आत्मकथात्मक एवं वर्णनात्मक है। उनकी भाषा प्रधान रूप से सरल सहज, मुहावरेदार तथा सुबोध है। प्राचीन

वातावरण को साकार करने के लिए उन्होंने संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग 'दिवोदास' जय यौधेय तथा सिंह सेनापति में किया है, जिसमें उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। वस्तुत राहुल की भाषा सर्वत्र स्वाभाविक एवं सहज है, कृत्रिमता उसमें नहीं।

राहुल जी के औपन्यासिक शिल्प की विवेचना के अनन्तर निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि राहुल जी सामाजिक राजनीतिक उपन्यासकार की अपेक्षा ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में अधिक सफल रहे हैं। अतीत की विस्मृतियों को स्मृतिपट पर विकीर्ण करने वाले राहुल ऐतिहासिक प्रतिभा के धनी हैं और उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यासों के वर्ण्य के रूप में उन विषयों का ग्रहण किया है जिनकी ओर अभी तक अन्य उपन्यासकारों का ध्यान नहीं गया था। 'ंविोंास' 'सिंह सेनापति, जय यौधेय तथा मधुर स्वप्न' विषय की मौलिकता एवं नवीनता को लिये हुए हैं। राहुल का ऐतिहासिक तथ्यों के प्रति ईमानदारी का आग्रह भी प्रशंसनीय है। राहुल की औपन्यासिक कला की अनेक न्यूनताएँ हैं, यथा सुसंगठित कथानक का अभाव, पात्रों के बहिरंग चित्रण की प्रचुरता अतिशय सोद्देश्यता आदि जिससे उनके उपन्यास उच्चकोटि के कलात्मक उपन्यास नहीं बन सके। फिर भी उनकी औपन्यासिक कृतियों की अपनी विशेषताएँ हैं। विषय-वस्तु की मौलिकता वस्तु विकास के लिए यात्रा प्रसंगों की नियोजना इतिहास और कल्पना का सुसामंजस्य व्यक्तित्व के अनुकूल पात्र सृष्टि पात्रानुकूल संवाद-योजना तथा भाषा-शैली, आत्मकथात्मक एवं वर्णनात्मक शैली के सफल प्रयोग, वातावरण अंकन की अद्‌भुत क्षमता, मार्क्सवाद तथा बौद्ध दर्शन का समन्वय तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण—राहुल के उपन्यासों में दर्शनीय हैं। वस्तुत राहुल जी ने ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की शैली का मार्ग-दर्शन किया है, इसमें किंचित भी संदेह नहीं। जय यौधेय' तथा सिंह सेनापति राहुल के दो सशक्त उपन्यास हैं जिनके वर्ण्य विषय एवं शैली ने हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासकारों को प्रभावित किया है।

सन्दर्भ

१ गबन गोदान का कथा-साहित्य पृ० ७३।
२ वही पृ० ४८ ४९।
३ हिन्दी में उपन्यास साहित्य-डॉ० रामकली पाण्डेय पृ० ४४८।
४ दृष्टिकोण (अप्रैल सितम्बर १९५२) पृ० १।
५ उपन्यास का रूप विधान पृ० ३७।
६ मिथक और स्वप्न कामायनी की मनस्सौन्दर्य सामाजिक भूमिका पृ० ११७।
७ मार्क्स थोरिटिकल फिलोसोफिकल [illegible] पृ० ५७।
८ दि इंग्लिश यूटोपिया ए० एल० मार्टन पृ० ११।
९ आईडियालोजी एण्ड यूटोपिया-मानहाइम पृ० १३३ १३४ के आधार पर।
१० बाईसवीं सदी दो हजार।
११ यूटोपिया ओल्ड एण्ड न्यू-हैरी रास पृ० २१७।
१२ बाईसवीं सदी पृ० १११।
१३ हिन्दी उपन्यास समाजशास्त्रीय विवेचन पृ० ३६६।
१४ भागो नहीं दुनिया को बदलो पृ० ४।
१५ हिन्दी उपन्यास का अध्ययन डॉ० गणेशन पृ० ८६।
१६ हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और समीक्षा डॉ० मक्खनलाल शर्मा पृ० १२९।
१७ हिन्दी साहित्य कोश पृ० ९४९।
१८ समीक्षा के सिद्धान्त डॉ० [illegible] पृ० १४४।
१९ [illegible] (फरवरी १९५९) पृ० ११२।
२० हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और समीक्षा पृ० १२९।
२१ मानव [illegible] (प्रथम भाग) रामानन्द तिवारी पृ० ३६५।
२२ हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद डॉ० त्रिभुवनसिंह पृ० १४२।
२३ कल्पना (उपन्यास विशेषांक) पृ० १३० १३१।
२४ वही।
२५ वही पृ० ७३।
२६ विचार दर्शन (दो भाग) पृ० १।
२७ दृष्टिकोण (अप्रैल-सितम्बर १९५३) पृ० ४।
२८ कल्पना (जुलाई १९५३) पृ० १०१।
२९ हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण पृ० १६८।
३० वही।
३१ [illegible] से [illegible]।
३२ [illegible] (उपन्यास) पृ० १ ३।
३३ [illegible]।
३४ विचार दर्शन (दो भाग) पृ० १।
३५ [illegible] (अखिल [illegible]) पृ० ८६।
३६ [illegible] (अक्तूबर १९६०) पृ० ६।
३७ [illegible] पृ० ११४ ११८।
३८ हिन्दी साहित्य के [illegible] पृ० १११ १२०।

३६ न्विोदास दो शन्न।
४० ऋग्वेदिक माय पृ० ३७६ ३७८, ३६८, ३४८ ३३४ ५८४।
४१ सस्कृत काव्यधारा प ५।
४२ वन्कि इण्डेक्स (भाग १) मनुवादक रामकुमार राय प० ६१७।
४३ हिन्दी ऋग्वेद प रामगोविन्द त्रिवदा प० ६६६।
४४ ऋग्वदिक इण्डिया (भाग १) मविनाशचन्द्र दास पृ १५१ १८०।
४५ भारतीय सभ्यता तथा सस्कृति का विकास बी० एन० लूनिया प० ५१।
४६ ऋग्वदिक भाय प० ३४।
४७ हिन्दू सभ्यता राधाकुमद मुकर्जी पृ० ७३।
४८ ऋग्वन्कि माय पृ० २६।
४९ वन्कि देवशास्त्र मनुवान्क डा० सूयकान्त पृ १५५।
५० ऋग्वदिक इण्न्यि (भाग १) पृ० १५१।
५१ हिन्दू सभ्यता पृ० ८१।
५२ ऋग्वदिक इण्न्यि (भाग १) प० ११८।
५३ ऋग्वेदिक माय प० २७२।
५४ वही।
५५ न्विोदास प० २४ २७।
५६ वही पृ० ४६ ५०।
५७ वही पृ ७६ ७८।
५८ वहा पृ० ७४ ७५।
५९ वही पृ० ७६ ८६।
६० वही प० ११८ १२३।
६१ सिंह सेनापति भूमिका।
६२ वही।
६३ वही विषय प्रवश।
६४ वही पृ ११।
६५ वहा प १३।
६६ विस्मृत यात्री पृ ४।
६७ सिंह सेनापति (न्तिीय सस्करण) नागाज न की मार से।
६८ विचार मोर विवेचन प० १२७ १२८।
६९ सम क्षत्रिय ट्राइ्स माफ एशीयट न्डिया पृ ७, ७४।
७० डिक्शनरी माफ पाली प्रापर नेम्ज (द्वितीय खण्ड) पृ० १९६५।
७१ महामानव बद्ध प० ७८ ८।
७२ प्राचीन भारत पृ० ४६।
७३ प्राचीन भारत का इतिन्हास प ६७ ६८।
७४ प्राचीन भारत पृ ४३।
७५ प्राचीन भारत का इतिहास प ६६।
७६ परिषद् पत्रिका (मप्रल १९६६ ई०) पृ० ५६।
७७ प्राचीन भारत का इतिहास प० ७२।
७८ प्राचीन भारत राधाकुमद मकर्जी पृ ७५।
७९ बौद्ध दर्शन मीमासा-बलन्व उपाध्याय पृ १८।

८० प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास डा० रागय राघव, पृ० ४२५, ४२७।
८१ कारपोरेट लाइफ इन एन्शीयट इण्डिया पृ० २२३ से २३३।
८२ दि ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया-वी० ए० स्मिथ पृ० ७२ ७४।
८३ प्राचीन भारत का इतिहास पृ ६६ तथा १०५।
८४ प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास पृ० ४२७ ४२८।
८५ बौद्ध धर्म और विहार-हवलदार त्रिपाठी पृ० २४ २५ ८४।
८६ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) डॉ० वासुदेव उपाध्याय पृ० ५६ ५७।
८७ दि वाकाटक गुप्त एज पृ० २८ २६ ३२ ३५।
८८ विक्रमादित्य डॉ० राजबली पाण्डेय पृ० ८४।
८९ मध्यकालयुगीन भारत-डॉ०काशीप्रसाद जायसवाल पृ ३२७।
९० दि गुप्ता एम्पायर-डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी पृ० ४५, ४७ ४८।
९१ जय यौधेय (प्राक्कथन), पृ० १।
९२ प्राचीन भारत का इतिहास, पृ० १८८।
९३ वही, पृ० १८६।
९४ गुप्त साम्राज्य का इतिहास, पृ० ७८।
९५ वही, पृ० ४२।
९६ दि एज ऑफ इम्पीरियल गुप्ताज पृ २६।
९७ वही पृ० ६।
९८ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृ० १३८।
९९ वही पृ० १३६ ४०।
१०० वही पृ० १४३।
१ १ जय यौधेय (प्राक्कथन) पृ० २।
१ २ भारत का प्राचीन इतिहास पृ २७६ २८०।
१०३ दि गुप्ता एम्पायर, पृ० ५६ ६४।
१०४ जय यौधेय (प्राक्कथन), पृ० १।
१०५ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (भाग २) पृ० १ २ १०३।
१०६ प्राचीन भारत का इतिहास पृ० २०६।
१०७ प्राचीन भारत का इतिहास डॉ० एन० एन० घोष पृ० ३०५।
१०८ एन एडवांसड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (पार्ट १) पृ० १४६।
१०९ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (भाग २) पृ० १०२ १०३।
११० कालिदास का भारत (भाग १) भगवतशरण उपाध्याय पृ० २६ २७।
१११ कालिदास का भारत (भाग २) पृ० १ ३ ५।
११२ जय यौधेय पृ० ३३८।
११३ गुप्त साम्राज्य का इतिहास (भाग १) पृ० ६३।
११४ भारत की संस्कृति और कला पृ० १५१।
११५ गुप्त और तारे डॉ० सावित्री सिनहा पृ० ४७।
११६ जय यौधेय (प्राक्कथन) पृ० २।
११७ ईरान-आर० घिर्शमैन पृ० ३०२।
११८ इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड एथिक्स (खण्ड ८) पृ० ५०८।
११९ ईरान-आर० घिर्शमैन पृ० ३०२।
१२ मौसान राज्य पृ० ४४।

१२१ ईरान भ्रार घिशमन पृ० ३०२।
१२२ इनसाइक्लोपीडिया ग्राफ रिलीजन एण्ड एथिक्स, पृ० ५०८ ५ ६।
१२३ ए हिस्ट्री ग्राफ़ परशिया (खण्ड प्रथम)-सर परसी स्काईस
पृ ४४१ ४४३ ४४६ ४५०।
१२४ वही।
१२५ ईरान पृ० ३०१ ३०२।
१२६ दि इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकना (खण्ड १८) प ४७२।
१२७ ईरान भ्रार० घिशमन पृ० ३०२।
१२८ भ्रीरान राहुल प० ४५।
१२६ ए हिस्ट्री ग्राफ परशिया (प्रथम खण्ड) प ४४६ ४५०।
१३० भ्रारान पृ० ४६।
१३१ हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास प० ४७५।
१३२ विस्मृत यात्री (दो शब्द) पृ० १।
१३३ भ्रतीत से वतमान राहुल, पृ० ३ से १४।
१३४ वही पृ० १०।
१३५ वही पृ १४।
१३६ इण्डिया एण्ड चाइना प्रबोधचन्द्र बागची प० २१६।
१३७ भारत की सस्कृति भ्रौर कला राधाकमल मुकर्जी प २११ २१२।
१३८ चीनी बौद्ध धम का इतिहास डॉ० चाऊ सियाग कुग्राग प० १२८।
१३६ भ्राज का हिन्दी साहित्य प्रकाशचन्द्र गुप्त पृ० ७६।
१४ हिन्दी साहित्य का उद्भव भ्रौर विकास रामबहोरी शुक्ल तथा भगीरथ मिश्र, प० २८५।
१४१ विचार भ्रौर विवेचन पृ० १२७।
१४२ राजस्थानी रनिवास प्राक्कथन।
१४३ हिन्दी उपन्यास मे कथाशिल्प का विकास प ३३१।
१४४ तुला भ्रौर तारे प० ५७।
१४५ विचार भ्रौर विवेचन पृ० १२६।
१४६ हिन्दी उपन्यास सुषमा धवन प ३७५ ३७६।
१४७ जीने के लिए, प० ३३५।
१४८ एतिहासिक उपन्यास भ्रौर उपन्यासकार प १४१।
१४६ भ्रालोचना (जुलाई १६५२) प० १ ५।
१५० हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास प ४७७।
१५१ विचार भ्रौर विवेचन प १२७।
१५२ हिन्दी उपन्यास मे कथा शिल्प का विकास प० ३३२।
१५३ हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण प १६८।
१५४ एतिहासिक उपन्यास भ्रौर उपन्यासकार पृ १८३।
१५५ जय यौधय प ३५।
१५६ वही पृ० १०६ से ११३।
१५७ वही प० २ २ २०७।
१५८ जीने के लिए पृ० १५३।
१५६ एतिहासिक उपन्यासा म कल्पना भ्रौर सत्य-डी० एम चितामणि पृ ८५।
१६० भ्रालोचना (जुलाई १६५२) प० १०४।

१६१ मधुर स्वप्न पृ० ८ ६ १० ८४ ८५ ७१ १४४ १४१, १२७ २३३ २३४।
१६२ जय यौधेय, पृ० १५।
१६३ सिंह सेनापति प० २६ ३३।
१६४ आलोचना (सितम्बर १९६६) पृ० १२५।
१६५ विचार और विवचन पृ० १२८।
१६६ आज का हिन्दी साहित्य प० ७६।
१६७ जो लिखना पड़ा प० १०५।
१६८ जय यौधेय प० ११ १७।
१६९ वही पृ० ७४ ७५।
१७ वही पृ० २६१ २६४।
१७१ विचार और विवेचन पृ० १३०।
१७२ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान पृ० ३४५।
१७३ कुछ विचार मुंशी प्रेमचन्द पृ० ३८।
१७४ दि पोरटेबल हेनरी जेम्ज हेनरी जम्ज पृ० ३६३।
१७५ बीसवी शताब्दी हिन्दी साहित्य नये सन्दर्भ न मीनागर वार्ष्णेय पृ० २५३।
१७६ राइटिंग पार यग पीउपल एम० एल रॉबिन्सन पृ० ११।
१७७ एन इन्ट्राडक्शन ट दि स्टडी ऑफ लिटरेचर, पृ० १४५।
१७८ राहुल साकृत्यायन का कथा-साहित्य पृ० १३१।
१७९ दि हिस्टारीकल नॉवल्ज-जार्ज ल्यू कास, प० ३०१।
१८० वही पृ ३०३।
१८१ आलोचना (सितम्बर १९६६) पृ० १२६।
१८२ जीने के लिए प० १५३।
१८३ वही पृ० १७०।
१८४ वही प० २६०।
१८५ हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण पृ० १७१।
१८६ हिन्दी उपन्यास प ३७५।
१८७ हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास पृ० ३४०।
१८८ दि हिस्टारीकल नॉवल्ज पृ० ३८।
१८९ विचार और विवचन पृ० १२५।
१९ स्काट नवर शाज दि ऐवोल्यूशन आफ मच ए परसनलिटी। इनस्टेड हा आलवेज प्रजण्टस मस विद दि परसनेलिटी कम्प्लीट-दि हिस्टारिकल नॉवल्ज प० ३८ ।
१९१ दि स्ट्रक्चर ऑफ दि नॉवल एडविन म्यूर प० २४ २५।
१९२ सन्तुलन प्रभाकर माचवे पृ० १७३।
१९३ विचार और विवेचन पृ० १२६।
१९४ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास डॉ० वेदन प ६४।
१९५ हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास प० ३०७।
१९६ दिव्योदास प १३।
१९७ मधुर स्वप्न प २१।
१९८ वही प १२।
१९९ सिंह सेनापति, पृ ३४।
२०० दिव्योदास पृ० १४५।
२०१ कुछ विचार प ४८।

२०२ हिन्दी उपन्यास-साहित्य का शास्त्रीय विवेचन पृ० १६० १६१।
२ ३ हिन्दी उपन्यास मे चरित्र चित्रण का विकास पृ० ६६।
२०४ जाने के लिये पृ० १६२।
२ ५ सिंह सेनापति पृ० ४१।
२०६ सिंह सेनापति पृ० ५६ तथा न्विोदास पृ० १४६।
२०७ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास पृ० ६४।
२०८ आलोचना (जनवरी १६५४) पृ० ३५।
२०९ हिन्दी उपन्यास म चरित्र चित्रण का विकास प० ७३ से उद्धत।
२१ विचार और विवेचन पृ० १२८।
२११ ि हिस्टोरिकल नावल्ज पृ० ३१२।
२१२ विस्मृत यात्री पृ० ११३।
२१३ जीने के लिए पृ० ११।
२१४ हिन्दी उपन्यास मे चरित्र चित्रण का विकास प० ८६।
२१५ जय यौधेय पृ ११६।
२१६ विस्मृत यात्री पृ० ११३।
२१७ सिंह सेनापति पृ० ४५।
२१८ जीन के लिए, पृ १६० १६१।
२१९ वही प १६२ १६३।
२२० जय यौधय पृ २१७ २१६।
२२१ जीने के लिए, पृ० ३१४ ३१५।
२२२ न्विोदास पृ २५ से २८।
२२३ हिन्दी उपन्यास म चरित्र चित्रण का विकास पृ ४१८।
२२४ सन्तुलन प्रभाकर माचवे प १७१।
२२५ कुछ विचार (भाग १) प्रमचन्द प ५५।
२२६ सिंह सेनापति पृ १४ १५।
२२७ वही पृ० २४।
२२८ न्विोदास पृ० २४।
२२९ जीने क लिए प० १६० १६१।
२३० मधुर स्वप्न प ३०५।
२३१ जय यौधय प० ५४।
२३२ जीने के लिए पृ ५९।
२३३ वही पृ १७० १७१।
२३४ मधुर स्वप्न प १६२।
२३५ जय यौधय प ११ १११।
२३६ वही प १६४ १११ ११२।
२३७ मधुर स्वप्न पृ ४९ ५३।
२३८ जय यौधय प० १६२।
२३९ जीन के लिए पृ ३२३।
२४ वही १६८ १७३।
२४१ जय यौधय प० २९ ३२।
२४२ विस्मत यात्री, प ४६ ४७।

२४ जीने के लिए पृ० २२४ २२५।
२४४ वात्स्यायन विमर्श पाचाप विश्वनाथप्रसाद मिश्र पृ० ६८।
२४५ आलोचना (जनवरी १९६४) पृ० ११७ ११८।
२४६ हिन्दी कथा-साहित्य-सम्पादक पुन्नालाल वर्मा पृ० २ ०।
२४७ ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार डॉ० गोपीनाथ तिवारी पृ० १५८
२४८ विचार और विवेचन पृ० १ ११।
२४९ आलोचना (अंक ३६) पृ० ७२।
२५० विस्मृत यात्री पृ० ४ ५।
२५१ वही पृ० ५ ३।
२५२ जय यौधेय पृ० ७– ६८।
२५३ साहित्य-दर्शन पृ० ३१८।
२५४ आज का हिन्दी साहित्य पृ० ७६।
२५५ दिवोदास पृ ?।
२५६ वही।
२५७ वही पृ० ६६।
२५८ सिंह सेनापति पृ० ६२ ८६ १६० १६१।
२५९ जय यौधेय पृ० ५३।
२६ वही पृ २ ।
२६१ साहित्य-दर्शन पृ० ३१६।
२६२ मधुर स्वप्न पृ० ६८ १६४।
२६३ विस्मृत यात्रा पृ० २०२।
२६४ वही पृ० ३८१।
२६५ जीने के लिए पृ० ५४ ८६ १०४ १ ७ १५३ १७० २११ २१२ २३४ २६०।
२६६ भागो नहीं दुनिया को बदलो पृ० ४ ६ १८ २८८।
६७ दिवोदास पृ० ३ ४ ५।
२६८ वही पृ० २२ १० ६५ ६१ ११० ११२।
२६९ ऋग्वेदिक आर्य पृ १५७
२७० दिवोदास पृ० ३५।
२७१ सिंह सेनापति पृ० २४ २५।
२७ वही पृ २८ ३६।
२७३ वही पृ० ६६ ६७।
२७४ जय यौधेय पृ० १३।
२७५ वही पृ० २३।
२७६ विस्मृत यात्रा पृ ५।
२७७ वही पृ ७ १५ २१ २३।
७८ वही पृ १६ १५।
७९ मधुर स्वप्न पृ ८।
२८ वही पृ० ६ ६ ।
२८१ वही पृ १३–।
२८ वही पृ० २ ३ ४।
२८३ जीने के लिए पृ ३१६ ।

२८४ जाने के लिए प २० ४७।
२८५ वही प० ४० ४२।
२८६ वही प ४३ ।
२८७ दिव्योल्लास प ५२ ७८।
२८८ वही प ६७।
२८९ सिंह सेनापति प० १७।
२९ वही प० ३३।
२९१ जय यौधेय प० ३१५।
२९२ मधुर स्वप्न प ८ १०।
२९३ विस्मृत यात्री प० ३६३।
२९४ जीने के लिए प० ८ २६।
२९५ वही प० ४३।
२९६ जय यौधेय प ४१२।
२९७ विस्मृत यात्री प० ३ ६ १३ तथा जय यौधेय प ६३।
२९८ *जय यौधेय प ४ तथा सिंह सेनापति प० २४ तथा बाईसवीं सदी प० २।*
२९९ मधुर स्वप्न प ११५।
२ वहा प ५८।
३०१ वही प २८ ।
३०२ जय यौधेय प १२।
३०३ विस्मृत यात्री प ६०।
३०४ मधुर स्वप्न प० ४४२।
३ ५ दिवोदास प ५८।
६ मधुर स्वप्न प १।
७ वही प ११।
३ ८ वही पृ ११५।
३ ९ वही प २८ ।
१ वही प १ २।
३११ विस्मृत यात्री प २ ३।
३१२ जय यौधेय प ६१ ८२।
१ सिंह सेनापति प २१४।
१४ द्रष्टव्य— दिवोदास म ... का वर्णन प ६४।
३१५ द्रष्टव्य— विस्मृत यात्री म ... के निकटवर्ती मरुस्थल का वर्णन प २३८।
३१६ राहुल सांकृत्यायन का कथा साहित्य प ३ ८।
३१७ ... ... लिटरेरी क्रिटिसिज्म इन अमरिका
—... सम्पादक एलबर्ट ... प १४१।
३१८ उपन्यास और ... राल्फ फाक्स (भूमिका रामविलास शर्मा) प २।
१९ साहित्य का ... और ... प १६३।
२ ... — ... प ४।
२१ ... (अक्टूबर १ ५३) प ।
३२२ जनशक्ति (अप्रैल १ ६७) प १६।
३२ साहित्य ... प ३१८।

३२४ ग्रालोचना (जुलाई १९५२) पृ ९ ९ ।
२५ विचार और विवचन १३० ।
३२६ हि न्दी उपयास समाजशास्त्रीय ग्रध्ययन—डॉ० चण्डीप्रसाद जाशी पृ० ३९८ ।
३२७ स्वतन्त्रता और साहित्य पृ० २१२ ।
३२८ एतिहासिक उपन्यासा में कल्पना और सत्य प० ८४ ।
३२९ सन्तुलन प्रभाकर माचव प० ३७ ।
३३० ग्राज का हिन्दी साहित्य प० ८३ ।
३१ हिन्दी उपन्यास-सुषमा धवन प० २६५ ।
३२ हिन्दी साहित्य का वज्ञानिक इतिहास डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त पृ० ८२५ ।
३३३ निवेदन प २० ।
३४ वही प० ११६ ।
३३५ ग्राज का हिन्दी साहित्य प ८३ ।
३३६ मधर स्वप्न प० २६६ ।
३७ मार्क्सवाद और साहित्य-महेन्द्रचन्द्र राय प ५४ ।
३ ८ जय यौधय पृ० १७४ ।
९ विस्मृत यात्री प ३८५ ।
३४० वही प० २७२ ।
३४१ मधुर स्वप्न पृ १६२० ।
३४२ वही प २६५ ।
३४३ विस्मृत यात्री प० ३७ ३७३ ३७५ ।
३४४ मार्क्सवाद यशपाल प० ५३ ।
३४५ मधर स्वप्न प० १८३ ।
३४६ वज्ञानिक भौतिकवाद राहुल प ७६ ।
४७ जय यौधय प ११२ ।
३४८ मधुर स्वप्न प १८४ ।
३४९ वही प० १८५ ।
५० जय यौधय पृ० ११२ ११३ ।
३५१ वही प ११० १११ ।
३५२ वहा पृ० २०७ ।
३५३ वहा पृ० १९२ ।
३५४ विचार और विवेचन प० १० ।
३५५ बाईसवा सदी पृ० १ ।
५६ वही प० ६ ४७ २६ ७ १२६ १२७ ।
५७ वही प १२७ ।
५८ सिंह सेनापति प० ३ ।
५९ वही पृ० ७ ।
६ वहा पृ ४१ ।
३६१ वही प ७१ स ७४ ।
३६२ सिंह सेनापति प ७६ ।
३६३ वही प १ ७ ५३८ १४४ १४ १४७ ।
३६४ वही प १५७ ।

३६५ जय यौधय प० २८ ।
६६ शादा प ५ ८।
३६७ हिन्दी व संस्कृत नाटकों उत्पत्ति प० ४७६।
३६८ मधर स्वप्न । ५१।
३६९ वही प ११८।
७० वही।
७१ वही प १२८।
३७२ वही प १२७।
३७३ वही प १३८।
३७४ वही प० १४ ।
३७५ जीने के लिए प० १४३ १५१ १७०
७६ भागो नहीं दुनिया को बदलो प ७३।
३७७ दृष्टिकोण (जुलाई सितम्बर १९५२) प ४।
७८ बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भरतसिंह उपाध्याय प ५७४।
३७९ भारतीय दर्शन वाचस्पति गरोला पृ० १८८।
३८० दर्शन दिग्दर्शन प० ५१४।
३८१ विस्मृत यात्री प १९९।
३८२ भारतीय दर्शन प १९ ।
३८३ बौद्धदर्शन प ३८।
३८४ सिंह सेनापति प २७३।
३८५ वही।
३८६ विस्मृत यात्री प ८५।
३८७ भारतीय दर्शन डॉ राधाकृष्णन् पृ० ४१८ ४१९।
३८८ बौद्ध धर्म दर्शन आचार्य नरेन्द्रदेव प० २४१।
८९ जय यौधय प० ११२।
३९ भारतीय दर्शन-वाचस्पति गरोला प १९२।
९१ जय यौधय प ११९।
९२ बद्ध एण्ड दि गास्पल आफ बद्ध इज्म आनन्दकुमार स्वामी पृ ११७।
३९३ भारतीय दर्शन प १९९।
३९४ बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन प० ४८७।
९५ भारत की सांस्कृतिक इतिहास सत्यकेतु विद्यालंकार प ६२ ६ ।
३९६ जय यौधय प० १११।
९७ वही प ११ ।
३९८ वही प २ ।
३९९ वही प ३१।
४ वही प २
४ १ विस्मृत यात्री प ११३।
४ २ वही प ११५।
४ बद्धइज्म स [illegible] प १ ८।
४ ४ दो अतियां (१) काम सख म लिप्त होना (२) शरीर पीड़ा म लगना

—बौद्ध दर्शन पृ २३।

४०५ सिंह सेनापति पृ २७५।
४०६ बुद्ध और बौद्ध धर्म चतुरसेन शास्त्री प २७।
४०७ वही पृ० ३७।
४०८ जय यौधेय प २ ६।
४०९ विस्मृत यात्री पृ २ ७।
४१० सिंह सेनापति पृ २६६।
४११ मधुर स्वप्न प ४८।
४१२ रेल का टिकट भदन्त आनन्द कौसल्यायन प १५१।
४१३ रामराज्य और मार्क्सवाद राहुल प० ६३।
४१४ आलोचना (जुलाई १९५२) पृ० १ ४।
४१५ हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण प १६६।
४१६ हिन्दी उपन्यास प० ३६७।
४१७ जय यौधेय पृ० ११० १११।
४१८ विचार और विवेचन प० १३१।
४१९ जय यौधेय प० १११।
४२ सिंह सेनापति प० ५३।
४२१ जय यौधेय प ११२।
४२२ हिन्दी उपन्यास पृ० ५७७।
४२३ विस्मृत यात्री प० ५७२।
४२४ वही प० ७३।
४२५ वही पृ० ७२।
४२६ वही प० ३७५।
४२७ वही प० ११२ ११३।
४२८ जय यौधेय प ३०।
४२९ ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार पृ १५१
४३० सिंह सेनापति पृ १५३।
४३१ जय यौधेय प १५।
४३२ राजस्थानी रनिवास प० १५ ।
४३३ जय यौधेय प० ७७।
४३४ सिंह सेनापति प २५।
४ ५ वही प १३५।
४ ६ राजस्थानी रनिवास प १३८।
४३७ मधुर स्वप्न पृ० ८५।
४३८ वही प० १३८।
४३९ सिंह सेनापति प ३१।
४४० जय यौधेय प १४६।
४४१ मधुर स्वप्न पृ ७१।
४४२ सिंह सेनापति प० १३८।
४४३ मधुर स्वप्न प० ५१।
४४४ वही पृ० २८१ २८२।
४४५ विचार और विवेचन प १ ।

४४६ ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार पृ० ११५ ।
४४७ आलोचना (जनवरी १९५२) पृ १०३ ।
४४८ सिंह सेनापति पृ० १३ ।
४४९ जय यौधेय पृ० १६१ ।
४५० वही पृ० १६४ ।
४५१ रेल का टिकट पृ १५ ।
४५२ आलोचना (दिसम्बर १९६६) पृ० १३१ ।
४५३ आज की समस्याएँ पृ ४४ ४८ ।
४५४ जय यौधेय पृ० ३४१
४५५ जीने के लिए पृ० ५६ ।
४५६ आज की समस्याएँ पृ ६१ ।
४५७ जीने के लिए पृ० ५२ ।
४५८ (क) सिंह सेनापति पृ० ५३ ५४ (ख) जय यौधेय पृ २६४ १६२ १६४
(ग) जीने के लिए, पृ० १३० १८६ १८७ (घ) मधुर स्वप्न पृ० २८ १९ २० ।
४५९ (क) जय यौधेय पृ० ३० ५४ (ख) सिंह सेनापति पृ० ६८ १५, १६ ।
४६० जय यौधेय पृ १५७ ।
४६१ जीने के लिए पृ० ६० ।
४६२ वही पृ० २६८ ।
४६३ वही पृ० ४४ ।
४६४ जीने के लिए पृ ५१ ।
४६५ वही ।
४६६ वही पृ ५६ ।
४६७ जय यौधेय पृ० ५४ ।
४६८ वही पृ० ६२ ।
४६९ राजस्थानी रनिवास पृ० २२० ।
४७० सिंह सेनापति पृ ७३ ।
४७१ जीने के लिए, पृ १६१ ।
४७२ वही पृ ३१४ ।
४७३ लिटरेचर एण्ड रीयलिटी हावर्ड फास्ट पृ १५ ।
४७४ हिन्दी उपन्यास का अध्ययन डॉ गणेशन पृ १३० ।
४७५ जीने के लिए पृ० ६५ ११३ ।
४७६ राहुल जी का कथा-साहित्य (टंकित शोध प्रबन्ध) डॉ मुकटलाल गुप्त पृ २१६ ।

राहुल जी के अनूदित उपन्यास

अनूदित रचनाएँ किसी भी भाषा के साहित्य की निधि होती है। राहुल सांकृत्यायन हिन्दी में अनूदित रचनाओं के विषय में लिखते हैं— अनुवाद या स्वतन्त्रानुवाद में ही हमारे गद्य-साहित्य की सृष्टि हुई है और जहाँ तक हमारे प्राचीन या प्रान्तीय साहित्य का सम्बन्ध है हमारी भाषा में काफी अनुवाद हैं। किन्तु उनमें भी अधिक मूलापेक्षी सरस अनुवादों की कमी है। और हमारे साहित्य में विश्व की कृतियों के प्रामाणिक अनुवाद तो अभी हुए ही नहीं हैं।' इस दृष्टि से मौलिक साहित्य सर्जना के साथ राहुल जी की अनूदित कृतियों का भी हिन्दी साहित्य में अक्षुण्ण महत्व है। संस्कृत, पालि, तिब्बती से बौद्ध धर्म एवं दर्शन सम्बन्धी ग्रन्थों के अनुवादों के अतिरिक्त राहुल जी ने अंग्रेजी तथा ताजिक भाषा से अनेक औपन्यासिक कृतियों का अनुवाद भी किया है। हिन्दी के अनूदित उपन्यासों में इनका विशिष्ट स्थान है। अंग्रेजी से अनूदित उपन्यासों में राहुल जी ने पर्याप्त स्वच्छन्दता से काम लिया है अतः इन्हें अनुवाद के स्थान पर रूपान्तरण कहना अधिक उपयुक्त होगा। ताजिक भाषा से ऐनी के महत्त्वपूर्ण उपन्यासों के अनुवाद का श्रेय राहुल जी को ही प्राप्त है। अतः राहुल जी के अनूदित उपन्यासों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—(क) अंग्रेजी से रूपान्तरित उपन्यास, (ख) ताजिक से अनूदित उपन्यास।

(क) अंग्रेजी से रूपान्तरित उपन्यास

राहुल जी के रूपान्तरित उपन्यास हैं— 'शैतान की आँख', 'विस्मृति के गर्भ में', 'जादू का मुल्क' तथा 'सोने की ढाल'। अंग्रेजी भाषा में दक्षता प्राप्त करने के व्यक्तिगत उद्देश्य से राहुल जी ने इन चार उपन्यासों का रूपान्तरण किया है। इस विषय में राहुल जी का कथन द्रष्टव्य है—'१९२३ २५ ई० में दो वर्ष मुझे हजारीबाग जेल में रहना पड़ा था। उस समय स्वाध्याय में कुछ काम करता रहता था। उसी में अंग्रेजी उपन्यासों के अनुवाद का काम भी था। … मुझे अफसोस है जिन ग्रन्थों के अनुवाद हैं उनका और उनके कर्ताओं का नाम मैंने नोट नहीं कर

रखा दूसरी तरह से प्रयत्न करने पर मुझे नाम नहीं मालूम हो सके। अनुवाद में बहुत अधिक स्वतन्त्रता से काम लिया गया है।" जादू का मुल्क की भूमिका में भी राहुल जी की इसी प्रकार की स्वीकृति है— शतान की आँख, विस्मृति के गर्भ में, सोने की ढाल तथा जादू का मुल्क चारों उपन्यासों का स्वतन्त्र सुवाद के अतिरिक्त अपने नवतरणों में साहस पैदा करने के ख्याल से भी १९२८ ई० में मैंने किसी विस्मृत अंग्रेजी लेखकों के उपन्यासों में बहुत परिवर्तन के साथ अनुवादित किया था।[3] राहुल जी के इस कथन से स्पष्ट है कि ये रूपान्तरित उपन्यास उन्होंने स्वतन्त्र सुवाद के साथ तरुणों में उत्साह एवं साहस के संचार के लिए रचे हैं। हिन्दी में साहसिक उपन्यासों की कमी ने भी उन्हें रूपान्तरण की प्रेरणा दी है।[4] इन उपन्यासों के मूल लेखक तथा मूल कृतियों के नाम अज्ञात हैं। अनुवादक ने अपने अंग्रेजी भाषा सम्बन्धी ज्ञान को विकसित करने के उद्देश्य से इन रूपान्तरणों को प्रस्तुत किया है, अतः उच्च कोटि के कलात्मक एवं भावात्मक अनुवादों की विशेषताएँ इनमें उपलब्ध नहीं हो सकती।

शतान की आँख एक रहस्य रोमांचपूर्ण कृति है। शतान की आँख कथा का केन्द्र है यही उपन्यास का रहस्य है। उपन्यास के अन्त में विजयशंकर द्वारा इसका रहस्य उद्घाटित किया जाता है कि मुर्दों का गुफावासी 'शतान की आँख' एक अमूल्य वज्रमणि थी। हरि मोहन और माधव इस उपन्यास में साहसी नाविक के रूप में चित्रित हैं। विस्मृति के गर्भ में का कार्य क्षेत्र अफ्रीका का अन्धमहाद्वीप है। मिस्र की प्राचीन सभ्यता से सम्बद्ध अनेक विचित्रतापूर्ण तथ्यों का उद्घाटन इस रोमांचक कल्पना प्रधान उपन्यास का प्रतिपाद्य है। मितनीहर्पी की सराफिम की समाधि उपन्यास का रहस्य है और उससे भी बढ़कर रहस्य वह गावरला है जिसके लिए शिवनाथ जौहरी की हत्या होती है तथा धनदास जौहरी प्रो० विद्याव्रत को साथ लेकर मितनीहर्पी जाना चाहता है। इस उपन्यास में कप्तान धीरेन्द्रनाथ महाशय चाट प्रो० विद्याव्रत तथा धनदास जौहरी की अफ्रीका के तप्त मरुस्थल की पदयात्रा एवं मिस्र की विचित्रतापूर्ण सभ्यता का वर्णन है। यह उपन्यास लेखक की कल्पनाशक्ति एवं सुविकसित ऐतिहासिक रुचि का भी परिचायक है। इस उपन्यास का घटनाचक्र अथवा कथानक काल्पनिक है परन्तु सर्वत्र यथार्थ एवं इतिहास रस से युक्त प्रतीत होता है। जादू का मुल्क मध्य अफ्रीका के अन्धकाराच्छन्न देश की विचित्रताओं का अंकन करने वाला रोमांचक उपन्यास है। पानी एक जादूगर बादशाह है जो तुगाला जाति पर राज्य करता है उसके प्रेम का अन्वेषण ही कुमार नरेन्द्र से यवन तथा बाब स्पति मिश्र का उद्देश्य है। इस प्रकार उपन्यास में नूतन भौगोलिक परिवेश एवं नई सभ्यता की खोज प्रतिपाद्य है तथा शरद् भगवानसिंह जैसे प्रागैतिहासिक पशुओं का वर्णन अत्यधिक रोचक है। 'सोने की ढाल' घटना प्रधान साहसिक उपन्यास है। इस उपन्यास का सम्बन्ध भी अफ्रीका महाद्वीप के साथ है। घटना एवं रहस्यों से पूर्ण यह उपन्यास अत्यन्त सरस है। सोने की ढाल के वास्तविक अधिकारी की खोज

उपन्यास का रहस्य है। नायक उसका वास्तविक अधिकारी है। मोटियो इस रहस्य को जानता है। वह सर्वत्र नायक के मार्ग में बाधक बनकर आता है। उपन्यास के अन्त में वह द्वार नायक को प्राप्त होती है जिसकी प्राप्ति में कप्तान प्रतापनारायण तथा उसके परिवार के लोग सहायक बनते हैं।

राहुल जी के रूपान्तरित उपन्यासों में उनके मौलिक ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों से भिन्न प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं। इनमें सर्वत्र एक रहस्यमय वातावरण बना रहता है जिसके अनावरण में नायकों के साहसिक कृत्यों का अंकन हुआ है। इनमें जासूसी एवं तिलस्मी उपन्यासों की तरह रहस्यमयता एवं कौतूहल जैसे तत्त्व विद्यमान हैं परन्तु ये जासूसी अथवा तिलस्मी उपन्यास नहीं हैं। इन उपन्यासों में उपन्यासकार ने पर्यटन, युद्ध, शान्त और रोमांचक साहस को लेकर विस्मृत अतीत के गर्भ में प्रवेश किया है तथा अपनी कल्पना से इन रोमांचक कथाओं को निर्मित किया है। कहीं-कहीं इनमें इतिहास का भी आभास होता है यद्यपि वस्तु काल्पनिक ही है। अतः इन्हें रोमांचक उपन्यास का अभिधान देना ही संगत प्रतीत होता है। तिलस्मी जासूसी साहसिक एवं ऐतिहासिक उपन्यासों के समान ही कल्पना की अजस्र धारा इन उपन्यासों की विशिष्टता है। ये रोमांचक उपन्यास राहुल जी की हिन्दी को नई देन हैं। रहस्य और साहसिकता इन रोमांचक उपन्यासों की वस्तु के मुख्य तत्त्व हैं। वैज्ञानिक तथ्य अज्ञात एवं विचित्र स्थान यहाँ रहस्य एवं कौतूहल की सृष्टि करते हैं। श्यामनारायण अग्निहोत्री 'जादू का मुल्क' आदि राहुल जी के रूपान्तरित उपन्यासों को वैज्ञानिक तथ्यों से पूर्ण कथानक वाले उपन्यास कहते हैं।[१] साहसिकता' इन रोमांचक उपन्यासों की वस्तु की दूसरी विशिष्टता है। इन उपन्यासों के नायकों का साहस युद्ध में पराक्रम प्रदर्शन एवं पर्यटन प्रियता के रूप में प्रदर्शित है। इस प्रकार राहुल जी के रोमांचक उपन्यास विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कारों एवं अज्ञात प्रदेशों की खोज के लिए प्रेरक का कार्य करते हैं। इनका उद्देश्य सस्ता मनोरंजन मात्र नहीं है।

भाषा शैली की दृष्टि से राहुल जी के ये रूपान्तरण सफल ही कहे जायेंगे। मुहावरों एवं लोकोक्तियों से युक्त प्रवाहमयी भाषा 'जादू का मुल्क' तथा 'विस्मृति के गर्भ में' दर्शनीय है। 'जादू का मुल्क' में सुगाला के रहस्यमय प्रदेश का सुन्दर चित्रण है। प्रवाहमयी भाषा का एक उदाहरण 'विस्मृति के गर्भ में' से दर्शनीय है— "यह थे मेरे स्वप्न के भिन्न भिन्न दृश्य! मैंने अपना जीवन विगत लोगों में बिताया है। मैंने उनके दुःख सुख उनकी आशा निराशा सबमें उनका साथ दिया है। मैंने उनके शिल्प कौशल और कला चातुर्य को जाना है। मैंने उनकी विजयों और सफलताओं का आनन्द लूटा है। मैंने दुष्काल विषूचिका और मृत्यु के समयों की उनकी विपत्ति में आँसू बहाया है। और अब जान पड़ता है किसी दैवी चमत्कारों द्वारा यह मेरे अभिन्न यार मैं हैं कि मैं इन्हीं आँखों से उन्हें देखूँ इन्हीं कानों से उनके संगीत और स्तुति पाठ को सुनूँ।"[१] सान की ढाल में राहुल जी की भाषा वात्सल्य हास परिहास आदि

भावा के चित्रण में सफल रही है। भावानुकूल शब्दावली तथा अलंकारमयी शब्द योजना 'शैतान की आँख' में मिलती है। राहुल जी भाषा के विषय में दुराग्रही नहीं हैं। वे संस्कृत अरबी फारसी, अंग्रेजी तथा ग्रामीण शब्दों का भी स्वतन्त्रता से प्रयोग करते हैं।"

राहुल जी की भाषा में कहीं-कहीं वाक्य गठन एवं व्याकरण-सम्बन्धी भूलें भी हैं। मिहनत वानविस शकरिला आदि अशुद्ध प्रयोग शैतान की आँख में हैं। आदमी मिश्रिया आँसू बहाया' आदि व्याकरण-सम्बन्धी त्रुटियाँ विस्मृति के गर्भ में' भी हैं।[८] कहीं कहीं वाक्य गठन भी शिथिल है—'जब तक उसके पास गाबरेला मूर्ति रहेगी, वह कभी नहीं विश्राम शान्ति और सुख पायगा।' वचन लिंग एवं विभक्ति सम्बन्धी ऐसी भूलें शैतान की आँख में और भी अधिक हैं। इसमें भौगोलिक एवं अंग्रेजी नामों के उच्चारण भी अशुद्ध हैं।

राहुल जी की शैली इन उपन्यासों में भी प्रधानतया वर्णनात्मक है। 'शैतान की आँख में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग है। बीच-बीच में संवादात्मक एवं वर्णनात्मक शैली भी मिलती है। मौत की ढाल में भाषा शैली वर्णनात्मक एवं सम्भाषणमूलक है। 'जादू का मुल्क' भी वर्णनात्मक शैली में ही प्रस्तुत है। शैली की दृष्टि से राहुल जी का विस्मृति के गर्भ में एक सुन्दर रूपान्तरण है। 'सिंह सेनापति' की तरह यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास के उपोदघात की सिंह सेनापति के विषय प्रवेश से पर्याप्त समानता है। 'उपोदघात यहाँ उपन्यास का अध्याय ही प्रतीत होता है।

संक्षेप में राहुल जी के रूपान्तरित उपन्यास हिन्दी में रोमांचक उपन्यास की एक नई विधा के मार्ग दर्शक कहे जा सकते हैं। ये उपन्यास यायावर राहुल के व्यक्तित्व के अनुकूल हैं। कहीं कहीं भाषा सम्बन्धी कुछ त्रुटियाँ होने पर भी अनुवाद की दृष्टि से ये उपन्यास अच्छे बन पड़े हैं। विशेषकर विस्मृति के गर्भ में तो अत्यन्त सुष्ठु रूपान्तरण कहा जा सकता है।

(ख) ताजिक से अनूदित उपन्यास

राहुल जी के अनूदित उपन्यास हैं— दाखुंदा जो दास थे अनाथ 'अदीना', सूदखोर की मौत तथा शादी। इन उपन्यासों का राहुल जी ने सन १९४७ से १९५२ के मध्य अनुवाद किया था। प्रथम पाँच उपन्यास सदरुद्दीन ऐनी द्वारा लिखित हैं तथा शादी जलाल इकरामी द्वारा। सदरुद्दीन ऐनी सोवियत ताजिक साहित्य के संस्थापक एवं प्रवर्तक हैं। ऐनी ताजिक जनता के जीवन का वास्तविक चित्रण करने वाले प्रथम उपन्यासकार हैं। राहुल जी उन्हें ताजिक भाषा तथा सोवियत मध्य एशिया का प्रेमचन्द मानते हैं।' यदि प्रेमचन्द की कृतियाँ भारतीय जनता के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत करती हैं तो ऐनी की साहित्यिक कृतियाँ ताजिकिस्तान की जनता की वीरगाथाएँ हैं।" जलाल इकरामी ऐनी के शिष्य एवं

ताजिक जनजीवन का चित्रण करने वाले दूसरे महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार है। इन दोनो
उपन्यासकारों ने ताजिक जनजीवन का अमीरों द्वारा शोषण एव शोषण से मुक्ति के
लिए जनता के क्रान्तिकारी प्रयत्नों तथा जन जागृति का चित्रण अपने उपन्यासों में
किया है।

राहुल जी ने उक्त उपन्यासों को अपनी साम्यवादी विचारधारा के अनुकूल
पाया और भारतीय पाठकों को ताजिकिस्तान में हुए साम्यवादी क्रान्तिकारी परिवर्तनों
से परिचित कराने के लिए ही इन उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया। राहुल
जी भारत के शोषित समाज की स्थिति एव अस्वस्थ जीवन-पद्धति का उपचार साम्य
वाद द्वारा ही सम्भव मानते हैं। ताजिकिस्तान भी इन्हीं स्थितियों से गुजरा है और
वह समस्त क्रान्तिकारी परिवर्तनों को देख चुका है। सूदखोर की मौत' की भूमिका में
राहुल जी लिखते हैं— वह मध्य एशिया के उस शोषित जीवन का यथार्थ चित्रण
करते हैं, जो क्रान्ति के बाद समाप्त हो गया लेकिन हमारे यहाँ अंग्रेजों के भाग जाने
के बाद आज तक वह वैसा ही बरकरार चल रहा है। उनके चित्रित समाज की
बहुत-सी प्रथाएं तथा कमजोरियाँ हमारे समाज में भी मौजूद हैं इसका पता हमें एनी
के ग्रन्थों से मिलता है।[१२] इस प्रकार एनी तथा इकरामी के उपन्यासों की केन्द्रीय
विचारधारा लेखक के मनानुकूल साम्यवादी विचारधारा ही है। अतएव इन उप
न्यासों का अनुवाद लेखक ने अपने निश्चित उद्देश्य एव विचारधारा के प्रचार प्रसार
के लिए किया है। इसके साथ ही अनुवादक ताजिक भाषा को हिन्दी के समीप
समझता है। इस विषय में उसका कथन है— ताजिक भाषा वही फारसी भाषा है, जिस
से अब भी हमारे यहाँ के लाखों आदमी परिचित हैं और हमारी हिन्दी के निर्माण में
उसका हाथ है। हमारी भाषा पर जो प्रभाव पड़ा है उसके देखने से स्पष्ट मालूम
होता है कि वह ईरानी फारसी का नहीं बल्कि ताजिक फारसी का है।[१३] इस प्रकार
ताजिक के कई शब्दों से भारतीय पाठक परिचित हैं तथा इन उपन्यासों में वे परिचित
सा परिवेश अनुभव करते हैं।

दाखुन्दा एनी की यथार्थवादी औपन्यासिक कृति है। इसमें बुखारा के
अमीर के शासन में एनी अपने नायक यादगार और गुलनार के कठिन जीवन को
दिखलाता है और उस स्वतन्त्रता को भी चित्रित करता है जिसे क्रान्ति के बाद
उन्होंने प्राप्त किया। दयाशंकर के शब्दों में दाखुन्दा का महत्त्व सबसे अधिक इस
बात में है कि इसमें बुखारा और ताजिकिस्तान की बहुत-सी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक
घटनाओं और वर्ग-संघर्ष का चित्र खींचा गया है।[१४] दाखुन्दा में सन १८६८ से
१९३० तक के ताजिकिस्तान के इतिहास का चित्रण है। जो दास थे एनी के वृहत्
उपन्यास गुलामान का अनुवाद है। राहुल जी ने पहले इसे उर्दू में तथा बाद में
हिन्दी में अनूदित किया।[१५] इस उपन्यास में सन् १८४० से १९२३ ई० तक के
ताजिकिस्तान के इतिहास का यथार्थ एव कलात्मक अंकन हुआ है। इसमें दासों एव
कृषकों की दयनीय स्थिति जदीदवाद (नवयुगवाद) के खोखलेपन अमीरशाही का

विनाश बालशेविक क्रांति बाचमचियो का उन्य अत्याचार एव अवसान तथा ताजिकिस्तान म कलखोजो की स्थापना आदि का यथातथ्य वणन है।

अदीना 'अनाथ तथा **सूदखोर की मौत** ऐनी के तीन लघु उपन्यास हैं। 'अदीना ताजिक भाषा तथा एनी का प्रथम उपन्यास है। इसम एक अनाथ ताजिक तथा उसकी मगेतर गुलबीबी की कहानी के माध्यम स शोषित वग की करुण कथा कही गई है। यह उपन्यास दुखान्त है। अनाथ का घटनाकाल सन १९२१ से १९३१ तक है। इस समय ताजिकिस्तान म सवत्र अशांति एव अव्यवस्था थी। तत्कालीन जनता द्वारा अप्रगतिशील शक्तियो का सामना किस प्रकार किया गया—यही उपन्यास का प्रतिपाद्य है। सूदखोर की मौत (मर्गिसूदखूर) म ऐनी न बुखारा के सूदखोरो का जीवन अंकित किया है। कारी इश्कम्बा के रूप म लेखक न वफन खसोट सूदखोर का यथाथ चित्र प्रस्तुत किया ह।

दादी उपन्यास म जलाल इकरामी न ताजिक सामूहिक कृषि (कलखोज) का वणन किया है। सामूहिक श्रम के फल को दिखलाते हुए सामूहिक खेतियो की उन्नति ताजिक ग्रामो के सुधार तथा उनके आधुनिकीकरण का यथातथ्य वणन इस उपन्यास म हुआ है। इस उपन्यास म सन १९२६ स १९४१ के ताजिकिस्तान के आर्थिक विकास को प्रस्तुत किया गया ह।

उक्त अनदित औपन्यासिक कृतियो के आधार पर राहुल जी की अनुवाद कला की कतिपय प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है—

(१) राहुल जी न मूल ताजिक भाषा मे सीधे हिन्दी मे अनुवाद प्रस्तुत किए हैं तथा मूल की मौलिकता एव सरसता को हानि नही पहुचने दी।

(२) गद्य भागो के अनुवाद म ताजिक लेखको की मूल विभिन्न शलियो की राहुल जी न पूणतया रक्षा की है। यथा दाखुदा म सामान्य वणनात्मक शली के साथ कथोपकथन शली, भावात्मक शली चित्रात्मक शली एव आलकारिक शली का यथास्थान प्रयोग हुआ है।[१९] इसी प्रकार दादी म प्राकृतिक चित्रो पवतीय सौन्दय के चित्रण, मानवीय सौन्दय चित्रो को अंकित करते समय आकपक एव भव्य व्यक्तित्वो के प्रस्तुतीकरण तथा तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत करन म राहुल जी ने विभिन्न शलियो का प्रयोग किया है। सूदखोर की मौत म भी व्यक्तित्व अकन यथार्थात्मक चित्रण प्रकृति के दश्यो क सूक्ष्म चित्रण तथा आलकारिक एव प्रतीकात्मक वणन म विभिन्न शलियो का सुन्दर निदशन ह।[१८]

(३) राहुल जी ने उपन्यासो नगत पद्य भाग का अनुवाद समाना तर हिन्दी छन्दो म करने का प्रयास किया है। अधिकाश अनुवाद मुक्त छन्द म हुए है। इस क्षेत्र म राहुल जी का विशेष सफलता नही मिली। वे भावरक्षा म तो सफल रहे है, पर मूल म जो नाद सौन्दय एव ध्वन्यात्मकता है उसकी रक्षा राहुल जी नही कर सके। एक-दो उदाहरण प्रस्तुत ह।

दस्तके मन दस्तक तू,
दम्तक नीरस्तक तू ।
चे मी गव्द व गदनम
हलका गव्द दस्तके तू । (दाग्दा (मूल) पृ० १६८)

राहुल जी का अनुवाद है —
तेरा हाथ औ मेरा हाथ
तेरा हाथ सुन्दर है यह ।
क्या ही अच्छा मेरे गले
हार होए तेरा हाथ यह । (दाग्दा पृ० १२५)

यहाँ 'चे मी' के भाव की रक्षा नहीं हो सकी । चे मी का अर्थ है 'तो क्या होगा ?' जिसमें कौतूहल है जो 'क्या ही' में नहीं आ सका । इसी प्रकार हार कह कर भी मूल के सौंदर्य की रक्षा नहीं हुई । भाव-सौंदर्य की रक्षा निम्न पद में भली भाँति हुई है —

चश्मके मन चश्मके तू
चश्मके पुरखश्मके तू ।
ने मी दाद व गूय मन
गमजा कुनद चश्मके तू । (दाग्दा (मूल), पृ० १६८)

राहुल जी ने इसका अनुवाद किया है —
मेरी अँखियाँ तेरी अँखिया
गुस्सा भरी तेरी अँखिया,
क्या अवस्था मेरी होगी,
घायल करें तेरी अँखियाँ । (दाग्दा, पृ० १२८)

चश्मक चश्मा का लघु रूप है और अनुवाद में उसके लिए अँखियाँ का प्रयोग सार्थक है । इसी प्रकार 'जो दास थे' के पद्यानुवादों में भी संगीत का अभाव है । यही स्थिति गानों के पद्यानुवादों की है । 'मेरा मस्त चित्र आया—फूल पर फूल रखा'[?] कवि साधारण अनुवाद है, न छन्द है, न गीत । अभिप्राय यह कि राहुल जी के पास कवि का हृदय नहीं है विचारक का मस्तिष्क है अतएव उनके पद्यानुवाद सरस नहीं बन पड़े ।

(४) राहुल जी के अनुवादों की गद्य भाषा सशक्त एवं सजीव है । सूदखोर की मौत का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—'घोड़े की लाश पर तीन चार कुत्ते भी थे जो एक दूसरे पर गुरगुराते गोश्त काट काट कर खा रहे थे । कभी कभी लोभ के मारे जैसे साम्राज्यवादी एक दूसरे पर टूटते हैं, वैसे ये भी भूँकते हुए एक दूसरे के सिर पर दाँत और पंजा मारते और उसके बाद फिर गोश्त खाना शुरू करते । कौए भी चारों तरफ से आकर जो कुछ मिल जाता उसे पकड़ते, लेकिन जब कुत्ते उनकी तरफ लपकते, तो कायं-कायं करते उड़ने के लिए मजबूर होते । मानो यह छोटे छोटे पूँजीपति थे, जो

कि विश्व के स्वामी साम्राज्यवादियों की अनुमति से कुछ और पाकर गुजारा कर रहे थे।[२] इस उदाहरण में साम्राज्यवाद की समीक्षा बड़ी सरल एवं प्रवाहमयी भाषा में की गई है। भाषा में व्यंग्यात्मकता एवं अलंकृति है। व्यंग्य अत्यंत सटीक है। 'जो दास थे' में युद्ध वर्णन में भी भाषा का यही रूप मिलता है।[३१] कई स्थलों पर मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी सुन्दर एवं सार्थक प्रयोग हुआ है।[३२]

(५) राहुल जी ने अनुवादों की भाषा में रूसी, ताजिक फारसी उर्दू आदि के प्रचलित एवं अप्रचलित शब्दों का भी प्रचुर प्रयोग किया है। उन शब्दों विदेशी शब्दों के कोष्ठकों में अर्थ भी दिए हैं परन्तु इसमें स्वाभाविक वाचन में तो कठिनाई होती ही है। फारसीनिष्ठ भाषा का एक उदाहरण देखिए—'तुम दमूलना जुजियात (गौण कार्य आदि) में डूब रहे हो तुमने मुख्य बातों को छोड़ रखा है। तुम शेरख्वानी और शेरगोई (कविता-पाठ) में बहुत मत फँसो। कौन सा शायर बाय (सेठ) हुआ कि तुम भी (सेठ) बनोगे।[३३] इस प्रकार की भाषा हिन्दी पाठक के लिए कठिन एवं अरुचिकर है।

(६) राहुल जी ने अनूदित उपन्यासों में अध्यायों के शीर्षकों का भी अनुवाद किया है। यथा दाखुंदा' शीर्षक में तो परिवर्तन नहीं लेकिन राहुल जी ने इस उपन्यास को पांच शीर्षकों में विभाजित किया है। यथा प्रथम खण्ड (बेचारे किसान) द्वितीय खण्ड (अमीर का बुखारा शरीफ), तृतीय खण्ड (अमीर भगा), चतुर्थ खण्ड (डाकुओं का राजा) तथा पंचम खण्ड (कमकरों का राजा)। इन खण्डों के शीर्षकों के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड आगे कई उपखण्डों में विभक्त है और राहुल जी ने उन सभी के शीर्षक भी दिये है। इसी प्रकार मूल शादी उपन्यास दो खण्डों में विभक्त है परन्तु राहुल जी ने *तंतीस अध्यायों में विभक्त किया है और प्रत्येक अध्याय का शीर्षक* भी दिया है। शीर्षक देने की यह प्रवृत्ति राहुल जी के मौलिक उपन्यासों में भी मिलती है। शीर्षक कहीं हिन्दी के हैं और कहीं ताजिक शब्दावली में ही हैं। यथा दाखुंदा ताजिक भाषा का शब्द है तम्ण पनिहारिन हिन्दी में अनुवाद करके दिया गया है। शीर्षक देने के लिए राहुल जी ने किसी विशेष नियम का अनुसरण नहीं किया।

(७) कई स्थलों पर राहुल जी की भाषा व्याकरण के नियमों की अवहेलना करती चलती है। इससे लिंग वचन विभक्ति सम्बन्धी त्रुटियां आ गई हैं।[३४]

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राहुल जी के अनुवादों में भाषा-सम्बन्धी कुछ त्रुटियां अवश्य हैं फिर भी समष्टि रूप से उनके अनुवाद सहज एवं सुन्दर हैं। विशेषकर दाखुंदा जो दास थे सूदखोर की मौत तथा शादी अन्त पीमा तक साहित्यिक अनुवाद की श्रेणी में गिने जा सकते है। सर्वोपरि राहुल जी ने जिस उद्देश्य के लिए यह अनुवाद कार्य सम्पादित किया है उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिली है। डा० सुबोधचन्द्र सक्सेना के शब्दों में जिस क्रान्ति, आर्थिक, सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक संगठन में आमूल परिवर्तन का सन्देश अनुवादक हमें उन कृतियों से देना चाहता है वह हमें मिलता है और हम अपने देश की धीमी प्रगति की तुलना

ताजिकिस्तान जसे सोवियत प्रजातन्त्रो की तीव्रगामी प्रगति से करने पर बाध्य होते हैं।'[१८]

इस प्रकार राहुल जी न ताजिक भाषा के अनुवादो से हिन्दी को समृद्ध बनाया है। डा० नलिन विलोचन शर्मा के शब्दो मे हम कह सकते हैं कि 'राहुल जी ने मध्य एशिया के एक ऐसे लेखक की कला से हमारा परिचय कराया है जो रूसी होने पर भी प्रादेशिक भाषा मे लिखता है, पर जो रूस के शोलोकाव जसे रूसी भाषा के लेखको के समकक्ष है।'[२१] हिन्दी म अनूदित उपन्यासो की परम्परा म राहुल जी के अनुवाद एव स्वतन्त्रानुवाद (रूपान्तरण) निश्चय ही महत्त्वपूर्ण स्थान के अधिकारी हैं।

सन्दर्भ

१ साहित्य निबन्धावलि प १६६।
२ साने की डाल (प्राक्कथन) पृ० ४।
३ जादू का मुल्क (भूमिका)।
४ दृष्टिकोण (जलाई सितम्बर १९५२) पृ ३।
५ उपन्यास का रूप विधान पृ० ८७।
६ विस्मृति के गर्भ में प ३४।
७ वही पृ ३।
८ वही पृ० १९ ३४।
९ वही प २१।
१ अनाथ (अनुवादक की ओर से) प ४।
११ पूर्वी साम्यिक लेखकों की दस कहानियाँ प ३७३।
१२ सूदखोर की मौत प० ६।
१३ वही पृ० ७।
१४ ग्गास दा प ४४२।
१५ मेरी जीवन यात्रा (४) प १११।
१६ गाखुदा पृ० २८६ ३०५ ६ ५८ ६ १७ १८ ७६।
१७ शानी पृ० १ ४ ५ ८ ४८।
१८ सूदखोर की मौत प ६ १ ७२ ७३ ७४।
१९ शानी प ६०।
२० सूदखोर की मौत पृ० ७३।
२१ जो दास थे पृ० ३१९।
२२ सूदखोर की मौत पृ० २३।
२३ वही पृ० ६४।
२४ वही प ७७ ८ ८८।
२५ राहुल का कथा साहित्य प २७४।
२६ दृष्टिकोण (जनवरी १९४८) प ५६।